महाकइपुप्फयतविरइयउ

अवहड्डभासाणिबद्धु

# हरिवंसपुराणु

(Printed Separately from the Mahapurana Vol. III)

विक्रमाब्द १९९७ ] [ ख्रिस्ताब्द १९४१

मूल्य सार्धरूप्यकद्वयम्

# महाकवि पुष्पदन्त

[ इस महाकविका परिचय सबसे पहले मैंने अपने ' महाकवि पुष्पदन्त और उनका महापुराण '[1] शीर्षक विस्तृत लेखमें दिया था। परन्तु उसमें कविके समयपर कोई विचार नहीं किया जा सका था। उसके थोड़े ही समय बाद अपभ्रंश भाषाके विशेषज्ञ प्रो० हीरालालजी जैनने ' महाकवि पुष्पदन्तके समयपर विचार '[2] शीर्षक लेख लिखकर उस कमीको पूरा कर दिया और महापुराण तथा यशोधरचरितके अतिरिक्त कविकी तीसरी रचना नागकुमारचरितका भी परिचय दिया। फिर सन् १९२६ में कविके तीनों ग्रंथोंका परिचय समय-निर्णयके साथ मध्यप्रान्तीय सरकार द्वारा प्रकाशित ' केटलॉग आफ मेनु० इन सी० पी० एण्ड बरार ' में प्रकाशित हुआ। इसके बाद प० जुगलकिशोरजी मुख्तारका ' महाकवि पुष्पदन्तका समय '[3] शीर्षक लेख प्रकट हुआ, जिसमें कॉथलाके भंडारसे मिली हुई यशोधरचरितकी एक प्रतिके कुछ अवतरण देकर यह सिद्ध किया गया कि उक्त काव्यकी रचना योगिनीपुर (दिल्ली) में वि० सं० १३६५ में हुई थी, अतएव पुष्पदन्त विक्रमकी चौदहवीं शताब्दिके विद्वान् हैं। इसपर प्रो० हीरालालजीने फिर ' महाकवि पुष्पदन्तका समय '[4] शीर्षक लेख लिखकर बतलाया कि उक्त प्रतिके अवतरण ग्रंथके मूल अश न होकर प्रक्षिप्त अंश जान पड़ते हैं, वास्तवमें कविका ठीक समय नवीं शताब्दी ही है। इसके बाद १९३१ में ' कारंजा-जैन सीरीज' में यशोधरचरित प्रकाशित हुआ और उसकी भूमिकामें डॉ० पी० एल० वैद्यने कॉथलाकी प्रतिके उक्त अंशको और उसी प्रकारके अन्य दो अंशोंको वि० सं० १३६५ में कण्हड़नन्दन गन्धर्वद्वारा ऊपरसे जोड़ा हुआ सिद्ध कर दिया और तब एक तरहसे उक्त समयसम्बन्धी विवाद समाप्त हो गया। इसके बाद नागकुमारचरित और महापुराण भी प्रकाशित हो गये और उनकी भूमिकाओंमें कविके सम्बन्धकी और भी बहुत-सी ज्ञातव्य बातें प्रकट हुईं। संक्षेपमें यही इस लेखकी पूर्वपीठिका है, जो इस विषयके विद्यार्थियोंके लिए उपयोगी समझ कर यहाँ दे दी गई है। प्रस्तुत लेख पूर्वोक्त सभी सामग्रीपर लक्ष्य रखकर लिखा गया है और इधर जो बहुत सी नई नई बातोंका मुझे पता लगा है, वे सब भी इसमें शामिल कर दी गई हैं। कविके स्थान, कुल, धर्म आदिपर बहुत-सा नया प्रकाश डाला गया है। ऐसी भी अनेक बातें हैं जिनपर पहलेके लेखकोंने कोई चर्चा नहीं की है। मैंने इस बातका प्रयत्न किया है कि कविके सम्बन्धकी सभी ज्ञातव्य बातें क्रमबद्ध रूपसे हिन्दीके पाठकोंके समक्ष उपस्थित हो जावें। इसके लिखनेमें सज्जनोत्तम प्रो० हीरालाल जैन और डा० ए० एन० उपाध्यायकी सूचनाओं और सम्मतियोंसे लेखकने यथेष्ट लाभ उठाया है। ]

## अपभ्रंश-साहित्य

महाकवि पुष्पदन्त अपभ्रंश भाषाके कवि थे। इस भाषाका साहित्य जैन-पुस्तक-भंडारोंमें भरा पड़ा है। अपभ्रंश बहुत समय तक यहाँकी लोक-भाषा रही है और इसका साहित्य भी बहुत लोकप्रिय रहा है। राजदरबारोंमें भी इसकी काफी प्रतिष्ठा थी। राजशेखरकी काव्य-मीमांसासे पता चलता है कि राजसभाओंमें राजासनके उत्तरकी ओर संस्कृत कवि, पूर्वकी ओर प्राकृत कवि और पश्चिमकी ओर अपभ्रंश कवियोंको स्थान मिलता था। पिछले २५-३० वर्षोंसे ही इस भाषाकी ओर विद्वानोंका ध्यान आकर्षित हुआ है और अब तो

१ जैनसाहित्य-संशोधक खंड २ अंक १ (सन् १९२४)।
२ जैनसाहित्य-संशोधक खंड २ अंक २।
३ जैनजगत् १ अक्टूबर सन् १९२६।
४ जैनजगत् १ नवम्बर सन् १९२६।

वर्तमान प्रान्तीय भाषाओकी जननी होनेके कारण भाषाशास्त्रियो और भिन्न भिन्न भाषाओंका इतिहास लिखनेवालोके लिए इस भाषाके साहित्यका अध्ययन बहुत ही आवश्यक हो गया है। इधर इस साहित्यके बहुत-से ग्रन्थ भी प्रकाशित हो गये है। कई यूनीवर्सिटियोने अपने पाठ्य-क्रममे भी अपभ्रंश ग्रन्थोंको स्थान देना प्रारंभ कर दिया है।

पुष्पदन्त इस भाषाके एक महान् कवि थे। उनकी रचनाओंमे जो ओज, जो प्रवाह, जो रस और जो सौन्दर्य है वह अन्यत्र दुर्लभ है। भाषापर उनका असाधारण अधिकार है। उनके शब्दोका भंडार विशाल है और शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनोंसे ही उनकी कविता समृद्ध है। उनकी सरस और सालंकार रचनाये न केवल पढ़ी ही जाती थीं, वे गाइ भी जाती थीं और लोग उन्हें पढ़-सुनकर मुग्ध हो जाते थे। स्थानाभावके कारण रचनाओंके उदाहरण देकर उनकी कला और सुन्दरताकी चर्चा करनेसे विरत होना पड़ा।

## कुल परिचय और धर्म

पुष्पदन्त काश्यपगोत्रीय ब्राह्मण थे। उनके पिताका नाम केशव भट्ट और माताका मुग्धादेवी था।

उनके माता पिता पहले शैव थे, परन्तु पीछे किसी दिगम्बर जैन गुरुके उपदेशामृतको पाकर जैन हो गये थे और अन्तमें उन्होने जिन-सन्यास लेकर शरीर त्यागा था। नागकुमारचरितके अन्तम कविने और और लोगोंके साथ अपने माता पिताकी भी कल्याण कामना की है और यहाँ इस बातको स्पष्ट किया है[1]। इससे अनुमान होता है कि कवि स्वय भी पहले शैव थे।

कविके आश्रयदाता महामात्य भरतने जब उनसे महापुराणके रचनेका आग्रह किया, तब कहा कि तुमने पहले भैरव नरेन्द्रको माना है और उसको पर्वतके समान धीर, वीर और अपनी श्रीविशेषसे सुरेन्द्रको जीतनेवाला वर्णन किया है। इससे जो मिथ्यात्वभाव उत्पन्न हुआ है, उसका यदि तुम इस समय प्रायश्चित्त कर डालो, तो तुम्हारा परलोक सुधर जाय[2]।

---

१ मूल पंक्तियाँ कठिन होनेके कारण यहाँ उन्हें संस्कृतच्छायासहित दिया जाता है।

सिवभत्ताइ मि जिणसण्णासें वे वि मयाइ दुरियणिण्णासें।
बंभणाइ कासवरिसिगोत्तइ गुरुवयणामियपूरियसोत्तइ ॥
मुद्धाएवीकेसवणामइ महु पियराइ होंतु सुहधामइ।
[ शिवभक्तौ अपि जिनसन्यासेन द्वौ अपि मृतौ दुरितनिर्णाशेन।
ब्राह्मणौ काश्यपऋषिगोत्रौ गुरुवचनामृतपूरितश्रोत्रौ।
मुग्धादेवीकेशवनामानौ मम पितरौ भवतां सुखधामनी ॥ ]

' गुरु ' शब्दपर मूल प्रतिमें ' दिगम्बर ' टिप्पण दिया हुआ है।

२ णियसिरिविसेसणिज्जियसुरिंदु, गिरिधीरवीरभइरवणरिंदु।
पइ मण्णिउ वण्णिउ वीरराउ, उप्पण्णउ जो मिच्छत्तभाउ।
पच्छित्तु तासु जइ करहि अज्जु, ता घडइ तुज्झु परलोयकज्जु।

इससे भी मालूम होता है कि पहले पुष्पदन्त शैव होंगे और शायद उसी अवस्थामें उन्होंने भैरव नरेन्द्रकी कोई यशोगाथा[1] लिखी होगी।

स्तोत्र-साहित्यमें 'शिवमहिम्न स्तोत्र' बहुत प्रसिद्ध है और उसके कर्त्ताका नाम 'पुष्पदन्त' है। असम्भव नहीं जो वह इन्हीं पुष्पदन्तकी उस समयकी रचना हो जब वे शैव थे। जयन्तभट्टने इस स्तोत्रका एक पद्य अपनी न्याय-मंजरीमें 'उक्तं च' रूपसे उद्धृत किया है। यद्यपि अभी तक जयन्तभट्टका ठीक समय निश्चित नहीं हुआ है, इसलिए ज़ोर देकर नहीं कहा जा सकता। फिर भी सम्भावना है कि जयन्त पुष्पदन्तके बादके होंगे और तब शिवमहिम्न इन्हीं पुष्पदन्तका होगा।

उनकी रचनाओंसे मालूम होता है कि जैनेतर साहित्यसे उनका प्रगाढ़ परिचय था। उनकी उपमायें और उत्प्रेक्षायें भी इसी बातका संकेत करती हैं[2]।

अपने ग्रन्थोंमें उन्होंने इस बातका कोई उल्लेख नहीं किया कि वे कब जैन हुए और कैसे हुए, अपने किसी जैन गुरु और सम्प्रदाय आदिकी भी कोई चर्चा उन्होंने नहीं की, परन्तु ख्याल यही होता है कि पहले वे भी अपने माता-पिताके समान शैव होंगे। यह तो नहीं कहा जा सकता कि वे माता-पिताके जैन होनेके बाद जैन हुए या पहले। परन्तु इस बातमें सन्देहकी गुंजाइश नहीं है कि वे दृढ़ श्रद्धानी जैन थे।

उन्होंने जगह जगह अपनेको 'जिणपयभत्ति धम्मासत्ति वयसंजुत्ति उत्तमसत्ति वियलियसंकि' अर्थात् जिनपदभक्त, व्रतसंयुक्त, विगलितशंक आदि विशेषण दिये हैं और 'मग्गियपण्डियपण्डियमरणे' अर्थात् 'पंडित-पण्डितमरण' पानेकी तथा बोधि-समाधिकी आकांक्षा प्रकट की है।

'सिद्धान्तशेखर[3]' नामक ज्योतिष-ग्रंथके कर्त्ता श्रीपति भट्ट नागदेवके पुत्र और केशवभट्टके पौत्र थे। ज्योतिषरत्नमाला, दैवज्ञवल्लभ, जातकपद्धति, गणिततिलक[4], बीजगणित, श्रीपति-निबंध, श्रीपतिसमुच्चय, श्रीकोटिदकरण, ध्रुवमानसकरण आदि ग्रंथोंके कर्त्ता भी श्रीपति हैं। वे बड़े भारी ज्योतिषी थे। हमारा अनुमान है कि पुष्पदन्तके पिता केशवभट्ट और श्रीपतिके पितामह केशवभट्ट एक ही थे[5]। क्यों कि एक तो दोनों ही काश्यप गोत्रीय हैं और

१ आगे बतलाया है कि यह यशोगाथा शायद 'कथामकरन्द' नामकी होगी और उसका नायक भैरव नरेन्द्र। भैरव कहाँके राजा थे, इसका अभी तक पता नहीं लगा।

२ बलिजीमूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु।
सम्प्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥ —प्रशस्ति श्लोक ९।

३ यह ग्रन्थ कलकत्ता यूनीवर्सिटीने अभी हाल ही प्रकाशित किया है।

४ गणिततिलक श्रीसिंहतिलकसूरिकृत टीकासहित गायकवाड ओरियण्टल सीरीजमें प्रकाशित हुआ है।

५ भट्टकेशवपुत्रस्य नागदेवस्य नन्दनः, श्रीपती रोहिणीख(खे)डे ज्योतिःशास्त्रमिदं व्यधात्।
—ध्रुवमानसकरण।

६ ज्योतिषरत्नमालाकी महादेवप्रणीत टीकामें श्रीपतिका काश्यप गोत्र बतलाया है—"काश्यपवंशपुण्डरीकखण्डमार्तण्ड केशवस्य पौत्र' नागदेवस्य सूनु श्रीपति संहितार्थमभिधातुरिच्छुराह—।"

दूसरे दोनोंके समयमें भी अधिक अन्तर नहीं है[1]।

केशवभट्टके एक पुत्र पुष्पदन्त होंगे और दूसरे नागदेव। पुष्पदन्त निष्पुत्र-कलत्र थे, परन्तु नागदेवको श्रीपति जैसे महान् ज्योतिषी पुत्र हुए। यदि यह अनुमान ठीक हो, तो श्रीपतिका पुष्पदन्तका भतीजा समझना चाहिए।

पुष्पदन्त मूलमें कहाँके रहनेवाले थे, उनकी रचनाओंमें इस बातका कोई उल्लेख नहीं मिलता। परन्तु उनकी भाषा बतलाती है कि वे कर्नाटकके या उससे और दक्षिणके द्रविड प्रान्तोंके तो नहीं थे। क्योंकि एक तो उनकी सारी रचनाओंमें कनडी और द्रविड भाषाओंके शब्दोंका प्राय अभाव है, दूसरे अब तक अपभ्रंश भाषाका ऐसा एक भी ग्रंथ नहीं मिला है जो कर्नाटक या उसके नीचेके किसी प्रदेशका बना हुआ हो। अपभ्रंश साहित्यकी रचना प्राय उत्तर भारत और राजपुताना, गुजरात, मालवा, बरारमें ही होती रही है। अतएव अधिक सम्भव यही है कि वे इसी ओरके हो।

श्रीपति ज्योतिषी रोहिणीखेडके रहनेवाले थे और रोहिणीखेड बरारके बुल्ढाना जिलेका रोहनखेड नामका गाँव जान पडता है[2]। यदि श्रीपति सचमुच ही पुष्पदन्तके भतीजे हो तो पुष्पदन्तको भी बरारका रहनेवाला मानना चाहिए।

बरारकी भाषा मराठी है। अभी ग० वा० तगारे एम० ए०, बी० टी० नामक विद्वानने पुष्पदन्तको प्राचीन मराठीका महाकवि बतलाया है[3] और उनकी रचनाओंमेंसे बहुतसे ऐसे शब्द चुनकर बतलाये हैं, जो प्राचीन मराठीसे मिलते जुलते हैं[4]। वैयाकरण मार्कण्डेयने अपने 'प्राकृत-सर्वस्व' में अपभ्रंश भाषाके नागर, उपनागर और व्राचट ये तीन भेद किये हैं। इनमेंसे व्राचटको लाट (गुजरात) और विदर्भ (बरार) की भाषा बतलाया है। सो पुष्पदन्तकी अपभ्रंश व्राचट होनी चाहिए।

श्रीपतिने अपनी 'ज्योतिषरत्नमाला' पर स्वय एक मराठी टीका लिखी थी, जो

---

१ महामहोपाध्याय प सुधाकर द्विवेदीने अपनी गणिततरंगिणी में श्रीपतिका समय श स ९२१ बतलाया है और स्वय श्रीपतिने अपने धीकोटिदकरण'में अहर्गणसाधनके लिए श स ९६१ का उपयोग किया है। जिससे अनुमान होता है कि वे उक्त समय तक जीवित थे। ध्रुवमानसकरणके सम्पादकने श्रीपतिका समय श स ९५ के आसपास बतलाया है। पुष्पदन्त श० स ८९४ की मान्यखेटकी लूट तक बल्कि उसके भी बाद तक जीवित थे। अतएव दोनोंके बीच जो अन्तर है वह इतना अधिक नहीं है कि चचा और भतीजेके बीच सम्भव न हो। श्रीपतिने उम्र भी शायद अधिक पाई हो।

२ बुल्ढाना जिलेके गजेटियरसे पता चला है कि इस रोहनखेडमें ईसाकी १५-१६ वीं शताब्दिमें खानदेशके सूबेदारों और बहमनी खान्दानके नवाबोंके बीच अनेक लडाइयाँ हुई हैं।

३ देखो सह्याद्रि (मासिकपत्र) का अप्रैल १९४१ का अक, पृ २५३ ५६।

४ कुछ थोडेस शब्द देखिए—उक्कुरड=उकिरडा (घूरा) गओल्लिय=गाँजलेले (दुखी), चिक्खिल्ल=चिखल (कीचड) तुप्प=तूप (घी) पगुरण=पांघरूण (ओढना) फेड=फेडणे (लौटाना) बोक्कड=बोकड (बकरा), आदि।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार राजवाडेको मिली थी और उन्होंने उसे सन् १९१४ में प्रकाशित भी करा दिया था। मुझे उसकी प्रति अभी तक नहीं मिल सकी। उसके प्रारम्भका अंश इस प्रकार है "ते या ईश्वररूपा कालाते मि। प्रभुकर्त्ता श्रीपति नमस्कारी। मी श्रीपति रत्नाचि माला रचितो।" इसकी भाषा गीताकी प्रसिद्ध टीका ज्ञानेश्वरीसे मिलती-जुलती है। इससे भी अनुमान होता है कि श्रीपति बरारके ही होंगे और इसलिए पुष्पदन्तका भी वहींका होना सम्भव है।

सबसे पहले पुष्पदन्तको हम मेलाडि या मेलपाटीके एक उद्यानमें पाते हैं और फिर उसके बाद मान्यखेटमें। मेलाडि उत्तर अर्काट जिलेमें है जहाँ कुछ कालतक राष्ट्रकूट महाराजा कृष्ण तृतीयका सेना-सन्निवेश रहा था और वहीं उनका भरत मन्त्रीसे प्रथम साक्षात् होता है। निजाम-राज्यका वर्तमान मलखेड़ ही मान्यखेट है।

यद्यपि इस समय मलखेड महाराष्ट्रकी सीमाके अन्तर्गत नहीं माना जाता, परन्तु बहुतसे विद्वानोंका मत है राष्ट्रकूटोंके समयमें वह महाराष्ट्रमें ही गिना जाता था और इसलिए तब वहाँ तक वैदर्भी अपभ्रंशकी पहुँच अवश्य रही होगी।

राष्ट्रकूटोंकी राजधानी पहले नासिकके पास मयूरखंडी या मोरखंडामें थी, जो महाराष्ट्रमें ही है। अतएव राष्ट्रकूट इसी तरफके थे। मान्यखेटको उन्होंने अपनी राजधानी सुदूर दक्षिणके अन्तरीपपर शासन करनेकी सुविधाके लिए बनाया था, क्योंकि मान्यखेटमें केन्द्र रख कर ही चोल, चेर, पाण्ड्य देशोंपर ठीक तरहसे शासन किया जा सकता था।

भरतको कविने कई जगह भरत भट्ट लिखा है। नाइल्ल और सीलइय भी 'भट्ट' विशेषणके साथ उल्लिखित हुए हैं। इससे अनुमान होता है कि पुष्पदन्तको इन भट्टोंके मान्यखेटमें रहनेका पता होगा और उसी सूत्रसे वे घूमते-घामते उस तरफ पहुँचे होंगे। बहुत सम्भव है कि ये लोग भी पुष्पदन्तके ही प्रान्तके हों और महान् राष्ट्रकूटोंकी सम्पन्न राजधानीमें अपना भाग्य आजमानेके लिए आकर बस गये हों और कालान्तरमें राजमान्य हो गये हों। उस समय बरार भी राष्ट्रकूटोंके अधिकारमें था, अतएव वहाँके लोगोंका आवागमन मान्यखेट तक होना स्वाभाविक है। कमसे कम विद्योपजीवी लोगोंके लिए तो 'पुरन्दरपुरी' मान्यखेटका आकर्षण बहुत ज्यादा रहा होगा।

भरत मन्त्रीको कविने 'प्राकृतकविकाव्यरसावलुब्ध' कहा है और प्राकृतसे यहाँ उनका मतलब अपभ्रंशमें ही जान पड़ता है। इस भाषाको वे अच्छी तरह जानते होंगे और उसका आनन्द ले सकते होंगे, तभी न उन्होंने कविको इतना उत्साहित और सम्मानित किया होगा?

## व्यक्तित्व और स्वभाव

पुष्पदन्तका एक नाम 'खण्ड'[1] था। शायद यह उनका घरू और बोलचालका नाम होगा। महाराष्ट्रमें खड्डूजी, खंडोबा नाम अब भी कसरतसे रक्खे जाते हैं। अभिमानमेरु, अभिमान चिह्न, काव्यरत्नाकर, कविकुलतिलक, सरस्वतीनिलय, कव्वपिसल्ल ( काव्यपिशाच या काव्यराक्षस ) ये उनकी पदवियाँ थीं। यह पिछली पदवी बड़ी अद्भुत-सी है, परन्तु इसका उन्होंने स्वय ही प्रयोग किया है। शायद अपनी महती कवित्व शक्तिके कारण ही यह पद उन्होंने पसन्द किया हो। 'अभिमानमेरु' पद उनके स्वभावको भी व्यक्त करता है। वे बड़े ही स्वाभिमानी थे। महापुराणकी उत्थानिकासे मालूम होता है कि जब वे खलजनोंद्वारा अवहेलित और दुर्दिनोसे पराजित होकर घूमते घामते मेलपाटीके बाहर एक बगीचेमें विश्राम कर रहे थे, तब 'अम्मइय' और 'इन्द्र' नामक दो पुरुषोंने आकर उनसे कहा, "आप इस निर्जन वनमे क्यो पड़े हुए हैं, पासके नगरमें क्यो नहीं चलते?" इसके उत्तरमें उन्होंने कहा, "गिरिकन्दराओंमें घास खाकर रह जाना अच्छा

---

१ (क) जो विहिणा णिम्मउ कव्वपिंडु त णिसुणेवि सो सचलिउ खडु। —म पु सन्धि १, क ६
(ख) मुग्धे श्रीमदनिन्द्यखण्डसुकवेर्बन्धुर्गुणैरुन्नत'। —म पु सन्धि ३
(ग) वाञ्छन्ति यमद्य कुतूहलवती खण्डस्य कीर्ति कृते। —म पु स ३९

२ (क) त सुणेवि भणइ अहिमाणमेरु।—म पु १ ३ १२
(ख) क थास्यत्यभिमानरत्ननिलय श्रीपुष्पदन्त विना।—म पु स ४५
(ग) णण्णहा मदिरि णिवसन्तु सन्तु अहिमाणमेरु गुणगणमहन्तु।—ना कु १ २ २

३ वयसुत्ति उत्तमसत्ति वियलियसकि अहिमाणकिं।—य च ४ ३१-३

४ भो भो केसवतणुरुह णवसररुहमुह कव्वरयणरयणायर। म पु १ ४ १

५-६ (क) त णिसुणवि भरहें वुत्तु ताव, भो कइकुलतिलय विमुक्कगाव।—म पु १ ८ १
(ख) अम्माइ कइराउ पुष्फयन्तु सरसइणिलउ।
देवियहि सरूउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ।—य च १ ८ १५

७ (क) जिणचरणकमलभत्तिल्लएण ता जपिउ कव्वपिसल्लएण।—म पु १ ८ ८
(ख) बोल्लाविउ कइ कव्वपिसल्लउ किं तुहु सचउ बप्प गहिल्लउ।—म पु ३८ ३ ५
(ग) भण्णस्स पत्थणाए कव्वपिसल्लेण पहसियमुहेण।—ना च अन्तिम पद्य

८ महि परिभमतु मेवाडिणयरु।
अवहेरियखलयणु गुणमहन्तु दियहेहिं पराइउ पुप्फयंतु।
णदणवणि चिर वीसमइ जाम तहिं बिण्णि पुरिस सपत्त ताम।
पणवेप्पिणु तेहिं पवुत्तु एव भो खड गलियपावावलेव।
परिभमिरभमररवगुमगुमति किं किर णिवसहि णिज्जणवणति।
करिसरबहिरियदिक्चक्कवालि पइसरहि ण किं पुरवरि विसालि।
त सुणिवि भणइ अहिमाणमेरु वर खज्जइ गिरिकदरि कसेरु।
णउ दुज्जनभउँहावकियाइं दीसन्तु कलुसभावकियाइं।

परन्तु दुर्जनोंकी टेढ़ी भौहें देखना अच्छा नहीं। माताकी कूँखसे जन्मते ही मर जाना अच्छा परन्तु किसी राजाके भ्रूकुंचित नेत्र देखना और उसके कुवचन सुनना अच्छा नहीं। क्योंकि राजलक्ष्मी ढुरते हुए चँवरोंकी हवासे सारे गुणोंको उड़ा देती है, अभिषेकके जलसे सुजनताको धो डालती है, विवेकहीन बना देती है, दर्पसे फूली रहती है, मोहसे अंधी रहती है, मारण-शीला होती है, सप्ताग राज्यके बोझेसे लदी रहती है, पिता-पुत्र दोनोंमें रमण करती है, विषकी सहोदरा और जड-रक्त है। लोग इस समय ऐसे नीरस, और निर्विशेष (गुणाव-गुणविचाररहित) हो गये है कि बृहस्पतिके समान गुणियोंका भी द्वेष करते है। इसलिए मैंने इस वनकी शरण ली है और यहींपर अभिमानके साथ मर जाना ठीक समझा है।" पाठक देखें कि इन पंक्तियोंमें कितना स्वाभिमान और राजाओं तथा दूसरे हृदयहीन लोगोंके प्रति कितने ज्वालामय उद्गार भरे है!

ऐसा मालूम होता है कि किसी राजाके द्वारा अवहेलित या उपेक्षित होकर ही वे घरसे चल दिये थे और भ्रमण करते हुए और बड़ा लम्बा दुर्गम रास्ता तय करके मेलपाटी पहुँचे थे। उनका स्वभाव स्वाभिमानी और कुछ उग्र तो था ही, अतएव कोई आश्चर्य नहीं जो राजाकी जरा-सी भी टेढ़ी भौंहको वे न सह सके हो और इसीलिए नगरमे चलनेके आग्रह करनेपर उन दो पुरुषोंके सामने ही राजाओंपर बरस पड़े हो। अपने उग्र स्वभावके कारण ही वे इतने चिढ़ गये और उन्हें इतनी वितृष्णा हो गई कि सर्वत्र दुर्जन ही दुर्जन दिखाई देने लगे, और सारा ससार निष्फल, नीरस, शुष्क प्रतीत होने लगा।

जान पड़ता है महामात्य भरत मनुष्य-स्वभावके बड़े पारखी थे। उन्होंने कविवरकी प्रकृतिको समझ लिया और अपने सद्व्यवहार, समादर और विनयशीलतासे सन्तुष्ट करके उनसे वह महान् कार्य करा लिया जो दूसरा शायद ही करा सकता।

राजाके द्वारा अवहेलित और उपेक्षित होनेके कारण दूसरे लोगोंने भी शायद उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया होगा, इसलिए राजाओंके साथ साथ औरोंसे भी वे प्रसन्न नहीं दिखलाई देते, उनको भी बुरा-भला कहते हैं, परन्तु भरत और नन्नकी लगातार प्रशसा करते हुए भी वे नहीं थकते।

---

घत्ता—वर णरवरु धवलच्छिहे होहु म कुच्छिहे मरउ सोणिमुहणिग्गमे।
खलकुच्छियपहुवयणइं भिउडियणयणइं म णिहालउ सूरुग्गमे॥

चमराणिलउड्डावियगुणाइं अहिसेयधोयसुयणत्तणाइं।
अविवेयइं दप्पुत्तालियाइं मोहंधइं मारणसीलियाइं।
सत्तगरज्जभरभारियाइं पिउपुत्तरमणरसयारियाइं।
विससहजम्मइं जडरत्तियाइं किं लच्छिइं विउसविरत्तियाइं।
सपइ जणु नीरसु णिव्विसेसु गुणवतउ जहिं सुरगुरुवि देसु।
तहिं अम्हइं लइ काणणु जि सरणु अहिमाणें सहु वीरि होउ मरणु।

१ जो जो दीसइ सो सो दुज्जणु णिप्फलु णीरसु ज सुक्कउवणु।

उत्तरपुराणके अन्तम उन्होंने अपना परिचय इस रूपमे दिया है, "सिद्धिविलासिनीके मनोहर दूत, मुग्धा देवीके शरीरसे समूत, निर्धनों और धनियोंको एक दृष्टिसे देखनेवाले, सारे जीवोके अकारण मित्र, शब्दसलिलसे बढ़ा हुआ है काव्य-स्रोत जिनका, केशवके पुत्र, काश्यपगोत्री, सरस्वतीविलासी सूने पड़े हुए घरो और देवकुलिकाओंमें रहनेवाले, कलिके प्रबल पाप पटलोसे रहित, बेघरबार, पुत्रकलत्रहीन, नदियो वापिकाओ और सरोवरोंमें स्नान करनेवाले, पुराने वस्त्र और वल्कल पहिननेवाले, धूलधूसरित अग, दुर्जनोके सगसे दूर रहनेवाले, जमीनपर सोनेवाले और अपने ही हाथोको ओढ़नेवाले, पडित पडित-मरणकी प्रतीक्षा करनेवाले, मान्यखेट नगरम रहनेवाले, मनमें अरहतदेवका ध्यान करनेवाले, भरत मत्रीद्वारा सम्मानित, अपने काव्यप्रबन्धसे लोगोको पुलकित करनेवाले और पापरूप कीचड़को जिन्होंने धो डाला ह, एसे अभिमानमेरु पुष्पदन्तने, यह काव्य जिन पदकमलोमें हाथ जोड़े हुए भक्तिपूर्वक क्रोधनसवत्सरकी असाढ सुदी दसवींको बनाया।

इस परिचयसे कविकी प्रकृति और उनकी निस्सगताका हमारे सामने एक चित्र सा खिंच जाता है। एक बड़े भारी साम्राज्यके महामत्रीद्वारा अतिशय सम्मानित होते हुए भी वे सर्वथा अकिंचन और निर्लिप्त ही रहे जान पड़त हैं। नाममात्रक गृहस्थ होकर एक तरहसे वे मुनि ही थे।

एक जगह वे भरत महामात्यसे कहते हैं कि "मै धनको तिनकेके समान गिनता हूँ। उसे म नहीं लेता। मैं तो केवल अकारण प्रेमका भूखा हूँ और इसीसे तुम्हारे महलमें हूँ। मेरी कविता तो जिन-चरणोकी भक्तिसे ही स्फुरायमान होती है, जीविका निर्वाहके खयालसे नहीं।"

---

१ सिद्धिविलासिणिमणहरदूए मुद्धाएवीतणुसभूए।
णिद्धणसधणलोयसमचित्ते सव्वजीवणिक्कारणमित्ते॥ २१
सद्दसलिलपरिवड्ढियसोत्ते केसवपुत्ते कासवगोत्ते।
विमलसरासइजणियविलासे सुण्णभवणदेवउलणिवासें॥ २२
कलिमलपवलपडलपरिचत्ते णिग्घरेण णिप्पुत्तकलत्ते।
णइ-वावी-तलाय सरण्हाणें जर-चीवर वक्कल-परिहाणें॥ २३
धीरें धूली धूसरियगें दूरयरुज्झिय-दुज्जणसगें।
महिसयणयलें करपगुरणें मग्गियपडियपडियमरणें॥ २४
मण्णखेडपुरवरे णिवसतें मणे अरहतु देउ झायतें।
भरहमण्णणिज्जें णयणिलए कव्वपबधजणियजणपुलए॥ २५
पुप्फयतकइणा धुयपकें जइ अहिमाणमेरुणामकें।
कयउ कव्वु भत्तिए परमत्थें जिणपयपकयमउलियहत्थें॥ २६
कोहणसवच्छरे आसाढए दहमए दियहे चदरुइरूढए।
२ धणु तणुसमु मज्झु ण त गहणु णेहु णिकारिमु इच्छमि।
देवीसुअ सुदणिहि तेण हउ णिलए तुहारए अच्छमि॥—२ उत्तर पु
३ मज्झु कइत्तणु जिणपयभत्तिहे पसरइ णउ णियजीवियवित्तिहे।—उ पु

इस तरहकी निस्पृहतामें ही स्वाभिमान टिक सकता है और ऐसे ही पुरुषको 'अभिमानमेरु' पद शोभा देता है। कविने एक-दो जगह अपने रूपका भी वर्णन कर दिया है, जिससे मालूम होता है कि उनका शरीर बहुत ही दुबला पतला और साँवला था। वे बिल्कुल कुरूप थे[1] परन्तु सदा हँसते रहते थे[2]। जब बोलते थे तो उनकी सफेद दन्तपंक्तिसे दिशाएँ धवल हो जाती थीं[3]। यह उनकी स्पष्टवादिता और निरहंकारताका ही निदर्शन है, जो उन्होंने अपनेको शुद्ध कुरूप कहनेमें भी संकोच न किया।

पुष्पदन्तमें स्वाभिमान और विनयशीलताका एक विचित्र सम्मेलन दीख पड़ता है। एक ओर वे अपनेको ऐसा महान् कवि बतलाते हैं जिसकी बड़े बड़े विशाल ग्रंथोंके ज्ञाता और मुद्दतसे कविता करनेवाले भी बराबरी नहीं कर सकते[4] और सरस्वतीसे कहते हैं कि हे देवी, अभिमानरत्ननिलय पुष्पदन्तके बिना तुम कहाँ जाओगी—तुम्हारी क्या दशा होगी[5]? और दूसरी ओर कहते हैं कि मैं दर्शन, व्याकरण, सिद्धान्त, काव्य, अलंकार कुछ भी नहीं जानता, गर्भमूर्ख हूँ। न मुझमें बुद्धि है, न श्रुतसंग है, न किसीका बल है[6]।

भावुक तो सभी कवि होते हैं परन्तु पुष्पदन्तमें यह भावुकता और भी बढ़ी चढ़ी थी। इस भावुकताके कारण वे स्वप्न भी देखा करते थे। आदिपुराणके समाप्त हो जाने पर किसी कारण उन्हें कुछ अच्छा नहीं लग रहा था, वे निर्विण्णसे हो रहे थे कि एक दिन उन्हें स्वप्नमें सरस्वती देवीने दर्शन दिया और कहा कि 'जन्ममरण-रोगके नाश करनेवाले अरहंत भगवानको, जो पुण्य-वृक्षको सींचनेके लिए मेघतुल्य हैं, नमस्कार करो।' यह सुनते ही कविराज जाग उठे और यहाँ वहाँ देखते है तो कहीं कोई नहीं है, वे अपने घरमें

---

१ कसणसरीरें सुद्धकुरूवें मुद्धाएविगब्भसंभूवें। —उ० पु०

२ णण्णस्स पत्थणाए कव्वपिसल्लेण पहसियमुहेण।
णायकुमारचरित्त रइयं सिरिपुप्फयंतेण ॥—णायकुमार च०
पहसियतुंडिं कइणा खंडें। —यशोधरचरित

३ सितदन्तपंक्तिधवलीकृताशु ता जपइ वरवायाविलासु।

४ आजन्म (?) कवितारसैकधिषणासौभाग्यभाजो गिरा
दृश्यन्ते कवयो विशालसकलग्रन्थानुगा बोधत।
किन्तु प्रौढानिरूढगूढमतिना श्रीपुष्पदंतेन भो
साम्यं बिभ्रति (?) नैव जातु कविता शीघ्रं त्वत. प्राकृते ॥ —प्र० श्लो० ४०

५ लोके दुर्जनसंकुले हतकुले तृष्णावशे नीरसे
सालंकारवचोविचारचतुरे लालित्यलीलाधरे।
भद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ साम्प्रतं
क यास्यस्यभिमानरत्ननिलयं श्रीपुष्पदन्तं विना ॥ —प्र० श्लो० ४५

६ ण हुमं हु बुद्धिपरिग्गहु ण हु सुयसंगहु णउ कासु वि केरउ बलु। —उ० पु०

ही हैं। उन्हे बड़ा विस्मय हुआ।[1] इसके बाद भरतमंत्रीने आकर उन्हें समझाया और तब वे उत्तरपुराणकी रचनामें प्रवृत्त हुए।

कविके ग्रंथोंसे मालूम होता है कि वे महान् विद्वान् थे। उनका तमाम दर्शनशास्त्रोंपर तो अधिकार था ही, जैनसिद्धान्तकी जानकारी भी उनकी असाधारण थी। उस समयके ग्रन्थकर्ता चाहे वे किसी भी भाषाके हों, संस्कृतज्ञ तो होते ही थे। यद्यपि अभी तक पुष्पदन्तका कोई स्वतंत्र संस्कृत ग्रंथ उपलब्ध नहीं हुआ है, फिर भी वे संस्कृतमें अच्छी रचना कर सकते थे। इसके प्रमाणस्वरूप उनके वे संस्कृत पद्य पेश किये जा सकते हैं जो उन्होंने महापुराण और यशोधरचरितमें भरत और नन्नकी प्रशंसामें लिखे हैं। व्याकरणकी दृष्टिसे यद्यपि उनमें कहीं कहीं कुछ स्खलनायें पाई जाती हैं, परन्तु वे कवियोंकी निरंकुशताकी ही द्योतक हैं, अज्ञानताकी नहीं।

## कविकी ग्रन्थ-रचना

महाकवि पुष्पदन्तके अब तक तीन ग्रन्थ उपलब्ध हुए है और सौभाग्यकी बात है कि वे तीनों ही आधुनिक पद्धतिसे सुसम्पादित होकर प्रकाशित हो चुके हैं।

**१ तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकार** ( त्रिषष्ठिमहापुरुषगुणालंकार ) या महापुराण। यह आदिपुराण और उत्तरपुराण इन दो खंडोंमें विभक्त है। ये दोनों अलग अलग भी मिलते है। इनमे त्रेसठ शलाका पुरुषोंके चरित हैं। पहलेमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवका और दूसरेमें शेष तेईस तीर्थंकरोंका और उनके समयके अन्य महापुरुषोंका। उत्तरपुराणमें पद्मपुराण ( रामायण ) और हरिवंशपुराण[2] ( महाभारत ) भी शामिल हैं और ये भी कहीं कहीं पृथक् रूपमें मिलते हैं।

अपभ्रंश ग्रंथोंमें सर्गकी जगह सन्धियाँ होती हैं। आदिपुराणमें ३७ और उत्तरपुराणमें ६५ संधियाँ हैं। दोनोंका श्लोकपरिमाण लगभग बीस हजार है। इसकी रचनामें कविको लगभग छह वर्ष लगे थे।

यह एक महान् ग्रन्थ है और जैसा कि कविने स्वयं कहा है, इसमें सब कुछ है और जो इसमें नहीं है वह कहीं नहीं है[3]।

---

१ भणि जाएण किं पि अमणोज्जें　　कइवयदियहइ केण वि कज्जें।
णिव्विण्णउ थिउ जाम महाकइ　　ता सिविणंतरि पत्त सरासइ।
भणइ भडारी सुहयरुमोह　　पणमइ अरुह सुहयरमेहं।
इय णिसुणेवि विउद्धउ कइवरु　　सयलकलायरु ण छणससहरु।
दिसउ णिहालइ किं पि ण पेच्छइ　　जा विम्हियमइ णियघरि अच्छइ।—महापुराण ३८ २

२ केवल हरिवंशपुराणको जर्मनीके एक विद्वान् 'आल्सडर्फ'ने जर्मनभाषामें सम्पादित करके प्रकाशित किया है।

३—अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा-
मर्थालङ्कृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः।
किञ्चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते
द्वावेतौ भरतेशपुष्पदशनौ सिद्धं ययोरीदृशम्॥ —म० श्लो० ३७

महामात्य भरतकी प्रेरणा और प्रार्थनासे यह बनाया गया, इसलिए कविने इसकी प्रत्येक सन्धिके अन्तमे इसे 'महाभव्वभरहाणुमण्णिए' (महाभव्यभरतानुमते) विशेषण दिया है और इसकी अधिकाश सन्धियोंमे प्रारम्भमे भरतका विविध-गुणकीर्तन किया है[1]।

जैनपुस्तकभण्डारोमे इस ग्रन्थकी अनेकानेक प्रतियाँ मिलती हैं। इसपर अनेक टिप्पण-ग्रन्थ भी लिखे गये हैं, जिनमेसे आचार्य प्रभाचन्द्र और श्रीचन्द्र मुनिके दो टिप्पण उपलब्ध हैं[2]। श्रीचन्द्रने अपने टिप्पणमे लिखा है—'मूलटिप्पणिका चालोक्य कृतमिदं समुच्चय-टिप्पणं।' इससे मालूम होता है कि इस ग्रन्थपर स्वयं ग्रन्थकर्ताकी लिखी हुई मूल टिप्पणिका भी थी, जिसका उपयोग श्रीचन्द्रने किया है। जान पड़ता है कि यह ग्रन्थ बहुत लोकप्रिय और प्रसिद्ध रहा है।

महापुराणकी प्रथम सन्धिके छठे कड़वकमे जो 'वीरभइरवणरिंदु' शब्द आया है, उसपर प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण है—"वीरभैरव. अन्यः कश्चिद् दुष्टः महाराजो वर्तते, कथा-मकरन्दनायको वा कश्चिद्राजास्ति।" इससे अनुमान होता है कि 'कथा-मकरन्द' नामका भी कोई ग्रन्थ पुष्पदन्तकृत होगा जिसमें इस राजाको अपनी श्रीविशेषसे सुरेन्द्रको जीतनेवाला और पर्वतके समान धीर बतलाया है। भरतमन्त्रीने इसीको लक्ष्य करके कहा था कि तुमने इस राजाकी प्रशसा करके जो मिथ्यात्वभाव उत्पन्न किया है, उसका प्रायश्चित्त करनेके लिए महापुराणकी रचना करो।

२ णायकुमारचरिउ—(नागकुमारचरित)। यह एक खण्डकाव्य है। इसमें ९ सन्धियाँ हैं और यह णण्णणामकिय (नन्नानामाकित) है। इसमें पचमीके उपवासका फल बतलानेवाला नागकुमारका चरित है। इसकी रचना बहुत ही सुन्दर और प्रौढ़ है।

यह मान्यखेटमे नन्नके मन्दिर (महल) मे रहते हुए बनाया गया है। प्रारम्भमें कहा गया है कि महोदधिके गुणवर्म और शोभन नामक दो शिष्योंने प्रार्थना की कि आप पचमी-फलकी रचना कीजिए, महामात्य नन्नने भी उसे सुननेकी इच्छा प्रकट की और फिर नाइल्ल और शीलभद्रने भी आग्रह किया।

३ जसहरचरिउ (यशोधरचरित)। यह भी एक सुन्दर खण्डकाव्य है और इसमें 'यशोधर' नामक पुराण-पुरुषका चरित वर्णित है। इसमे चार सन्धियाँ है। यह कथानक जैनसम्प्रदायमे इतना प्रिय रहा है कि सोमदेव, वादिराज, वासवसेन, सोमकीर्ति, हरिभद्र,

---

१ ये गुणकीर्तनके सम्पूर्ण पद्य महापुराणके प्रथम खण्डकी प्रस्तावनामें और जैनसाहित्यसशोधक खण्ड २ अक १ के मेरे लेखमें प्रकाशित हो चुके हैं।

२ प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण परमार राजा जयसिंहदेवके राज्यकालमें और श्रीचन्द्रका भोजदेवके राज्य-कालमें लिखा गया है। देखो, अनेकान्त वर्ष ४, अक १ में मेरा 'श्रीचन्द्र और प्रभाचन्द्र' शीर्षक लेख।

क्षमाकल्याण आदि अनेक दिगम्बर-श्वेताम्बर लेखकोंने इसे अपने अपने ढंगसे प्राकृत और संस्कृतमें लिखा है।

यह ग्रन्थ भी भरतके पुत्र और वल्लभनरेन्द्रके गृहमन्त्रीके लिए उन्हींके महलमें रहते हुए लिखा गया था, इसलिए कविने इसके लिए प्रत्येक सन्धिके अन्तमें 'णण्णकण्णाभरण (नन्नके कानोंका गहना) विशेषण दिया है। इसकी दूसरी तीसरी और चौथी सन्धिके प्रारम्भमें नन्नके गुणकीर्तन करनेवाले तीन संस्कृत पद्य हैं[1]। इस ग्रन्थकी कुछ प्रतियोंमें गन्धर्व कविके बनाये हुए कुछ क्षेपक भी शामिल हो गये हैं जिनकी चर्चा आगे की गई है। इसकी कई सटिप्पण प्रतियाँ भी मिलती हैं। बम्बईके ऐलक पन्नालाल सरस्वती भवनमें (८०४ क) एक प्रति ऐसी है जिसमें ग्रन्थकी प्रत्येक पंक्तिकी संस्कृतच्छाया दी हुई है जो संस्कृतज्ञोंके लिए बहुत ही उपयोगी है।

उपलब्ध ग्रन्थोंमें महापुराण उनकी पहली रचना है और यशोधरचरित सबसे पिछली रचना। इसकी अन्तिम प्रशस्ति उस समय लिखी गई है जब युद्ध और लूटके कारण मान्यखेटकी दुर्दशा हो गई थी, वहाँ दुष्काल पड़ा हुआ था, लोग भूखों मर रहे थे, जगह जगह नर-कंकाल पड़े हुए थे। नागकुमारचरित इससे पहले बन चुका होगा। क्योंकि उसमें स्पष्ट रूपसे मान्यखेटको 'श्रीकृष्णराजकी तलवारसे दुर्गम' बतलाया है। अर्थात् उस समय कृष्ण तृतीय जीवित थे। परन्तु यशोधरचरितमें नन्नको केवल 'वल्लभनरेन्द्रगृहमहत्तर' विशेषण दिया है और वल्लभनरेन्द्र राष्ट्रकूटोंकी सामान्य पदवी थी। वह खोट्टिगदेवके लिए भी प्रयुक्त हो सकती है और उनके उत्तराधिकारी कर्कके लिए भी। महापुराण श० सं० ८८७ में पूर्ण हुआ था और मान्यखेटकी लूट ८९५ के लगभग हुई। इसलिए इन सात आठ बरसोंके बीच कविके द्वारा इन दो छोटे छोटे उपलब्ध ग्रन्थोंके सिवाय और भी ग्रन्थोंके रचे जानेकी सम्भावना है।

कोश-ग्रन्थ। आचार्य हेमचन्द्रने अपनी 'देसीनाममाला'की स्वोपज्ञ वृत्तिमें किसी 'अभिमानचिह्न' नामक ग्रन्थकर्ताके सूत्र और स्वविवृत्तिके पद्य उद्धृत किये हैं[3]। क्या आश्चर्य है जो अभिमानमेरु और अभिमानचिह्न एक ही हों। यद्यपि पुष्पदन्तने प्रायः सर्वत्र ही अपने 'अभिमानमेरु' उपनामका ही उपयोग किया है, फिर भी यशोधरचरितके अन्तमें एक जगह अहिमाणंकि (अभिमानांक) या अभिमानचिह्न भी लिखा है[4]। इससे बहुत

---

१ कौंडिण्णगोत्तणहदिणयरासु वल्लहणरिंदघरमहयरासु।
णण्णहो मंदिरि णिवसंतु संतु अहिमाणमेरु कइ पुप्फयंतु। —नागकुमारचरित १ २ २

२ देखो कारंजा-सीरीजका यशोधरचरित पृ २४ ४७, और ७५।

३ देखो, देसीनाममाला १–१४४, ६–९३, ७–१, ८–१२, १७।

४ देखो यशोधरचरित, पृ १ , पंक्ति ३।

सम्भव है कि उनका कोई देसी शब्दोंका कोश ग्रन्थ भी स्वोपज्ञटीकासहित हो जो आचार्य हेमचन्द्रके समक्ष था।

## कविके आश्रयदाता

**महामात्य भरत।** पुष्पदन्तने दो आश्रयदाताओंका उल्लेख किया है, एक भरतका और दूसरे नन्नका। ये दोनो पिता-पुत्र थे और महाराजाधिराज कृष्णराज ( तृतीय ) के महामात्य। कृष्ण राष्ट्रकूट वंशका अपने समयका सबसे पराक्रमी, दिग्विजयी और अन्तिम सम्राट् था। इससे उसके महामात्योंकी योग्यता और प्रतिष्ठाकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। नन्न शायद अपने पिताकी मृत्युके बाद ही महामात्य हुए होंगे। यद्यपि उस कालमें योग्यतापर कम ध्यान नहीं दिया जाता था, फिर भी बड़े बड़े राजपद प्राय वंशानुगत होते थे।

भरतके पितामहका नाम अण्णय्या, पिताका एयण और माताका श्रीदेवी था। वे कौण्डिन्य गोत्रके ब्राह्मण थे। कहीं कहीं इन्हें भरत भट्ट भी लिखा है। भरतकी पत्नीका नाम कुन्दव्वा था जिसके गर्भसे नन्न उत्पन्न हुए थे।

भरत महामात्य-वंशमें ही उत्पन्न हुए थे[1] परन्तु सन्तानक्रमसे चली आई हुई यह लक्ष्मी ( महामात्यपद ) कुछ समयसे उनके कुलसे चली गई थी जिसे उन्होंने बड़ी भारी आपत्तिके दिनोंमें अपनी तेजस्विता और प्रभुकी सेवासे फिर प्राप्त कर लिया था।[2]

भरत जैनधर्मके अनुयायी थे। उन्हे अनवरत-रचित-जिननाथ-भक्ति और जिनवर-समय-प्रासाद-स्तम्भ अर्थात् निरन्तर जिनभगवानकी भक्ति करनेवाले और जैनशासनरूप महलके स्तम्भ लिखा है।

कृष्ण तृतीयके ही समयमें और उन्हींके सामन्त अरिकेसरीकी छत्रछायामें बने हुए नीतिवाक्यामृतमें अमात्यके अधिकार बतलाये गये हैं—आय, व्यय, स्वामिरक्षा और राजतन्त्रकी पुष्टि। "आयो व्यय स्वामिरक्षा तन्त्रपोषण चामात्यानामधिकार।" उस समय साधारणत. रेवेन्यू-मिनिस्टरको अमात्य कहते थे। परन्तु भरत महामात्य होंगे। इससे मालूम होता है कि वे रेवेन्यूमिनिस्टरीके सिवाय राज्यके अन्य विभागोंका भी काम करते थे। राष्ट्रकूट-कालमें मन्त्रीके लिए शास्त्रज्ञके सिवाय शस्त्रज्ञ भी होना आवश्यक था, अर्थात् जरूरत होनेपर उसे युद्ध-क्षेत्रमें भी जाना पड़ता था।

एक जगह पुष्पदन्तने लिखा भी है कि वे वल्लभराजके कटकके नायक अर्थात् सेनापति

---

१ महमत्तवंसधयवडु गहीरु ( महामात्यवंशध्वजपटगभीर॰ )।

२ हीनापद्दिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना सन्तानक्रमतो गताऽपि हि रमा कृष्टा प्रभो. सेवया।
यस्याचारपदं वदन्ति कवय सौजन्यसत्यास्पद सोऽय श्रीभरतो जयत्यनुपम. काले कलौ साम्प्रतम्॥
—प्र० श्लो० १५

हुए थे[1]। इसके सिवाय वे राजाके दानमंत्री भी थे। इतिहासमें कृष्ण तृतीयके एक मंत्री नारायणका नाम तो मिलता है[2], जो कि बहुत ही विद्वान् और राजनीतिज्ञ था परन्तु भरत महामात्यका अब तक किसीको पता नहीं। क्योंकि पुष्पदन्तका साहित्य इतिहासज्ञोंके पास तक पहुँचा ही नहीं।

पुष्पदन्तने अपने महापुराणमें भरतका जो बहुत-सा परिचय दिया है, उसके सिवाय उन्होंने उसकी अधिकांश सन्धियोंके प्रारम्भमें कुछ प्रशस्तिपद्य भी पीछेसे जोड़े हैं जिनकी संख्या ४८ हैं[3]। उनमेंसे छह ( ५, ६, १६, ३०, २५, ४८ ) तो शुद्ध प्राकृतके हैं और शेष संस्कृतके। इन ४८ पद्योंमें भरतका जो गुण-कीर्तन किया गया है, उससे भी उनके जीवनपर विस्तृत प्रकाश पड़ता है। हो सकता है कि उक्त सारा गुणानुवाद कवित्वपूर्ण होनेके कारण अतिशयोक्तिमय हो, परन्तु कविके स्वभावको देखते हुए उसमें सचाई भी कम नहीं जान पड़ती।

भरत सारी कलाओं और विद्याओंमें कुशल थे, प्राकृत कवियोंकी रचनाओंपर मुग्ध थे, उन्होंने सरस्वती सुरभिका दूध पिया था। लक्ष्मी उन्हें चाहती थी। वे सत्यप्रतिज्ञ और निर्मत्सर थे। युद्धोंका बोझ ढोते ढोते उनके कन्धे घिस गये थे,[4] अर्थात् उन्होंने अनेक लड़ाइयाँ लड़ी थीं।

बहुत ही मनोहर, कवियोंके लिए कामधेनु, दीन-दुखियोंकी आशा पूरी करनेवाले, चारों ओर प्रसिद्ध, परस्त्रीपराङ्मुख, सच्चरित्र, उन्नतमति और सुजनोंके उद्धारक थे[5]।

उनका रंग साँवला था, हाथीकी सूंडके समान उनकी भुजायें थीं, अङ्ग सुडौल थे,

---

१ सोऽयं श्रीभरतः कलङ्करहितः कान्तः सुवृत्तः शुचिः सज्ज्योतिर्मणिराकरो प्लुत इवानर्घ्यो गुणैर्भासते।
यशो येन पवित्रतामिह महामात्याह्वयं प्राप्तवान् श्रीमद्वल्लभराजशक्तिकटके यश्चाभवन्नायकः॥ प्र. ४६

२ हहो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्त्ता कोऽयं श्यामः प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः।
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवलयशो धौतधात्रीतलान्तः ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम्॥१५

३ देखो बाम्बेगजेटियर शिलालेख, इ. ए. जिल्द ४, पृ. ६।

४ बम्बईके सरस्वती भवनमें महापुराणकी जो बहुत ही अशुद्ध प्रति है उसकी ४२ वीं सन्धिके बाद एक 'हरति मनसो मोह' आदि अशुद्ध पद्य अधिक दिया हुआ है। जान पड़ता है अन्य प्रतियोंमें शायद इस तरहके और भी कुछ पद्य होंगे।

५ पोसियकलाविण्णाणकुसलु।
पाययकइकव्वरसावउद्धु संपीयउसरासइसुरहिदुद्धु॥
कमलच्छु अमच्छरु सच्चसंधु रणभरधुरधरणुग्घुट्ठखंधु।

६ सविलासविलासिणिहियहथेणु सुपसिद्धमहाकइकामधेणु।
काणीणदीणपरिपूरियासु जसपसरपसाहियदसदिसासु॥
परस्मणिपरम्मुहु सुद्धसीलु उण्णयमइ सुयणुद्धरणलीलु।

नेत्र सुन्दर थे और वे सदा प्रसन्नमुख रहते थे[1]।

भरत बहुत ही उदार और दानी थे। कविके शब्दोंमें बलि, जीमूत, दधीचि आदिके स्वर्गगत हो जानेसे त्याग गुण अगत्या भरत मन्त्रीमें ही आकर बस गया था[2]।

एक सूक्तिमें कहा है कि भरतके न तो गुणोंकी गिनती हो सकती है और न उनके शत्रुओंकी[3]। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि इतने बड़े पदपर रहनेवालेके, चाहे वह कितना ही गुणी और भला हो, शत्रु तो हो ही जाते है।

इस समयके विचारशील लोग जिस तरह मन्दिर आदि बनवाना छोड़कर विद्योपासनाकी आवश्यकता बतलाते हैं उसी तरह भव्यात्मा भरतने भी वापी, कूप, तडाग और जैनमन्दिर बनवाना छोडकर वह महापुराण बनवाया जो संसार-समुद्रको आरामसे तरनेके लिए नावतुल्य हुआ। भला उसकी वन्दना करनेको किसका हृदय नहीं चाहता[4]?

इस महाकविको आश्रय देकर और प्रेमपूर्ण आग्रहसे महापुराणकी रचना कराके सचमुच ही भरतने वह काम किया, जिससे कविके साथ उनकी भी कीर्ति चिरस्थायी हो गई। जैनमन्दिर और वापी, कूप, तडागादि तो न जाने कब नामशेष हो जाते।

पुष्पदन्त जैसे फक्कड, निर्लोभ, निरासक्त और संसारसे उद्विग्न कविसे महापुराण जैसा महान् काव्य बनवा लेना भरतका ही काम था। इतना बडा आदमी एक अकिंचनका इतना सत्कार, इतनी खुशामद करे और उसके साथ इतनी सहृदयताका व्यवहार करे, यह एक बड़ी भारी बात है।

पुष्पदन्तकी मित्रता होनेसे भरतका महल विद्याविनोदका स्थान बन गया। वहाँ पाठक निरन्तर पढ़ते थे, गायक गाते थे, और लेखक सुन्दर काव्य लिखते थे[5]।

## गृह-मन्त्री नन्न

ये भरतके पुत्र थे। नन्नको महामात्य नहीं किन्तु वल्लभनरेन्द्रका गृहमन्त्री लिखा है।

---

१ श्यामरुचि नयनसुभगं लावण्यप्रायमङ्गमादाय।
भरतच्छलेन सम्प्रति काम. कामाकृतिमुपेत ॥ प्र० श्लो० २०

२ देखो, पृष्ठ ३०३ के टिप्पणका पद्य।

३ घनभवल्ताश्रयाणामचलस्थितिकारिणा सुहुर्भ्रमताम्।
गणनैव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणा च ॥ प्र० श्लो० २७

४ वापीकूपतडागजैनवसतीस्त्यक्त्वेह यत्कारितं
भव्यश्रीभरतेन सुन्दरधिया जैनं पुराण महत्।
तत्कृत्वा प्रवसुत्तम रचितकृति (?) ससारवार्धे सुख
कोऽन्य (सत्सदृशो) स्ति कस्य हृदय त वन्दितु नेहते ॥ प्र० श्लो ४७

५ इह पठितमुदार वाचकैर्गीयमान इह लिखितमजस्र लेखकैश्चारु काव्य।
गतवति कविमित्रे मित्रता पुष्पदन्ते भरत तव गृहेऽस्मिन्भाति विद्याविनोद ॥ प्र० श्लो० ४३

उनके विषयमें कविने थोड़ा ही लिखा है परन्तु जो कुछ लिखा है, उससे मालूम होता है कि वे भी अपने पिताके सुयोग्य उत्तराधिकारी थे और कविका अपने पिताके ही समान आदर करते थे, तथा अपने ही महलमे रखते थे।

नागकुमारचरितकी प्रशस्तिके अनुसार वे प्रकृतिसे सौम्य थे, उनकी कीर्ति सारे लोकमें फैली हुई थी, उन्होने जिनमन्दिर बनवाये थे, वे जिन-चरणोंके भ्रमर थे और जिन-पूजामे निरत रहते थे, जिनशासनके उद्धारक थे, मुनियोंको दान देते थे, पापरहित थे, बाहरी और भीतरी शत्रुओंको जीतनेवाले थे, दयावान्, दीनोके शरण राजलक्ष्मीके क्रीडासरोवर, सरस्वतीके निवास, तमाम विद्वानोंके साथ विद्या विनोदमें निरत और शुद्ध हृदय थे।[1]

एक प्रशस्ति-पद्यमे पुष्पदन्तने नन्नको उनके पुत्रो सहित प्रसन्न रहनेका आशीर्वाद दिया है।[2] इससे मालूम होता है कि उनके अनेक पुत्र थे। पर उनके नामोका कहीं उल्लेख नहीं है।

कृष्णराज ( तृतीय ) के तो वे गृहमत्री थे ही, परन्तु उनकी मृत्युके बाद खोट्टिगदेवके और शायद उनके उत्तराधिकारी कर्क ( द्वितीय ) के भी वे मत्री रहे होंगे। क्योंकि यशोधरचरितके अन्तमें कविने लिखा है कि जिस नन्नने बड़े भारी दुष्कालके समय—जब कि सारा जनपद नीरस हो गया था, दुस्सह दुःख व्याप्त हो रहा था, जगह-जगह मनुष्योकी खोपड़ियाँ और कङ्काल फैले पड़े थे, सर्वत्र रङ्क ही रङ्क दिखलाई पड़ते थे,—सरस भोजन, सुन्दर वस्त्र और ताम्बूलादिसे मेरी खातिर की, वह चिरायु हो[3]। निश्चय ही मान्यखेटकी लूट और बरबादीके बादकी दुर्दशाका यह चित्र है और तब खोट्टिगदेवकी मृत्यु हो चुकी थी।

---

१ सुहतुंगभवणवावारभारणिव्वहणवीरधवलस्स।
कौंडिल्लगोत्तणहससहरस्स पयईए सोमस्स ॥ १
कुंदव्वागब्भसमुब्भवस्स सिरिभरहभट्टतणयस्स।
जसपसरभरियभुवणोयरस्स जिणचरणकमलभसलस्स ॥ २
अणवरयरइयवरजिणहरस्स जिणभवणपूयणिरयस्स ॥
जिणसासणायमुद्धारणस्स मुणिदिण्णदाणस्स ॥ ३
कलिमलकलंकपरिवज्जियस्स जियदुविहवइरिणियरस्स ॥
कारुण्णकंदणवजलहरस्स दीणजणसरणस्स ॥ ४ ॥
णिवलच्छीकीलासरवरस्स वाएसरिणिवासस्स।
णिस्सेसविउसविज्जाविणोयणिरयस्स सुद्धहियस्स ॥ ५ ॥

२ स श्रीमानिह भूतले सह सुतैर्नन्नाभिधो नन्दतात् ॥ यशो २

३ जणवयनीरसि, दुरियमलीमसि। कइणिंदायरि दुस्सहे दुहयरि।
पडियकवालइ, णरकंकालइ। बहुरंकालइ अइदुक्कालइ।
पवरागारि सरसाहारि सण्हि। चेलि, वरतंबोलि।
महु उवयारिउ पुण्णि पेरिउ। गुणभत्तिल्लउ णण्णु महल्लउ। होउ चिराउसु यशो ४-३१

## कविके कुछ परिचित जन

पुष्पदन्तने अपने ग्रन्थोंमें भरत और नन्नके सिवाय कुछ और लोगोंका भी उल्लेख किया है। मेलपाटीमें पहुँचनेपर सबसे पहले उन्हें दो पुरुष मिले जिनके नाम अम्मइय और इन्द्राय थे। वे वहाँके नागरिक थे और इन्होंने भरत मन्त्रीकी प्रशंसा करके उनके यहाँ नगरमें चलनेका आग्रह किया था। उत्तरपुराणके अन्तमें सबकी शांति-कामना करते हुए उन्होंने देविल्ल, भोगल्ल, सोहण, गुणवर्म, दंगइय और संतइयका उल्लेख किया है। इनमेंसे देविल्ल शायद भरतका पुत्र था जिसने महापुराणका सारी पृथिवीमें प्रसार किया। भोगल्लको चतुर्विधदानदाता, भरतका परम मित्र, अनुपमचरित्र और विस्तृतयशवाला बतलाया है। शोभन और गुणवर्मको निरन्तर जिनधर्मका पालनेवाला कहा है। नागकुमारचरितके अनुसार ये महोदधिके शिष्य थे और इन्होंने कविसे नागकुमारचरितकी रचना करनेकी प्रेरणा की थी। दंगइय और संतइयकी भी शान्ति-कामना की है। नागकुमारचरितमें दंगइयको आशीर्वाद दिया है कि उनका रत्नत्रय विशुद्ध हो। नाइल्ल और सीलइयका भी उल्लेख है। उन्होंने भी नागकुमारचरित रचनेका आग्रह किया था।

## कविके समकालीन राजा

महापुराणकी उत्थानिकामें कहा है कि इस समय 'तुडिगु महानुभाव' राज्य कर रहे हैं। इस 'तुडिगु' शब्दपर टिप्पण-ग्रन्थमें 'कृष्णराज' टिप्पण दिया हुआ है। कृष्णराज दक्षिणके सुप्रसिद्ध राष्ट्रकूटवंशमें हुए हैं जो अपने समयके महान् सम्राट् थे। 'तुडिगु' उनका घरू प्राकृत नाम था। इस तरहके घरू नाम राष्ट्रकूट और चालुक्य वंशके प्राय सभी राजाओंके मिलते हैं[1]। वल्लभनरेन्द्र, वल्लभराय, शुभतुंगदेव और कण्हराय नामसे भी कविने उनका उल्लेख किया है।

शिलालेखों और दानपत्रोंमें अकालवर्ष, महाराजाधिराज, परमेश्वर, परममाहेश्वर, परमभट्टारक, पृथिवीवल्लभ, समस्तभुवनाश्रय आदि उपाधियाँ उनके लिए प्रयुक्त की गई हैं।

वल्लभराय पदवी पहले दक्षिणके चौलुक्य राजाओंकी थी, पीछे जब उनका राज्य राष्ट्रकूटोंने जीत लिया तब इस वंशके राजा भी इसका उपयोग करने लगे[2]।

भारतके प्राचीन राजवंश (तृ० भा० पृ० ५६) में इनकी एक पदवी 'कन्धारपुरवराधीश्वर' लिखी है। परन्तु हमारी समझमें वह भ्रमवश लिखी गई है। वास्तवमें 'कालिंजरपुरवराधीश्वर' होनी चाहिए। क्योंकि उन्होंने चेदिके कलचुरि-नरेश सहस्रार्जुनको जीता था और कालिंजरपुर चेदिका मुख्य नगर था। दक्षिणका कलचुरि राजा बिज्जल भी अपने नामके साथ 'कालिंजर-पुरवराधीश्वर' पद लगाता था।

---

१ जैसे गोज्जिग, बद्दिग, पुट्टिग, खोट्टिग आदि।

२ अरब लेखकोंने मानकिरके बल्हरा नामक बलाढ्य राजाओंका जो उल्लेख किया है, वह मान्यखेटके 'वल्लभराज' पद धारण करनेवाले राजाओंको ही लक्ष्य करके किया है।

अमोघवर्ष तृतीय या बद्दिगके तीन पुत्र थे—तुडिगु या कृष्ण तृतीय, जगत्तुग और खोट्टिगदेव। कृष्ण सबसे बड़े थे जो अपने पिताके बाद गद्दीपर बैठे और चूँकि दूसर जगत्तुग उनसे छोटे थे तथा उनके राज्य कालमे ही स्वर्गगत हो गये थे, इस लिए तीसरे पुत्र खोट्टिगदेव गद्दीपर बैठे। कृष्णके पुत्रका इस बीच देहान्त हो गया था और पौत्र भी छोटा था, इसलिए खोट्टिगदेवको अधिकार मिला।

कृष्ण तृतीय राष्ट्रकूट वशके सबसे अधिक प्रतापी और सार्वभौम राजा थे। इनके पूर्वजोंका साम्राज्य उत्तरमे नर्मदा नदीसे लेकर दक्षिणमे मैसूर तक फैला हुआ था जिसमे सारा गुजरात, मराठी सी० पी०, और निजाम राज्य शामिल था। मालवा और बुन्देलखण्ड भी उनके प्रभावक्षेत्रमें थे। इस विस्तृत साम्राज्यको कृष्ण तृतीयने और भी बढ़ाया और दक्षिणका सारा अन्तरीप भी अपने अधिकारमें कर लिया। कन्हाडके ताम्रपत्रोंके अनुसार उन्होंने पाण्ड्य और केरलको हराया, सिंहलसे कर वसूल किया और रामेश्वरमें अपनी कीर्तिवल्लरीको लगाया। ये ताम्रपत्र मई सन् ९५९ ( श० स० ८८१ ) के हैं और उस समय लिखे गये हैं जब कृष्णराज अपने मेल्पाटी नगरके सेना-शिविरमें ठहरे हुए थे और अपना जीता हुआ राज्य और धन-रत्न अपने सामन्तों और अनुगतोको उदारतापूर्वक बाँट रहे थे[१]। इनके दो ही महीने बाद लिखी हुई श्रीसोमदेवसूरिकी यशस्तिलक-प्रशस्तिसे भी इसकी पुष्टि होती है[२]। इस प्रशस्तिमें उन्हें पाण्ड्य, सिंहल, चोल, चेर आदि देशोंको जीतनेवाला लिखा है।

देवलीके शिलालेखसे मालूम होता है कि उन्होने कांचीके राजा दन्तिगको और वप्पुकको मारा, पल्लव-नरेश अन्तिगको हराया, गुर्जरोंके आक्रमणसे मध्य भारतके कलचुरियोंकी रक्षा की और अन्य शत्रुओंपर विजय प्राप्त की। हिमालयसे लेकर लका और पूर्वसे लेकर पश्चिम समुद्र तकके राजा उनकी आज्ञा मानते थे। उनका साम्राज्य गगाकी सीमाको भी पार कर गया था।

चोलदेशका राजा परान्तक बहुत महत्त्वाकाक्षी था। उसके कन्याकुमारीमें मिले हुए शिलालेखमें[४] लिखा है कि उसने कृष्ण तृतीयको हराकर वीर चोलकी पदवी धारण की। किस जगह हराया और कहाँ हराया, यह कुछ नहीं लिखा। बल्कि इसके विरुद्ध ऐसे अनेक प्रमाण मिले हैं जिनसे सिद्ध होता है कि ई० स० ९४४ ( श० ८६६ ) से लेकर कृष्णके राज्य कालके अन्त तक चोलमण्डल कृष्णके ही अधिकारमें रहा। तब उक्त लेखमें इतनी ही

१ एपिग्राफिया इडिका जिल्द ४ पृ २७८।
२ व दीणदिण्णधण-कणयपयरु महि परिममतु मेलाडिणयरु।
३ ' पाण्ड्यसिंहल-चोल-चेरमप्रभृतीन्महीपतीन्प्रसाध्य "।
४ जर्नल बाम्बे ब्राच रा ए सो जिल्द १८, पृ २३९ और लिस्ट आफ इन्स्क्रप्शन्स सी पी० एण्ड बरार, पृ० ८१।
५ त्रावणकोर आर्कि सीरीज जि ३, पृ १४३, श्लोक ४८।

सचाई हो सकती है कि सन् ९४४ के आसपास वीरचोलको राष्ट्रकूटोंके साथकी लड़ाईमें थोड़ी-सी अल्पकालिक सफलता मिल गई होगी।

दक्षिण अर्काट जिलेके सिद्धलिंगमाडम स्थानके शिलालेखमें[1] जो कृष्ण तृतीयके पाँचवें राज्य-वर्षका है उनके द्वारा कांची और तंजोरके जीतनेका उल्लेख है और उत्तरी अर्काटके शोलापुरम स्थानके ई० स० ९४९-५० (श० स० ८७१) के शिलालेखमें[2] लिखा है कि उस साल उन्होंने राजादित्यको मारकर तोडयि-मंडल या चोलमण्डलमें प्रवेश किया। यह राजादित्य परान्तक या वीरचोलका पुत्र था और चोल-सेनाका सेनापति था। कृष्ण तृतीयके बहनोई और सेनापति भूतुगने इसे इसके हाथीके हौदेपर आक्रमण करके मारा था और इसके उपलक्ष्में उसे वनवासी प्रदेश उपहार मिला था।

ई० सन् ९१५ (शक स० ८१७) में राष्ट्रकूट इन्द्र (तृतीय) ने परमार राजा उपेन्द्र (कृष्ण) को जीता था और तबसे कृष्ण तृतीय तक परमार राजे राष्ट्रकूटोंके माडलिक थे। उस समय गुजरात भी परमारोंके अधीन था।

परमारोंमें सीयक या श्रीहर्ष राजा बहुत पराक्रमी था। जान पड़ता है इसने कृष्ण तृतीयके आधिपत्यके विरुद्ध सिर उठाया होगा और इसी कारण कृष्णको उसपर चढ़ाई करनी पड़ी होगी और उसे जीता होगा। इस अनुमानकी पुष्टि श्रवण-बेल्गोलके मारसिंहके शिलालेखसे[3] होती है जिसमें लिखा है कि उसने कृष्ण तृतीयके लिए उत्तरीय प्रान्त जीते और बदलेमें उसे 'गुर्जर-राज'का खिताब मिला। इसी तरह होलकेरीके[4] ई० स० ९६५ और ९६८ के शिलालेखोंमें मारसिंहके दो सेनापतियोंको 'उज्जयिनी-भुजग' पदको धारण करनेवाला बतलाया है। ये गुर्जर-राज और उज्जयिनी-भुजग पद स्पष्ट ही कृष्णद्वारा सीयकके गुजरात और मालवेके जीते जानेका संकेत करते हैं।

सीयक उस समय तो दब गया, परन्तु ज्यों ही पराक्रमी कृष्णकी मृत्यु हुई कि उसने पूरी तैयारीके साथ मान्यखेटपर धावा बोल दिया और खोट्टिगदेवको परास्त करके मान्यखेटको बुरी तरह लूटा और बरबाद किया।

पाइय-लच्छी नाममालाके कर्त्ता धनपालके कथनानुसार यह लूट वि० स० १०२९ (श० स० ८९४) में हुई और शायद इसी लड़ाईमें खोट्टिगदेव मारा गया। क्योंकि इसी साल उत्कीर्ण किया हुआ खरडाका शिलालेख[5] खोट्टिगदेवके उत्तराधिकारी कर्क (द्वितीय) का है।

कृष्ण तृतीय ई० स० ९३९ (श० स० ८६१) के दिसम्बरके आसपास गद्दीपर

---

१ मद्रास एपिग्राफिकल कलेक्शन १९०९ न० ३७५। २ ए० इ० जि० ५, पृ० १९५। ३ ए० इ० जि० १९, पृ० ८३। ४ आर्किलाजिकल सर्वे आफ साउथ इंडिया जि० ४, पृ० २०१। ५ ए० इ० जि० ५, पृ० १७९। ६ ए० इ० जि० ११, न० २३-२३। ७ ए० इ० जि० १२, पृ० २६३।

बैठे होंगे। क्या कि इस वर्षके दिसम्बरमें इनके पिता बद्दिग जीवित थे और कोळ्ळगल्लुका शिलालेख फाल्गुन सुदी ६ शक स० ८८९ का है जिसमें लिखा है कि कृष्णकी मृत्यु हो गई और खोट्टिगदेव गद्दीपर बैठा। इससे उनका २८ वर्षतक राज्य करना सिद्ध होता है, परन्तु किलूर (द० अर्काट) के वीरट्टनेश्वर मन्दिरका शिलालेख उनके राज्यके ३० वें वर्षका लिखा हुआ है। विद्वानोंका खयाल है कि ये राजकुमारावस्थामें, अपने पिताके जीते जी ही राज्यका कार्य सँभालने लगे थे, इसीसे शायद उस समयके दो वर्ष उक्त तीस वर्षके राज्य-कालमें जोड़ लिये गये हैं।

राष्ट्रकूटों और कृष्ण तृतीयका यह परिचय कुछ विस्तृत इस लिए देना पड़ा जिससे पुष्पदन्तके ग्रंथोंमें जिन जिन बातोंका जिक्र है, वे ठीक तौरसे समझमें आ जायँ और समय निर्णय करनेमें भी सहायता मिले।

## समय विचार

महापुराणकी उत्थानिकामें कविने जिन सब ग्रंथों और ग्रन्थकर्त्ताओंका उल्लेख किया है, उनमें सबसे पिछले ग्रन्थ धवल और जयधवल हैं। पाठक जानते हैं कि वीरसेन स्वामीके शिष्य जिनसेनने अपने गुरुकी अधूरी छोड़ी हुई टीका जयधवलाको श० स० ७५९ में राष्ट्रकूटनरेश अमोघवर्ष (प्रथम) के समयमें समाप्त की थी। अतएव यह निश्चित है कि पुष्पदन्त उक्त संवत्के बाद ही किसी समय हुए हैं, पहले नहीं।

रुद्रटका समय श्रीयुत काणे और डॉ० दे के अनुसार ई० सन् ८००–८५० के अर्थात् श० स० ७२२ और ७७२ के बीच है। इससे भी लगभग उपर्युक्त परिणाम ही निकलता है।

अभी हाल ही डा० ए० एन० उपाध्येको अपभ्रंश भाषाका 'धम्मपरिक्खा' नामका

---

१ मद्रास ए क १९१३ न २१६। २ मद्रास एपिग्राफिक कलेक्शन सन् १९ १, न २३२।

३—अकलंक कपिल (सांख्यकार) कणचर या कणाद (वैशेषिकदर्शनकर्त्ता) द्विज (वेदपाठक), सुगत (बुद्ध) पुरंदर (चार्वाक) दन्तिल, विशाख (संगीतशास्त्रकर्त्ता) भरत (नाट्यशास्त्रकार), पतञ्जलि भारवि व्यास, कोहल (कूष्माण्ड कवि) चतुर्मुख स्वयंभु श्रीहर्ष (हर्षवर्द्धन) द्रुहिण (भरतने अपने नाट्यशास्त्रमें द्रुहिण महाभागका उल्लेख किया है जो आठ रस मानते थे।) ईशान, बाण, धवल जयधवल-सिद्धान्त, रुद्रट और यशश्चिह्न इतनोंका उल्लेख किया गया है। इनमेंसे अकलंक, चतुर्मुख और स्वयंभु जैन हैं। अकलंक देव, जयधवलाकार जिनसेनसे पहले हुए हैं। चतुर्मुख और स्वयंभुका ठीक समय अभी तक निश्चित नहीं हुआ है परन्तु स्वयंभु अपने पउमचरियमें आचार्य रविषेणका उल्लेख करते हैं जिन्होंने वि स ७३३ में पद्मपुराण लिखा था। इससे उनसे पीछेके हैं। उन्होंने चतुर्मुखका भी स्मरण किया है। स्वयंभु भी अपभ्रंश भाषाके महाकवि थे। इनके पउमचरिउ (पद्मचरित) और अरिट्ठनेमिचरिउ (हरिवंशपुराण) उपलब्ध हैं। उनका स्वयंभु छन्द नामका एक छन्दशास्त्र भी है। 'पंचमिचरिय' नामका ग्रंथ भी उनका बनाया हुआ है जो अभी तक कहीं प्राप्त नहीं हुआ है। उनका कोई अपभ्रंश भाषाका व्याकरण भी था। ये स्वयंभु यापनीय संघके अनुयायी थे ऐसा महापुराण टिप्पणसे मालूम होता है।

४ पउ झुल्लिउ आयमु सद्दधामु सिद्धंतु धवलु जयधवलु णामु।

ग्रन्थ मिला है जिसके कर्त्ता बुध ( पंडित ) हरिषेण हैं, जो धक्कडवंशीय गोवर्द्धनके पुत्र और सिद्धसेनके शिष्य थे। वे मेवाड़ देशके चित्तौड़के रहनेवाले थे और उसे छोड़कर कार्यवश अचलपुर गये थे[1]। वहाँपर उन्होंने वि० सं० १०४४ मे अपना यह ग्रन्थ समाप्त किया थी[2]। इस ग्रन्थके प्रारम्भमें अपभ्रंशके चतुर्मुख, स्वयंभु और पुष्पदन्त इन तीन महाकवियोंका स्मरण किया गया है[3]। इससे सिद्ध है कि वि० सं० १०४४ या श० सं० ९०९ से पहले ही पुष्पदन्त एक महाकविके रूपमे प्रसिद्ध हो चुके थे। अर्थात् पुष्पदन्तका समय ७५९ और ९०९ के बीच होना चाहिए। न तो उनका समय श० सं० ७५९ के पहले जा सकता है और न ९०९ के बाद।

अब यह देखना चाहिए कि वे श०सं० ७५९ (वि०सं० ८९४) से कितने बाद हुए हैं।

कविने अपने ग्रन्थोंमें तुडिगु[4], शुभतुंग[5], वल्लभनरेन्द्र[6] और कण्हरायका उल्लेख किया है और इन सब नामोंपर ग्रन्थोंकी प्रतियों और टिप्पण-ग्रन्थोंमें ' कृष्णराज. ' टिपप्णी दी है। इसका अर्थ यह हुआ कि ये सभी नाम एक ही राजाके है। वल्लभराय या वल्लभनरेन्द्र राष्ट्रकूट राजाओंकी सामान्य पदवी थी, इसलिए यह भी मालूम हो गया कि कृष्ण राष्ट्रकूटवंशके राजा थे।

राष्ट्रकूटोंकी राजधानी पहले मयूरखंडी ( नासिक ) में थी, पीछे अमोघवर्ष ( प्रथम ) ने श० सं० ७३७ मे उसे मान्यखेटमें प्रतिष्ठित की। पुष्पदन्तने नागकुमारचरितमें कहा है कि कण्हराय ( कृष्णराज ) की हाथकी तलवाररूपी जलवाहिनीसे जो दुर्गम है और जिसके धवलगृहोंके शिखर मेघावलीसे टकराते हैं, ऐसी बहुत बड़ी मान्यखेट नगरी है[6]।

---

१ इह मेवाडदेसे जणसंकुले सिरिउजपुरणिग्गयधक्कडकुले।
गोवड्ढणु णामें उप्पण्णओ जो सम्मत्तरयणसंपुण्णओ ॥
तहो गोवड्ढणासु पिय गुणवइ जा जिणवरपय णिच्च वि पणवइ।
ताए जणिउ हरिसेणणाम सुओ जो संजाउ विबुहकइविस्सुओ ॥
सिरिचित्तउडु चंएवि अचलउरहो गउ णियकज्जें जिणहरपउरहो।
तहिँ छंदालंकारपसाहिइ धम्मपरिक्ख एह तें साहिइ ॥

२ विक्कमणिवपरियत्तइ कालए ववगए वरिससहस चउतालए।

३ चउमुहु कव्वविरयणे सयंभु वि पुप्फयंतु अण्णाणणिसंभु वि।
तिण्ण वि जोग्ग जेण तं सासइ चउमुहमुहे थिय ताम सरासइ।
जो सयंभु सो देउपहाणउ अह कह लोयालोय वियाणउ।
पुप्फयंतु णवि माणुसु वुच्चइ जो सरसइए कया वि ण मुच्चइ।

४ भुवणेक्करामु रायाहिराउ जहिँ अच्छइ ' तुडिगु ' महाणुभाउ। म० पु० १-३-३

५ सुहतुंगदेवकमकमलभसलु णीसेसकलाविण्णाणकुसलु। म० पु० १-५-२

६ वल्लभणरिंदघरमहयरासु।—य० च० का प्रारंभ।

६ सिरिकण्हरायकरयलणिहियअसिजलवाहिणि दुग्गयरि।
धवलहरसिहरिहयमेहउलि पविउल मण्णखेडणयरि ॥

राष्ट्रकूटवशमें कृष्ण नामके तीन राजा हुए है, एक तो वे जिनकी उपाधि शुभतुग थी। परन्तु उनके समय तक मान्यखेट राजधानी ही नहीं थी, इसलिए पुष्पदतका मतलब उनसे नहीं हो सकता।

द्वितीय कृष्ण अमोघवर्ष (प्रथम) के उत्तराधिकारी थे, जिनके समयमें गुणभद्राचार्यने श० स० ८२० में उत्तरपुराणकी समाप्ति की थी और जिन्होंने श० स० ८३३ तक राज्य किया है। परन्तु इनके साथ उन सब बातोका मेल नही खाता जिनका पुष्पदन्तने उल्लेख किया है। इसलिए कृष्ण तृतीयको ही हम उनका समकालीन मान सकते है क्योंकि—

१—जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है चोलराजाका सिर कृष्णराजने कटवाया थाँ, इसके प्रमाण इतिहासमें मिलते हैं और चोल देशको जीत कर कृष्ण तृतीयने अपने अधिकारमें कर लिया था। २—यह चोलनेरश 'परान्तक' ही मालूम होता है जिसने वीरचोलकी पदवी धारण की थी।

३—धारानरेश-द्वारा मान्यखेटके लूटे जानेका जो उल्लेख पुष्पदन्तने किया है, वह भी कृष्ण द्वितीयके साथ मेल नहीं खाता। यह घटना कृष्णराज तृतीयकी मृत्युके बाद खोट्टिगदेवके समय की है और इसकी पुष्टि अन्य प्रमाणोसे भी होती है। धनपालन अपनी 'पाइयलच्छी (प्राकृतलक्ष्मी) नाममाला'में लिखा है कि वि० स० १०२९ मे मालव नरेन्द्रने मान्यखेटको लूटाँ।

मान्यखेटको किस मालव-राजाने लूटा, इसका पता परमार राजा उदयादित्यके समयके उदयपुर (ग्वालियर) के शिलालेखमें[४] परमार राजाओंकी जो प्रशस्ति दी है उससे लगता है। उसके १२ वें पद्यमें लिखा है कि हर्षदेवने खोट्टिगदेवकी राजलक्ष्मीको युद्धमें छीन लियाँ।

ये हर्षदेव ही धारानरेश थे, जो सीयक (द्वितीय) या सिंहभट भी कहलाते थे, और जैसा कि पहले बताया जा चुका है, जिनपर कृष्ण तृतीयने चढाई की थी। खोट्टिगदेव कृष्ण तृतीयके भाई और उत्तराधिकारी थे।

४—महापुराणकी रचना जिस सिद्धार्थ सवत्सरमें शुरू की गई थी, उसी सवत्सरमें

१ उव्वद्धजूडु भूमगभीसु तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु।

२ दीनानाथधन सदाबहुजन प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुर पुरदरपुरीलीलाहर सुन्दरम्।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्ध विदग्धप्रिय
क्वेदानीं वसतिं करिष्यति पुन श्रीपुष्पदन्त कवि ॥ म श्लो ३६

३—विक्कमकालस्स गए अउणुत्तीसुत्तर सहस्सम्मि।
मालवणरिंदधाडीए लूडिए मण्णखेडम्मि ॥ २७६ ॥

४ एपिग्राफिआ इंडिका जिल्द १, पृ २२६।

५—श्रीहर्षदेव इति खोट्टिगदेवलक्ष्मीं जग्राह यो युधि नगादसमप्रताप।

सोमदेवसूरिने अपना यशस्तिलक चम्पू समाप्त किया था और उस समय कृष्ण तृतीयका पड़ाव मेलपाटीमें था। पुष्पदन्तने भी अपने ग्रंथ-प्रारंभके समय कृष्णराजका मेलपाटीमें रहनेका उल्लेख किया है। साथ ही यशस्तिलककी प्रशस्तिमे उनको चोल आदि देशोंका जीतनेवाला भी लिखा है[1]। ऐसी दशामे पुष्पदन्तका कृष्ण तृतीयके समयमे होना निःसशयरूपसे सिद्ध हो जाता है।

पहले उक्त मेलपाटीमे ही पुष्पदन्त पहुँचे थे, सिद्धार्थ सवत्सरमें ही उन्होंने अपना महापुराण प्रारभ किया था और यह सिद्धार्थ श० स० ८८१ ही था। मेलपाटी या मेलाडिमें श० ८८१ में कृष्णराज थे, इसके और भी प्रमाण मिले हैं जो ऊपर दिये जा चुके हैं।

इन सब प्रमाणोंसे हम इस निष्कर्षपर पहुँचते हैं कि श० स० ८८१ मे पुष्पदन्त मेलपाटीमें भरत महामात्यसे मिले और उनके अतिथि हुए। इसी साल उन्होने महापुराण शुरू करके उसे श० स० ८८७ में समाप्त किया। इसके बाद उन्होंने नागकुमार-चरित और यशोधर-चरित बनाये। यशोधर-चरितकी समाप्ति उस समय हुई जब मान्यखेट लूटा जा चुका था। यह श० स० ८९४ के लगभगकी घटना है। इस तरह वे ८८१ से लेकर कमसे कम ८९४ तक, लगभग तेरह वर्ष, मान्यखेटमे महामात्य भरत और नन्नके सम्मानित अतिथि होकर रहे, यह निश्चित है। उसके बाद वे और कब तक जीवित रहे, यह नहीं कहा जा सकता।

बुध हरिषेणकी धर्मपरीक्षा मान्यखेटकी लूटके कोई पन्द्रह वर्ष बादकी रचना है। इतने थोड़े ही समयमें पुष्पदन्तकी प्रतिभाकी इतनी प्रसिद्धि हो चुकी थी। हरिषेण कहते हैं कि पुष्पदंत मनुष्य थोड़े ही हैं, उन्हें सरस्वती देवी कभी नहीं छोड़ती, सदा साथ रहती है।

## एक शंका

महापुराणकी ५० वीं सन्धिके प्रारम्भमें जो 'दीनानाथधन' आदि सस्कृत पद्य है और पहले उद्धृत किया जा चुका है, और जिसमें मान्यखेटके नष्ट होनेका सकेत है, वह श० स० ८९४ के बादका है और महापुराण ८८७ में ही समाप्त हो चुका था। तब शका होती है कि वह उसमें कैसे आया?

इसका समाधान यह है कि उक्त पद्य ग्रन्थका अविच्छेद्य अग नहीं है। इस तरहके अनेक पद्य महापुराणकी भिन्न भिन्न सधियोंके प्रारम्भमें दिये गये हैं। ये सभी मुक्तक हैं, भिन्न भिन्न समयमें रचे जाकर पीछेसे जोड़े गये हैं और अधिकाश महामात्य भरतकी प्रशसाके हैं। ग्रन्थ-रचना-क्रमसे जिस तिथिको जो सधि प्रारम्भ की गई, उसी तिथिको उसमें

१—"शकनृपकालातीतसवत्सरशतेष्वष्टस्वेकाशीत्यधिकेषु गतेषु अकतः ८८१ सिद्धार्थसवत्सरान्तर्गत चैत्रमासमदनत्रयोदश्या पाण्ड्य सिंहल-चोल-चेरमप्रभृतीन्महीपतीन्प्रसाध्य मेलपाटीप्रवर्द्धमानराज्यप्रभावे श्रीकृष्ण-राजदेवे सति तत्पादपद्मोपजीविन समधिगतपचमहाशब्दमहासामन्ताधिपतेश्चालुक्यकुलजन्मन सामन्तचूडामणेः श्रीमदरिकेसरिण. प्रथमपुत्रस्य श्रीमद्वद्दिगराजस्य लक्ष्मीप्रवर्धमानवसुधरायां गगधारायां विनिर्मापितमिद काव्यमिति।"

दिया हुआ पद्य निर्मित नहीं हुआ है। यही कारण है कि सभी प्रतियोंमें ये पद्य एक ही स्थानपर नहीं मिलते हैं। एक पद्य एक प्रतिमे जिस स्थानपर है, दूसरी प्रतिमें उस स्थानपर न होकर किसी और ही स्थानपर है। किसी किसी प्रतिमें उक्त पद्य न्यूनाधिक भी है। अभी बम्बईके सरस्वतीभवनकी प्रतिमें हमें एक पूरा पद्य[1] और एक अधूरा पद्य अधिक भी मिला है[2] जो अन्य प्रतियोंमें नहीं देखा गया।

यशोधरचरितकी दूसरी, तीसरी और चौथी सन्धियोंमें भी इसी तरहके तीन संस्कृत पद्य नन्नकी प्रशंसाके हैं जो अनेक प्रतियोंमें हैं ही नहीं। इससे यही अनुमान करना पड़ता है कि ये सभी या अधिकांश पद्य भिन्न भिन्न समयोंमे रचे गये हैं और प्रतिलिपियाँ कराते समय पीछेसे जोड़े गये हैं। गरज यह कि 'दीनानाथधनं' आदि पद्य मान्यखेटकी लूटके बाद ही लिखा गया है और उसके बाद जो प्रतियाँ लिखी गईं, उनमें जोड़ा गया है। उसके पहले जो प्रतियाँ लिखी जा चुकी होंगी उनमें यह न होगा।

इस प्रकारकी एक प्रति महापुराणके सम्पादक डा० पी० एल० वैद्यको नाँदणी (कोल्हापुर) के श्री तात्या साहब पाटीलसे मिली है जिसमें उक्त पद्य नहीं है[3]। ८९४ के पहलेकी लिखी हुई इस तरहकी और भी प्रतियोंकी प्रतिलिपियाँ मिलनेकी सम्भावना है।

## एक और शंका

'महाकवि पुष्पदन्त और उनका महापुराण' शीर्षक लेख मैंने 'भाण्डारकर इन्स्टिट्यूट' पूनाकी नि० सं० १६३० की लिखी हुई जिस प्रतिके आधारसे लिखा था उसमें प्रशस्तिकी तीन पंक्तियाँ इस रूपमें हैं—

पुप्फयंतकइणा धुयपंकें जइ अहिमाणमेरुणामंके।
कयउ कव्वु भत्तिए परमत्थें छसयछडोत्तरकयसामत्थे ॥
कोहणसंवच्छरे आसाढए, दहमए दियहे चंदरुइरूढए।

इसके 'छसयछडोत्तरकयसामत्थें' पदका अर्थ उस समय यह किया गया था कि यह ग्रंथ शकसंवत् ६०६ में समाप्त हुआ[4]। परन्तु पीछे जब गहराईसे विचार किया गया तब पता लगा कि ६०६ संवत्का नाम क्रोधन हो ही नहीं सकता, चाहे वह शक संवत् हो, विक्रम संवत् हो, गुप्त संवत् हो, या कलचुरि संवत् हो। इसलिए उक्त पाठके सही होनेमें

१ हरति मनसो मोहं द्रोह महाप्रियजन्तुज भवतु भविनां दंभारंभ प्रशान्तिकृतो—।
जिनवरकथाग्रन्थप्रस्तागमितस्त्वया कथय कमय शोभस्तीते गुणान् भरतप्रभो।
यह पद्य बहुत ही अशुद्ध है। —४२ वीं सन्धिके बाद
२ आकल्पं भरतेश्वरस्तु जयतात्येनादरात्कारिता।
भेडाय भुवि मुक्तये जिनकथा तत्त्वामृतस्यन्दिनी। —४१ वीं सन्धिके बाद
३ देखो, महापुराण प्र० सं०, डा० पी० एल० वैद्य-लिखित भूमिका पृ० १७।
४ स्व० बाबा दुलीचन्दजीकी ग्रन्थ-सूचीमें भी पुष्पदन्तका समय ६०६ दिया हुआ है।

सन्देह होने लगा। 'छसयछडोत्तर' तो खैर ठीक, पर 'कयसामत्थे' का अर्थ दुरूह हो गया। तृतीयान्त पद होनेके कारण उसे कविका विशेषण बनानेके सिवाय और कोई चारा नहीं था। यदि बिन्दी निकालकर उसे सप्तमी समझ लिया जाय, तो भी 'कृतसामर्थ्ये' का कोई अर्थ नहीं बैठता। अतएव शुद्ध पाठकी खोज की जाने लगी।

सबसे पहले प्रो० हीरालालजी जैनने अपने 'महाकवि पुष्पदन्तके समयपर विचार' लेखमें बतलाया कि कारजाकी प्रतिमें उक्त पाठ इस तरह दिया हुआ है—

पुप्फयतकइणा धुयपकें जइ अहिमाणमेरुणामके।
कयउ कव्वु भत्तिए परमत्थे जिणपयपकयमउलियहत्थें।
कोहणसवच्छरे आसाढए दहमइ दिवहे चदरुइरूढए॥

अर्थात् क्रोधन सवत्सरकी असाढ सुदी १० को जिन भगवानके चरण-कमलोंके प्रति हाथ जोड़े हुए अभिमानमेरु, धूतपक (धुल गये है पाप जिसके), और परमार्थी पुष्पदन्त कविने भक्तिपूर्वक यह काव्य बनाया।

यहाँ बम्बईके सरस्वती-भवनमे जो प्रति (१९३ क) है, उसमे भी यही पाठ है और हमारा विश्वास है कि अन्य प्रतियोमे भी यही पाठ मिलेगा।

ऐसा मालूम होता है कि पूनेवाली प्रतिके अर्द्धदग्ध लेखकको उक्त स्थानमे सिर्फ मिती गिरी देखकर सवत्-सख्या देनेकी जरूरत महसूस हुई और उसकी पूर्ति उसने अपनी विलक्षण बुद्धिसे स्वयं कर डाली।

यहाँ यह बात नोट करने लायक है कि कविने सिद्धार्थ सवत्सरमे अपना ग्रन्थ प्रारम्भ किया और क्रोधन सवत्सरमें समाप्त। न वहाँ शक सवत्की सख्या दी और न यहाँ।

## तीसरी शंका

लगभग पन्द्रह वर्ष पहले प० जुगलकिशोरजी मुख्तारको शका हुई थी कि पुष्पदन्त प्राचीन नहीं है। उन्होंने इस विषयमें एक लेख[1] भी लिखा था और उसमें नीचे लिखी प्रशस्तिके आधारपर 'जसहरचरिउ' की रचनाका समय वि० स० १३६५ बतलाया था।

किउ उवरोहें जस्स कइयइ एउ भवतर।
तहो भव्वहु णामु पायडमि पयडउ धर॥ २९॥
चिरु पट्टणे छगेसाहु साहु तहो सुउ खेला गुणवतु साहु।
तहो तणुरुहु वीसलु णाम साहु वीरो साहुणियहि सुलहु णाहु।
सोवारु सुवणगुणगणसणाहु एक्कइया चिंतइ चित्ति लाहु।
हो पडियठक्कुर कण्हपुत्त उवयारियवल्लहपरममित्त॥

१ जैनहितैषी भाग २, अक ३–४।
२ देखो, जैनजगत् (१ अक्टूबर सन १९२६) मे 'महाकवि पुष्पदन्तका समय'।

कइपुप्फयति जसहरचरितु किउ सुड्डु सलक्खणविचित्तु ।
पेसहिं तहिं राउलु कउलु अज्जु जसहरविवाहु तह जणियचोज्जु ।
सयलहं भवभमणभवतराइ मइ वच्छिउ कराहिं णिरतराइ ॥
ता साहुसमीहिउ कियउ सव्वु राउलु विवाहु भवभमणु भव्वु ।
वक्खाणिउ पुरउ हवेइ जाम सतुट्ठउ वीसलु साहु ताम ।
जोइणिपुरवरि णिवसतु सिट्ठु साहुहि घरे सुत्थियणड्डु घुट्ठु ॥
पणसट्ठिसहियतेरहसयाइ णिवविक्कमसवच्छरगयाइ ।
वइसाहपहिल्लइ पक्खि बीय रविवारि समित्थउ मिस्सतीय ॥
चिरु वत्थुबन्धि कइ कियउ ज जि पद्धडियबधि मइ रइउ त जि ।
गधव्वे कण्हडणदणेण आयह भवाइ किय थिरमणेण ।
मइ दोसु ण दिज्जइ पुव्वि कहिउ कइवच्छराइ त सुत्तु लइउ ॥

परन्तु जान पडता है कि उस समय इस पक्तियोका ठीक ठीक अर्थ नही समझा गया था । वास्तवमे इसका भावार्थ यह है—

" जिसके उपरोध या आग्रहसे कविने यह पूर्वभवोंका वर्णन किया ( अब मै ) उस भव्यका नाम प्रकट करता हूँ । पहले पट्टण[1] या पानीपतमे छगे साहु नामके एक साहु थे । उनके खेला साहु नामके गुणी पुत्र हुए । फिर खेला साहुके वीसल साहु हुए जिनकी पत्नीका नाम वीरो था । वे गुणी श्रावक थे । एक दिन उन्होंने अपने चित्तमें ( सोचा और कहा ) कि हे कण्हके पुत्र पडित ठक्कुर ( गधर्व ), वल्लभराय ( कृष्ण तृतीय ) के परम मित्र और उपकारित कवि पुष्पदन्तने सुन्दर और शब्दलक्षणविचित्र जो जसहरचरिउ बनाया है उसमे यदि राजा और कौलका प्रसग, यशोधरका आश्चर्यजनक विवाह और सबके भवातर और प्रविष्ट कर दो, तो मेरा मन चाहा हो जाय । तब मैने वही सब कर दिया, जो साहुने चाहा था—राउलु ( राजा ) और कौलका प्रसग, विवाह और भवातर । फिर जब वीसल साहुके सामने व्याख्यान किया, सुनाया, तब वे सतुष्ट हुए । योगिनीपुर ( दिल्ली ) में साहुके घर अच्छी तरह सुस्थितिपूर्वक रहते हुए विक्रम राजाके १३६५ सवत्मे पहले वैशाखके दूसरे पक्षकी तीज रविवारको यह कार्य पूरा हुआ । पहले कवि ( वच्छराय ) ने जिसे वस्तुछन्दमें बनाया था, वही मने पद्धडीबद्ध रचा । कण्हडके पुत्र गधर्वने स्थिर मनसे भवातरोको कहा है । इसमें कोई मुझे दोष न दे । क्योकि पूर्वमें वच्छरायने यह कहा था । उसीके सूत्रको लेकर मने कहा । "

इसके आगेका घत्ता और प्रशस्ति स्वय पुष्पदन्तकृत है जिसमें उन्होंने अपना परिचय दिया है ।

---

१ 'पट्टण' पर पानीपत टिप्पणी दी हुई है ।

पूर्वोक्त पद्योंसे बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि गन्धर्व कविने दिल्लीमे पानीपतके रहनेवाले बीसल साहु नामक धनीकी प्रेरणासे तीन प्रकरण स्वय बना कर पुष्पदन्तके यशोधर-चरितमें पीछेसे स० १३६५ मे शामिल किये हैं और कहाँ कहाँ शामिल किये हैं, सो भी यथास्थान ईमानदारीसे बतला दिया है। देखिए—

१ पहली सन्धिके चौथे कड़वकके ' चाएण कण्णु विहवेण इदु ' आदि पक्तिके बाद आठवें कड़वकके अन्त तककी ८१ लाइने गन्धर्वरचित है जिनमे राजा मारिदत्त और भैरवकुलाचार्यका सलाप है। उनके अन्तमे कहा है—

गधव्वु भणइ मइ कियउ एउ णिव-जोइसहो सजोयभेउ।
अग्गइ कइराउ पुप्फयतु सरसइणिलउ।
देवियहि सरूउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ॥

अर्थात् गन्धर्व कहता है कि यह राजा और योगीश ( कौलाचार्य ) का सयोग-भेद मैंने कहा। अब आगे सरस्वतीनिलय कविकुलतिलक कविराज पुष्पदन्त ( मै नहीं ) देवीका स्वरूप वर्णन करते है।

२ पहली ही सन्धिके २४ वें कड़वककी ' पोदत्तणि पुट्ठि पलट्टियंगु ' आदि लाइनसे लेकर २७ वें कड़वक तककी ७९ लाइनें भी गन्धर्वकी है। इसे उन्होंने ७९ वी लाइनमे इस तरह स्पष्ट किया है—

ज वासवसेणि पुव्वि रइउ त पेक्खवि गधव्वेण कहिउ।

अर्थात् वासवसेनने पूर्वमें जो ( ग्रन्थ ) रचा था, उसको देखकर ही यह गधर्वने कहा।

३ चौथी सन्धिके २२ वे कड़वककी ' जज्जरिउ जेण बहुभेयकम्मु ' आदि १५ वीं पक्तिसे लेकर आगेकी १७२ लाइनें भी गन्धर्वकी हैं। इसके आगे भी कुछ लाइनें प्रकरणके अनुसार कुछ परिवर्तित करके लिखी गई हैं[2]। फिर एक घत्ता और १५ लाइने गन्धर्वकी है

१ श्रीवासवसेनके इस यशोधरचरितकी प्रति बम्बईमें ( न० ६०४ क ) मौजूद है। यह सस्कृतमें है। इसकी अन्तिम पुष्पिकामें ' इति यशोधरचरिते मुनिवासवसेनकृते काव्ये .अष्टम. सर्ग. समाप्त ' वाक्य है। प्रारम्भमें लिखा है ' प्रभजनादिभि. पूर्वं हरिषेणसमन्वितै., यदुक्त तत्कथ शक्य मया बालेन भाषितुम्। ' इससे मालूम होता है कि उनसे पूर्व प्रभजन और हरिषेणने यशोधरके चरित लिखे थे। इन कविवरने अपने समय और कुलादिका कोई परिचय नहीं दिया है। परन्तु इतना तो निश्चित है कि वे गन्धर्व कविसे पहले हुए हैं। इस ग्रन्थकी एक प्रति प्रो० हीरालालजीने जयपुरके बाबा दुलीचन्दजीके भडारमें भी देखी थी और उसके नोट्स लिये थे। हरिषेण शायद वे ही हों, जिनकी धर्मपरीक्षा ( अपभ्रश ) अभी डा० उपाध्येने खोज निकाली है।

२ अपरिवर्तित पाठ मुद्रित ग्रथमें न होनेके कारण यहाँ दे दिया जाता है—

सो जसवइ सो कल्लाणमित्तु सो अभयणाउ सो मारिदत्तु।
वणि पुप्फयतणोहणादिणेसु सो गोवद्धणु गुणगणविसेसु॥

जो ऊपर भावार्थसहित दे दी गई हैं[1]।

इस तरह इस प्रथम सब मिलाकर ३३५ पंक्तियाँ प्रक्षिप्त हैं और वे ऐसी हैं कि जरा गहराईसे देखनेसे पुष्पदन्तकी प्रौढ़ और सुन्दर रचनाके बीच छुप भी नहीं सकतीं। अतएव गन्धर्वके क्षेपकोंके सहारे पुष्पदन्तको विक्रमकी चौदहवीं शताब्दिमें नहीं घसीटा जा सकता।

इसके सिवाय बहुत थोड़ी प्रतियोंमें, सो भी उत्तर भारतकी प्रतियोंमें ही, यह प्रक्षिप्त अंश मिलता है। बम्बईके तेरहपंथी जैनमन्दिरकी जो वि० सं० १३९० की लिखी हुई अतिशय प्राचीन प्रति है, उसमें गन्धर्वरचित उक्त पंक्तियाँ नहीं हैं और ऐलक पन्नालाल सरस्वती-भवनकी दो प्रतियोंमें भी नहीं हैं।

[ अनेकान्त, वर्ष ४ अंक ६ ७ और ८ से उद्धृत ]

— नाथूराम प्रेमी

---

सा कुसुमावलि पालियविणुचि सा अभयमइ वि परिदुचि।
भव्वइ कुणमाणिणालणेण सउ वावि चाव सण्णासणेण।
कालें जंतें सव्वइ भवाइ जिणधम्में सग्गा। गयाइ॥

१ बम्बईके सरस्वती-भवनमें जो (८४ क) संस्कृतछायासहित प्रति है उसमें 'जिणधम्मे सग्गम्गाहो गयाइं' के आगे प्रक्षिप्त पाठकी 'गंधव्वें कण्हडणंदणेण' आदि केवल दो पंक्तियाँ न जाने कैसे आ पड़ी हैं। इस प्रतिमें इन दो पंक्तियोंको छोड़कर और कोई प्रक्षिप्त अंश नहीं है।



## LXXXI

पेणविवि गुरुपयेहं भव्वहं तमोहतिमिरंधहं ।
कहमि णेमिचरिउं भंडणु मुरारिजरसंधहं ॥ ध्रुवकं ॥

### 1

धीरं[४] अविहियसामयं  सीहं हयसरसामयं ।
दूसियसोत्तियसामयं  विद्धंसियहिंसामयं ।
रक्खियसयलरसामयं  अक्खियधम्मरसामयं ।
चंडतिदंडुवसामयं  अलिणीलंजणसामयं ।
जणियदुक्खवीसामयं  अदविणजीवासामयं ।
णासियतिव्वतिसामयं  वेरीणं पि सुसामयं ।
थलविहुयियविधाहयं  पसमियसेलविवाहयं ।
दूरुम्मुकविवाहयं  णिच्चं चेय विवाहयं ।
कयणिवपुत्तिविसूरणं  पयणयसुरणरसूरयं ।

1. १ S पणमवि. २ S °पइय. ३ ABP °जरसिंधह ४ ABP वीर ५ S जीयासा° ६ S दूरुविमुक्क°. ७ AS° न्नव° ८ AS °विसूरय, T विसूरण. ९ APS °सुरयण°, T सुरणर°.

1. 3 *a* अविहियसामय अकृतलक्ष्मीमदम्, *b* हयसरसामय हृतकामहस्तिनम् 4 *a* °सामय सामवेदम्, *b* °हिंसामय हिंसामतम् 5 *a* °सयलरसामय समस्तपृथ्वीमृगम्, *b* °धम्मरसामय धर्मरसामृतम् 6 *a* चडतिदडुवसामय अप्रशस्तमनोवाक्कायदण्डत्रयोपशामकम्, *b* °सामय कृष्णम्. 7 *a* जणियदुक्खवीसामय जनितो दुःखस्य विश्रा॰णो विगमो येन, *b* अदविणजीवासामय द्रव्यवाञ्छानिष्पन्न जीविताशामय च न य भट्टारकम्, द्रव्यजीविताशारहितमित्यर्थः. 8 *a* °तिसामय तृष्णारोगम्, *b* सुसामय सुष्ठु सामद प्रियवचनदायकम् 9 *a* ° विवाहय गरुडवाहक विष्णुम्, *b* पसमियसेलविवाहय शैलस्य पर्वतस्य वय. पक्षिणो व्याधाश्च प्रशमिता येन 10 *a* °विवाहय परिणयनम्, *b* णिच्च चेय विवाहय नित्यमेव विशिष्टबाधादायकम्. 11 *a* कयणिवपुत्तिविसूरण कृत नृपपुत्र्या राजीमत्या विसूरण क्षरण येन, *b* पयणयसुरणरसूरय पदनता. सुरनराः शोभना उरगाश्च यस्य.

हरिकुलणहयलसूरय　　इंदियरिउरणसूरय ।
णीण सिवपुरवासर　　तिहारयणीवासर ।
तवसद्णणेमीसय　　णमिऊण णेमीसय ।

घत्ता—भारहु भणमि हउं पर किं पि णत्थि सुकइत्तणु ॥
मज्झि वियक्खणहं किह सुक्खु लहमि गुणकित्तणु ॥ १ ॥

2

णउ मुणमि विसेसणु णउ विसेसु　　णउ छंदु गणु वि णउ देसिलेसु ।
अहिकरणु करणु णउ सरपमाणु　　णायपिणउ आगमु णउ पुराणु ।
कत्तारु कम्मु णउ लिंगजुत्ति　　परियाणमि णउ एक्क वि विहत्ति ।
दिगु दंदु कम्मधारउ समासु　　तप्पुरिसु बहुव्वीहि य पयासु ।
अव्वईभाउ वि णउ मोंधि लग्गु　　णउ जोइउ सुकइहिं तणउ मग्गु ।
णउ पउ वि सुवंतु तिवंतु दिट्ठु　　णउ अत्थि अत्थु णउ सद्दु मिट्ठु ।
भरहहु केरइ भविरि णिविट्ठुं　　जेणि णउ लज्जमि पमेयं धिट्ठु ।
हउ कव्वपिसल्लउ कव्वकारि　　जायउ बहुसुयणहं हियंयहारि ।
खलसंढहु पुणु परदोसवसणु　　मैं णिवारमि विरसइ भसउ भसणु ।
हउ करमि कव्वुं सो करउ णिंदं　　फलु जाणिहिंति दोहं मि मुणिंद ।

घत्ता—सरसु सकोमलउ खलगलकवलि पउ देप्पिणु ॥
हिंडेसइ विमल महु कित्ति तिजगु लंघेप्पिणु ॥ २ ॥

3

चिंतिज्जइ काइं खलावराहु　　थीहतु वि किं ससि मुयइ राहु ।
तुहु पसियउ महु जिणवीरणाहु　　लइ करमि कव्वु सुहदसणु साहु ।

१ S हरिउल° ११ S °पुरि° १२ S लहवि

2 १ S कत्तार २ S परियाणवि एक वि ण वि ३ A तप्पुरिसु वि बहुविहि विहिपयासु ४ B अव्वइभवि वि ५ ABP माउ ६ A तिवतु P विनतु ७ AP पइहु ८ A जणि णउ लज्जमि एय धिट्ठु ९ A एय P एमेय १ B हियइ ११ Als °सउहु against Mss but glo ९ in S दुर्जनसमूहान् १२ B णउ वारमि १३ AP गंधु १४ B णिंदु १५ APS दोहिं मि १६ B मुणिंदु १७ APS सुकोमलउ

12 *a* सूरय आदित्यम्, *b* °रणसूरय रणशूरम्. 13 *a* णीण गताम्, सिवपुरवासरं शिवपुरवासदायकम्, *b* तिहारयणीवासर तृष्णारात्रिसूर्यम्. 14 *a* °णेमीसय नेमिश्चक्रधारा ईशा दण्डिकादयम् नेमीणे है ददानीति नेमीशदः तम्, *b* णेमीसय नेमीशरू नेमिनाथम्.

2 ७ *a* मा वि चित्ते 9 *a* °वसणु मदनम्. 10 *b* दोहमि मम दुर्जनस्य च

भो सुयण भव्ववरपुंडरीय भो णिसुणि भरह गुरुयणविणीय।
णंदणवणमहुधारारसिल्लि महमहियवियसियपफुल्लफुल्लि।
गुमुगुमुगुमंतछिंछियदुरेहि इह जंबुदीवि पच्छिमविदेहि।
सीयाणइउत्तरतडणिवेसि जणसंकुलि गंधिलणामदेसि।
गयणग्गलग्गगहिमधवलहम्मि पायारगोउरागारकम्मि।
सीहउरि णराहिउ अरुहदासु वच्छत्थलि णिवसइ लच्छि जासु।
घाईसरि मुद्धि जसु वंसदिसासु भाणिट्ठ देवि जिणदत्त तासु।
दोहिं मि जणेहिं णरणाहचंदु गंधाहिं दिणि अहिसिंचिउ जिणिंदु।
णिसि सुत्तइ कुलिसु व भंजिय धाम जिणयत्त पसुत्ती पुत्तकाम।

घत्ता—सिविणइ दिट्ठु हरि करि चंदु सूरु सिरि गोयइ॥
नाइ कहिउं पियेंह सो णिम्मलु णियमणि भावइ॥ ३॥

## 4

होसइ सुउ हरिणा रिउअजेउ करिणा गरुयउ गुरुसोक्खहेउ।
ससिणा सुहउ णिरु सोम्मभाउ सूरेण महाजसु णिव्वतेउ।
सिरिदंसणि सुहय सिरिणिकेउ कहइवयदिणेहिं साणंदु देउ।
थिउ गब्भि ताहि मिगलोयणाहि णवमासहिं कसणाणणथणाहि।
उप्पण्णउ णवजोव्वणि वलग्गु देवहुं मि मणोहरु णाइ सग्गु।
कमणीयहं कलइ जणिउ गाउ अरिसिरचूडामणिघिट्ठपाउ।
णारदसंधिविजाइणिम्मियपयाउ जायउ दिवसहिं रायाहिराउ।
णिसुणेवि धम्मु उववणणिवासि तायेण विमलवाहणहु पासि।
कुलसपय देवि सणंदणासु जिणदिक्ख लेवि कउ मोहणासु।

3. १ BP °वणि. २ P °रंगेहि. ३ B °महिय. ४ B °पफुल्ल°. ५ B इय. ६ A सीओयहि, P सीओयहि. ७ P °धवलि. ८ S णराहिउ ९ S अरहदासु १० B दस°. ११ AP णाणिट्ठ. १२ B जिणयत्त. १३ B गयहम्म. १४ AP पियहो. १५ S णिमहु ( नृपाज्ञो राजा ).

4. १ P सिरिसोम° २ B सोमभाउ. ३ B दिव्वतेउ, Als. proposes to read दिव्वतेउ without Ms. authority. ४ BP दिण° ५ BP °मणाहि ६ A कालाणणथणाहि, Als. reads in S कसणाणणथणाहि, but the Ms. gives कसणाणणथणाहि where ण is wrongly copied for य or प. ७ P कमणीयहि. ८ S जणियराउ. ९ A तह दस°, S णारदगसिरि° १० B उववणि.

3. 6 *a* सीयाणइ° सीतोदानद्याः. 8 *b* वच्छत्थलि हृदयस्थले.

4. 3 *b* साणंदु देउ महेन्द्रस्वर्गात् च्युतः कश्चिद्देवः. 5 *a*. उप्पण्णउ अपराजितनाम पुत्रो जातः, णवजोव्वणि ... नवयौवनं प्राप्त. 6 *a* कलइ कलाभिः. 7 *b* रायाहिराउ अपराजितराजा.

पुत्तें गहियाइं अणुव्वयाइं पयडीकयसुरणरसंपयाइं ।
आवेप्पिणु केसरिपुरि पइट्ठु कालेण पराइउ पहु इट्ठु ।

घत्ता—तेण पँयपियउ गउ विमलवाहु णिव्वाणहु ॥
जिह सो तिह अवरु तुह जणणु वि सासयठाणहु ॥ ४ ॥

5

ज णिसुउ ताउ संपत्तु मोक्खु त जायउ अवराइयहु दुक्खु ।
णउ ण्हाइ ण परिहइ परिहणाइं णउ लायइ अंगि विलेवणाइं ।
णउ कुसुमइं विसमियसढयणाइं णउ आहरणइं णियकुलहणाइं ।
थयथवयथत्तपयणेउराइं णालोयइ पहु अंतेउराइं ।
मिउ भुंजइ उवणिउ दिव्वु भोउ ण सुहाइ तासु एक्कु वि विणोउ ।
चिंतइ णियमणि हयदुण्णयाइं जइ तायविमलवाहणपयाइं ।
पेच्छेसमि सुजमि पुणु घरिसि ण तो थंसणगाह महु णिवित्ति ।
इय जाम ण लेइ णरिंदु गासु गय दियह पुण्णुं अट्ठोववासु ।
तहिं अवसरि इंदहु चिंत जाय सुहकुहरहु णिग्गय महुर वाय ।
जज्जाहि धणय बहुगुणणिहाउ मा मरउ अपुण्णइं कालि राउ ।
सिरिमंडववासरिसिणा सणाहु दक्खालहि जिणवरु विमलु ताहु ।

घत्ता—सयमहपेसणिण ता समवसरणु किउ जक्खें ॥
दाविउ परमजिणु पविउंजमाणु सहसक्खें ॥ ५ ॥

6

पिउपायाहिण्णवढसाइएण वंदिउ भत्तिइ अवराइएण ।
आहारु लेइउ आवेवि गेहु गयवइ वड्ढइ गुणवंति णेहु ।
पुणु छुडु छुडु सपत्तइ वसंति णवसिरि अण्णहिं वासरंति ।

११ B आएप्पिणु १२ S पयपिउ

5 १ B सुणिउ २ AS संपत्त ३ A वियसियसढयणाइं ४ A °कुलहराइं ५ B णालोवइ ६ A उउ मुंजइ ७ B पिच्छेसमि P पिक्खेसमि ८ ABPS add तो after पेच्छेसमि and omit पुणु ९ AP असणगह १ A पत्तु P पण्णु ११ ABPS विमलवाहु १२ A वविज्जमाणु

6 १ B ऋयउ

5 3 *a* विसमियसढयणाइं विभ्रान्तभ्रमराणि 6 *a* हयदुण्णयाइं हतमिथ्यामतानि 7 *b* ण तो थसणगहं महु णिविचि अथवा असनाहस्य मम निवृत्ति नियमः 11 *b* ताहु तस्य अपराजितस्य 13 सहसक्खें इन्द्रेण

6 1 *a* °साइएण आलिङ्गनेन 3 *b* वासरंति पूर्णिमादिने

वंदेप्पिणु जिणचेईहराइं　　अक्खंतु संतु धम्मक्खराइं ।
सुविसुद्धसीलजलहरियकंद　　ता ढुक्क वेण्णि णहयलि मुणिंद ।
वंदिवि वंदारयवंदणिज्ज　　माणिय महिणाहें मण्णणिज्ज ।
तेहिं मि पउत्तु भो धम्मविद्धि　　केवलदंसणगुण होउ सिद्धि ।
पुणु संचतचसवणावसाणि　　पहु पभणइ अण्णहिं कहिं मि ठाणि ।
मइ दिट्ठा तुम्हइं काइं करमि　　एवहि सुमरंतु वि णाहि सरमि ।
पसरइ मणु मेरउं रमइ दिट्ठि　　भणु जइ जाणहि तो जणहि तुट्ठि ।
रिसि परमावहिपसरणपवीणु　　ता चवइ जेट्ठु णिट्ठाइ खीणु ।
भो नृव चिरु ससहरकिरणकंति　　अम्हइं पइं दिट्ठा णत्थि भंति ।

घत्ता—पभणइ परममुणि नृव पुक्खरदीवि पसिद्धइ ॥
पच्छिमसुरगिरिहि पच्छिमविदेहि'' घणरिद्धइ ॥ ६ ॥

## 7

गंधिलजणवइ खगमहिहरिंदि　　उत्तरसेढिहि धवलहरसंदि ।
सूरप्पहपुरि पहसियमुहिंदु　　सूरप्पहु णामें णहयरिंदु ।
पियकारिणि धारिणि तासु घरिणि　　वम्महधरणीरुहजम्मधरणि ।
जाया कालें सुकयाणुरूयें　　भाभारवंत भूतिलयभूयें ।
तहि णंदण णं धम्मत्थकाम　　चिंतामणचवलगइ त्ति णाम ।
ते तिण्णि सहोयर सुकपाव　　णं दंसणणाणचरित्तभाव ।
तहिं अवरु अरिंदमणयरि राउ　　णामेण अरिंजउ जयसहाउ ।
तहु पणइणि णामें अजियसेण　　कीलंतइं दोहि मि रइरसेण ।

घत्ता—पीईमइ तणय हूई सा किं मइ वण्णिज्जइ ॥
जाइ सरूवएण उव्वसि रइ रंभ हसिज्जइ ॥ ७ ॥

२ B जिणचेइय° ३ S सुविशुद्ध° ४ AP जलभरिय°. ५ AP णहयरमुणिंद, B णहयलमुणिंद. ६ S मडिय मरिणाहर मडणिज्ज. ७ A सत्ततच्चवयणावसाणे, P सचतचसयणावसाणे ८ ABP णिव. ९ ABP णिव. १० B पच्छिव° ११ B °विदेह°

7. १ P °हरेंदि. २ P पूरे. ३ B °धरिणी°. ४ AP °रूव ५ AP °भूव. ६ S तहो. ७ B दोहिं. ८ AP रइवसेण. ९ B पिईमइ, P पीइमइ. १० ABP तणया. ११ S भूई, Als. हुइ against Mss. १२ A सुरूवएण १३ A उव्भसि.

4 *b* अक्खंतु राजा स्वयं व्याख्यानं कुर्वन् 5 *a* °जलहरियकंद जलभृतमेघौ 10 *b* जणहि तुट्ठि हर्षमुत्पादय 11 *b* णिट्ठाइ खीणु क्रियया कृत्वा क्षीणगात्र. 12 *a* चिरु पूर्वभवे, ससहरकिरणकंति हे शशधरकिरणकान्ते राजन् 14 पच्छिमसुरगिरिहि पश्चिममेरौ.

7. 1 *a* खगमहिहरिंदि विजयार्धे 3 *b* वम्महधरणीरुहजम्मधरणि कामवृक्षस्य जन्मभूमि. 5 *b* चिंतामणचवलगइ चिन्तागतिर्मनोगतिश्चपलगतिरिति नामानि.

## 8

परियंचिवि सुरगिरिवरु तिवार जो लेइ माल मणिकिरणफार ।
णीसेसें वि णियपयमूलि थित्त विज्जोहर मेरु भमंत जित्त ।
मणगइखलगइणामालयहिं आवेप्पिणु धारिणिबालयहिं ।
अक्खिय णियभायहु पइ वत्त तौं तेण वि कयं तहिं विजयजत्त ।
दिट्ठी कुमारि णहयरें जिणंति अमरायलपासहिं परिभमंति ।
चिंतागइ भासइ सोक्खखाणि हलि थेयवंति कलहंसवाणि ।
लइ मुयहि माल विम्हियमणाउ सुरसिहरिहि तिण्णि पयाहिणाउ ।
विरएप्पिणु तुहु पावहि ण जाम हउ पकयच्छि मुद्ध धरमि ताम ।
तं वयणु ताइ पडिवण्णु तेंव थिय गयणगणि जोयंतें देव ।
केसरिकिसोरखयकंदरासु लहु देवि तिमामरि मेरुरासु ।
सूरप्पहतणए धरिय माल गइवेएं णिज्जिय खयरबाल ।

घत्ता—उत्तउ सुकुरिंदि पइ सुहवि ण को वि महारउ ॥
दिट्ठु अदिट्ठु तुहु चिंतागइ कंतु महारउ ॥ ८ ॥

## 9

ता भणिउं तेण मारुयजवेहिं अहिलसिय कण्णं तुहु थवेहिं ।
पइ जित्ता ए इह धावमाण थिय कायर असहियकुसुमबाण ।
जो रुच्चइ सो मइ अणुउ कंतु करि पवहिं पेंडु जि तुज्झ मंतु ।
भणसियसरजालणिरुद्धियाइ त णिसुणिवि बोल्लिउ मुद्धियाइ ।
मणणयणहु वल्लहु जइ वि रम्मु बलिमड्डु ण किज्जइ तो वि पेम्मु ।

---

8 १ B तिवारु २ A मणिरयणि P मणिरयण° ३ B फारु ४ A णीसेसिवि ५ A °मूल° ६ A णिज्जाहर ७ B °मायहि ७ AP तो ८ AP तहिं किय ९ P णहयरे. १० P °पासेहिं ११ BP विंभिय° १२ P °मणाओ १३ ABP धुउ १४ AP जोयति १५ B °किसोरु S केसरिकिशोर° १६ A सुप्पहतणए. १७ B गयवेए.

9 १ P कण्णे २ A पइ जित्ताइ जि इह पलवमाण B जित्ता ए धावतमाण P जित्ता ए इह धावतमाण T पलावमाण धावन्तो ३ B तुज्झ जि पहु ४ B बलिमड्डु P बलिमड S बलिमड्ड ५ P पेमु

---

8 1 *a* परियंचिवि प्रदक्षिणीकृत्य *b* लेइ गृह्णाति 4 *a* णियमायहु चिन्तागते 10 *b* तिमामरि तिस्रः प्रदक्षिणा 11 *a* सूरप्पहतणए चिन्तागतिनाम्ना *b* गइवेएं इत्यादि गमनवेगेन खचरबाला प्रीतिमति जिता 12 महारउ महावेगो वेगवान्. 13 अदिट्ठु अपूर्वं स्वम् महारउ मदीय

9 3 *a* अणुउ अनुज 5 *b* बलिमड्डु बलात्कारेण

हो हो णियणिलयहु चित्त जाहि    मा दुल्लहसंगि अणंगि थाहि ।
इय चिंतिवि मेल्लिवि मोहभंति    पणविवि णिव्विण्णि णामेण खंति ।
आइउ जिणु केवलणाणचक्खु    परिपालिउ संजमु ताइ तिक्खु ।

घत्ता—दीणहं दुत्थियहं मज्झणविओयजरभग्गहं ॥
पीवइं दुक्खसिहि जिणवरपयपंकयलग्गहं ॥ ९ ॥

## 10

अवलोइवि कण्णहि तणिय वित्ति    चिंतागइणा कय घरणिवित्ति ।
सहुं भायरेहिं दमवरसमीवि    तवचरणु लइउ गुणमणिपईवि ।
सण्णासें मरिवि सिरीवियप्पि    जाया तिण्णि वि माहिंदकप्पि ।
तहिं दीहकालु णियणियविमाणु    भुंजेप्पिणु सत्तसमुद्दमाणु ।
इह जंबुदीवि सुरगिरिविदेहि    पुक्खलवइदेसि सउत्तमेहि ।
खयरायलि उत्तरदिसिणिवेवि    महारमणरिउणवि ।
पुरि णहवल्लहि पहु गयणचंदु    पिय गयणसुंदरि सुक्कतंदु ।
अमियगइ पुत्तु हउ ताहि जाउ    हुउ अमियतेउ लहुयरउ भाउ ।
बेण्णि वि तुरियसगगावइण्ण    जाणसि जं जिता आसि कण्ण ।
तुह विरहणडिय अंसुय मुयंति    जाणसि जं ण समिच्छिय रयंति ।
जाणसि जं ताइ वउत्थु धारु    जाणसि जं किउ चारित्तभारु ।
अम्हइं तीहिं मि ववसियमणेहिं    दमवरसयासि पोसियगुणेहिं ।

घत्ता—हुउ हुउ जोइयउं लइ जइ वि सुहु दूरिल्लइ ॥
धुंधु जाइंभरइ णयणइ मुणंति णेहिल्लइ ॥ १० ॥

६ B हो हो णियणिलयह, P हो होउ णियत्तहं, S हो हो णियणिलयहे ७ B मरिवि ८ S णिवित्त. ९ S °विओय° १० BPS Als. णावइ ११ P °पयपरए, S om ए in पयपरए.

**10.** १ B कण्णहु, P कण्णहो २ A वित्ति. ३ B घरि ४ P तउचरणु ५ B सीग°. ६ BP माहिंद° ७ A पुक्खलइदेसि ८ K णववल्लहि ९ A मयणसुंदरी १० S लहुअयरु ११ AP जे १२ P जाणमि १३ S णिउ १४ B तिण्णि नि, P तिहिं मि १५ A ववसियमणेंहि १६ B दमवरयपासि. १७ B जोयउ १८ A दूरिल्लउ, Als दूरिल्लइ against Mss. to accord with the end of the next line. १९ AP धुउ, B धुउ. २० AP जाइसरइ, S जाइमरइ २१ APS णेहिल्लउ, but BK णिहिल्लइ and gloss in K स्निग्धानि

6 *a* हो हो इति रे चित्त, स्व निजनिलये स्थाने गच्छति सा स्वात्मान मनोरयनि 9 *b* ताइ तया कन्यया. 10 णीवइ विध्यापयति, दुक्खसिहि दुःखाग्नि

**10.** 2 *b* गुणमणिपईवि गुणमणिप्रदीपे. 3 *a* सिरीवियप्पि लक्ष्मीविकल्पे स्वर्गे, श्रीणा भेदे वा 5 *b* सउत्तमेहि अरम्येत्रे. 6 *a* °णियवि तटे 7 *b* सुक्कतंदु आलस्यरहितः. 9 *b* कण्ण प्रीतिमती त्वम् 11 *a* वउत्थु व्रतमनुष्ठितम् 14 जाइंभरइ जातिस्मराणि, णेहिल्लइं स्निग्धानि

## 11

अम्हइं ते मायर तुज्झु राय अण्णेत्तहि कम्मवसेण जाय।
अरहंतु सयपहणामधेउ पुच्छियउ पुंडरीकिणिहि देउ।
णियजम्मणु तुह जेम्में समेउ आहासइ णासियमयरकेउ।
सीहउरि राउ दूसियविवक्खु चिंतागइ हुउं अवराइयक्खु।
सो तुम्हहं बंधउ णिव्वियारु ता णिसुणिवि केवलिवयणसारु।
अम्हेहं हूइं दसणसमीह आया तुह दिट्ठउ पुरिससीह।
पत्तिय फुडु जंपिउ जिणवरासु अण्णु वि तुह जीविउ पक्खु मासु।
इय कहिवि साहु गय बे वि गयणि णरणाहें छड्डियं तत्ति मयणि।
अहिसिंचिवि जिणपडिमाउ तेण मायें पुज्जिवि अवराइएण।
पडुदीणाणाहहं दाणु देवि घरपुत्तकलत्तइं परिहरेवि।
इंदियकसायमिच्छत्तदमणु किउ मासमेत्तु पाओवगमणु।
मुउ उप्पण्णउ अच्चुयविमाणि बावीसजलहिजीवियपमाणि।

घत्ता—तेत्थेहु ओयरिवि इह भरहखेत्ति विक्खायउ॥
कुरुजंगलविसए पुणु हत्थिणायपुरि जायउ॥ ११॥

## 12

सिरिचंदें सिरिमइयहि तणूउ णिरुवमतणु कुरुकुलणहविणूउ।
गुणवच्छलु णामें सुप्पइट्ठु थिउ णंदादेविहि पाणइट्ठु।
तेहु रज्जु देवि हुउ सो महीसु सिरिचंदु सुमंदिरगुरुहि सीसु।
णीसंगु णिरंवरु थाणि थइट्ठु जहिं सिरि मणुहुअइ सुप्पइट्ठु।

---

**11** १ A अण्णण्णहे २ S पुंडरिकिणिहे. ३ BK जम्मि ४ B राम ५ P हूउ ६ S अवराइमक्खु ७ S बप्पड ८ AB वयणु ९ BS अम्हहुं १० A पत्तिउ B पत्तिउ ११ AP अक्खमि तुहु १२ AB छड्डिय, S छड्डिय १३ S °णाहहु १४ AP पाओवगमणु. १५ B तित्थहो १६ S उयरेवि १७ P विक्खायओ

**12** १ P कुवलयणिवविणूओ २ AB गुणि वच्छलु. ३ A पूयणदा° B थिउ P थिय; Als. प्रियणदा° ४ AP पाणइट्ठु ५ B सो हुउ P हुओ S रहो but gloss सुप्रतिष्ठस्य

---

**11** 1 *b* अण्णेत्तहिं नभोवल्लभनगरे. 4 *a* विवक्खु विपक्ष शत्रु *b* अवराइयक्खु अपराजिताख्य 5 *a* णिव्वियारु निर्विचारम् 7 *a* पत्तिय प्रतीतिं कुरु 8 *b* तत्ति चिन्ता 13 ओयरिवि अवतीर्य

**12** 1 *b* विणूउ स्तुत 3 *a* महीसु श्रीचन्द्रराजा 4 *b* मणुहुअइ भुनक्ति

तहिं असहरु रिसि चरियइ पवण्णु　　राए पय धोइवि दिण्णु अण्णु ।
तहिं तासु भवणपंगणगयाइं　　अच्छरियइं पंच समुग्गयाइं ।
कालें जंतें पिहुसोणियाहिं　　कीलंतु समउ रायाणियाहिं ।
परियउ अवलोयइ दिसउ जाम　　णिवंडति णिहालिय उक्क ताम ।
चिंतइ णरवइ णिवडिय जलंति　　गय उक्क खयहु जिह पउं करंति ।
तिह जीव विविहकिंकरसयाइं　　जगि कासु वि होंति ण सासयाइं ।
इय चिंतिवि सुदिट्ठिहि तणुरुहासु　　सइं वद्धु पट्टु पहसियमुहासु ।
णिज्झाइयसिवपुरमंदिरासु　　पणवेप्पिणु पाय सुमंदिरासु ।

घत्ता—दिहिपरियरसहिउ णीसेसभूयमित्तत्तणु ॥
गिरिकंदरभवणु पडिवण्णउं तेण रिसित्तणु ॥ १२ ॥

## 13

सुपइट्ठें दुद्धरु चिण्णु चरिउं　　मणु सत्तुमित्ति सरिसउं जि धरिउं ।
परवाहमयाइं परिक्खियाइं　　एयारह अंगइं सिक्खियाइं ।
विडवेसइं केसइं लुंचियाइं　　गयगण्णइं पुण्णइं संचियाइं ।
रउं विहुणिवि णिहणिवि जिणिवि कामु　　अविरुद्धउ वद्धउ अरुहणामु ।
अ सि आ उ सा इं अक्खर सरेवि　　गयपासें सण्णासें मरेवि ।
अहमिंदु अणुत्तरि हुउं जयंति　　हिमहरसुहारुहकिरणकंति ।
तेत्तीसमहण्णवणियमियाउ　　तेत्तियहिं जि पक्खहिं ससइ देउ ।
तेत्तियहिं जि सुरिपयासएहिं　　वोलीणहिं वरिससहासएहिं ।
भुंजइ मणेण सुहुमाइं जाइं　　मणगेज्झइं किर पोग्गलइं ताइं ।
णाणें परियाणइ लोयणाडि　　करमेत्तदेहु मणहरकिरीडि ।
णिवसइ विमाणि पप्फुल्लवत्तु　　सो होही जेंहिं तं भणमि गोत्तु ।

६ B थोविवि　७ AP पगणे कनाइं　८ B अवलोवइ　९ A दिसिउ.　१० A णिवडत　११ AP पउरकंति　१२ A संवेवि, P थवेवि　१३ B °परियण°, K °परियण° but corrects it to परियर°.

13　१ P मणि सत्तु मित्तु सरिसउ　२ P °वाहयमयाइं　३ A गयसण्णइं.　४ B संचियामि.　५ AP रउ विहिणेवि णिहिणेवि　६ P हुओ　७ B हिमरासिसुहारयकिरण°　८ B तेत्तीयहिं पक्खहिं.　९ B तेत्तीयहिं सुरि°,　१० A सूर°.　११ P °पयासिएहिं　१२ S °सहाएहिं　APS मणहर.　१३ B जइ.

5 *a* चरियइ भिक्षार्थम्.　7 *a* पिहुसोणियाहिं पृथुकटीभि　9 *b* पउ पदम्.　11 *a* चविवि कथयित्वा

13　3 *b* गयगण्णइं गतगणितानि असंख्यातानि　4 *a* रउ पापम्, *b* अविरुद्धउ समीचीनम्.　6 *b* °सुहारुह° चन्द्र　8 *a* सुरिपयासएहिं सूरिभिः आचार्यैः प्रकाशितानि.　11 *b* सो सुप्रतिष्ठमुनिचर.

घत्ता—गोत्तमु भणइ सुणि मगहाहिव लद्धपसंसहु ॥
रिसहणाहकयहु पच्छिमसंतइ हरिवंसहु ॥ १३ ॥

## 14

इह दीवि भरहि वरवच्छदेसि कोसंबीपुरवरि जणणिवासि ।
मघवंतु राउ पिसुणयणतावि तहु वीयसोय णामेण देवि ।
रहु णामें णंदणु सुमुहु सेट्ठि कालिंगदेसि कमलाहदिट्ठि ।
दत्तउरहु हौंतउ वीरदत्तु वणि वणमालासहु पोम्मवत्तु ।
बाहहु भएंयइ णावइ कुरंगु आयउ अणाहु कयसत्थसंगु ।
कोसंबि पइट्ठउ सुमुहभवणि ठिउ जालगवक्खविसंतपवणि ।
सव्वइ वित्तइ रइरसरयाइं अण्णहिं दिणि वणकीलहि गयाइं ।
वणमाल बाल सुमुहेण दिट्ठ लायण्णवंत रमणीवरिट्ठ ।
अहिलसिय सुसियं तहु देहवेल्लि मणि लग्गी भीसणमयणभल्लि ।
दूसीलें परजायारएंण वणिवइणा णिरु मायारएण ।
बारहवरिसेंवहि दिण्णु वित्तु थोणिज्जहि पेसिउ वीरदत्तु ।
घत्ता—गउ सो इयरु तेहि आलिंगणु देंतु ण थक्कइ ॥
परहरवासियहु धणु घणिय ण कासु वि चुक्कइ ॥ १४ ॥

## 15

वज्झउ परदेसु परावयासु परवेसु जीविउ परदिण्णुं गासु ।

१४ P परिथवसतए

**14** १ S °वच्छदेसे २ S सुमुह ३ B हुंतउ ४ AP पेंमरत्तु S पेमवत्तु K पोम्मवत्तु but adds a *p* पेम्म इति पाठे स्नेहवान् ५ B भइए ६ B °सत्थु ७ B सुमुहु ८ A वि ताइ P वित्ताइ ९ AP वणकीलागयाइ १० AP लायण्णवण्ण ११ S सुसीय १२ B दूसेलें S दूसीलें १३ B रयेण १४ S °वरसावहि १५ B थाणिज्जहो १६ B वीरयत्तु १७ B तहिं

**15** १ S परवस २ BP °दिण्णगासु.

12 मगहाहिव हे श्रेणिक, हरिवंशपरंपरां शृणु 13 पच्छिमसंतइ पश्चात्परंपरा पश्चिमश्रेणी हरिवंसहु इक्ष्वाकुवंशी जिनः तेन स्थापिताश्चत्वारो वंशाः, (1) कुरुवंशे सोमप्रभस्य कुरुराज इति नाम दत्तम् (2) हरिवंशे हरिचन्द्रस्य हरिकान्त इति नाम दत्तम् (3) उग्रवंशे काश्यपस्य मघवा इति नाम कृतम् (4) नाथवंशे अकम्पनस्य श्रीधरो राजा कृतः

**14** 3 *b* कमलाहदिट्ठि कमललोचन 4 *b* वणि वणिक् पोम्मवत्तु पद्मवक्त्र 5 *a* बाहहु भएयइ व्याधानां भयात् 7 *a* वित्तइं वित्ता प्रसिद्धा सर्वे जनाः 9 *a* सुसिय शुष्का जाता तहु सुमुखस्य 10 *b* वणिवइणा वणिक्पतिना मायारएण मायारतेन 12 इयरु सुमुखः 13 घणिय भार्या

**15** 1 *a* वज्झउ भस्मीभवतु परावयासु परस्य गृहे वासः, परेषां अवकाशः परस्वेच्छया पर्यटनम्, परेषां अवकाशः प्रसङ्गः

भूभंगभिउडिदरिसियभएण रज्जेण वि किं किर परकएण ।
समुयंजिएण सुहुं वणहलेण णउ परदिण्णें मेहणियलेण ।
वर गिरिकुहरु वि मण्णमि सलग्घु णउ परधवलहरु पहामहग्घु ।
कीलंति ताइं णारीणराइं उरयलथणयलविणिहियकराइं ।
बहुकालहि आँए भयपमत्तु वणिणा वणिवइ वणमालरत्तु ।
जाणिउ तावें अंतरंझीणु अपसिद्धउ णिद्धणु बलविहीणु ।
बलवंतें रुद्धउ काइं करइ अणुदिणु चिंतंतु जि णवर मरइ ।
खलसगें लग्गी तासु सिक्ख पोट्ठिलें मुणि पणविवि लइय दिक्ख ।
चिंतिवि किं महिलइ किं घणेण मुउ अणसणेण णियमियमणेण ।
संपुण्णकाउ सोहम्मि देउ चित्तंगउ णामें जाम जाउ ।

घत्ता—सावयवय धरिवि ता कालें कयमयणिग्गहु ॥
रयु मघवंतसुउ सुरु हुउ तेत्थु जि सूरप्पहु ॥ १५ ॥

## 16

वणमालइ सुमुहें णिरु णिरीहु भुंजाविउ मुणिवरु धम्मसीहु ।
आयण्णिउ धम्मु जिणिंदसिट्ठु अप्पाणु वि धूलिसमाणु दिट्ठु ।
चिंतवइ सेट्ठि दुक्कियविरत्तु हा हित्तउ किं मइं परकलत्तु ।
असहायहु आयहु विहलियासु हा किं मइं विरइउ गेहणासु ।
सुयरेइ गेहिणि हउं कयकुकज्ज भत्तारदोहँकारिणि अलज्ज ।
हा किं ण गइय हउं खंडखंड हा पडउ मज्झु सिरि वज्जदंडु ।
इय णिंदंतइं असणीहयाइं कालेण ताइं बिण्णि वि मुँयाइं ।
इंह भरहखेत्ति हरिवरिसविसइ भोयउरि भोईभडभुत्तविसइ ।
णरणाहु पहंजणु सइ मिकंडु तहु घरिणि णिरूविय कामकंडु ।

३ B °भुयजिएहिं. ४ S मेयणियलेण ५ A मण्णवि. ६ AB कालें, P कालइ. ७ B आयए. ८ A ता तावें अतु खीणु, P अतत्तु खीणु, S अतत्तु झीणु ९ B अपसिद्धिउ. १० B पुट्ठिलु, S पोट्ठिल. ११ P चिंतए. १२ B तित्थु.

**16** १ B जिणद° २ AP अप्पाणउ धूलि°. ३ B °सुमाणु. ४ A मइ किह, P मइ किं ५ BP सुअरइ. ६ B °कुकज्ज ७ B °दोहि° ८ S कारिणी. ९ B अलज्जु. १० S मयाइ. ११ B इय. १२ A भोइसपत्तविसए १३ B पहुजणु. १४ BS मिकडु १५ BS कामकडु.

4] *a* सलग्घु श्लाघ्यम्. 7 *a* अततझीणु अन्तर्मनोमध्ये क्षीणः, *b* णिद्धणु निर्धनः. 9 *a* खलसगें जारयो ससर्गेण.

**16** 1 *a* सुमुहें सुमुखेन च. 4 *a* आयहु आगतस्य. 6 *b* सिरि मस्तके. 7 *a* असणी° विद्युत्. 8 *b* भोइभडभुत्तविसइ भोगिसुभटभुक्तविषये. 9 *b* कामकड कामबाणाः.

हुउ सुसुहु पुत्तु तहिं सीहकेउ
सावत्थिपुरि णरवइ वज्जचाउ।
सुहदेवि सुहुप्पायण गुणाल
वणमाल ताहि सुय विज्जुमाल।
हुइ परिणाविउ सीहचिंधु
जम्मंतरसंचियणेहबंधु।

घत्ता—पुरु घरु परिहरिवि रइणिब्भराइ एक्कहिं दिणि॥
कयकेसग्गहइ कीलंति जाम णंदणवणि॥ १६॥

## 17

कुंडलकिरीडकंचिचिंधयगत्त
सूरप्पह चित्तंगय सुमित्त।
ता बे वि देव ते तेत्थु आय
दुपइ पेक्खिवि मणि चित्त जाय।
चित्तंगएण परियाणियाइ
कहिं जारइ विहिणा आणियाइ।
सत्तावयरइ समावियाइ
एवहिं कहिं जंति अयाइयाइ।
वणमाल एह कुच्छिय कुसील
इहु सुसुहु सेट्ठि जें मुक्क वील।
उब्बाहवि बेण्णि वि घिवमि तेत्थु
णउ खाणु पाणु णउ ण्हाणु जेत्थु।
इय चिंतिवि भुयबलतोलियाइ
देवेण ताइ संचालियाइ।
किर णिप्फलजलगिरिगहणि घिवइ
तो बियरु भमरु करुणेण चवइ।
को एत्थु वइरि को एत्थु बंधु
मुइ मुइ सुंदर वइराणुबंधु।
दोसेसु खंति इच्छाणिवित्ति
गुणवंति भत्ति णिग्गुणि विरत्ति।
कारुण्णु सव्वभूएसु जासु
किं भण्णइ अण्णु समाणु तासु।
त णिसुणिवि उवसमसंगएण
भवियब्बु मुणिवि चित्तंगएण।
चंपापुरि चंपयचूयगुज्झि
घित्ताइं बे वि उज्जाणमज्झि।

घत्ता—गय सुरवर गयणि तहिं पुरवरि अमरसमाणउ॥
चंदकित्ति विजइ सुहु सुहु जि जाम मुउ राणउ॥ १७॥

१६ A सावत्थपुरे १७ AB वज्जवेउ १८ AP सुहएवि १९ A सुहुप्पा वणगुणाल २० BS विज्जमाल २१ S °संचिउ

17 १ ABPS °चेंचइय° २ S त ३ B तित्थु ४ S कुशील ५ A घिवेवि S घित्तमि ६ S ण्हाणु ७ AP ता इयरु ८ S वइराणुबंधु ९ S गुणवंत° १ S णिग्गुण° ११ B °चूयगब्भि १२ B घित्ता बे वि वि

10 *a* सुसुहु सुसुखवर *b* वज्जचाउ वज्रचाप

17 1 *a* चिंचइय भूषितम् 5 *b* वील मोडा 8 *b* इयरु अमरु सूर्यप्रभ 13 *a* °गुज्झि गुप्तस्थाने 10 विजइ विजयवान्

## 18

तहु तहि संताणि ण पुत्तु अत्थि अहिवासिउ मतिहिँ भद्दहत्थि ।
जलभरिउ कलसु करि दिण्णु तासु कंकेल्लिपत्तसंछाइयासु ।
करडयलगलियमयसलिलबिंदु चलरुणुरुणंतमिलियालिवृंदु ।
उत्तुंगु णाइ जगमु गिरिंदु सहुं परियणेण चल्लिउ करिंदु ।
दिव्वेण दइवसंचोइएण मुक्कंकुसेण उद्धाइएण ।
उववणि पइसिवि सिरिसोक्खहेउ अहिसिंचिउ करिणा सीहकेउ ।
परिवारें मिलिवि णिवद्धु पट्टु मा को वि करउ भुयबलमरट्टु ।
परिणवइ कम्मु सव्वायरेण चिरभवसचिउ किं किर परेण ।
णउ दिज्जइ संपय दिणयरेण गोविंदें वंभें तिणयणेण ।
दुग्गाइ ण जक्खें रेवईइ विणिडिज्जइ जणु मिच्छारईइ ।
जय जीवें देव पभणंतएहिँ पुच्छिउ पुणु राउ महंतएहिँ ।
को तुहुं भणु सच्चउ जणणु जणणि आगमणु काइं का जम्मधरणि ।

घत्ता—जंपइ हरिवरिसि पहु कहइ सयलमणरंजणु ॥
भोयपुराहिवइ मेरउ पियरु राउ पहंजणु ॥ १८ ॥

## 19

मुहसोहाणिज्जियकमलसंडु तहु गेहिणि महु मायरि मिकंडु ।
हउं सीहकेउ केण वि ण जित्तु आणेप्पिणु केण वि एत्थु घित्तु ।
तं सुणिवि मिकंडइ जणिउ जेण मतिहिं मकंडु जि भणिउ तेण ।
तं पवरसिंधुरारूढदेहु वहुवरु पइट्ठु पुरि वद्धणेहु ।
वहुकिंकरेहिँ सेविज्जमाणु धयछत्तावलिहिँ पिहिज्जमाणु ।

18 १ B मतहिं°. २ A करदिण्णु ३ S °सढाइयासु ४ S °मिलियालवृंदु, BP °विंदु ५ ABPS उत्तुगु ६ B जगम. ७ B दइय°. ८ B °सिंचिउ, K °सिंचिय ९ B जक्खि १० B णिवडिज्जइ. ११ S जीय. १२ S जणवय १३ B कहमि १४ PS सयलजणरंजणु १५ A णाय-पुराहिवइ १६ APS पिउ

19 १ BP °सडु. २ BP मिकडु ३ B घेत्तु ४ B मिकडुए. ५ S मकड. ६ AB ता पवरउधुरा°. ७ S ण्हाविज्जमाणु

18 2 *b* °सछाइयासु प्रच्छादितमुख 5 *a* दइवसचोइएण पुण्यसचोदितेन 8 *b* चिरभवसचिउ पूर्वोपार्जित पुण्यम् 9 *b* तिणयणेण शंकरेण पार्वतीकान्तेन 10 *a* दुग्गाइ पार्वत्या, रेवईए नर्मदया. 11 *b* महन्तएहिँ सामन्तै 14 पिय पिता.

19 3 *b* मकंडु मार्कण्ड 4 *b* वहुवरु विद्युन्मालासिंहकेतू.

चलचामरेहिं विज्जिज्जमाणु　　थिउ दीहु कालु सिरि भुंजमाणु ।
तडिमालापियकतासहाइ　　कालें कवलिइ मकडराइ ।
सत्ताणि तासु जाया णरिंद　　हरिगिरि हिमगिरि वसुगिरि णरिंद ।
जणसंखोहणउवणियसिवेहिं　　अवर वि बहु गणिय गणाहिवेहिं ।
पुणु देसि कुसत्थइ हुउ अदीणु　　सउरीपुरि राणउ सूरसेणु ।
कुंलि तासु वि आयउ सूरवीरु　　धारिणिसुकंतमाणियसरीरु ।

घत्ता—भरहखपसिद्धपहु थिरथोरबाहुदुज्जयवल ॥
जाया ताहिं सुय वरपुप्फयततेउज्जल ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्यरहाणुमणिए महाकव्वे णेमिजिणतित्थयरत्तणिबंधण
णाम एक्कासीतिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८१ ॥

८ A कुसित्थए　९ AP सुउ तासु　१ B भरहि　११ S °णाह°　१२ P °पुप्फदंत°　१३ A तित्थयरत्ताभवधण B °तित्थयरत्तणाभणिबधण

8 *b* हरिगिरि इत्यादि हरिगिरेः पुत्रो हिमगिरिः तस्य पुत्रो वसुगिरि　11 *a* सूरवीरु सूरवीरराजः द्वे मार्ये, धारिणी सुकान्ता च, धारिण्याः पुत्रः अभकवृष्णिः, सुकान्तायाः नरपतिवृष्णिः

# LXXXII

सहहि णीलधम्मेहडु अंधकविट्ठि पहिल्लहि ।
णंदणु णयवयणिज्जउ णरवइविट्ठि दुद्धरहि ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

थणजुयलघुलियचलहारमणि जेट्ठहु सुभद्द णाम रमणि ।
मुणि सुयणसिरोमणि परिगणिउ सुउ ताइ समुद्दविजउ जणिउ ।
थिमियउ ण पुण्णपुंजरइउ अक्खोहु थिमियसायरु तइउ ।
हिमवंतु चिजउ अचलु वि तणउ धारणु पूरणु अहिणंदणउ ।
लहुयउ वसुएउ विसालमइ उप्पण्ण कोंति पुणु कमगइ ।
पुणु मद्दि कुंवरि कुवलयणयण मुणिहि मि उम्मोहियमणमयण ।
णियगोत्तमणोरहगाराहु सियवत्ति फल पहिल्लारहु ।
धीयहु सुमही सरमहुरसर तइयस्स सयपह कमलयर ।
तुरियहु सुसीम पंचमहु पिय पियकाय णाम पच्चकरहिय ।
अवरहु वि पहावइ णित्तमहु कालिंगी पणइणि सत्तमहु ।
अट्ठमयहु सुप्पह सुहचरिय णवमहु गुणसामिणि समरिय ।

घत्ता—णरवइविट्ठिहि गेहिणि विमलसीलजलवाहिणि ॥
जणि भडारी भावइ पोमंजयण पोमावइ ॥ १ ॥

## 2

तहि उग्गसेणु परसेणहरु सुउ जायउ करिकरदीहकरु ।
पुणु देवसेणु महसेणु हुउ साहम्मणिरासु णरवइसुउ ।

**1** १ B अंधयविट्ठि. २ AP पहिलउ ३ S णरवर° ४ ABP दुद्धरउ. ५ ABPS पुण्णपुंज. ६ A तिमिरखायरु ७ B लहुओ. ८ B विसाल° ९ AP कुमरि, BS कुमारि १० B °णयणा ११ B °मयणा १२ S सुअमहि. १३ B सर महुर°. १४ A सुसीय. १५ PS पियराय. १६ ABP सिय १७ B सुद्धचरिय १८ A गुणभासिणि १९ P पउमनयण.
**2** १ AP णरविंद°

**1** 1 पहिल्लहि प्रथमाया धारिण्याः पुत्रोत्पन्नवृष्णि 2 णयवयणिज्जउ नयनिन्द्यः निन्दारहित ; दुद्धरहि द्वितीयायाः सुकान्तायाः नरपतिवृष्णि. 3 b जेट्ठहु अन्धकवृष्णेः. 8 b उम्मोहियमणमयण उन्मादितमनोमदना 10 a सरमहुरसर स्मरस्यापि मधुरस्वरा, अथवा, स्वरस्वरमधुरस्वरा. 12 a अवरहु अचलस्य भार्या प्रभावती, णित्तमहु तमोरहितस्य, पापरहितस्य वा 11 b °वाहिणि नदी.
**2** 1 a परसेणहरु परसैन्यभञ्जकः

एयहु लहुई ससे सोम्ममुहि गंधारि णाम सूसवियसुहि ।
विण्णाणसमत्ति पयावेइहि किं वण्णमि सुय पोमावेइहि ।
कुरुजंगलि हत्थिणायणयरि तहिं हत्थिराउ छुंहघोयघरि ।
तहु देवि सुवकि सुकोंतलिय सिद्धा इव वरवंण्णुज्जलिये ।
हयउ पारासरु तहिं सुउ कैये ण सुरयरु सगगुउ ।
मच्छउलरायसुय सच्चवइ तहु दिण्णी सुंदरि सुद्धे सइ ।
उप्पण्णु वासु तहिं अलियकई तहु मज्ज सुभद्द पसण्णमइ ।

घत्ता—ताहि तेण उप्पण्णउ सुउ धयरट्ठु अट्ठुण्णउ ॥
लक्खणलक्खियकायउ पड्डु विउरु पुणु जायउ ॥ २ ॥

3

ते तिण्णि वि भायर मणहरहु बहुकालें गय सउरीपुरहु ।
तहिं पड्डकुमारें तिजगथुय अवलोइय अंधकविट्ठिसुय ।
सउहयलि रमती सहिहिं सहु चिंतइ सुंदरि अइ होइ महु ।
तो लद्धउ मइ परजम्मफलु कीलिइ जोयतु थिरच्छिदलु ।
पर चविवि तंबोलेण हउ सो सुहउ पुलइयदेहु गउ ।
पहु वि खणु कण्ण ण वीसरइ रिसि सिद्धि व हियवइ समरइ ।
आणवणविणयवरहिणहु अण्णहि दिणि गउ णंदणवणहु ।
तहिं दिट्ठियँ पड्डे पुंडरिय पीयलियहरियमणियरफुरिय ।
विज्जाहरयरकरपरिगलिय तरुणेण लइय अगुत्थलिय ।
पडिभायउ त जोयइ तायरु किं जोयहि इय पुच्छइ इयरु ।

२ P एयइं ३ B ससि ४ B °वइहो ५ B °वइहो ६ A हत्थु राउ ७ S दुद्दघोय° ८ B सकोंतलिया ९ S पर° ९ B °वण्णुज्जलिया १ B तासु, ११ S रूए १२ B अहजण्डुराय° १३ A सुहमइ १४ B उप्पण्ण १५ B तहो १६ A अलियगइ

3 १ ABP °कालहिं २ A सवरीपुरहो ३ B अभय° ४ PS रमति ५ S सउ ६ A सुदरु; B सुंदर ७ APS तो ८ B °पणाविउ ९ A °वरिहिणहो १ APS दिट्ठी ११ A पंडुर पंडुरिय B पंडु पुंडरिय P पड्डु पंडुरिय ११ AB मणि विप्फुरिय १३ B जोयउ १४ B पुच्छिइ

3 *a* एयहु एतेषां त्रयाणाम् ससु भगिनी 4 *a* पयावइहि विधातुः *b* सुय पोमावइहि गान्धारी 6 *a* सुवकि सुवक्कीनाम्नी *b* सिद्धा मातृका 7 *a* पारासरु पराशरः 8 *a* मच्छउलरायसुय मत्स्यकुलराजपुत्री न तु जात्या हीना धीवरपुत्री, किं तु उत्तमक्षत्रियमत्स्यकुलोत्पन्ना 9 *a* वासु व्यास अलियकइ असत्यकविः 10 *b* अट्ठुण्णउ न दुर्नेय

3 2 *a* तिजगथुय त्रिजगत्स्तुता *b* अंधकविट्ठिसुय कोन्ती ( कुन्ती ) 3 *b* चिंतइ पाण्डुश्चिन्तयति 5 *b* पुलइयदेहु रोमाञ्चित 8 *a* पंडु पाण्डुना पुंडरिय पाण्डुरवर्मोपेता *b* °मणियर मणिकिरणा

अक्खिउ खगेण रयणहिं जडिउं इह मेरउं अंगुलीउं पडिउं ।
चिंतिवि किं किज्जइ परवसुणा तं दंसिउं तासु वाससिसुणा ।
घत्ता—विहसिवि[15] वासहु पुत्तें णिव[16]कुमारिहियचित्तें ॥
णेहिं खयरु णियच्छिउ तहु सामत्थु पपुच्छिउ ॥ ३ ॥

4

भो[1] भणु भणु मुद्दहि[2] तणउ गुणु तं णिसुणिवि[3] खेयरु[4] भणइ पुणु ।
इच्छियउ रूउ[5] खणि संभवइ वइरि वि पयपंकयाइं णवइ ।
अइंसणु होइ ण भंति क वि ता भासइ कुरुकुलगयणरवि ।
भो[7] णहयर पइ दिव्व सुमइ अच्छउ मइु करि कइवय दियह ।
को णासइ सज्जणजंपियउं तहु मुद्दारयणु समप्पियउं ।
गउ णहयरु पइं वि आइयउ अइंसणु णेय[9] विवेइयउ ।
सयणालइ सुत्ती कोंति जहिं सहस त्ति पइट्ठउ तरुणु तहिं ।
परिमिट्ठउ[10] हत्थें थणजुयलु वियसाविउं[11] धुत्तें मुहकमलु ।
कण्णाइ वियाणिउ[12] पुरिसकरु चिंतइ जइ आयउ पंडु[13] वरु ।
तो देमि[14] तासु आलिंगणउं अप्पाहु मि[15] वि अप्पमि अप्पणउं ।
भवणंति कवाडु गाढु पिहिउं गुज्झहरइ अप्पउं णउ रहिउं ।
सरलंगुलिभूसणु घल्लियउ भुवणं[16] पयडगें वोल्लियउं ।
दे देहि देवि मइु सुरयसुहुं उल्हाविहि[17] विरहहुयासदुहु ।
मज्जायणिबंधणु अइकमिउ ता दोहिं[18] मि तेहिं तेत्थु रमिउं ।
घत्ता—ता वम्महसमरूवउ[19] ताहि गब्भि संभूयउ ॥
णवमासहिं उप्पण्णउ कउ सयणाहि पच्छण्णउ ॥ ४ ॥

१५ B वियसेवि १६ A नृवकुमारि°

4 १ AP भो भो भणु २ B मुद्दय. ३ AP सुणेवि ४ AP खगेसरु. ५ APS कहइ. ६ S रूवु. ७ AP हो ८ A एवहिं. ९ A णेव, B णेइ १० S परिमद्दउ ११ S विहसाविउ १२ AS वि जाणिउ १३ S पडवरु १४ S देंवि १५ APS णउ. १६ B भुअए १७ P ओल्हावहि १८ S दोह १९ PS °रूयउ

12 *a* परवसुणा परद्रव्येण, *b* वाससिसुणा व्यासपुत्रेण पाण्डुना. 13 *a* वासहु पुत्तें पाण्डुना, *b* णिवकुमारिहियचित्तें कौन्त्या हृतचित्तेन 14 *a* णेहि स्नेहेन

4 4 *a* सुमइ सुतेजा 7 *b* तरुणु युवा पाण्डु 11 *a* भवणंति गृहमध्ये 12 *b* पयडगें प्रकटाङ्गेन 14 *a* मज्जायणिबंधणु लज्जामर्यादानिबंधं . 15 *b* संभूयउ कर्णनामा पुत्रो जातः.

## 5

कुंडलजुयलउ कंचणकवउ　पत्तें सहुं वालउ दिव्वंवउ ।
णिविडहि मंजूसहि घल्लियउ　कालिंदिपयाहि पमेल्लियउ ।
चंपापुरि पावसावरहिउ　आइच्चें राएं संगहिउ ।
सुत्तउ अवलोइउ कण्णकरु　कण्णु जि हक्कारिउ सो कुयरु ।
सुउ पडिवण्णउ सम्माणियहि　तें दिण्णउ राहहि राणियहि ।
ण पोरिसपिंडउ णिम्मविउ　ण पक्खहिं साहसोहु थविउ ।
ण चायदुमंकुरु णीसरिउ　धरणिहि विहलुद्धरणु व धरिउ ।
वड्ढइ सुंदरु वड्ढियफुरणु　णावइ णीयउ दससयकिरणु ।
एत्तहि परणाहें सिरु धुणिवि　धुत्तत्तणु जामायहु सुणिवि ।
सो कोंति मद्दि पेण्णि वि जंणिउ　परिणाविउ पंडु पीणथणिउ ।
दइयहु आलिंगणु देंतियइ　कोंतीइ तीइ कीलंतियइ ।
सुउ जणिउ जुहिट्ठिलु भीमु णरु　णग्गोहरोहपारोहकरु ।
मद्दीइ णउलु सयणुद्धरणु　अण्णु वि सहएवु दीणसरणु ।

घत्ता—तिहुयणि लद्धपइट्ठहु　णरवइविट्ठें इट्ठहु ॥
विण्णी पालियरट्ठहु　गंधारि वि धयरट्ठहु ॥ ५ ॥

## 6

हुउ ताहि गब्भि कुलभूसणउ　दुज्जोहणु पुणु दूसासणउ ।
पुणु दुद्दरिसणु दुम्मरिसणउ　पुणु अण्णु अण्णु हूयउ तणउ ।
सउ पुत्तह एव ताइ जणिउ　जिणभासिउ सेणिय मइ गणिउ ।
अण्णहिं दिणि सूरवीरु सिरिहि　णिव्विण्णु गंधमायणगिरिहि ।

---

5　१ B पत्तिहिं　२ A दित्तवउ　३ Als पावासव° against Mss　४ S एए.　५ AP कुमरु　६ B व　७ APS °दुमकुरु　८ A धरणिविहलु°　९ A सा　१　A जणीउ　११ B पीणथणीउ　१२ S कुलउद्धरणु, K records a p कुल°　१३ A तिहुयण° B तिहुवण° P तिहुयणि
6　१ P दुम्मुहु पुणु अण्णु हूयउ　२ B णिव्विण्ण　S णिविण्ण

---

5　1 b पत्तें सहु पत्रेण लेखेन सह　दिव्वंवउ दिव्यवपुः　2 a णिविडहि निबिडायाम् b कालिंदि° यमुना　3 a पावसावरहिउ पापश्रा (था) परहितः　b आइच्चें राएं आदित्यनाम्ना राज्ञा　4 a सुत्तउ सुप्तः; कण्णकरु कर्णोपरि दत्तहस्तः　5 b राहहि राधानाम राज्ञ्या　6 b साहसोहु अद्भुतकर्मसमूहः　7 a चायदुमंकुरु त्यागवृक्षस्य अङ्कुरः　b विहलुद्धरणु दुःखितजनोद्धरणं　8 b दससयकिरणु सूर्यः　9 a परणाहें अंधकवृष्णिना　12 a णरु अर्जुनः　b णग्गोहरोहपारोह° वटपादपाङ्कुरः
6　4 a सूरवीरु अन्धकवृष्णिपिता　सिरिहि लक्ष्म्याः सकाशात्

गउ वंदिउ सुप्पइट्ठभडारहुँ सुयजमलहु महियलु देवि पिहुँ ।
अप्पणु णीसंगु णिरंबरउ जायउ मुणि कयमणसवरउ ।
णिसिदिवसपक्खमासेंण हय वारह संवच्छर जाम गय ।
ता सुप्पइट्ठरिसिदिहि हरइ उवसग्गु सुदंसणु सुरु करइ ।
तं दुहुं दूसहु साहुं सहिउं आऊरिउं झाणु रोसरहिउं ।
उप्पण्णउं केवलु विमलु किह जाणिउं तेल्लोक्कु झड त्ति जिह ।
जायउं चउविहु देवागमणु तहिं अंधयविट्ठिहि णमिउ जिणु ।
पुच्छिउ परमेसरु परमपरु णाणाविहजम्मणमरणहरु ।
उवसग्गहु कारणु काइं किर ता जिणमुहाउ णीसरिय गिर ।

घत्ता—जंबूदीवइ भारहि देसि[१६] कलिंगि सुहावहि ॥
आवणभवणणिरंतरि दिण्णकामि कंचीपुरि ॥ ६ ॥

**7**

तहिं दिणयरदत्त सुदत्त वणि किं वण्णमि धणयसमाणधणि ।
लंकाइहिं दीविहिं संचरिवि अण्णोण्ण पसंडिभंडु भरिवि ।
लोहिट्ठ ण सुक्कहु देंति पणु भइयइ महिमज्झि धिवंति धणु ।
तरु णिहणंतहिं रसवणियरहिं तं दिट्ठउं णियउं जाम परहिं ।
ता जुज्झिवि ते तिह्वाइ हय अवरोप्परु भंतिइँ हणिवि मय ।
णारय हूया पुणु मेस वणि पंचत्तु पत्त पुणु भिंडिवि रणि ।
गंगायडि गोउलि पुणु वसह जुंज्झेप्पिणु पुणु संपत्तवह ।
संमेयमहीहरि पुणु पमय तण्हाइ सिलोयलि सलिलरय ।
अब्भिट्ट दसणणहजज्जरिउ मुउ एक्कु एक्कु तहिं उव्वरिउ ।

३ BP सुप्पइट्ठु, S सुप्पतिट्ठु. ४ S अरिहु. ५ AB पट्टु ६ B अप्पुणु ७ APS °मासेहिं ८ A साहुहु सहिउ ९ P रोसहरिउ १० S विमाछु ११ B आयउ. १२ ABP चउविहदेवा°, S वहुविहु. १३ AP अधकविट्ठिं, S °विट्ठें. १४ PS णविउ. १५ S जवूदीवे. १६ S देस°.

**7** १ P सवरेवि. २ ABPS अण्णण्णु ३ B पसडे ४ A पुणु ५ B वणियरेहिं, P वणिवरेहिं ६ A णिय उजम परहिं, P णियउ जाम परहि. ७ A सतिए ८ AP पुणु हूया. ९ S भिडवि. १० A जुज्झेण जि पुणु वि पवण्ण वह, B जुज्झेण जि पुणु वि पवण्णवहि. ११ S सिलायल°

5 *b* पिहु विस्तीर्णम् 8 *b* सुदसणु सुदत्तवणिक्चरः. 9 *a* साहु साधुना 15 *a* आवण° हट्ट.

**7** 1 *b* धणयसमाणधणि कुवेरसदृशधनवन्तौ 2 *a* दीविहिं द्वीपेषु, *b* पसडिभडु सुवर्णभाण्डम्. 3 *a* सुक्कहु शुल्कस्य, पणु भागः, *b* भइयइ भयेन 4 *b* त धनम्, णियउ नीतम्. 5 *a* तिह्वाइ तृष्णया. 7 *b* सपत्तवह प्राप्तवधौ. 8 *a* पमय वानरौ 9 *b* एक्कु सुदत्तचर, एक्कु दिनकरदत्तचर

इसीसि जाम णीससइ कइ   सपक्ख ता तहिं वेण्णि जइ ।
चारण जियमण तेल्लोक्कगुरु   ते णामें सुरगुरु देवगुरु ।
कहियाइ तेहिं दुक्कियहरइ   करुणेण पंच परमक्खरइं ।
घत्ता—सिवगइकामिणिकंतहु   धम्मु सुणिवि अरहंतहु ॥
मुउ वाणरु मेउ लेप्पिणु   जिणवरु सरणु भणेप्पिणु ॥ ७ ॥

## 8

सोहम्मसग्गि सोहग्गजुउ   चित्तंगउ णामें अमरु हुउ ।
कालें अंतें एत्थु जि भरहि   वेसम्मि सुरम्मइ सुहणिवहि ।
पोयणपुरि सुत्थियपत्थिवहु   तिक्खासिपरज्जियपरणिवहु ।
सिसु आयउ गब्भि सुलक्खणहि   सुपइट्ठु णामु सुवियक्खणहि ।
पाउसि गउ कत्थइ कालगिरि   तहिं दिट्ठा वेण्णि भिडंत हरि ।
हा मइ मि आसि इय जुज्झियउ   कइदंसणि णियभउ बुज्झियउ ।
आसंधिउ सूरि सुधम्मु सइ   इय पइउ जिणतउ खिण्णु मइ ।
इयरु वि संसारइ संसरिवि   पुणु आयउ गहुदुक्खइं सहिवि ।
सिंधूतीरइ घणवणगुंहिलि   णवकुसुमरेणुपरिमलबहलि ।
तावालिहि विसालहि हरगणहु   तवसिहि सिसु हुउ मुगायणहु ।
पंचग्गितावितवधसणउ   हुउ जोइसदेउ सुदंसणउ ।
हउं सूरदत्तु चिरु घाणियउ   इहु सो सुवत्तु मइ जाणियउ ।
उवसग्गु करइ णियकम्मवसु   ण मुणइ परमागमणाणरसु ।
संसारि ण को मोहेण जिउ   स सुणिवि सुदंसणु धम्मि थिउ ।
घत्ता—त णिसुणिवि पणवेप्पिणु   सिरि करजुयलु थवेप्पिणु ॥
अधकेविहि जिणवरु   पुच्छिउ णियभवतरु ॥ ८ ॥

१२ S अरिहंतहो १३ AP वउ

8 १ B सुत्थिउ २ B कालिगिरि. ३ APS बहुवारउ उप्पज्जिवि मरिवि but K adds a p बहुवारउ उप्पज्जिवि मरिवि इति ताडपत्रे in second hand ४ B °गुहलि ५ S °बहुले ६ B मिगयणहो P मिगायणहो ७ AP °तावतणुधसणउ ८ B तं णिसुणेप्पिणु सिरि ९ AP °विहिहि. १ B णियइ

10 *a* कइ कपि 14 *a* वाणरु दिनकरदत्तचर

8 1 *a* सोहग्गजुउ सौभाग्ययुक्त॰ 4 *a* सुलक्खणहि सुलक्षणानाम्न्या॰ 5 *a* पाउसि वर्षाकाले *b* हरि वानरौ 6 *b* कइदंसणि कपिदर्शने 8 *a* इयरु इतर. सुदत्तचर॰ 9 *a* °गुहिलि गह्वरे सघने 10 *a* हरगणहु रुद्रापत्य *b* मुगायणहु मृगायननाम्न 12 *a* हउ सुप्रतिष्ठ. 15 *b* सिरि मस्तके

## 9

जिणु कहइ एत्थु भारहवरिसि कोसलपुरि पउरजणियहरिसि।
णरवइ अणंतवीरिउ वसइ जसु जासु चंदजोण्ह वि हसइ।
तेत्थु जि सुरिंददत्तउ वणिउ गुणवंतु संतु भल्लउ भणिउ।
अरहंतदेवपविरइयमहु अणवरउ देइ दीणार दह।
अट्ठमिहि वीस चालीस पुणु अमैवासहि मणकवडेण विणु।
अट्ठउणउं पव्वि पव्वि मुयइ दविणें जिणु पुज्जइ भल्लु थुयइ।
तें जंतें सायरपारपरु धरि अच्छिउ पुच्छिउ विप्पु वरु।
भो रुद्ददत्त सुइ करहि मणु लइ बारहसंवच्छेरहं धणु।
पुज्जिज्जसु जिणवरु एण तुहुं हउ एमि जाम जाएवि सुहु।
इय भासिवि णिग्गउ सेट्ठि किह वमणमणभवणहु धम्मु जिह।

घत्ता—चिरइयकित्तिमवेसइ खद्धउ जूवेंइ वेसइ॥
वड्डियजोव्वणदप्पें देवदव्वु खलविप्पें॥ ९॥

## 10

पुणु पट्टणि रयणिहिं संचरइ परधण्णु सुवण्णइं अवहरइ।
अवलोइउ सेणें तलवरिण कुसुमालु धरिउ णिट्ठुरकरिण।
पुणरवि मुक्कउ बंभणु भणिवि जइ पइसेहि तो पुरि सिरु लुणिवि।
तं णिसुणिवि णीरसु वज्जरिउ कुसुमालहु हियवउ थरहरिउ।
गउ भिल्लपल्लि कालउ सवरु तें सेविउ चावतिकंडधरु।
आसाइयतरुणाहलहि अण्णहिं दिणि आविवि णाहलहि।
तप्पुरवरगोमंडलु गहिउं धाँविउ पुरवरु सेणियसहिउ।

9 १ P भरह° २ B सुरिंदयत्तउ, PS सुरेंददत्तउ ३ A मावासहे ४ B मुवइ ५ B पुसर ६ S °पाद पद ७ AP परियउ ८ ABP विप्पवरु, S विपरु ९ B रुद्दयत्त १० B संव-च्छरहिं ११ APS जूए

10 १ S °धण्ण A २ सेण्णे. ३ P पमुकु ४ A पइसहि पुरि तो ५ APS °तिकंडकरु ६ BP °पुरवरु ७ BP धाइउ ८ B सेण्णे, P सेणिय°, S सेणर°

9 1 a कोसलपुरि अयोध्यायाम्, पउर° पौराणाम् 2 b जसु जासु यस्य यशः 4 a °प-विरइयमह °विरचितजिनपूजः 6 a पव्वि पव्वि चतुर्दश्यां अशीतिदीनाराः 8 a सुइ शुचि निर्लोभम् 9 b एमि आगच्छामि. 11 b जूवइं द्यूतेन, वेसइ वेश्यया

10 1 a रयणिहिं रात्रौ 2 b कुसुमालु चोरः 4 a णीरसु कर्कशम्. 6 a आसाइय° आस्वादिताः; b णाहलहिं भिल्लैः.

सो लोत्तिंधसवरु णिवाइयउ णरयावणि मरेवि पराइयउ ।
पुणु जलि झसु पुणु पुणु पुणु उरउ पुणु वग्घुँ जाउ मारणणिरउ ।
पुणु पक्खिराउ पुणु कूरमइ पुणु सीहु विरालु रणोक्कइ ।
पुणु भमिउ सत्तणरयतरहिं णाणाजोणिहिं तसथावरहिं ।
पुणु पत्थु खेत्ति कुरुजंगलइ करिवरपुरि परिहाजलवलइ ।

घत्ता—लोयहु मग्गंपउजउ जहिं णरणाहु धणजउ ॥
कविलुं सुणामें लोत्तिउ तहिं दइवें णिव्वत्तिउ ॥ १० ॥

## 11

तहु घणथणसिहरणिसुभणिहि जायउ अणुराहहि बभणिहि ।
सो गोत्तमु णामें णीसिरिउ पब्भट्ठुअणिट्ठपुण्णकिरिउ ।
णीसेसु वि पलयहु गयउ कुलु थिउ देहमेत्तु पाविट्ठु खलु ।
मलपडलविलित्तु भुत्तविहुरु जूयासहासंसकुलचिहुरु ।
मासिकसणवण्णु जरचीरधरु आहिंडइ घरि घरि देहिसरु ।
जणणिदिउ खप्परखंडकरु महिवालु व चल्लइ दंडधरु ।
पुरडिंभहिं हम्मइ आरडइ भुक्खाइ भामियलोयणु पडइ ।
दुग्गंधु दूहउ दुग्गधतणु रसवसलोहियपवहतवणु ।
तें पुरि पइसंतु सुसुचरिउ दिट्ठउ समुद्दसेणायरिउ ।

९ B सोचिउ १० AP पुणु जलणिहि झसु पुणरवि उरउ ११ B हुउ S omits पुणु १२ AT वग्घु हरिणमारण॰ BP वग्घु जीवमारण॰ S वग्घु जीउ मारण॰ १३ B पक्खिराउ १४ APS बिराउ १५ AP रणोक्कमइ १६ PS मग्गु १७ A कविलहु णामें

11 १ AP हुउ सुउ अणु॰ २ B णीसियरिउ PS णीसरिउ K णीसियरिउ but strikes off य Als णीसिरिउ on the strength of गुणभद्र who has निःश्रीक ३ B पब्भट्ठु ४ B ॰पुण्णुकरिउ ५ B ॰वलित्तु ६ BP भुत्त विहुरु ७ B ॰संकुलियसिरु ८ S जरजीर॰ ९ P भोमणु S लोयण १ PS दोग्गउ ११ S दूहउ १२ PS ॰सेणाइरिउ

8 *a* णिवाइयउ निपातित *b* णरयावणि सप्तमनरके 9 *a* पुणु पुणु द्विवार सर्पः 10 *a* पक्खिराउ गरुड *b* विराउ मार्जारः 1? *b* करिवरपुरि हस्तिनागपुरे 13 *a* लोयहु मग्गपउजउ लोकस्य न्यायमार्गे प्रवर्तक

11 1 *a* णिसुभणिहि निशुम्भन स्तनयो यस्याः पुत्रे जाते सति स्तनस्याधः पतन भवतीति भाव 2 *a* णीसिरिउ निःस्व निर्धन श्रीरहित अधोमनो दरिद्रो वा *b* पब्भट्ठअणिट्ठपुण्णकिरिउ पुण्यक्रियारहितः 3 *a* णीसेसु सर्वम् *b* देहमेत्तु एकाक्येव 4 *a* भुत्तविहुरु भुक्तदुःखः *b* जूयासहास॰ यूकासहस्रेण ॰सकुलचिहुरु मस्तकेशः 5 *b* देहिसरु देहि इति शब्दं कुर्वन् 6 *a* जणणिदिउ लोकनिन्द्य 9 *a* तें गौतमेन

तहु मग्गेण जि सो चल्लियउ आणिवि सुहकम्मे पेल्लियउ ॥
घत्ता—पयंडिथपाणुलियालउ दुद्दंसणु विग्गालउ ॥
धणिचरणारिहिं बिट्ठउ ण कुकालु पइट्ठउ ॥ ११ ॥

## 12

पडिगाहिउ तेहिं घरंगणधरि आहारु दिण्णु सुविसुद्धु करि ।
मुणिचरणु भणिवि दयालियउ पंकु वि तेत्थु जि पक्खालियउ ।
भोयणु आयंतु तेण गसिउ णियचित्ति णिरिक्खु जि अहिलसिउं ।
गउ सुकरपंथेण जि सुकयघणु सो भावइ पंडालयगणु ।
तुहुँ पेसणेण आहसिओ गगमि तुहुँ जिह तिह हउ णायउ भवमि ।
गुरुणा तहु कम्मु णिरिक्खियउ दिण्णउं वउ भरहु वि सिक्खियउं ।
फालु जेंतें समभावि थिउ हुउ सो णिग्गंथसु लोयपिउ ।
मज्झिमगेवज्जहि तासु गुरु उवरिल्लविमाणइ जाउ सुरु ।
सो तेहिं मरेवि अहमिंदु हुउ अट्ठावीसहिं सायरहिं चुउ ।
इहं जायउ अंधकविट्ठि तुहुं थिउ काळेणु अणुदिणिवि तुहुं ।
घत्ता—अणुहुंजियबहुकम्मइ आयण्णिवि णियजम्मइ ॥
पुणु तणुकहइ भवावलि पुच्छिउ राएं पंजलि ॥ १२ ॥

## 13

जंभसवणसुहुं जणइ ता जिणवरो भणइ ।
इह भरहवरिसंमि धम्मलयंबुममि ।
भहिलपुरे राउ मेहरहु विक्खाउ ।
पीसयँसणीरुस्स राया णिया तस्स ।
णं अच्छरा का वि भद्दा महादेवि ।
पायडियगुणथिणउ दढरहंणामो तणउ ।

---

११ B पायडिय°. १४ B वणो.

**12** १ PS पडिगाहिउ. २ B भणिउ. ३ P सुद्धु. ४ AP णिरु गोयगु. ५ APS तहि जि मरेवि. ६ P हुय.

**13** १ AP जं सवण°. २ S °वरसमि ३ P णिरु मरालस्स. ४ AP महाएवि. ५ AS दढरहणो.

---

11 *a* °पाशुलिकाहडउ पापाभिनुभः.

**12** 1 *a* पडिगाहितु स्थापित. 2 *a* °भद्दु छाग. 4 *b* पंडालभहणु अंडे स्थापितपुत्रः, मधुरभाषणात् उपलोदर इति भावः. 6 *a* गुरुणा इत्यादि नामसंज्ञेन गौतमस्य भाष निर्धारित

**13** 1 *a* °सवणसुहु जणइ कर्णानां सुखमुत्पादयति. 1 *a* पीसयँस° नीरोगस्य.

अरविंददलणेत्तु　　धणिवइ वि धणयत्तु ।
णवर्यंस तहु घरिणि　　णयणेहिं जियहरिणि ।
धणदेउ धणपालु　　अण्णेक्कु दिण्णपालु ।
सुउ देवपालक्कु　　जिणधम्मि णीसक्कु ।
पुणु अरुहदत्तो वि　　सिसु अरुहदासो वि ।
जिणयत्तु पियमित्तु　　सपुण्णसासियत्तु ।
धम्मरुइ पुत्तेहिं　　वेणि णवहिं पुत्तेहिं ।
ण णवपयत्थेहिं　　पसरंतगंथेहिं ।
परमागमो सहइ　　रूहिं धर वहइ ।
पियदसणा पुत्ति　　जेट्ठा वि गुणजुत्ति ।

घत्ता—णाणातरुसंताणहु　　गउ महिवइ उज्जाणहु ॥
सेट्ठि वि पुत्तकलत्तहिं　　सहुं कयभत्तिपयत्तहिं ॥ १३ ॥

## 14

तहिं वंदिवि मुणि मंदिरथविरु　　णिसुणेवि अहिंसाधम्मु चिरु ।
दढरज्जु समप्पिवि धरणियलु　　हियउल्लउ सुद्धु करेवि विमलु ।
मेहरहें संजमु पालियउ　　अरि मित्तु वि सरिसु णिहालियउ ।
धणि जायउ विसि सहुं णंदणहिं　　मैणि मण्णिय समतिणकंचणहिं ।
मयकामकोहविद्धंसणहिं　　खंतियहि समीवि सुणंदणहि ।
णवयंस सुणिव्वेए लइय　　पियदंसण जेट्ठ वि पावइय ।
कंकेल्लिकंचलिककोल्लिवणि　　सुपियंगुलवंगि सुगंधवइवणि ।
गुरु मंदिरथविरु समेहरहु　　धणयत्तु वि णासियमोहरहु ।
णय तिण्णि वि सासयसिवपयहु　　मुक्का जरमरणरोयभयहुं ।
ते सिद्धा सिद्धसिलायलइ　　धणदेवाइ वि तेत्थु जि णिलइ ।

घत्ता—थिय अणसणि विणयायर　　माहिंणिहियत्तणु भायर ॥
सहुं जणणिइ सहुं बहिणिहिं　　जोइयजिणगुणकुहिणिहिं ॥ १४ ॥

६ APS णदजस ७ B जिणपालु ८ B जिणयत्तु ९ B सच्चिवत्तु १० S धणि वणहिं ११ PS गुणगुत्ति

14 १ P °थविरु २ AP करेवि सुद्धु विमलु ३ ABS मणमण्णिय° ४ ABP °तण° S °तिणु ५ A णदयसि ६ B पियदसणि ७ B किंकिल्लि° ८ A °ककोल° P ककोल्ल°, S °कक्कोलि° ९ B दंदि १० AP मिगचंद° B चंदु ११ BP मंदिरु १२ APS धणदत्तु B धणयत्त १३ B मरहो १४ B अणसणेण १५ P जणणिहे १६ APS °कुहिणिहिं

14 *b* गथेहि धाळे धनैश्च

14 4 *a* णंदणहिं नवभि पुत्रैः सह 11 *a* अणसणि संन्यासे विणयायर विनयस्य आकरा॰ 12 *b* कुहणिहिं °मार्गे

## 15

णियदेहसमुब्भवणेहवस संणासणि चिंतइ णंदजस ।
जइ अत्थि किं पि फलु रिसिहिं तवि ए तणुरुह तो आगामिभवि ।
पयउ धीयउ महुं होंतु तिह विच्छोउ ण पुणरवि होइ जिह ।
कइवयदियहहिं संवइं मयइं तेरहमउ सग्गु णवर गयइं ।
सायंकरि सुरहरि अच्छियइं सुरवेरकोडीहिं सँमिच्छियइं ।
तहिं वीससमुद्दइं मुसु सुहुं णिवडंतहुं ओहुल्लियँउं मुहुं ।
हूँइं णंदयस सुईइ तुह गेहिणि परियाणहि चंदमुह ।
धणदेवपमुह जे पीणभुय इह ते समुद्दविजयाइ सुय ।
घत्ता—पियदंसण सहुं जेट्ठइ किस हूँई तवणिट्ठइ ॥
पुत्ति कोंति सा जाणहि अवर मद्दि अहिणाणहि ॥ १५ ॥

## 16

पहु पुच्छइ वसुदेवायरणु जिणु अक्खइ णाणि जित्तकरणु ।
वहुगोहणसेवियणिविडवहु कुरुदेसि पलासँगाउ पयडु ।
तहिं सोमँसम्मु णामेण दिउ हुउ णंदि तासु सुउ णाणपिउ ।
तें देवसम्मु णियमाउलउ सेविउ विवाहकरणाउलउ ।
सत्तें वि धीयउ दिण्णउ परहं धणकणगुणवंतहं दियवरहं ।
णँदिं दिट्ठउ णच्चंतु णडु भडसंकडि णिवाडिउ विवलु वहुँ ।
अण्णाणिउ वसु हँवंतु हिरिहिं जणपँहसणि गउ लज्जिवि गिरिहिं ।
गुरुसिहरारूढउ तसियमणु आँवेवि जाइ णउ घिवइ तणु ।
तलि आसीणा अच्चंतगुणि तहिं संखणाम णिण्णाम मुणि ।
परछायामग्गु णियच्छियउ दुमसेणुँ तेहिं आउच्छियउ ।

15 १ A अण्णाणि णियच्छइ णद°, P अण्णाणिणि पत्थइ णद° २ A भव्वइ. ३ S सग्ग. ४ PS °कोडिहिं ५ P सम्मच्छियइ ६ P ओहल्लियउ. ७ S हुइ. ८ P सुमइ

16 A सेवियवियडवहु, B °णिवडवडो, P °वियडवडे २ B °गाम ३ S सोम्मसम्मु. ४ B सत्त वि जि धीउ ५ P णदें, S णदि ६ A वलु. ७ P भवतु. ८ B °पहसिणि, P °पहसणें. ९ PS आवेइ. १० B °सेणु जि तहिं

15 1 *a* णियदेहसमुब्भवणेहवस स्वपुत्रस्नेहवशा, *b* सणासणि सन्यासयुक्ता 5 *a* सायकरि सुरहरि शातकरविमाने 6 *b* ओहुल्लियउ म्लान जातम्, *b* गेहिणि तव अन्यकतृष्णो. गेहिनी.

16 1 *a* °आयरणु पूर्वजन्मचरितम्, *b* जित्तकरणु जितेन्द्रिय. 2 *b* पयडु प्रकट. प्रसिद्धः 6 *b* भडसकडि प्रेक्षकजनसमर्दे, विवलु वडु गतसामर्थ्यं बटु 7 *a* वसु हवंतु वशो भवन्. 8 *a* तसियमणु भृगुपातकरणे भीतमना.

गुरु अवेक्खहि कायच्छाय णरहु    कहु तणिय एह आइय घरहु ।
घत्ता—ता णियणाणु पयासइ    ताहं भडारउ भासइ ॥
होंतउ सव्वउ दीसइ    जो तुम्हहं पिउ होसइ ॥ १६ ॥

## 17

सइयम्मि जम्मि ओलद्धदिही    वसुदेउ णाम राणउ हविही ।
जो तुम्हहं जणणु सीरिहरिहिं    भुयबलतोलियपडिबलकरिहिं ।
तहु तणुछाहुल्लिय ओयरिय    ता ये वि तहिं जि रिसि सचरिय ।
जहिं सो अप्पाणउ किर थियइ    अणुकंपइ सव्वु साहु चवइ ।
उव्वेइउ दीसहि काइं णिरु    किं चिंतहिं णिहुणहि किं थहिरु ।
त णिसुणिवि पणइणिदुक्खियउ    पडिलवइ कुकम्मुंयलक्खियउ ।
महु मामहु धूयउ जेत्तियउ    लोयहु पविइण्णउ तेत्तियउ ।
हउ दूहउ णिद्धणु बलरहिउ    किं जीवमि परणिंदइ गहिउ ।
णिहइत्तुं णिरुज्जमु किं करमि    इह णिवडिवि वर तणु संघरेमि ।
घत्ता—मुणि पभणइ किं चिंतहि    अप्पउ महिहरि घत्तेहि ॥
मो जिणवरतवु किज्जइ    दुरिउ दिसावलि दिज्जइ ॥ १७ ॥

## 18

लब्भइ सयलु वि हियइच्छियउं    पर तं मुणिवरहिं दुगुंछियउ ।
भग्गिज्जइ णिक्कलु परमसुहु    जहिं कहिं मि ण दीसइ देहदुहु ।
त णिसुणिवि तेण वि तवचरणु    किउ कामकसायरायहरणु ।
उप्पण्णु सुक्कि णिरसियविसउ    सोलहसायरपढ्ढाउसउ ।

११ B अवखइ १२ S कायच्छाइ°

**17** १ S आलद्धि २ S तुम्हहु ३ S उयरिय ४ A उव्वेयउ ५ A थीसइ S दीसहे ६ B णिहुणइ. ७ B कुकम्मवलक्खियउ ८ B धूवउ ९ B वडिवण्णउ P पडिवण्णउ १ B दोहउ; P दूहउ ११ B णिज्जउ; P णिहइउ १२ S सवरमि १३ B चिंतहि P घेतहि

**18** १ S जे

11 *b* घरहु पर्वतात्

**17** 1 *b* हविही भविष्यति 2 *a* सीरिहरिहिं बलभद्रकृष्णयो· *b* करिहिं गजे 3 *b* सचरिय सचलितौ गतौ 6 *a* पणइणिदुक्खियउ स्त्रीलाभ विना दुःखित· *b* कुकम्मुयल-क्खियउ उपलक्षित ज्ञात निजपापकर्म 7 *b* पविइण्णउ दत्ता इत्यर्थ 8 *a* णिहइड अपुण्य

**18** 1 *b* त निदानम् 4 *a* णिरसियविसउ निरस्तविषय

कालें जंतें तेरथहु पडिउ णरकुंडें णं धम्महु घडिउ ।
ण तमणिणायणमणरमणयरु ण गेहु कयदुम्महविरहजरु ।
णं कामबाणु णं पेम्मसरु णं पुरिसरूवि थिउ मयणजरु ।
वसुएवु गए सुरहु सुहडु सुउ तुह जायउ हयहरियडहु ।
तो अधकविट्ठि घरवइउ णिवघइ णिहियउ समुदविजउ ।
सुपइट्ठु भडारउ गुरु भणिवि मोहंधिवमूलइं णिहुणिवि ।
उवसग्ग परीसह घट्टु सहिवि तहु कम्मिवि घोर दुम्मियइं महिवि ।
घत्ता—भरहरायदिहिगारउ अधकविट्ठि भडारउ ॥
गउ मोक्खहु मुणिकिविउ पुप्फयंतसुरवंदिउ ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वसुएवउप्पत्ती अधकविट्ठि-णिव्वाणगमण णाम दुंयासीमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८२ ॥

२ A णारिहु. ३ AP कयदुम्मह. ४ A °हरियहु. ५ A ता ६ ABP णियघइ. ७ B सुपइट्ठ ८ B सुपयगु, K सुणगत, S सुणयत. ९ AB समुदविजयाहिउणवती. १० AS दुयासीतिमो, P दुयासीमो.

5 a तरथहु सुमरसांत. 6 b गहु स्त्रीणां निवर्णाहो मह. सनि. शत्रुर्वा 7 b मयणजरु कामस्य मदा 9 b णियघइ निजपदे. 10 b मोहंधिवमूलइं मोहवृक्षस्य मूलानि 12 a भरहरायदिहिगारउ भरतैरवतयोः धृतिकारक, संतोषकारक.

सहु मायरहिं समिद्धु णायाणाय णिहालइ ॥
पहु समुद्दविजयक्कु महिमण्डलु परिपालइ ॥ ध्रुवक ॥

## 1

पक्कहिं दिणि ओरूढउ करिवरि णावइ ससहरु उईउ महीहरि ।
अंसहसणयणु णोइ कुलिसाउहु अकुसुमसरु ण सइ कुसुमाउहु ।
ण भयाउ सलवणु रयणायरु अकवडणिलउ णोइ दामोयरु ।
अमलदेहु णावइ उग्गेउ इणु जगसखोहकारि णावइ जिणु ।
चामरछत्तचिंधसिरिसोहिउ विविहाहरणविसेसपसाहिउ ।
सो वसुएउ कुमारु पुरंतरि हिंडइ हट्टमग्गि घरि चच्चरि ।
सो ण पुरिसु जें दिट्ठि ण ढोइय सा ण दिट्ठि जा तहु णें पत्तइय ।
मणुउ देउ सो कासु ण भावइ सचरतु तरुणीयणु तावइ ।

घत्ता—का वि कुमारु णियंति रोमि रोमि पुलइज्जइ ॥
मलहंती तहु चिंतु पुणरवि तिलु तिलु खिज्जइ ॥ १ ॥

## 2

पासेइज्जइ का वि णियंबिणि थिप्पइ ण अहिणवकालिंबिणि ।
का वि तरुणि हरिसंसुय मेल्लइ काहि वि वम्महु वम्मइ सल्लइ ।
सुहवगुणकुसुमहिं मणु वासिउ काहि वि मुहु णीसासें सोसिउ ।
णेहवसेण पडिउ चेलचल्लु काहि वि पायहु यक्कु थणत्थलु ।
काहि वि केसभारु खुडे थघणु काहि वि कडियलल्हसिउ पंयघणु ।
खलियक्खरइ का वि दर जपइ पियविओयजरवेप कपइ ।

---

1 १ S आरूढ २ APS उययमहीº ३ A सहसणयणु णावइ ४ B णामि ५ B उमाओ ६ AP चिंधु ७ S सिरº ८ S विविहाहरणº ९ S वसुदेव १ S omits ण

2 १ S णियवणि २ S ºकालिंविणि ३ AP चुयº ४ P पईघणु ST पइघणु

---

1 3 *b* उइउ उदित 4 *a* असहसणयणु पर न सहस्रनेत्र कुलिसाउहु इन्द्र' 5 *a* रयणायरु समुद्र' *b* अकवडणिलउ कपटरहितः 6 *a* इणु सूर्य 7 *b* पसाहिउ शृङ्गारित

2 1 *a* पासेइज्जइ प्रस्विद्यते *b* थिप्पइ क्षरति कालविणि मेघमाला 2 *a* हरिसंसुय हर्षाश्रूणि वम्मइ मर्माणि 4 *b* पायडु प्रकटम्, 5 *a* खुडउ शिथिलो जात *b* पयघणु परिधानम्,

चिकवंति के वि चरणहिं गुप्पइ　　कवि पुरंधि णियद्दयहु कुप्पइ ।
मयणुम्मायउं गयमज्जायउं　　काहि वि हियउं णिरंकुसु जायउं ।
लोहलंजकुलभयरसमुक्कउं　　वरदेवरससुरयसुहिचुक्कउं ।
काहि वि वउ पेम्मेण किलिण्णउं　　विउणावेढु णियंवहु दिण्णउं ।

घत्ता—क वि ईसालुयकंत दप्पणि तरुणु पलोइवि ॥
विरहहुयासें दड्ढ मुय अप्पाणउं सोइवि ॥ २ ॥

**3**

तग्गयमण क वि मुहआलोयणि　　वीसरेवि सिसु सुण्णणिहेलणि ।
कडियलि घरमज्जारु लएप्पिणु　　धाइय जणवइ हासु जणेप्पिणु ।
काहि वि कंडंतिहि ण उदूहलि　　णिवडिउ मुसलघाउ धरणीयलि ।
काइ वि चट्टुयहत्थइ जोइउ　　रंककरंकइ पिंडु ण ढोइउ ।
चित्तु लिहंति का वि तं झायइ　　पत्तछेइ तं चेय णिरूवइ ।
जा तहिं णच्चइ सा तहिं णच्चइ　　जा गायइ सा तं सरि सुच्चइ ।
जा वोल्लइ सा तहु गुण वण्णइ　　णियभत्तारु ण काइं वि मण्णइ ।
विहरतिहिं इच्छिज्जइ मेलणु　　भुंजतिहिं पुणु तहु कह सालणु ।
णिसि सोवंतिहिं सिविणइ दीसइ　　इय वसुएउ जाव पुरि विलसइ ।
पउरणाहहु कयसाहुक्कारें　　ता पय गय सयल वि कूवारें ।
देव देव भणु किं किर किज्जइ　　विणु घरिणिहिं घरु केंव धरिज्जइ ।
मयणुम्मत्तउ पुरणारीयणु　　वसुएवहु उप्परि ढोइयमणु ।
णिसुणि भडारा दुक्करु जीवइ　　जाउ जाउ पय कहिं मि पयावइ ।

५ A विक्कमति, P चिक्कमति　६ P चरणहिं क वि　७ ABP लोयलज्ज°　८ B °रसभय°　९ S °रसु
१० P सुसुरय°. ११ A °सुहिडुक्कउ　१२ A वडणावेढु　१३ S पलोयवि

**3**　१ P उग्गयणयण का वि मुहयालोयणि　२ A सुहयालोयणि　३ BS कडतहिं　४ B णिव-डिय　५ B चट्टुउ　६ B रंकह करए　७ P चिन्हु　८ A णिरूयइ　९ P जहिं तहिं　१० A गायइ
११ S वसुएउ　१२ BP वसुदेवहु

7 *a* चिक्कवंति गच्छन्ती　9 *a* लोहलज्ज° लोभस्य रस　10 *a* वउ पेम्मेण किलिण्णउ वपुः शुक्रेणार्द्रं जातम्, *b* विउणावेढु द्विगुणवेष्टनम्　11 ईसालुयकंत ईर्ष्यायुक्तस्य भर्तुः कान्ता. 12 दड्ढ दग्धा

**3**　1 *a* मुहआलोयणि मुखालोकननिमित्तम्　2 *b* जणवइ लोके　3 *a* उदूहलि उलूखले
4 *a* चट्टुयहत्थइ चट्टुकहस्तया, *b* रंककरंकइ दरिद्रभिक्षुकस्य भाजने खर्परे　5 *a* चित्तु लिहंति चित्रं लिखन्ती कपोले, *b* पत्तछेइ पत्रच्छेदविषये तमेव पश्यति　6 *a* जा तहिं इत्यादि या तत्र नगरे नृत्यति सा तस्याग्रे नृत्यति, *b* सरि सुच्चइ स्वरे स्वरमध्ये सूचयति　8 *a* मेलणु मार्गमध्ये मेलापकः, *b* तहु कह सालणु भुञ्जन्तीनां तस्य कथा एव व्यञ्जनम्　10 *b* पय प्रजा, कूवारें पूत्कारेण.

घत्ता—ता पउरइ राएण पउरु पसाउ करेप्पिणु ॥
पत्थिउ रायकुमारु णेहें हंकारेप्पिणु ॥ ३ ॥

4

दिणयरु देहइ धूलि तणु मइलइ    दुट्ठदिट्ठि ललियंगइ आलइ ।
किं अप्पाणउ अप्पुणु दवहि    घयय तुहुं किं बाहिरि हिंडहि ।
करि वणकील विउलणंदणवणि    हिंदुयकील करेहि घरप्पगणि ।
मणिगणबद्धणिद्धधरणीयलि    रमणीकील करहि ससमयलि ।
सलिलकील करि कुवलयवाविहि    त णिसुणेवि वयणु कुलसामिहि ।
जुवराएं पडिवण्णु णिरुत्तउ    गयकरवयविविहेहिं भजुत्तउ ।
पुणु णिउणमइसहाएं वुत्तउ    पहुणा णियलेणु तुज्झु णिउत्तउ ।
पुरयणणारीयणु तुह रत्तउ    जोयवि विहलंघलु णियडंतउ ।
णायरलोए तुहुं वधाविउ    णरवेवयणु णिरोहणु पाविउ ।
तासु वयणु त तेण पेरिक्खिउ    णियमदिरणिग्गमणें ओक्खिउ ।

घत्ता—ता पडिहारणरेहिं पहुउ तासु समीरिउ ॥
घरणिग्गमणु हिएण तुम्हह राए वारिउ ॥ ४ ॥

5

तओ सो सुहद्दासुओ चूढमाणी    ण केणावि दिट्ठो विणिग्गच्छमाणो ।
घराओ पुराओ गओ कालिकाले    अचक्खुप्पएसे तमालालिणीले ।
वसावीसढे देहिदेहावसाणं    पविट्ठो असाणं संसाण मसाण ।

११ S कक्कारेप्पिणु

4 १ APS डहइ २ APS अप्पणु ३ AP किं तुहुं ४ S विउले ५ B करिहि ६ ABP °पंगणे ७ S रमणीयकोड ८ S om. दिय° ९ P णिगुणमइ° १० K णियलु ११ AP पुरवर णारी १२ S जोयवि १३ S विहलवलु वसंतउ १४ B घमण १५ AP णिरिक्खिउ

5 १ B डड्ड° S चोढ° २ BS विणिगच्छ° ३ S अचक्खुएपसे ४ S omits मसाण

14 पउर प्रचुरम्.

4 1 *b* दुट्ठदिट्ठि डाकिनीप्रमुखानां दुष्टाना दृष्टि 4 *a* मणिगणबद्ध° रत्नसमूहबद्धम्. 5 *b* कुलसामिहि राज्ञः 6 *a* पडिवण्णु अङ्गीकृतम्. 7 *a* णिउणमइसहाए निपुणमतिमित्रेण *b* णियलणु निगलबन्धनम् 8 *b* विहलघलु विह्वल 10 *b* जोक्खिउ आकलित, स्तम्भितम्. 12 हिएण हितेन

5 1 *a* चूढमाणो उत्पन्नाहंकारः 2 *a* कालिकाले रात्रिसमये *b* अचक्खुप्पएसे अचक्षुर्विषयप्रदेशे 3 *a* °वीसढ बीभत्सम्, *b* असाणं अशब्दम् ससाण सकुक्कुरम् मसाण श्मशानम्

कुमारेण तं तेण दिट्ठं रउद्दं ललंततमालं सिवामुक्कसद्दं ।
महासूलभिण्णंगकंदंतचोरं वियंभंतमज्जारघोसेण घोरं ।
विहंडंतवीरेसहुंकारफारं पलिप्पंतसत्थग्गिधूमंधयारं ।
णडुंडुीणभूलीणकीलाउलूयं समुट्ठंतणग्गुग्गवेयालरूयं ।
णिकंकालवीणासमालत्तगेयं दिसाडाइणीदुग्गखज्जंतपेयं ।
कुलुब्भूयसिद्धंतमग्गावयारं दिजीडोंबिचंडालिपेयाहियारं ।
घणं णिग्घिणं भासियद्दइयवायं सया जोइणीचक्ककीलाणुरायं ।

घत्ता—अकुलकुलहं संजोए कुलसरीरु उवलक्खियउं ॥
इय जहिं सीसहं तच्चु कउलायरियं अक्खियउं ॥ ५ ॥

## 6

जोइउ तहिं वम्महसोहालें उज्झंतउं मडउल्लउं बालें ।
तहु उप्परि आहरणइ घित्तइं रयणकिरणविप्फुरियविचित्तइं ।
लिहिवि मरणवत्ताइ विसुद्धउं हरिगलकंदलि पत्तु णिबद्धउं ।
सुललिउ सुहउ सयणाणंदिरु गउ अप्पणु सो कत्थइ सुंदरु ।
उग्गउ सूरु कुमारु ण दीसइ हा कहिं गउ कहिं गउ पहु भासइ ।
कणयकोंतपट्टिसकंपणकर राएं दसदिसु पेसिय किंकर ।
पुरि घरि घरि अवलोइउ उववणि अवरहिं दिट्ठउ हयवरु पिउवणि ।
पल्लाणियउ पट्टचमरंकिउ तं अवलोइवि भडयणु संकिउ ।

५ B °माला°. ६ S विहिंडत° ७ A °ड्डीणचूलीण. ८ B °उलूवं, S °उलीय, ९ A °रूव. १० ABP णिककाल°. ११ B °गीय १२ B कुलुब्भूय°, Als कुलुब्भाय° on the strength of gloss in B: कुलाचार्यप्रणीतसिद्धान्तमार्गावतारम्. १३ A दिजिप्पाविचडालपीयाहियार १४ A भासिय दइय-वाय. १५ A अकुल्ल १६ P कुल. १७ APS °लक्खिउ. १८ AP सीसहिं. १९ P कउलाइरिए, S कउलाइरियहिं. २० A रक्खिउ, PS अक्खिउ.

**6** १ B घेत्तइ. २ PS °विप्फुरण° ३ B °कदल°. ४ AB णयणाणदिरु. ५ AP कत्थइ सो. ६ P वणे वणे.

4 *b* ललंततमाल लम्बमानान्त्रमालम्, सिवा° शृगाली 5 *a* °भिण्णग° भिन्नशरीरः, *b* वियमत° प्रसरन् 6 *a* °वीरेसहुंकार° वीरेशमन्त्रसाधकम्. 9 *a* कुलुब्भूय° कौलिककथित , *b* दिजी° ब्राह्मणस्त्री, °पेयाहियार पेय मद्य तस्याधिकार. यस्मिन् 10 *a* °अद्दइयवाय अद्वैतवाद " सर्वं ब्रह्ममय जगत् ". अकुलेत्यादि कु पृथिवीं लाति कार्येणादत्ते इति कुल पृथिवीद्रव्यम्, अकुल असेजोवायुद्रव्यत्रय तेषा सयोगे सति कुल गर्भादिमरणपर्यन्तश्चैतन्यादय शरीर च, उवलक्खियउ प्रादुर्भूत दृष्टम्. 12 सीसह शिष्याणाम्

**6** 1 *a* °सोहालें सुकोमलेन 3 *b* हरिगलकदलि अश्वकण्ठे. 6 *a* °कंपण° कटारी. 7 *b* पिउवणि श्मशाने. 8 *a* पट्टचमरकिउ मुखाग्रे पट्टचमरयुक्त., *b* सकिउ कुमारः कुत्र गत इति भीत..

लेहु लएप्पिणु णाहहु घल्लिउ तेण वि सो हाह त्ति उव्वेल्लिउ ।
रायहु बाहाउण्णइ णयणइं विट्ठइं पयइं लिहियइं वयणइं ।
णवउ पय विरु विप्पियगारी णदउ लुद्दु लिवपवि भडारी ।
णवउ परियणु णवउ णरवइ गउ वसुएवसामि सुरवेरगइ ।

घत्ता—ता पिउर्वणि जाइवि सयणहिं जियविच्छोइउँ ॥ ११ ॥
वैहु सभूसणु पेउ हाहाकारिवि जोइउँ ॥ ६ ॥

7

तेँ णव बधव सहु परिवाँरें सोउ करति दुक्खवित्थारें ।
सा सियएवि रुयइ परमेसरि हा देवर परमहगयकेसरि ।
हा किं जीविउ तिणुँ परिगणियउ कोमलँथउ हुयवहि किं हुणियउ ।
हा पयाइ किं किउ पेसुण्णउ हा किं पुरि परिभमहु ण दिण्णउ ।
हा कुलधयलु केंवँ विद्धसिउ हा जयसिरिविलासु किं णिरासिउ ।
हा पइं विणु सोहइ ण धरंगणु चदविवज्जिउ ण गयणगणु ।
हा पइ विणु दुक्खें पुरु रुण्णउ हा पइ विणु माणिणिमणु सुण्णउ ।
हा पइ विणु को हारु थणतरि को कीडइ सरहसु ध सरवरि ।
पइ विणु को जणदिट्ठिउ पीणइ कडुयकील देव को जाणइ ।
हा पइ विणु को पसहिं सूहउ पइ आँपेक्खिवि मयणु वि दूहउ ।
हा पइ विणु णियगोत्तसकडु को भुयबलु समुद्दविजयकडु ।
हा पइ विणु सुंण्णउं हियउल्लउ को रक्खइ मेरउ कडउल्लउ ।
छारत्तसि हूयउ पयिलोयउ पय बधुवग्गें सो सोइउँ ।
पजलीहिं मीणावलिमाणिउ ण्हेहाइवि सव्वहिं दिण्णउ पाणिउ ।

घत्ता—वरिससएण कुमारु मिलइ तुज्झु गुणसोहिउ ॥
णेमित्तियहिं णरिंदु एंव भणिवि संबोहिउ ॥ ७ ॥

७ APS एयइं दिहइ ८ S सहु ९ S सुरवइगइ १ P पिउवणु ११ S विच्छोइयउ १२ P दिहु S दहु १३ B जायउ S जोइयउ

7 १ A तेण वि बंधव २ B रुयइ ३ AS तणु ४ PS कोमलगु. ५ B हुववहे. ६ B केम P केण ७ P हा हा सिरि° ८ B परु ९ A कलहसु १ S आवेक्खिवि ११ P हियउल्लउ सुल्लउ S हियउल्लउ सुल्लउ १२ A सो सोयउ S संसोइउ १३ S ण्हायवि

10 *a* बाहाउण्णइं बाष्पपूर्णानि 12 *b* सुरवरगइ दिवं गत 13 जियविच्छोइउं जीवरहितम्, 14 दड्ढु दग्धम् पेउ प्रेत शवम्,

7 3 *a* विणु दग्धवत्, *b* °वउ वपु शरीरम्. 5 *b* णिरसिउ निरस्त 7 *b* पुरु नगरजन 12 *b* रक्खइ कडउलउ रक्षति कटकम्, शत्रुभञ्जनसमर्थत्वात् त्वमेव रक्षक 14 *a* मीणावलि-णिणि दे मत्स्यैर्भुक्तं कलम्,

**8**

पत्तहिं सुंदरु महि विहरंतउ विजयणयरु सहसा संपत्तउ ।
दिट्ठउं णंदणु[1] वणु तहिं केहउ महुं भावइ रामायणु जेहउ ।
जहिं चरंति भीयर रयणीयर चउदिसु उच्छलंति लक्खणसर ।
सीयविरहि संकमइ णहंतरु घोलिरपुच्छु सरामउ वाणरु ।
णीलकंठु णच्चइ रोमंचिउ अज्जुणु जहिं दोणें[3] ससिंचिउ ।
णउलें सो ज्जि णिरारिउं सेविउ भायरु किं णउ कासु वि भावियउ ।
इय सोहइ उववणु णं भारहु वेल्लीसंछण्णउं रविभारहु ।
जहिं पाणिउं णीयत्तणि णिवडइ जडहु अणंगइ को किर पयडइ ।
तहिं असोयतलि सो आसीणउ सूहउ दीहरपंथें रीणउ ।
णं वणु लयदलहत्थहिं विज्जइ पयलियमहुथेंभहिं णं रज्जइ ।
चलजलसीयरेहिं णं सिंचइ णिवडियकुसुमोहें णं अच्चइ ।
साहाबाहहिं णं आलिंगइ परिमलेण ण हियवइ लग्गइ ।
पहियपुण्णसामत्थें णव णव सुक्कसुरुक्खहिं णिग्गय पल्लव ।
पणविवि पालियपउरपियालें रायहु[13] वज्जरियउं वणवालें ।

घत्ता—जो जोइसियहिं वुत्तु जरतरुवरकयछायउ ॥
सो पुत्तिहि घरइत्तु णं अणंगु सइं आयउ[15] ॥ ८ ॥

8 १ ABS णदण°. २ A °पुछु ३ A दोणि. ४ P ज्जु. ५ AP ण वि. ६ APS भाविउ. ७ B विल्लिहिं. ८ P अण्णगइ. ९ P सोयासीणउ १० A वणलय°. ११ BK °मुहथेंभहिं but gloss in K मकरन्दश्चोते . १२ AP सुक्खइ रुक्खइ, S सुक्खसुरुक्खइ. १३ B रायह. १४ B तरुवरु. १५ B आइउ.

8 3 *a* रयणीयर राक्षसा उलूकाश्च, *b* लक्खणसर लक्ष्मणबाणाः सारसशब्दाश्च 4 *a* सीयविरहि शीताभावे घर्मे सति, पक्षे सीतावियोगे, संकमइ ऊर्ध्वप्रदेशे गच्छति गुफादिकं मुक्त्वा, *b* सरामउ वानरीसहितः, सरामचन्द्रश्च, वाणरु मर्कट सुग्रीवश्च 5 *a* णीलकठु भारतपक्षे द्रौपदीभ्राता शिखण्डी नाम, पक्षे मयूरः, *b* अज्जुणु वृक्षविशेष पार्थश्च, दोणें ससिंचिउ घटेन वृक्ष. सिक्त., द्रोणाचार्येण च बाणैरर्जुनः सिक्त . 6 *a* णउलें तिरश्चा केनचित्, नकुलेन सहदेवभ्रात्रा च, सो ज्जि स एव अर्जुनवृक्ष. पार्थश्च, *b* भायउ भावितः रुचित 7 *a* भारहु भारह महाभारतमिव वनम्, *b* रविभारहु सूर्यदीप्तिप्रच्छादकम् 8 *a* णीयत्तणि नीचत्वे निम्ने स्थाने, *b* जडहु इत्यादि मूर्खस्य यथा स्त्री अनङ्ग काम न प्रकटयति, तथा जडस्यापि वृक्षः अनङ्ग ईषत् शरीर मूल फलपत्रादिरहितत्वात्, जल मूर्खं, तेन मूल प्रति गतम्, अन्यथा तृषित पुमान् स्वयमेव जल प्रति गच्छति, परतु अत्र मूर्खत्वात् जल स्वयमेव गतमिति भावः. 10 *b* °महुथेंभहिं मकरन्दबिन्दुभि. 11 *a* °सीयरेहिं शीकरै 13 *a* पहिय° पथिकः, *b* सुक्कसुरुक्खहिं शुष्कवृक्षेषु. 14 *a* °पियालें राजादनवृक्षेण. 16 पुत्तिहि पुत्र्याः श्यामादेव्या..

## 9

त णिसुणिवि आयउ सइ राणउ पुरि पइसारिउ रायजुवाणउ ।
हरियवसवण्णेण रवण्णी सामाप्पवि तासु वें दिण्णी ।
काम्रुउ कंतहि अंगि विलग्गउ थिउ कइवयदियहेंहं पुणु णिग्गउ ।
सिरिवसुपुज्जसामि संतुट्ठउ वेयदारुवणु णवर पइट्ठउ ।
जहिं लवंगचंदणसुरहियजलु दिसिगयकलकोइलकुलकलयलु ।
जहिं बहुकुसुमरयारियचपर रुहरुहंति णाणाविह णहयर ।
णवमायंदगोंदि गंजोल्लिय जहिं कइ कइकरेहिं उप्पेल्लिय ।
जहिं हरिकरकद्दारियमयगल रुहिरवारिधाराउलजलथल ।
दसदिसिपहणिहित्तमुत्ताहल गिरिकंदरि वसंति जहिं णाहल ।
ओसहिदीवितियदावियपह जहिं तमालतरुभवविलक्खिय पह ।
जहिं सवरेहिं सचिज्जइ तरुहलु हरिणिहिं चिज्जइ कोमलकंदलु ।

घत्ता—तहिं कमलायरु दिट्ठु णवकमलहिं सछण्णउ ॥
घरणिविलासिणियाइ जिणहु अग्घु ण दिण्णउ ॥ ९ ॥

## 10

सीयलसगाहगयथाहसलिलालि कंजरसलालसचलालिकुलकालि ।
मत्तजलहत्थिकरसीयरसमालि धारिपेरंतसोहंतणवणालि ।
मयमयरहलयपिंजरियवरकूलि तीरवणमहिसहुकवसद्दूलि ।
पक्कपक्खालोलतंबरकोलि कीरकारंडकलरावहलबोलि ।

9 १ दियरेहिं P °दियहिं २ A °वणि P वणे ३ S सल ४ S °कलयल ५ A रुहचुअंति B रुहुइंति ६ A °गुंद° B गोंदि Als °गोंदे ७ P दिव्व° ८ B °तमवियलक्खिय ९ A सवरिहिं १ BK सचिज्जय ११ B छण्णउ १२ A विलासिणिए

10 १ AP कजरयलालस° २ AP add धर before धारि ३ BS omit व्व ४ AP वणकोले

9 2 *a* हरियवसवण्णेण नीलवेणुवत् 6 *b* रुहुरुहंति शब्दं कुर्वन्ति णहयर पक्षिणः 7 *a* गोंदि समूहे गंजोल्लिय उल्लसिता *b* कइ कपयः 8 *b* आउल भृतानि 10 *b* अविलक्खिय अविज्ञाताः पह पन्था मार्गः 11 *a* सवरहिं भिल्लैः सचिज्जइ समहं क्रियते *b* चिज्जइ भक्ष्यते 13 घरणिविलासिणियाइ भूस्त्रिया

10 1 *a* सगाह सग्राहं जलचरसहितम्, सलिलि जलसहिते सरोवरे गओ दृष्ट *b* कंजरसलालस कमलरसलम्पटम्, कालि कृष्णे 2 *b* धारिपेरंत° जलपर्यन्ते णवणालि नवीनपद्मनाले 4 *a* पक्क पक्त्व पतित *b* हलबोलि कोलाहले

कंकचलचंचुपरिउंवियबिसंसि लच्छिणेउररवुड्डवियकलहंसि ।
अक्करहदंसणपओसियरहंगि वायहयवेविरपघोलियतरंगि ।
ण्हंतवियरंतविहसंतसुरसत्थि पंतजलमाणुसविसेसहंयहत्थि ।

घत्ता—करि सैरवरि कीलंतु तेण णिहालिउ मत्तउ ॥
णावइ मेरुगिरिंदु खीरसमुद्दि णिहित्तउ ॥ १० ॥

## 11

अंजणणीलु णोइ अहिणवघणु करतुसारसीयरतिम्मियवणु ।
दसणपहरणिद्दलियसिलायलु पायणिवाओणवियइलायलु ।
कण्णाणिलचालियधरणीरुहु गज्जणरवपूरियदसदिसिमुहु ।
मयजलमिलियघुलियमहुलिहचलु उग्गसरीरगयगयगयउलु ।
गुरुकुंभयलपिहियपिहुणहयलु णियबलतुलियदिसामयगलबलु ।
तं अवलोइवि वीरु ण संकिउ वहिबहिसद्दें कुंजरु कोकिउ ।
जा पाहाणु ण पावइ मुक्कउ ता करिणा सो गहिउ गुरुक्कउ ।
करकलियउ विघलियगयदेहहु उवरि भमइ तडिदंहु व मेहहु ।
वंसारुहणउं करइ सुपुत्तु व खणि करणहि संमोहइ धुत्तु व ।
खणि ससि जेंव हत्थु आसंघइ खणि विउलई कुंभयलई लंघइ ।
खणि चउचरणंतरिहि विणिग्गइ खणि हक्कारइ वारइ वग्गइ ।
दंतणिसिक्किय मुहुं ण वियाणइ कालें अप्पाणउं संदाणइ ।
जित्तउ वारणु जुवरयणरिंदें णं मयरद्धउ परमजिणिंदें ।

घत्ता—गयवरखंधारूढु दिट्ठउ खेयरपुरिसें ॥
अधकविट्ठिहि पुत्तु उच्चाएवि संहरिसें ॥ ११ ॥

५ A °रउड्डीण. ६ S °पओसविय° ७ ABPS °पघोलिर°. ८ A गिण्हत°. ९ A °वेसे हयहत्थे १० B सरि.

**11** १ B णामि. २ A °णिवाए णमिय°, BP °णिवायए णविय°, S °णिवाउणविय°. ३ B °रुह. ४ AP °दिसिवहु ५ P गलवसु ६ S वहे वहे ७ A करकवलिउ, S करकलिउ. ८ S °णरेंदें ९ B उच्चाइवि १० A सह हरिसें

5 *a* °परिउंवियविससि °परिचुम्बितपद्मिनीअशो खण्डे, *b* °रवुड्डविय °रवेन उड्डापित.. 6 *a* अक्करह° सूर्यरथः, °पओसिय° प्रतोषित, °रहंगि °चक्रवाके. 7 *a* ण्हंत° स्नान्त..

**11** 1 *b* °तुसारसीयरतिम्मियवणु शीतलशीकरेणार्द्रीकृतवनभूमि 2 *b* °ओणविय° अवनमितम्. 4 *a* °महुलिहचलु °भ्रमरै चपल, *b* °गयगयउलु गत अन्यत्र गजकुलम्. ५ *a* °पिहिय° आच्छादितम्, *b* °दिसामयगलबलु दिग्गजबलम्. 8 *a* करकलियउ शुण्डाग्रेण गृहीत.. 9 *a* वंसारुहणउ पृष्ठवंशारोहण, अन्यत्र वंशोन्नति, *b* करणहिं आवर्तननिवर्तनप्रवेशनादिभि. 10 *a* हत्थु हस्तनक्षत्र शुण्डा च. 12 *a* °णिसिक्किय निर्गत, *b* संदाणइ सम्यग्बध्नाति

## 12

णहयललग्गरयणमयगोउरु णिउ वेयड्ढहु धीरावइपुरु ।
कुलबलवंतहु दइयसहायहु दरिसिउ असणिवेयखगरायहु ।
एव ससामिसालु विण्णविउ विज्जगइहु पण विहविवउ ।
दहुँ सो चिरु जो णाणिहिं जाणिउ दहुँ तुह दुहियावरु मइ आणिउ ।
त णिसुणेवि असणिवेयंकें अवलोइयसुहिवयणससंकें ।
पवणवेयदेवीतणुसंभव सामरि णामें सुय वीणारव ।
दिण्णा तासु सुहद्दातणयहु पोढहु पउणियपणयपसायहु ।
गयवहुदियहहिं पेम्मपसत्तउ सो सुहउ जामच्छइ सुत्तउ ।
तावंगारयखयरें जोइउ सुहि सुसु जि भुयपंजरि ढोइउ ।
भूमियरहु पब्भट्ठवियेयहु भामें णियसुय दिण्णी पयहु ।
एम भणंतें णिउ णियइच्छइ सामरि सुंदरि धाइय पच्छइ ।

घत्ता—असिवसुणंदयहत्थ णियणाहहु कुढि लग्गी ॥
पडिवक्खहु अब्भिट्ट समरसएहिं अभग्गी ॥ १२ ॥

## 13

असिजलसलिलझलक्कियसित्तें अंगारयण सुकंसणियगत्तें ।
सोहद्देउ झड त्ति विमुक्कउ पहरणकउ लइ सज्जुइ ढुक्कउ ।
घरिणिइ पइ णियडतु णियच्छिउ पण्णलहुयविज्जाइ पडिच्छिउ ।
तहिं पहरंतिहिं वइरि पलाणउ सुवरु गयणहु मयणसमाणउ ।

---

**12** १ AP दारावइ° २ B दइय° ३ AP खयरायहो ४ B एहु जि चिरु जो S एहु सो चिरु ५ B एहउ दुहिया° ६ AP पणइणिमणहरपयणियपणयहो B पोढुहु पउणियपणइपसायहु S पोढहु पउणियपणइणिपणयहो Als पोढहु पयणियपणयपसायहु against his Mss on the strength of gloss प्रजनित ७ S एमचउ ८ A ताममारय° P ता अंगारय° ९ ABPS सुहु १ P °हयु

**13** १ A °झलक्कय° BPS °झलक्कए २ A सुकसिणिय° ३ B पहरणककवि सजुए ४ P घरणिए ५ B पडिच्छउ

---

**12** 1 *a* णिउ नीतः 4 *a* णाणिहिं ज्ञानिभिर्नैमित्तिकैः 6 *b* सामरि शाल्मली नाम 7 *a* सुहद्दातणयहु वसुदेवस्य *b* पोढुहु प्रौढस्य पउणिय प्रगुणित 11 *a* णियइच्छइ स्वेच्छया 12 कुढि पश्चात्

**13** 1 *b* सुकसणियगत्तें जलेन विध्मोऽङ्गारः कृष्णो भवति २ *a* सोहद्देउ सुभद्रापुत्रः *b* सज्जुइ संग्रामे 3 *a* पइ वसुदेव

तरुकुसुमोहदिसोहपसाहिरि णिवडिउ चंपापुरवरबाहिरि ।
कीलमाण वणि मणिकंकणकर पुच्छिय तेण तेत्थु णायरणर ।
ते भणंति मुद्धत्तें णडियउ किं गयणंगणाउ तुहुं पडियउ ।
वासुपुज्जजिणजम्मणरिद्धी ण मुणहि चंपापुरि सुपसिद्धी ।
तं णिसुणिवि तें णयरि पलोइय सहमंडववहुविउसविराइय ।
चारुदत्तवणिवरवइतणुरुह जहिं जहिं जोइज्जइ तहिं तहि सुह ।
जहिं गंधव्वदत्त सइं संठिय महुरवाय णावइ कलयंठिय ।

घत्ता—जहिं वइसवइसुयाइ रमणकामु संपत्तउ ॥
खेयरमहियरवंदु वीणावज्जें जित्तउ ॥ १३ ॥

## 14

गंपि कुमारु वि तहि जि णिविट्ठउ कण्णइ अणिमिसणयणइ दिट्ठउ ।
वम्महवाणु व हियइ पइट्ठउ विहसिवि पहिउ पहासइ तुट्ठउ ।
हउं मि किं पि दावमि तंतीसरु जइ वि ण वल्लइ सरठाणइ करु ।
ता तहु ढोइयाउ सुईणीणउ पंच सत्त णव दह वहु वीणउ ।
ता वसुएउ भणइ किं किज्जइ वल्लइदंडु ण पहउ जुज्जइ ।
एही तंति ण एम णिवज्झइ वासुइ पहुउ एत्थु विरुज्झइ ।
सिरिहलु पंच पउं किं थवियउं सत्थु ण केण वि मणि चिंतवियउं ।
लक्खणरहियउ जडमणहारिउ मेल्लिवि वीणउ णाइं कुमारिउ ।
अक्खइ सो तहिं तहि अक्खाणउं आलावणिकइ चारु चिराणउं ।

६ B मणत ७ KS वासपुज्ज°. ८ B चंपाउरि. ९ ABP णयरु. १० A पलोयउ, P पलोइउ. ११ AP विराइउ. १२ B चारुदत्त, P चारुदत्तु १३ BP °तणुरुहु १४ BP सुहु १५ B गंधव्वयत्त सइ १६ B रमणु १७ A °विंदु, P °वेंदु

**14** १ B कुमार. २ A P कतइ ३ PS अणमिस° ४ S °णयणहिं. ५ BP हउ मि, S हउ वि. ६ A सरठाणहु. ७ A सरलीणउ. ८ A दहमुहवीणउ ९ S वसुएवु १० AP वीणादडु ११ A विवज्झइ १२ P चिंतवियउ. १३ A ताम्नु कुमारिउ १४ A °कउ.

5 *a* °दिसोहपसाहिरि दिशासमूहशोभिते 6 *a* वणि वनमध्ये. 11 *b* कलयंठिय कोकिला. 13 °वंदु वृन्द.

**14** 1 *b* कण्णइ कन्यया. 2 *b* पहिउ पथिक. 3 *a* तंतीसरु वीणाशब्द. 4 *a* सुइ-णीणउ कर्णलीना. 5 *b* वल्लइ° वीणा. 6 *b* वासुइ वासुगिरपि दोर., अथवा दण्डाग्रे तन्त्रीनिबन्धाश्रयलघु-काष्ठ वासुगि.. 7 *a* सिरिहलु तुम्बक 8 *b* कुमारिउ यथा सामुद्रकरहिता स्त्री मुच्यते. 9 *a* तहि तस्या वीणाया, *b* आलावणिकइ वीणानिमित्तम्: चारुचिराणउ अतिजीर्णम्.

घत्ता—हत्थिणायपुरि राउ णिज्जियारि घणसंदणु ॥
तहु पउमावइ देवि विट्ठु णाम पिउँ णंदणु ॥ १४ ॥

## 15

अवरु पउमरहु सुउ लहुयारउ जणणु णाविवि अरहंतु भडारउ ।
रिसि होएप्पिणु मृगसपुण्णहु सहु जेट्ठें सुएण गउ रण्णहु ।
ओहिणाणु तायहु उप्पण्णउ विट्ठउ जगु बहुभावमिइण्णउ ।
पत्तहि गयउरि पयपोमाइउ करइ रज्जु पउमरहु महाइउ ।
ता सो पच्चंतेहिं णिरुद्धउ तहु बलि णाम मंति पविबुद्धउ ।
तेण गुरु वि ओहामिउ सक्कहु सुहिइ माणु मलिउ परचक्कहु ।
संतूसिवि रोमंचियकाए मग्गि मग्गि वरु बोल्लिउ राए ।
मंति वुत्तउ तुट्ठि करेज्जसु कहिं मि कालि महु मग्गिउ देज्जसु ।
कालें जंतें मारणकामें आयउ सूरि अकंपण णामें ।
सहु रिसिसघें जिणवरमग्गें पुरबाहिरि थिउ काओसग्गें ।
घत्ता—बलिणा मुणिवरु दिट्ठु सुयरिउ अवमाणेप्पिणु ॥
इह एए हउ आसि थिउ विवाइ जिणेप्पिणु ॥ १५ ॥

## 16

अवयारहु अवयारु रइज्जइ उवयारहु उवयारु जिं किज्जइ ।
खलहु खलत्तणु सुहिहि सुहित्तणु जो ण करइ सो णियमिवि णियमणु ।
तावसरूवें णिवसउ णिज्जणि हउ पुणु अज्जु खवमि किं दुज्जणि ।
एव भणेप्पिणु गउ सो तेत्तहिं अच्छइ णिवइ णिहेलणि जेत्तहिं ।

१५ S पोमावइ १६ A पियणंदणु.

**15** १ ABP मिग° २ APS °परिपुण्णहो B °सपण्णहो ३ A अवहिणाणु ४ A भावहिं मिण्णउ Als भावविहिण्णउ ५ S परमरहु ६ S पविद्धउ ७ P ओहामिय ८ S परयक्कहो ९ P सतोसिवि १० APS अकपणु ११ B पुरि १२ P कायोसग्गें १३ B थेतु

**16** १ AP वि २ P सुहत्तणु ३ S रूप. ४ S उज्जु खवमि ण दुज्जणु ५ B खममि अज्जु ६ S सो गउ

10 घणसंदणु मघरथ 11 विट्ठु विष्णु

**15** 1 *b* जणणु मेघरथ 3 *b* मिइण्णउं भिन्नम्. 4 *a* पयपोमाइउ प्रजाप्रशंसित; *b* महाइउ महर्द्धिक 5 *a* पच्चंतेहिं शत्रुभि 6 *a* गुरु वि शक्रस्य गुरुर्बृहस्पतिः तिरस्कृत 9 *a* मारणकामें मन्त्रिणा मारणावाञ्छकेन इति सम्बन्ध 12 एएं एतेन सूरिणा विवाइ विवादे

**16** 2 *b* णियमिवि बध्वा निजचित्तम्

भणिउ णवंतें पइं पडिवण्णउं | औंसि कालि जं पइं वरु दिण्णउ ।
जं तं देहि अज्जु मइं मग्गिउं | जइ जाणहि पत्थिव ओलग्गिउं ।
ता राएण वुत्तु ण वियप्पमि | जं तुहुं इच्छहि तं जि समप्पमि ।
पडिभासइ बंभणु असमत्तणु | सत्त दिणाइं देहि रायत्तणु ।
दिण्णउं पत्थिवेण तें लइयउं | रोसें सव्वु अंगु पइछेइयउं ।
साहुसंघु पाविट्ठें रुद्धउ | मिगवहु मह्नु चउदिसु पारद्धउ ।
सोत्तिपहि सोमंधु[11] रसिज्जइ | [12]सोमवेय सुइसुं[13]महुरु गिज्जइ ।
भक्खिवि जंगलु अड्डवियड्डइं | उप्परि रिसिहिं णिहित्तइं हड्डइं ।
घत्ता—भोज्जसरावसमूहु जं केण वि ण वि छित्तउ ॥
तं सवणहं सीसग्गि जणउच्छिट्ठउं घित्तउं ॥ १६ ॥

## 17

सोत्तइ पूरियाइं सुहेवारें | वहलयरेण धूमपब्भारें ।
अणुदिणु पयेडियभीसणवसणहं | तो वि धीर रूसंति ण पिसुणहं ।
तहिं अवसरि दुक्कियपरिचत्ता | जणेण तणय ते जोहिं तवतत्ता ।
णिसि णिवसंति महीहरकंदरि | भीरुभयंकरि सुयकेसरिसरि ।
तेहिं विहिं मि तहिं णहि पवहंतउं | सवणरिक्खु दिट्ठउं कंपंतउं ।
तं तेवड्डु चोज्जु जोएप्पिणु | भणइ विहु पणिवाउ करेप्पिणु ।
किं णक्खत्तु भडारा कंपइ | तं णिसुणेवि जणणमुणि जंपइ ।
गयउरि वलिणा मुणि उवसग्गें | संताविय पावें भयभग्गें ।
सज्जणघट्टणु सव्वहु भारिउं | तेण रिक्खु थरहरइ णिरारिउं ।
पुच्छइ पुणु वि सीसु खमवंतहं | णासइ केंव उवद्दउ संतहं ।

७ A adds after 5 *b* तुड्डिदाणु आणदपवण्णउ, S reads for 5 *b* तुड्डिदाणु आणदपउण्णउ. ८ B राइत्तणु ९ ABPS पच्छइयउ १० AP मिगवहु ११ A सोमधु. १२ APS सामवेउ. १३ A सुइमहुरउ, B सुइमहुरें. १४ Als विछित्तउ.

**17** १ A सुहचारिं २ B पीडिय° ३ B दुक्खिय°. ४ P जणय. ५ A जित्तहि तवतत्ता, S जहिं ते ६ AP जणणु मुणि ७ A हयमग्गें ८ B सव्वउ

8 *a* असमत्तणु असमत्व मिथ्यादृष्टि 9 *b* पइछइयउ प्रच्छादितम् 10 *b* महु मखो यज्ञः. 11 *a* सोमधु सोमपानम् 12 *a* जगलु मासम्, अड्डवियड्डइं वक्राणि. 13 छित्तउं स्पृष्टम्. 14 सीसग्गि मस्तकाग्रे

**17** 1 *a* सुहवारें सुखनिषेधकेन, *b* वहलयरेण बहुतरेण. 3 *b* जणण मेघरथ., तणय विष्णु 4 *b* सुयकेसरिसरि श्रुतसिंहशब्दे 5 *a* पवहतउ गच्छत् 9 *a* सज्जणघट्टणु साधुकदर्थनम्, सव्वहु भारिउ सर्वेषा कष्टभूतम्.

घत्ता—घणरहरिसिणा उत्तु तुम्ह विउव्वणरिद्धिइ ॥
णासइ रिसिअवसग्गु भवससारु व सिद्धिइ ॥ १७ ॥

## 18

खलजणवयअसब्भुयभूवें छिद्देहिं जाइवि वावणरूवें ।
णिलयणिवासु णिरग्गलु मग्गहि पच्छइ पुणु गयणग्गणि लग्गहि ।
त णिसुणेप्पिणु लहु णिग्गउ मुणि रिय पढतु कियओंकारज्झुणि ।
मिसियँकमडलु सियछत्तियधरु दब्भवंकमणिवलयकियकरु ।
मिट्ठवाणि उववीयविहूसणु देसिउ कासायंबरणिवसणु ।
सो णवणरणाहेण णियच्छिउ भणु भणु तुहुँ किं दिज्जउ पुच्छिउ ।
किं हय गय रह किं जपाणइ किं धयछत्तइ दव्वणिहाणइ ।
कवडविप्पु भासइ महिसामिहि णिय कम तिण्णि देहि महु भूमिहि ।
त णिसुणिवि बलिणा सिरु धुणियउ हा हे दियवर किं पइ भणियउ ।
वाय तुहारी हयवें भग्गी लइ धरित्ति मेंढयथित्तिहि जोग्गी ।

घत्ता—ता विहुहि वहतु लग्गउ अगु णहतरि ॥
णिहियउ मदरि पाउ पच्छु बीउ मणुंउत्तरि ॥ १८ ॥

## 19

तइयउ कमु उक्खिन्नु जि अच्छइ कहिं दिज्जउ तेहिं थत्ति ण पेच्छइ ।
सो विज्जाहरतियसहिं अंचिउ पियवयणेहिं कह व आउंचिउ ।
ताय देत्तु घोसावइवीणइ देवहिं दिण्णइ मलपरिहीणइ ।
गरुयारउ णियमाइसहोयरु तोसिउ पोमरहँ ओहसरु ।
मारउं आढत्तउ दियकिकरु विण्हुकुमारु खमइ अभयकरु ।

18 १ A खळ २ P अचब्भुयभूय ३ B छिंदहि ४ BS वामण° ५ AP °णिवेसु ६ A ओंकारयरझुणि ७ P रिसिय° ८ B किं हुइ ९ P दिव्वइ १० A देहु महु ११ A मढछत्तिहि S मढयथिहि १२ A मदिरि १३ B मणउत्तरि

19 १ BK उक्खेत्तु २ BPAls तहो थत्ति ३ S भायसहो°

12 सिद्धिइ मुक्त्या यथा ससारो नश्यति

18 1 *a* खलजणवयअसब्भुयभूवें खललोकानामसद्भूतभूतेन 2 *a* णिलयणिवासु गृहनिवास णिरग्गलु नि प्रतिबन्धम्. 3 *b* रिय पढतु वेदऋचः पठन्. 4 *a* मिसिय ऋषीणामासनं वृषी *b* °मणिवलय° अपमाला 6 *a* णवणरणाहेण नवीनराजा बलिना 11 विहुहि विष्णो मुनेः

19 1 *a* उक्खित्तु उत्क्षिप्त उच्चलित 2 *b* आउंचिउ सकुचित 4 *a* गरुयारउ ज्येष्ठ

अच्छउ जियउ वराउ म मारहि रोसु म हियउल्लइ वित्थारहि ।
रोसें चंडालत्तणु किज्जइ रोसें णरयविवरि पइसिज्जइ ।
एणें जि कारणेण हयदुम्मइ कयदोसहं मि खमंति महामइ ।

घत्ता—एम भणेप्पिणु जेट्ठें गउ गिरिकुहरणिवासहु ॥
मुणिवरसंघु असेसु मुक्कउ दुक्खकिलेसहु ॥ १९ ॥

## 20

अज्ज वि वीण तेत्थु सा अच्छइ जइ महु आणिवि को' वि पयच्छइ ।
तो गंधव्वदत्त किं वायइ महुं अग्गइ पर वयणु णिवायइ ।
धणिणा तं' णिसुणिवि विहसंतें पेसिय णियपाइक्क तुरंतें ।
गय गयउरु वलेंइ पणवेप्पिणु मंगिय तव्वंसिय मणु लेप्पिणु ।
वियलियदुम्मयपंकविलेवहु आणिवि ढोइय करि वसुएवहु ।
सा कुमारकरताडिय वज्जइ सुहभेयहिं बावीसहिं छज्जइ ।
सत्तहिं वरसरेहिं तिहिं" गामहिं अट्ठारहजाइहिं सुहधामहिं ।
अंसेंहं सउ चालीसेक्कोत्तरु गीइउ पंच वि पयडइ सुंदरु ।
तीस वि गामराय रइयासेउ चालीस वि भासउ छ विहासउ ।
एक्कवीस मुच्छणउ समाणइ एक्कूणइं पण्णासइ ताणइं ।

४ APS रोसें सत्तममहि पाविज्जइ ५ A एण वि. ६ AP महाजइ. ७ AP विहु.

20 १ S का वि. २ B त सुणिवि वियसतें ३ A पहसतें. ४ A वीणा पण° ५ A मगिय तक्खणि वीण लएप्पिणु, S मणुणेप्पिणु, Als तव्वसियमणुणेप्पिणु (तव्वसिय+म्+अणुणेप्पिणु). ६ P °दुम्मइ° ७ A आणिय. ८ S सो. ९ AP छज्जइ १० AP वज्जइ ११ AP बिहिं गामहिं, S बहुगामहिं १२ S असहिं. १३ A चालीसेकुत्तरु, B चालीसिकुतरु, S चालीसेंक्कोत्तरु. १४ A गीउ पचविहु. १५ S रइयासव. १६ S विहासव १७ P मुच्छणइ. १८ A एकूणइ पण्णास जि, B एकूण वि पण्णासइ

8 *b* कयदोसह मि कृतदोषाणामपि, महामइ मुनयः.

20 1 *a* तेत्थु गजपुरे 2 *b* वयणु णिवायइ वदन म्लान करोति 4 *b* तव्वसिय तद्वंशोत्पन्ननराणाम्, मणु लेप्पिणु मन. सतोष्य 6 *b* छज्जइ शोभते 7 *b* अट्ठारहजाइहिं शुद्धा जातिः, दु.करकरणा जाति., विषमा इत्याद्यष्टादशजातिभि 8 *a* असह अष्टादशजातिषु यथासभव एक द्वौ... पञ्च इत्यादय अशा, एव १४१ अशा, *b* गीइउ पच वि शुद्धा भिन्ना वेसरा गौडी साधुरणिका इति पञ्च गीतय 9 *a* तीस वि गामराय शुद्धाया सप्त ग्रामरागा, भिन्नाया पञ्च, वेसरायामष्टौ, गौड्या त्रय, साधुरणिकाया सप्त, एव त्रिंशत्, *b* चालीस वि भासउ षड् रागा टक्कादयः, टक्करागे द्वादश भाषा, पञ्चमरागे दश, हिन्दोलरागे तिस्रो भाषा, माल्वकौशिकरागे अष्ट, षड्जरागे सप्त, ककुभरागे पञ्च. 10 *a* एक्कवीस मुच्छणउ मध्यमग्रामोद्भवा सप्त, षड्जरागोद्भवा. सप्त, निषादरागोद्भवा सप्त.

घत्ता—तहु घायतहु पंथ धीणा सुहसरजोग्गउ ॥
ण वम्महसरु तिक्खु मुद्धहि हियवइ लग्गउ ॥ २० ॥

## 21

मयणइ णाहहु उप्परि घुलियइ    अद्दुगइ घेयतइ वलियेइ ।
ततारयतोसियगिव्वाणहु    थित्त सयवरमाल जुवाणहु ।
सधुउ तरुणु सुरिंदें ससुरें    विहिउ वियाहमहुच्छउ ससुरें ।
पुणरवि सो विज्जाहरदिण्णइ    ससलयइ परिणेप्पिणु कण्णइ ।
मणहरलक्खणवच्छियगत्तउ    कालें रिट्ठणयरु संपत्तउ ।
राउ हिरण्णवम्मु तहिं सुम्मइ    जासु रज्जि णउ कासु वि दुम्मइ ।
तासु कंत णामें पोमावइ    परहुयसद्द बालेंपाउलगइ ।
रोहिणि पुत्ति जुत्ति ण मयणहु    किं वण्णमि भल्लारी भुयणहु ।
ताहि सयवरि मिलिय णरेसर    खेयरत णावइ ससिणेसर ।
ते जरसंधपमुह भवलाइय    कण्णइ माल ण कासु वि ढोइय ।
तहिं मि तेण वणगयपडिमल्लें    जिणिवि कण्ण सकलाकोसल्लें ।
माल पडिच्छिय उड्डिउ कलयलु    सणद्धउ सयलु वि पत्थिवबलु ।
जरसिंधहु भीणइ कयविग्गह    घाइय जादव कउरव मागह ।
तेहिं हिरण्णवम्मु सभासिउ    पइ गउरविउ काइं किर देसिउ ।
मालइमाल ण कइगलि वज्झइ    जाव ण अज्ज वि राउ विरुज्झइ ।

घत्ता—ता पेसाहि लेहु धूय मा सधहि धणुगुणि सरु ॥
चढे जरसंधि विरुद्धें धुवु पावहि पहवसपुरु ॥ २१ ॥

## 22

त णिसुणेप्पिणु सो पडिजंपइ    मडवोक्कहु वर वीरु ण कंपइ ।
जो मह पुत्तिहि चित्तहु रुच्चइ    सो सुहडु किं देसिउ वुच्चइ ।

---

२१ APAls सीणासरु सुइ°

**21** १ AP चलियइं २ P महोच्छउ ३ A णयरि ४ A °पडलगाइ ५ A भुवणहो S भुवणहो ६ B जरसंध° K जरसंधु° S जरसिंधु° ७ S जिणवि ८ S उड्डिय ९ B जरसधहो S जरसेंधहो १ A आणय ११ APS जायव १२ BS तहो धूय १३ Bh धहु

**22** १ PS णिसुणेवि सो वि २ A मरचीरु BPS वरधीरु ३ S सुहडु

---

**21** 3 *a* ससुरें देवैः सहितेन *b* ससुरें श्वशुरेण चारुदत्तेन 7 *b* परहुय कोकिला 11 *a* तहिं मि तथापि वणगय वनगजाः *b* सकलाकोसल्लें पटहवादविज्ञानेन 14 *b* देसिउ पथिकः 15 *a* कइगलि वानरगले *b* विरुज्झइ कुप्यति जरासंध 17 वढ स्थूलबुद्धे, मूर्ख

**22** 1 *b* मडवोक्कहु छागानाम् (भटबुवेभ्य)

पइ तुम्हइं वि थिट्ठ परयारिय　　　अज्ज ण जाहिं समरि अवियारिय ।
ता तहिं लग्गइ रोहिणिलुद्धइं　　　माहिवइसेण्णइं सहसा कुद्धइं ।
थिय जोयति देव गयणगणि　　　अण्णहु अण्णु भिडिउ समरंगणि ।
कयणविरइइ रहवरि चडियउ　　　णववरु णियभाइहिं अब्भिडियउ ।
विधंतें सहस त्ति परिक्खिउ　　　तेण समुद्दविजउ ओलक्खिउ ।
जे सर घल्लइ ते सो छिंदइ　　　अप्पुणु तासु ण उरयलु भिंदइ ।
बंधवु जगि ण होइ णिव्वच्छलु　　　सुइरु णिहालिवि जउवइभुयबलु ।
दिव्वपत्तिपत्तेहिं विहूसिउ　　　णियणामंकु बाणु पुणु पेसिउ ।
पडिउ पयतरि सउरीणाहें　　　उच्चाइउ अरिमयउलवाहें ।
अक्खराइं वाइयइं सुसत्तें　　　वियलियवाहजलोल्लियणेत्तें ।
जणउवरोहें पइं घरि धरियउ　　　जो चिरु विहिवसेण णीसरियउ ।

घत्ता—सवच्छरसइ पुण्णि आउ एउ समरंगणु ॥
हउं वसुएवकुमारु देव देहि आलिंगणु ॥ २२ ॥

## 23

जइ वि सुवंसु गुणेण विराइउ　　　कोडीसरु णियमुट्ठिहि माइउ ।
आवइकाले जइ वि ण भज्जइ　　　जइ वि सुहडसंघट्टणि गज्जइ ।
भायरु पेक्खिवि विसुणु व वंकउ　　　तो वि तेण वाणासणु मुक्कउं ।
णरवइ रहवराउ उत्तिण्णउ　　　कुंअरु वि संमुहु लहु अवइण्णउ ।
एक्कमेक्क आलिंगिउ बाहहिं　　　पसारियकरहिं णाइं करिणाहहिं ।
भाय महंतु णविउ वसुएवें　　　जंपिउ पहुणा महुरालावें ।
हउ पइं भायर समरि णिजिउ　　　बंधु भणंतु ससूअहु लज्जिउ ।
अण्णहु चावसिक्ख कहु एही　　　पइं अब्भासिय धुरंधर जेही ।

४ P जाहु ५ P तहो ६ S गेहिणि°, K गेहिणि° in second hand. ७ B जोवत, S जोयत. ८ AP लग्गु ९ S सवरगणि. १० B विद्धतें, P विंधत्तें. ११ APS अप्पणु १२ B जोवइभुय°, P जोयइ. १३ BAls. दिव्वपक्खि°, P दिव्वपत्ति°. १४ B °मियउल° १५ B °वाहब्भोल्लिय°. १६ A °णत्तें. १७ P एव.

**23** १ B सुवस. २ APS °कालए ३ S ज पि ४ P कुमरु, S कुवरु ५ B णामिं. ६ APS माइ. ७ A सभूयह. ८ B कहिं, P कइ

3 *a* परयारिय पारदारिका　6 *b* णववरु वसुदेव, णियभाइहिं समुद्रविजयादिभि सह. 9 *a* णिव्वच्छलु निस्नेह, *b* जउवइ° यदुपति. 10 *a* दिव्वपत्तिपत्तेहिं दिव्यपक्षिपक्षै 11 *a* सउरीणाहें समुद्रविजयेन, *b* °मयउलवाहें मृगकुलव्याधेन 12 *a* सुसत्तें सत्त्वसाहसयुक्तेन, *b* °वाहजलोल्लियणेत्तें बाष्पजलार्द्रनेत्रेण 13 *a* घरि धरियउ बहिर्गन्तु निषिद्ध. 14 एउ एषः.

**23** 4 *a* णरवइ समुद्रविजय. 7 *b* ससूअहु स्वसारथे सकाशात्

पइ हरिवंसु वप्प उद्दीविउ　　तुहुं महु धम्मफलें मेलाविउ ।
मऊं मज्झ परिपुण्ण मणोरह　　गय णियपुरवरु दस वि दसारह ।
खेयरमहियरणारिहिं माणिउ　　थिउ वसुएवुं रायसमाणिउ ।
सच्चु णाम रिसि जो सो ससिमुहु　　महसुक्कामरु रोहिणितणुरुहु ।

घत्ता—भरहखेत्तेंनूवपुज्जु णवमु सीरि उप्पण्णउ ॥
पुप्फदंततेयाउ तेण तेउ पडिवण्णउ ॥ २३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महा
भव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे खेयरंभूगोयरकुमारीलंभो समुह
विजयदुंदुपवसगमो णाम तेयाँसीतिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८३ ॥

---

१ AP पुण्णफलें　१　BP मज्जु मज्झु　११ B वसुएवराउ　१२ A P °खेचि णिव°　१३ S खयर　१४ A °वसुदेवसगमो बलदेवउप्पत्ती　१५ P तयासीमो S तीयासीतिमो

---

10 *b* दसारह दशार्हाः समुद्रविजयादयः 14 ते याउ तेजसोऽप्यधिकम्.

## LXXXIV

गयणिंदें भणिउं रिसिंदें सोत्तसुहाइं जणेरी ॥
सुणि सेणिय जिह जिणजाणिय तिह कह कंसहु केरी ॥ ध्रुवकं ॥

### 1

धावंतमहंततरंगरंगि गंगागंधावईसरिपसंगि ।
पंफुल्लियफुल्लवेल्लवेल्लिहिं कउसिय णामें तावसह पल्लि ।
तहिं तवसि विसिट्ठु वसिट्ठु णामु पंचग्गि सहइ णिट्ठवियकामु ।
मुणि भद्दवीरगुणवीरसण्ण अण्णहिं दिणि आया समियसण्ण ।
वोल्लाविउ तावसु तेहिं एव अण्णाणें अप्पउ खवहि कैंव ।
तववहुयवहजालउ वित्थरंति किमिकीडय मक्खिणाडिय मरंति ।
विणु जीवदयाइ ण अत्थि धम्मु धम्में विणु कहि किर सुकिउ कम्मु ।
विणु सुकिएण कहिं सग्गगमणु किं करहि णिरत्थउं देहदमणु ।
पडिवुद्धु तेण वयणेण सो वि णिग्गंथु जाउ जिणदिक्ख लेवि ।
मुणिवरचरियइं तिव्वइं चरंतु आइउ महुरहि महि परिभमंतु ।
उववासु करइ सो मासु मासु देहंति ण दीसइ रुहिरु मासु ।
गिरिवरि चरंतु अच्चंतणिट्ठु रिसि उग्गसेणराएण दिट्ठु ।
तें भत्तिइ वोल्लिउ णिरु णिरीहु लब्भइ कहिं एहउ सवणसीहु ।

घत्ता—ओसारिउ णयरु णिवारिउ मा परु करउ पलोयणु ॥
सविवेयहु साहुहु पयहु हउं जि करेसमि भोयणु ॥ १ ॥

### 2

जोयंतहु भिक्खुहि पिंडमग्गु पहिलारइ मासि हुयासु लग्गु ।
मयगिल्लगहुं हिंडियदुरेहु वीयइ कुंजरु ण कालमेहु ।

1 १ S गयणेंदें २ B कसह ३ AP °तरगभगि ४ AB °सरिसुसगे, P °सरिससगि. ५ B पप्फुल्लफुल्ल°, ६ AB °वल्लि ७ A तवसिट्ठु वसिट्ठु, B वसिट्ठु विसिट्ठु. ८ A णवहुय°. ९ AP जाला, B जालइ १० B महुरइ ११ A देहेण ण दीसइ. १२ AP तवतु.

2 १ B पिंडु २ S पहिलाए ३ BPAls. °गड°

1 1 गयणिंदें गतनिन्देन फणीन्द्रेण, सोत्तसुहाइं कर्णसुखानि 3 *a* °रंगि स्थाने 4 *b* कउसिय कौशिकी. 6 *b* समियसण्ण शमितचतुःसंज्ञौ 12 *b* महुरहि मथुरायाम् 16 ओसारिउ निषिद्धो लोक 17 सविवेयहु सविवेकस्य साधो

2 1 *a* पिंडमग्गु आहारमार्गम्, *b* हुयासु लग्गु राजमन्दिरेऽग्निर्लग्नः. 2 *a* मयगिल्लगहु मदार्द्रकपोलः, हिंडियदुरेहु भ्रान्तभ्रमर, *b* वीयइ द्वितीये मासे.

भिवइ दुत्तहिं हुंसभिसंदेहु  तइयइ आइउ णरणाहलेहु ।
पहु भतउ कज्जपरंपराइ  हियउल्लउं ण गइउ णिहयराइ ।
तहु तिण्णि मास गय एम जाम  केण वि पुरिसेण पउत्तु ताम ।
पउ वारइ सइ णाहारु देइ  पइउ वि केम भणणइ विवेइ ।
मुजाविउ भुक्खइ दुक्खु तिक्खु  हा हा राए मारियउ भिक्खु ।
त णिसुणिवि रोसहुयासणेण  पज्जलिउ तवसि दुम्मिउ मणेण ।
मजीररावराहियपयाउ  तवसिरुद्ध आयउ देवयाउ ।
सव्व वि भणंति भो भो वसिट्ठ  दुव्विज्झयदूसहदुट्ठविट्ठ ।
किं उग्गसेणकुलपलयकालु  पायडहुं णिविडंतुक्कियकरालु ।
किं महुर जलणजालोलिजालिय  दक्खालहु तुह महियलयघुलिय ।
ता चवइ वियड्ढ मिणयगुज्झु  जम्मंतरि पेसणु करहु मज्झु ।
कडिसुत्तयघोलिरकिंकिणीउ  त इच्छिवि गइयउ जक्खिणीउ ।
इयर वि महिमंडलि स सि पडिउ  पुणु रोसणियाणवसेण णडिउ ।

घत्ता—मुणि हुयमइ णियमणि तम्मइ उग्गसेणु मइसयमि ॥
कुलमंडणु पयडु णदणु होइवि पहु जि वधमि ॥ २ ॥

3

मुउ सो पोमावइगब्भि थक्कु  ण णियंतायहु जि अकालचक्कु ।
पिवहियथमाससखालुयाइ  झिज्जतियाइ सुल्ललियभुयाइ ।
पउ अक्खिउं भत्तारहु सईइ  सुहेहिं मुणिउ णिउणइ मईइ ।
कारिमउ विणिम्मिउ उग्गसेणु  फाडिउ ण सीहिणिए करेणु ।
भक्खिउ णियरमणहु हमासु  उप्पण्णउ पुत्तु सगोत्तणासु ।
अवलोइउ ताए कूरदिट्ठि  णिहपोक्ककासु उभिण्णमुट्ठि ।
कंसियमंजूसहि किउ अथाहि  घल्लिउ कालिंदिजलपवाहि ।

४ BP णिव° ५ PS आयउ ६ S पइउ ७ S णिसुणवि ८ B दूमिय P दूमिउ ९ S हो हो १० B णियडुक्खय° ११ ABP °जालोलि° १२ S दक्खालइं १३ A कुलमडणु

3 १ A तायहु जियकालचक्कु B °तायहो जि अकाल° S °तायहो अकाल° २ B छो फाडिउ ण सीहिणिए S फाडिउ

3 b णरणाह° जरासंध 4 a भतउ विस्मृत आकुलितो वा b णिहयराइ निहतरागे मुनौ 6 b विवेइ विवेकी 8 b दुम्मिउ उपतापित 9 a मंजीररावराहियपयाउ नुपुरशब्दशोभित पादा 10 b विट्ठ दुष्णा 11 b पायडहुं प्रकटीकुर्मः 12 a महुर मथुराम् b दक्खालहु दर्शयाम 15 a इयरु मुनि b णियाण निदानम्. 16 तम्मइ खिद्यते अइसंधमि वञ्चयामि

3 2 a पिवहियय° मनोहृदयम्. 3 b मुणिउ ज्ञातो दोहद णिउणइ निपुणया 7 a कंसियमंजूसहि कांस्यमञ्जूषायाम् अथाहि अस्ताघ ( अगाधे )

मंजोयरीइ सोमालियाइ पालिउ कल्लोलयवालियाइ।
कंसियमंजूसहि जेण दिट्ठु तेण जि सो कंसु भणेवि घुट्ठु।
कोसंबिपुरिहि पत्तउ पमाणु णं कलिकयंतु णं जाउहाणु।
णिहु जि परडिभइं ताडमाणु धाडिउ ताएं जायउ जुवाणु।
गउ सउरीपुरु वसुपवसीलु जायउ णाणापहरणविहीसु।
असिणा जरसिंधें जिणिवि वसुह णिट्ठविय वइरि सुहि णिहिय ससुह।
एकहि दिणि अत्थाणंतरालि थिउ पभणइ सो गायणरवालि।
मइं वसुविहपरमंडलियँ जित्त धरणि वि तिखंड साहिय विचित्त। 15
पर अज्जि वि णउ सिज्झइ सदप्पु णउ पणवइ णउ महु देइ कप्पु।
पोयणपुरवइ सीहरहु राउ रणि दुज्जउ रिउजलवाहवाउ।

घत्ता—जो जुज्झइ तहु बलु बुज्झइ धरिवि णिबंधिवि आणइ॥
रइकुच्छरें णं अमरच्छर मेरी सुय सो माणइ॥ ३॥

4

अण्णु वि हियइच्छिउ देमि देसु छुहु करउ को वि पत्तिउ किलेसु।
इय भणिवि णियंकविहूसियाइं आलिहियइं पत्तइं पेसियाइं।
सयलहं मंडलियहं पत्थिवेण गय किंकरवर दसदिसि जवेण।
एक्केण एक्कु तं घित्तु तेत्थु अच्छइ वसुएउ कुमारु जेत्थु।
जोइउं वाइउ तं वइरिजूरु देवाविउ लहुं संगामतूरु।
पक्खरिय तुरय करि कवयसोह मच्छरफुरंत आरूढ जोह।
णीसरिउ सणि व कयदेसदिट्ठि अंधयकविट्ठिसुउ वइरिविट्ठि।
सहुं कंसें रोहिणिदेविणाहु णं ससिमंडलहु विरुद्ध राहु।
परमंडलु विद्धंसंतु जाइ पहि उप्पहि बलु कत्थ वि ण माइ।

३ B मदोवरीए ४ B कल्लालिए ५ AP तेण वि ६ AP कोसंबिणयरे ७ S धाडियउ ८ AP वसुदेव°. ९ P जरसेंधें, S जरसंधें. १० A समुइ. ११ S मंडिलिय. १२ S धरणी तिखंड १३ AP पय पणवइ. १४ S °वायु १५ APS °कोच्छर.

4 १ P अण्णु मि. २ P हियइछिउ, S हियउच्छिउ ३ APS वसुएव°. ४ S वेरिजूरु. ५ PS Als सणाहतूरु. ६ B Als मच्छरपूरिय ७ AP अंधकविट्ठीसुउ ८ B वइरविट्ठि ९ S रोहिणी°.

10 *b* कलिकयंतु कलिकालयमः, जाउहाणु राक्षसः. 11 *b* धाडिउ निर्घाटितः 12 *b* °पहरणविहीसु प्रहरणैर्भयानकः 13 *b* ससुह ससुखाः स्थापिताः सुहृदः 16 *b* कप्पु दण्डः करः. 17 *b* °जलवाहवाउ मेघस्य वातः 19 रइकुच्छर मनोहररतिकौतुकोत्पादिनी

4 2 *a* णियक° स्वचिह्नेन, *b* पत्तइं लेखाः. 5 *a* जोइउ दृष्टम् 7 *a* सणि व शनिग्रहवत्, *b* वइरिविट्ठि शत्रूणां विष्टि पापवतीवत् 9 *b* पहि उप्पहि मार्गे उन्मार्गे च.

घत्ता—चलकेसरकरवहमासुरहरिकंहिँ रहि चडियउ ॥
जयलच्छि कुंडे महामइ वसुएवहु अंभिडियउ ॥ ४ ॥

## 5

सउहद्देण समामि वुत्त हरिमुत्तसित्त हय रहि णिउत्त ।
आवाहिउ सो पयधुव्वमाणु दलवट्टिउ रिउँ जणाणु जाणु ।
वसुएवकस भूमगमीस लग्गा परवलि उज्झायसीस ।
परसुहडह सीसइँ णिल्लुणंति थिरु थाहि थाहि हणु हणु भणंति ।
धवति धंलंति खलति घंति पइसति पंति पहरंति थंति ।
अतैइँ लयंतइँ रुलुरुलंति रत्तइँ पवहंतइँ झलझलंति ।
महि णिविडमाण हय हिलिहिलंति सरसल्लिय गयवर गुलुगुलंति ।
वट्टोड्डु रुड्डु मारिवि मरंति जीविउँ मुयंत णर हुंकरंति ।
पल्लुट्टइ गिद्धइँ णहि मिलंति भूयइँ वेयालइँ किलिकिलंति ।
पहरणइँ पडंतइँ धगधगंति विच्छिण्णइँ कबंधइँ जिगिजिगंति ।

घत्ता—पहरंतहु सामाकंतहु सीहरहेण णिवेइय ॥
सर दारुण वम्मवियारण कणयपुंखविराइय ॥ ५ ॥

## 6

एयारह बारह पंचवीस पण्णास सट्ठि बावीस तीस ।
तेण वि तहु तहिँ मग्गण विमुक्क रहु वाहिय खोणिंयखुत्तचक्क ।
ते धीर बे वि आसण्ण ढुक्क ण खयसागर मज्जायमुक्क ।
परिभडधवलु भुयबलु कलंति अवरोप्परु किर्लं कोंतहिँ हुलंति ।
ता सुहडहसमुब्भड चप्परेवि राणि णियगुरुअंतरि पइसरेवि ।

---

१ P °मासुर ११ B कड्डिय° १२ P कुविउ १३ AP रणे भिडियउ

5 १ AP सउहद्दें लहु समामवुत्त S सउहद्दें ण समामे २ A रहवरे णिउत्त ३ B आवाहिवि ४ S वहिं ५ S बरवले ६ BPAls चलंति ७ B गत्तइं ढुत्तइं ८ APS णिवडमाण ९ AP कयवयइ

6 १ BS खोणीखुत्त° २ AP मज्जायचुक्क ३ ABPS किर ४ A सुहडु समुब्भडु

---

10 हरिकड्डिइ सिंहाकृष्टरथोपरि

5 1 *a* सउहद्देण सुभद्रापुत्रेण *b* हरिमुत्तसित्त सिंहमूत्रसिक्ता अश्वा रथे धृता 2 *a* सो रथ 3 *b* उज्झायसीस उपाध्यायशिष्यौ 5 *a* धवंति ध्वंसयन्ति 7 *b* सरसल्लिय शरशल्ययुक्ताः 11 सामाकंतहु वसुदेवस्य विजयपुरराजपुत्रीकान्तस्य णिवेइय दत्ता

6 5 *a* चप्परेवि धर्षयित्वा

पवरंगोवंगइं संवरेवि चवलाउहपेरिवंचणु करेवि ।
उल्ललिवि धरिउ सीहरहु केम कंसें केसरिणा हत्थि जेम ।
आवीलिवि बद्धउ बंधणेण जईजीउ व जीयासाधणेण ।
णिउ दाविउ अद्धमहीसरासु अहिमाणु सुवणि णिव्वूढु कासु ।
तं पेक्खिवि राएं वुत्तु एंव वसुएव तुज्झु सम णेय देव ।
घत्ता—साहिज्जइ केण धरिज्जइ एहु पयंडु महाबलु ॥
पइ रुदें जिह णहु चंदें तिह पइं मंडिउं णियकुलु ॥ ६ ॥

## 7

को पावइ तेरी वीर छाय कालिंदिसेणसंइदेहजाय ।
लइ लइ जीवंजसजसणिहाण मेरी सुय संतावियजुवाण ।
ता रोहिणेयजणणेण वुत्तु परमेसर परजंपणु अजुत्तु ।
हउ णउ गेण्हमि परपुरिसयारु एयहु कंसें किउं बंधणारु ।
रायाहिराय जयलच्छिगेह दिज्जउ कुमारि एयहु जि एह ।
एहु पुच्छइ कुलु वज्जरइ कंसु णउ होइ महारउ सुहु वसु ।
कोसंबीपुरि कल्लालणारि मंजोयरि णामें हियहारि ।
तहि तणुरुहु हउ अचंतचंडु परडिंभमुंडि घल्लंतु दंडु ।
मुक्कउ णियमायएं दुण्णियाइ मायइं दुपुत्तणिव्विण्णियाइ ।
सूरीपुरि सेविउ चावसूरि अब्भसिउ मइं वि धणुवेउ भूरि ।
सहुं गुरुणा आइवि धरिउ वीरु अवलोयहि पासकियसरीरु ।
तं सुणिवि णरिंदें सीसु धुणिउं एयहु कुलु एउं ण होइ भणिउं ।
घत्ता—रणतंत्तिउ णिच्छउ खत्तिउ एहु ण पैरु भाविज्जइ ॥
कुलु सव्वहु णरहु अउव्वहु आयारेण मुणिज्जइ ॥ ७ ॥

५ AB °परवचणु ६ B जइ. ७ AP कम्मणिबधणेण ८ APS पेच्छिवि ९ A णिययकुलु

7 १ P °सय° २ PS कउ ३ B मजोवरि ४ AP °पाण° ५ PS मायाए. ६ S सउरी°. ७ A अब्भासिउ. ८ BSAls धीरु ९ S धुणीउ १० A रणततिउ. ११ B पर. १२ AP चिंतिज्जइ

6 *a* °अंगोवगइं अङ्गोपाङ्गानि 8 *a* आवीलिवि आपीड्य, *b* जीयासाधणेण जीविताशया धनाशया च 11 एहु सिंहरथः.

7 1 *b* कालिंदिसेण° कालिंदसेना जरासंधस्य राज्ञी. 3 *a* रोहिणेयजणणेण बलभद्रपित्रा वसुदेवेन 4 *a* °पुरिसयारु पौरुषम्, *b* एयहु सिंहरथस्य, बंधणारु बन्धनम् 8 *b* °मुंडि मस्तके 9 *a* °अइदुण्णियाइ उद्विग्नया 10 *a* चावसूरि वसुदेव 11 *b* पासकियसरीरु बन्धनचिह्नित 13 रणतत्तिउ रणचिन्तायुक्त, परु अन्यो न क्षत्रिय विना 14 अउव्वहु अपूर्वस्य अज्ञातस्य, आयारेण आकारेण आचारेण वा

## 8

इय पहुणा भणिवि किलोयरीहि　　पेसिउ दूयउ मओयरीहि ।
तें जाइंवि महुआरिणि पवुत्तें　　पइ कोक्कइ पहु बहुवधुजुत्तें ।
किं मासियाइ वहुयइ कहाइ　　अच्छइ तेरउ सुउ तहिं जि माइ ।
सुयणामें कंपिय जणणि केव　　पवणंदोलिय वणवेल्लि जेव ।
सा चिंतइ णउ सवरइ चिरु　　किउ पुत्तें काइं मि दुच्चरिउ ।
हक्कारउ आयउ तेण मज्झु　　वज्झउ मारिज्जउ सो जि पज्झु ।
इय चवेवि चलिय भयथरहरंति　　मंजूस लेवि पहि संचरंति ।
सियदेहि पराइय रायवासु　　दिट्ठउ णरवइ साहियदिसासु ।
रायण भणियं तेउ तणउ तणउ　　इहु कसवीरु जगि जणियपणउ ।
ता सा भासइ भयभावखंड　　कालिंदिहि मइं मंजूस लद्ध ।
ओहच्छइ पयडु तणिय माय　　हउ तुम्हह सुद्धिणिमित्तु आय ।
कलियारउ सइसवि सिसु हणंतु　　णीणिउ घराउ विप्पिउ कवंतु ।
मेरउ ण होइ भुकउ गुणेहिं　　जोइय मंजूस वियक्खणेहिं ।
घत्ता—तहिं अच्छिउ पत्तु णियच्छिउं जयसिरिमाणिणिमाणिउ ॥
सुहदिट्ठिहि णरणाहदिट्ठिहि णच्चिउ लोए जाणिउ ॥ ८ ॥

## 9

पयरुग्गसेणपोमावईहि　　सुउ कासु पहु सुमहासईहि ।
इय वइयरु आणिवि तुट्ठु णाहु　　जीवजस दिण्णी किंउ विवाहु ।
ससुरेण भणिउ वरवीराविसि　　जा रुच्चइ सा मग्गहि धरित्ति ।

8 १ S जोएवि K जोइवि in second hand २ A पउत्तु; B पवुत्तु P पउत्त ३ AB °जुत्तु ४ AI बहुलइ ५ AP भरिवि ६ A सवरति ७ AKP दसाइ but gloss in K साधित दिशामुख ८ P भणिउ ९ A तुह BAls कहो Als considers तउ to be a mistake in PS for कहु १ B जगजणिय° ११ P मयताव° १२ A पइ अच्छइ P एहत्थइ १३ B णिवच्छिउ

9 १ S पउमावईहि २ S जाणवि ३ S कउ ४ A वहुवीरविचि B वरु वीरवत्ति ५ A रुच्चइ ता ६ B वरत्ति

---

8 2 *a* आइवि मिलित्वा महुआरिणि कल्लाली ( मद्यविक्रयिणी ) *b* बहुबधुजुत्त बहुकुटुम्बयुक्ता 3 *b* साहियदिसासु साधितदिशामुख 9 *a* तउ तणउ तणउ तव संबंधी तनय 11 *a* ओहच्छइ एषा मञ्जूषा तिष्ठति *b* सुद्धिणिमित्तु वृत्तान्त कथयितुम् 12 *a* कलियारउ कलहकारी सइसवि शिशुत्वे बालावस्थायाम् 15 णच्चिउ पौत्र , उग्रसेनपुत्रः

जामाएं वुत्तु णिरुत्तवाय महुं महुर देहि रायाहिराय।
महिमंडलसहिय महाभडासु सौं दिण्ण तेण राएण तासु।
सहुं सेण्णें उग्गयधरणिपंसु णियवसहुयासणु चलिउ कंसु।
अविणीयजीयजीविउ हरंतु दिवसेहिं पत्तु मच्छरु वहंतु।
वेढिय महुराउरि दुद्धरेहिं हत्थिहिं रहेहिं हरिकिंकरेहिं।
अट्टालय पाडिय दलिउ कोट्टु साडिउ पुररक्खणणरमरट्टु।
अक्खिउ चरेहि गभीरभाव आयउ तुज्झुप्परि पुत्तु देव।
जो पइं कालिंदिहि घित्तु आसि एवहिं अवलोयहि णियभुयासि।
घत्ता—आयण्णिवि रिउ तणु मण्णिवि दाणु देंतु ण दिग्गउ ॥
संणज्झिवि हियइ विरुज्झिवि उग्गसेणु पहु णिग्गउ ॥ ९ ॥

## 10

संचोइयणाणावाहणाहं जायउ रणु दोहिं मि साहणाहं।
करमुक्कसूलहलसव्वलाहं दढधरियाउंचियकुंतलाहं।
घोलंतअंतमालाचलाहं पवहंतपहरसंभवजलाहं।
पडिदंतिदंतलुयमयगलाहं असिवरदारियकुंभत्थलाहं।
सोंडियसरत्तमुत्ताहलाहं दोखंडियकमकडियलगलाहं।
णिवडंतहं मुच्छाविंभलाहं णारायणियरछाइयणहाहं।
अइदूसहवणवेयणसहाहं भडभिउडिभंगभेसियगहाहं।
दरिसावियदेहवसावहाहं णीसारियणियणरवहरिणाहं।
अवलोइयकरधणुगुणकिणाहं।
ता उग्गसेणु वाहियगइंदु धाइउ सहुं गिरिणा णं मइंदु।
बोल्लाविउ रूसिवि तणउ तेण किं जाएं पइं णियकुलवहेण।
गब्भत्थें खद्धउं मज्झु मासु तुहुं महुं हूयउ णं दुमि हुयासु।

७ AP ता ८ B °जीव°. ९ ABPS दियहेहिं १० B वाडिय ११ A साडिउ पुररक्खणु णरमरट्टु, BAls णिद्धाडिउ पुररक्खणमरट्टु, S साडिउ पुररक्खणभडमरट्टु १२ A चरेहिं.

**10** १ APS दोह मि २ S read from here down to line 10 the text in a confused manner ३ S लोलत°, K लोलत° in second hand ४ B पहवत° ५ BAls. पाडिय°. ६ A °सरत° ७ S °भिंभलाह ८ S इय दूसह°. ९ AP °वसावयाह १० AP वाहेवि गयइंदु. ११ AP ण सहु गिरिणा मइंदु १२ AP दुमु हुवासु

**9** 4 *a* णिरुत्तवाय सत्यवाक् त्वम्. 6 *a* उग्गयधरणिपंसु उच्छ्रितभूधूलि. सैन्यगमनात् 7 *a* अविणीय° अनय. 8 *b* °हरि अश्वा 9 *a* कोट्टु साल प्राकार, *b* साडिउ पातित

**10** 3 *b* °पहरसंभव° प्रहारोत्पन्नम् 5 *a* °सरत्त° सरुधिराणि 6 *b* णाराय° बाणाः 7 *a* °वणवेयण° व्रणवेदना. 10 *b* मइंदु सिंहः 11 *b* जाएं जातेन उत्पन्नेन 12 *b* दुमि वृक्षे.

घत्ता—विंधतें समरि कुधुरें उग्गसेणु पच्चारिउ ॥
जो पेल्लइ पाणिइ घल्लइ सो महु वप्पु वि वइरिउ ॥ १० ॥

## 11

वोल्लिज्जइ पवरहिं काइं ताय
गज्जंतु महल्लु गिरिंदतुंगु
पहरणइं णिवारिय पहरणेहिं
णहयलि हरिसाविउ अमरराउ
पडिगयकुंभत्थलि पाउ देवि
अलिघाउ देंतु करि धरिउ ताउ
आवीलिवि भुयवलएण कण्हु
एत्थु जि पोमावइ माय धरिय
इय भणिय वे वि ससिकतकंति
असिपंजरि पियरइं पावएण
थिउ अप्पुणु पिउलच्छीविलासि
लेहुं अविक्खउ जिह उग्गसेणु
पइं विणु रज्जेण वि काइं मज्झु
तो महु णरभवजीविउ णिरत्थु
घत्ता—तें वयणें रंजियसयणें सतोसिउ सामावइ ॥
गउ महुरहि वियलियविहुरहि सीरुं तासु मणि भावइ ॥ ११ ॥

परिहुच्छ पउर दे देहि ताय ।
ता चोइउ मायंगहु मयंगु ।
पहरतहिं सुयजणणेहिं तहिं ।
उड्डिवि कसें णियगयवराउ ।
पुरिमासणिलुक्कसीलु लुणिवि ।
पंचाणणेण ण मिगु वराउ ।
पुणु दीहणायपासेण वद्धु ।
किं तुहु मि जणणि खल कूरचरिय ।
णिहियइं णियमंदिरि गोउरंति ।
चिरभवसंचियमलभावएण ।
लेहारउ पेसिउ गुरुहि पासि ।
रणि धरिवि णिवद्धउ ण करेणु ।
जइ वयणु ण पेच्छमि कहिं मि तुज्झु ।
आवेहि देव उड्डियउ हत्थु ।

## 12

लोए गाइज्जइ धरिवि वेणु
तहु तणिय धूय तिहुयणि पसिद्ध

जो पिसिउ णामें देवसेणु ।
सामा वामा गुणगामणिद्ध ।

11 १ P परिहुच्छु S परिहच्छ २ S गिरिंदु ३ B चोयउ ४ APS णिवारिवि ५ AP सीलु लेवि ६ BP मिगु S मिग ७ S °वासेण ८ S इह भणिवि ९ P मंदिर° १ APS अप्पणु ११ S धरवि १२ APS कइ व १३ B ता १४ B ओडियउ P ओड्डियउ १५ B तासु सीसु
12 १ B धीय २ B तिहुवण°

11 1 *b* परिहच्छ शीघ्रम्. 5 पुरिमासणिलु अग्रासनस्थस्य 6 *a* ताउ पिता उग्रसेन 7 *a* आवीलिवि आपीड्य 9 *a* ससिकंतकंति चन्द्रकान्तमनोहरे *b* गोउरंति गोपुराङ्गणे 11 *a* पिउलच्छीविलासि पितुर्लक्ष्मीविलासे 14 *b* उड्डियउ हत्थु प्रार्थनानिमित्त उर्ध्वीकृत 15 सामावइ वसुदेव 16 सीसु शिष्य कंस वसुदेवस्य मनसि रोचते
12 1 *b* पिसिउ कंसस्य पितृव्य देवसेन 2 *b* तहु तणिय धूय (हरि) कृष्णोत्पन्ना देवसेनेन पोषिता देवकी इति भारते प्रसिद्धम् *b* वामा मनोहरा गुणगामणिद्ध गुणसमूहस्निग्धा

रिसिहिं मि उक्कोइयकामवाण  देवइ णामें देवयसमाण ।
सा णियसस गुरुदाहिण भणेवि  महुराणाहें दिण्णी थुणेवि ।
तुहुं भुंजमाण णिसिवासरालु  अच्छति जाव परिगलइ कालु ।
ता अण्णहिं दिणि जिणवयणवाइ  अइमुत्तउ णामें कंसभाइ ।
पिउवधणि चिरु पावइउ वीरु  णिप्पिहु आमेल्लिवि णियसरीरु ।
चरियइ पइट्टु मुणि दिट्टु ताइ  मेहुणउ हसिउ जीवंजसाइ ।
दक्खालिउ देवइपुप्फचीरु  जइ जंपइ जायकसायहीरु ।
जरसंधकंसजसलंपडेण  मारेवा एयं कप्पडेण ।
होसइ पउं जि तुह दुक्खहेउ  मा जंपहि अणिवद्धउं अणेउ ।

घत्ता—हयसोत्तउं मुणिवरवुत्तउं णिसुणिवि कुसुमविलित्तउं ॥
तं चीवरु सज्जणदिहिहरु मुद्धइ फोडिवि घित्तउं ॥ १२ ॥

## 13

रिसि भासइ पुणु उज्झियसमंसु  कण्णहं फोडेवउ एम कंसु ।
ता चेल्लु ताइ पायहिं छुण्णु  पुणरवि मुणिणा पडिवयणु दिण्णु ।
तुह जणणु हणिवि रणि दढभुएण  भुंजेवी मेंहि एयहि सुएण ।
गउ जइवरु वासु विलासियासु  जीवंजस गय भत्तारपासु ।
पुच्छिय पिएण किं मलिणवयण  किं दीसहि रोसारत्तणयण ।
ता सा पडिजंपइ पुण्णजुत्तु  होसइ देवइयहि को वि पुत्तु ।
णिहणेव्वउ तें तुहुं अवरु ताउ  महिमंडलि होसइ सो ज्जि राउ ।
ता चिंतइ कंसु णिसंसियाइं  अलियइं ण होंति रिसिभासियाइं ।

---

१ B उक्कोयइ कामवाण, PS उक्कोइयकुसुमवाण ४ BP भुंजमाणु ५ A अच्छतु. ६ AB परिगलिय°, S पडिगलइ. ७ BPS धीरु ८ APS आमेल्लिय° ९ A जरसिंध°, P जरसेंध° १० A मारेव्वा ११ S फालिवि.

**13** १ PS फालेवउ २ P चुण्णु. ३ P पुणुरवि ४ S भुंजेवि मही ५ AP विणासि आसु. ६ P मलियवयण. ७ A सा पडिजपइ तुह पुण्णजतु. ८ S णीउसियाइ

---

3 *a* उक्कोइय° उत्पादित. 4 *a* णियसस निजभगिनी, *b* महुराणाहें कंसेन 5 *a* णिसिवासरालु रात्रिदिवसयुक्त. काल. 7 *b* आमेल्लिवि णियसरीरु शरीराशां मुक्त्वा 8 *b* मेहुणउ देवर अतिमुक्तक. 9 *a* देवइपुप्फचीरु देवकीरजस्वलावस्त्रम्. *b* जइ यति., जायकसायहीरु जातकषायशल्य. 11 *b* अणेउ अज्ञेय वच. 12 हयसोत्तउ हतकर्णम्, कुसुमविलित्तउ रजस्वलारक्तेन लिप्तम्

**13** 1 *a* उज्झियसमसु त्यक्तोपशमलेश 3 *b* एयहि सुएण देवक्या. पुत्रेण 4 *a* विलासियासु वर्धितवाञ्छम् 7 *a* ताउ तातो जरासंध.. 8 *a* णिसंसियाइं नृशंसतानि

घत्ता—विंधतें समरि कुधुरें उग्गसेणु पचारिउ ॥
जो पेल्लइ पाणिइ घल्लइ सो महु वप्पु वि वइरिउ ॥ १० ॥

## 11

बोल्लिज्जइ पयहिं काइ ताय परिहच्छ पउर दे देहि धाय ।
गज्जंतु महंतु गिरिंदतुंगु ता चोइउ मायंगहु मयंगु ।
पहरणइं णिवारिय पहरणेहिं पहरंतहिं सुयजणणेहिं तहिं ।
णहयलि हरिसाविउ अमरराउ उड्डिवि कंसें णियगयवराउ ।
पडिगयकुंभत्थलि पाउ देवि पुरिमासणिलमइसीसु छोणिवि ।
असिघाउ देंतु करि धरिउ ताउ पंचाणणेण ण मिगु वराउ ।
आवीलिवि भुयवलएण रुद्धु पुणु दीहणायपासेण बद्धु ।
तेत्थु जि पोमावइ माय भरिय किं सुहु मि ऊणाणि खल कूरचरिय ।
इय भणिय बे वि ससिकंतकंति णिहियइं णियमंदिरि गोउरंति ।
असिपंजरि पियरइं पावएण थिरभयसंचियमलभावएण ।
थिउ अप्पुणु पिउलच्छीविलासि लेहारउ पेसिउ गुरुहि पासि ।
लेहें अविखउ जिह उग्गसेणु रणि धरिवि णिबद्धउ ण करेणु ।
पइ विणु रज्जेण वि काइं मज्झु जइ वयणु ण पेच्छमि केहिं मि तुज्झु ।
तो[13] मज्झु णरभवजीविउ णिरत्थु आवेहि देव उड्डियउ हत्थु ।

घत्ता—तें वयणें रंजियसयणें ससोसिउ सामावइ ॥
गउ महुरहि थियछियविहुरहि सीसु ताहु मणि भावइ ॥ ११ ॥

## 12

लोए गाइज्जइ धरिवि वेणु जो पिंसिउ णामें देवसेणु ।
तहु तणिय धूय तिहुवणि पसिद्ध सामा वामा गुणगामणिद्ध ।

11 १ P परिहत्थु S परिहथ २ S गिरिंदु ३ B चोयउ ४ APS णिवारिवि ५ AP सीसु लेवि ६ BP मिगु S मिग ७ S °वासेण ८ S इह भणिवि ९ P मंदिर° १ APS अप्पणु ११ S धरवि १२ APS कइ व १३ B ता १४ B ओडियउ P ओड्डियउ १५ B ताहु सीसु
12 १ B धीय २ B तिहुयण°

11 1 b परिहच्छ शीघ्रम्, 5 पुरिमासणिल° अग्रासनस्थस्य 6 a ताउ पिता उग्रसेन 7 a आवीलिवि आपीड्य 9 a ससिकंतकंति चन्द्रकान्तमनोहरे b गोउरंति गोपुरप्राङ्गणे 11 a पिउलच्छीविलासि पितृलक्ष्मीविलासे 14 b उड्डियउ हत्थु प्रार्थनानिमित्त उर्ध्वीकृत 15 सामावइ वसुदेव 16 सीसु शिष्य कंस वसुदेवस्य मनसि रोचते
12 1 b पिंसिउ कंसस्य पितृव्य देवसेनः 2 b तहु तणिय धूय (हरि) कुलवंशोत्पन्ना देवसेनेन पोषिता देवकी इति भारते प्रसिद्धम् b सामा मनोहरा गुणगामणिद्ध गुणसमूहस्निग्धा

रिसिहिं मि उक्कोइयकामसाण देवइ णामें देवयगमाण।
सा णियसस गुरुदाहिण भणेवि महुगणाहें दिण्णी गुणवि।
सुहु भुंजमाण णिसिवासरालु अच्छंति जाम पंगिलइ कालु।
ता अण्णहिं दिणि जिणवयणवाइ अइमुत्तउ णामें कम्मभाइ।
पिउभवणि चिरु पावइउ वीरु णिप्पिहु आमेल्लिवि णियसरीरु।
चरियइ पइट्ठु मुणि दिट्ठु ताइ महुणउ हसिउ जीवंजसाइ।
इक्खालिउ देवइपुप्फचीरु जइ जपइ जायकसायहीरु।
अंसुयकसजलरुप्पडेण मारेसी तुहं करपिंडेण।
होसइ पउ जि तुह दुक्खहेउ मा जंपहि अणियत्तउ अणेउ।

घत्ता—हयसोत्तउ मुणिवरवुत्तउ णिसुणिवि कुसुमाविलित्तउ॥
तं चीवरु सज्झणहियहरु मुयइ फोडिवि लित्तउ॥ १२॥

13

रिसि भासइ पुणु उज्झियममत्तु कण्णें फोडियउ ण मत्तु।
ता चेलु ताइ पायहिं छुण्णु पुणरवि भणिणा पडिवयणु दिण्णु।
तुह जणणु हणेवि रणि दढभुएण भुंजेसी महि वसुएवसुएण।
गउ जइवरु वासु विलासिणीसु जीवंजस गय भत्तारपासु।
पुच्छिय पिएण किं मलिणवयण किं दीसहि रोसारत्तणयण।
तं सा पडिजंपइ पुण्णजुत्तु होसइ देवइयहि को वि पुत्तु।
णिहणेव्वउ तें तुहुं अवरु ताउ महिमंडलि होसइ सो जि राउ।
ता चिंतइ कंसु णिसंसियाइ अलियइं ण होंति रिसिभासियाइं।

१ B उक्कोयइ कामसाण, PS उक्कोइयकुसुमसाण. ४ BP सुहमाणु ५ A अच्छंतु ६ AB पगलिय°, S पडिगलइ ७ BPS पीरु ८ APS आमेल्लिय° ९ A जरिय°, P जरय° १० A मारेसा ११ S फालिवि.

13 १ PS फालेवउ २ P छुण्णु. ३ P पुणुरवि ४ S भुंजेवि मही ५ AP विलासि आसु. ६ P मलियवयण. ७ A सा पडिजपइ गुरु पुण्णजुत्तु ८ S णीससियाइं

3 a उक्कोइय° उत्पादित. 4 a णियसस निजभगिनी, b महुगणाहें कंसेन 5 a णिसिवासरालु रात्रिदिवसयुक्त. कालु 7 b आमेल्लिवि णियसरीरु शरीराशा मुक्त्वा. 8 b महुणउ देवर अतिमुक्तक. 9 a देवइपुप्फचीरु देवकीरजस्वलावस्त्रम् b जइ यति, जायकसायहीरु जातकषायशल्यः. 11 b अणेउ अंशेप वच. 12 हयसोत्तउ हतकर्णम्, कुसुमविलित्तउ रजस्वलारक्तेन लिप्तम्.

13 1 a उज्झियममत्तु त्यक्तोपशमलेश्यः 3 b वसुएवसुएण देवक्या: पुत्रेण. 4 a विलासिणीसु वर्णितवाञ्छम् 7 a ताउ तातो जरासंधः 8 a णिसंसियाइं नृशंसतानि

णिहुउ वि पयण्णउ कहुँ तेत्थु अच्छइ वसुएउ णरिंदु जेत्थु ।
घत्ता—सो भासइ गुज्झु पयासइ सगुरुहि खयमयजरियउ ॥
हरिसदणु कयकंडमद्दणु जायउ मइ रणि धरियउ ॥ १३ ॥

## 14

जायउ महु तुसिवि मणमणोज्जु वरु दिण्णउ अवसरु तासु मज्झु ।
जाए केण वि जगरुमयण हउ णिहणेव्वउ ससहिमयण ।
इय वायागुत्तिअगुत्तएण भासिउ रिसिणा अइमुत्तएण ।
जइ पउ पडिवज्जहि सामिसाले परवलदलवट्टणबाहुडाल ।
णाहीपएसविलुलवणालु ज ज होसइ देवइहि बालु ।
त त हउ मारमि म करि रोसु जइ मण्णहि णियवायाविसेसु ।
ता सच्चवयणपालणपरेण त पडिवण्णउ रोहिणिवरेण ।
गउ गुरु पणवेप्पिणु धरहु सीसु माणिणिइ पवोल्लिउ माणिणीसु ।
घरकंतहं सत्तसयाइं जासु दुकालु ण पुत्तह तुज्झु तासु ।
मइ जाणेव्वउ वेयणवसाहि दुक्खेण तणय होहिति जाहि ।
घत्ता—सुय मारिवि दुज्जण धीरिवि णाह म हियवउ सल्लहि ॥
हो गेहं हो महु गेहं लेमि दिवस मोकल्लहि ॥ १४ ॥

## 15

परंताडणु पाडणु सुणिणरिक्खु किह पेक्खमि डिंभह तणउ दुक्खु ।
मइ मेल्लहि सामिय मुयमि सगु जिणसिक्खइ भिक्खइ खयमि अंगु ।
वसुएउ भणइ हलि सुणमहंति गइ मज्झु तुहारी णिसुणि कति ।

१ B णिभुउ जि P णिहुयउ जि १ APS राउ ११ A सुगुरुहे B समुरहिं १२ A भयजज रिउ B °भयजरिउ १३ S हरिदसणु १४ S °कडवदणु

**14** १ P पइ २ P महो मणोज्जु ३ A अगुत्तिएण ४ A °मुत्तिएण ५ P सामिसाल ६ S °दलवट्टण ७ P °पवेसे ८ AP दोसु ९ B जणेव्वउ in second hand १ A लेवि ११ P दिव

**15** १ A सिव्वताडणु २ A मारणु BP फाडणु ३ B पिक्खमि PS पेक्खेमि ४ B मिल्लिहि ५ AP दिक्खइ

9 *a* णिहुउ वि निभृतोऽपि, विनीतोऽपि 10 *b* खयमयजरियउ मरणभयज्वरयुक्तो जातः 11 हरिसदणु सिंहरथ कयकडमद्दणु कृतकटकमर्दन

**14** 2 *b* ससहिमयण भगिनीपुत्रेण 3 *a* वायागुत्तिअगुत्तएण वचोगुप्तिरहितेन 8 *a* सीसु वस; *b* माणिणिइ देवक्या माणिणीसु मानवतीनां स्त्रीणां स्वामी वसुदेव 9 *a* घर कंतहं वरस्त्रीणाम्,

**15** 2 *a* मुयमि सगु मुञ्चामि परिग्रहम्, 3 *b* कति हे भार्ये

जइ सिसु पयंडु मारडुं ण देमि तो हडं असच्चु जणमज्झि होमि ।
हम्मंतउ बालु सलोयणेहिं किह जोएसमि दुहभायणेहिं ।
सलिलंजलि रयरससुहहु देहुं तवचरणु पहायइ बे वि लेहुं ।
दइयवसें दइयादइयएहिं अम्हइं दोहिं मि पावइयएहिं ।
णेउ पुत्तुप्पत्ति ण तासु भंसु मारेसइ पच्छइ काइं कंसु ।
इय ताइं वियप्पिवि थियइं जाव वीयइ दिणि सो रिसि ढुक्कु तांव ।
णियचित्ति सख मुणि परिगणंतु वलपवजणणभवणंगणंतु ।
बहुवारहिं मुक्क णमोत्थुवाय पडिगाहिउ जइवरु धोय पाय ।
भुंजिवि भोयणु तवपुण्णवंतु मुणिवरु णिसण्णु आसीस देंतु ।

घत्ता—मुणि जंपिउ किं पइं विप्पिउं पहरणसूरि पघोसइ ॥
घरि जं सइ डिंभु जणेसइ तं जि कंसु णिहणेसइ ॥ १५ ॥

## 16

मइं तहु पडिवण्णउं पउ वयणु ता पडिजंपइ णिम्मद्वियमयणु ।
होहिंति ससहि जे सत्त पुत्त ते ताहं मज्झि मलपडलचत्त ।
अण्णत्त लहेप्पिणु वुड्ढिसोक्खु छहं चरमदेह जाहिंति मोक्खु ।
सत्तमु सुउ होसइ वासुएउ जरसंघहु कंसहु धूमकेउ ।
जं एम भणिवि जिणपयदुरेहु गउ झ त्ति दियंवरु मुक्कणेहु ।
तं दो वि ताइं सतोसियाइं णं कमलइं रवियरवियसियाइं ।
कालें जंतें कयगब्भछाय सिसुजमलइं तिण्णि पसूय माय ।
इंदाणइ देवें णइगमेण भद्दियपुरवरि सुहसंगमेण ।

घत्ता—थिरचित्तहि जिणवरभत्तहि वररयणत्तयरिद्धिहि ॥
घणथणियहि पुत्तत्थिणियहि दविणसमूहसमिद्धहि ॥ १६ ॥

६ A पहो ७ BPS रइरस° ८ B तवयरणु ९ B पहाए, K पहावें but gloss प्रभाते. १० B पव्वइयएहिं ११ S ण य. १२ A णियविचित्तिसख. १३ A बहुवरहिं वि. १४ P विमुक्क. १५ A णवपुण्णवतु १६ P पइ किं १७ B पहणेसुरि. १८ A णिहणेसइ.

**16** १ AP पुत्त सत्त २ AP अण्णत्थ ३ A वुड्ढिसोक्खु, P वुढिसोक्खु, S वड्ढिसोक्खु. ४ A छचरमदेह. ५ BS जरसेंधहो ६ S वे वि. ७ A कयअगछाय. ८ S सुहिसगमेण. ९ A °भत्तिहे. १० PS °रिद्धहे ११ K पुत्तत्थणियहि.

5 *a* सलोयणेहिं स्वनेत्रे. 6 *a* रयरससुहहु रतरससौख्यस्य, देहु दातुम्, *b* लेहु गृह्णीम. 7 *a* दइयादइयएहिं वधूवरैः. 8 *a* तासु पुत्रस्य. 10 *a* सख गृहसंख्या वृत्तिपरिसंख्यानम्, *b* °भवणंगणतु °प्राङ्गणमध्ये. 11 *a* बहुवारहिं पुनः पुनः. 13 पहरणसूरि वसुदेव. 14 सइ सती देवकी.

**16** 2 *a* ससहि स्वसुर्देवक्या, *b* ताहं तेषां सप्तानां मध्ये 5 *a* °दुरेहु भ्रमर. 6 *b* रवियर° रविकिरणाः. 7 *a* °छाय शोभा.

## 17

धेणियरसुयाहि ते दिण्ण तेण वेहाविउ णियजीवियवेसेण ।
वालइ सुरवेउव्वणकयाइ महुराहिउ जइ मारइ मयाइ ।
अप्फालइ सिलहि ससक्कु इ त्ति ण वियाणइ अप्पाणहु मयंत्ति ।
अण्णहिं दिणि पंकयवयणियाइ णिसि देविइ मउलियणयणियाइ ।
करिरत्तासित्तुं रुंजंतु घोरु दिट्ठउ सिविणइ केसरिकिसोरु ।
महिहरसिहरग्गं समारुहंतु अवलोइउ गोयइ ढेंकरंतु ।
उव्वेयंतु सरणु सियभाणु अवरु सरु फुल्लकमलु परिभमियभमरु ।
णियरमणहु अक्खिउं ताइ दिट्ठु तेण वि णिब्भप्फलु ताहि सिट्ठु ।
हलि णिसुणि सुमणफलु ससहरासि हरि होसइ तेरइ गब्भवासि ।
अइसुत्तमहारिसिवयणु तुज्झ ता मेल्लिवि सग्गु महासुक्कु ।
णिण्णामणामु जो आसि कालि सो देउ आउ गयणंतरालि ।
थिउ जणणिउयरि संपण्णकुसलु सुइं जणइ णाइ णवणलिणि भसलु ।

घत्ता—सुच्छायइ दोहिरि आयइ जाणमि वेण्णि वि कालिय ॥
किं ससमुह अवर वि उरुह पुरलोएण णिहालिय ॥ १७ ॥

## 18

किं गब्भभावि पहुरिउ वयणु णं णं अलेण अवलियउ भुवणु ।
किं पंयउ सहतिवलिउ गयाउ ण ण रिउजयलीहउ हुयाउ ।
सिसुअययवेहिं किं भरिउ पेट्टु ण ण जुत्थियकुलधणविसट्टु ।
किं आयउ णिंरु मयच्छिकाउ ण ण हुउं मण्णमि भूमिमाउ ।

17 १ P भणे २ B °विसेण ३ B °सित्त ४ B विकरंतु. ५ B उवयट्ठ ६ A पुप्फकमलु ७ A हवणु छणससं° P सिविणफलु S सुइणफलु ८ S णिण्णासु णाम ९ PAls सपुण्ण° १० P सुयच्छायए ११ B बाहिर १२ S वेण्णि मि

18 १ S गब्भमाव° २ B किं ताहु उयरतिव° in second hand ३ S °घणु ४ S णिरु

17 1 *b* वेहाविउ वञ्चितः 3 *b* मयाइं मृतान्यपि 3 *a* ससक्कु सभय· 7 *a* सियमाणु चन्द्र· 8 *b* णिबप्फलु निभफलम्. 9 *a* सुमणफलु स्वप्नफलम्; ससहरासि चन्द्रवदने 10 *b* महासुक्कु महाशुक्र स्वर्गं मुक्त्वा 12 *a* संपण्णकुसलु परिपूर्णकुशल 13 सुच्छायइ बाहिरि आयइ सुष्ठु छायया बहिर्निर्गतया वेण्णि वि थणू ( कलजराधवौ ) स्तनौ च कृष्णमुखौ जातौ

18 2 *a* सहतिवलिउ सत्या उदररेखा 3 *a* पेट्टु उदरम्. *b* कुलधणविसट्टु कुलधनसमूह 4 *a* मयच्छिकाउ मृगाक्ष्याः शरीरम्. *b* भूमिमाउ भूप्रदेशोऽपि कान्तिमान् जात·

किं रोमराइ णीलत्तु पत्त णं णं खलकित्ति सियॅत्तचत्त ।
सीयलु वि उण्हु किं जाउ देहु णं णं किर पुत्तपयाउ एहु ।
किं माय समिच्छइ नृवॅपहुत्तु णं णं तत्तणुजायँहु चरित्तु ।
किं मेइणिभक्खणि इच्छ करइ णं णं तें केसॅउ धरणि हरइ ।
किं दुक्कउ तेंहि सत्तमउ मासु णं णं अरिवरगलकालपासुॅ ।
किं उप्पण्णउ भद्दिउ विरोउ णं णं पडिभडकामिणिहिं सोउ ।

घत्ता—दणुमद्दणु जणिउ जणद्दणु जणणिइ भरहद्धेसरु ॥
सपयोवें कतिपहावें पुप्फदंतभाणिहिहरु ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वॅासुएवजम्मणं
णाम चॅउरासीमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८४ ॥

५ BP पत्तु. ६ BP सियत्तु चत्तु. ७ AB णिव°, P णिय°. ८ APS त तणु° ९ A °जायउ. १० S केसउ. ११ A णदे १२ AP °कालवासु. १३ AP सपहावें. १४ A कसकण्हउप्पत्ती; S कसकण्हुप्पत्ती. १५ S चउरासीतिमो

5 *b* सियत्तचत्त श्वेतत्वरहिता 7 *a* नृवपहुत्तु छत्रचमरसिंहासनादिक दोहद वाञ्छति. 8 *a* मेइणिभक्खणि दोहलकत्वान्मृत्तिकाभक्षणे. 10 *a* भद्दिउ विष्णु, विरोउ रोगरहितः.

# LXXXV

केसेउ कसणराणु वसुएवें हयणिययसहु ॥
उच्चाइवि लइउ सिरि कालदंडु ण कंसहु ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

दुवई—ण हरिवंसवंसणवजलहरु णं रिउणयणतिमिरओ ॥
जोइउँ दीवएण हरि मायइ ण जगकमलमिहिरओ ॥ छ ॥

कण्हु मासि सत्तमि संजायउ मारणकंखिरु कसु ण भायउ ।
हउ जाणमि सो दइवें मोहिउ महिवइलक्खणलक्खपसाहिउ ।
लइयउ वासुएउ वसुएवें धरिउ वारिवारणु बलएवें ।
णिसि सचलिय छत्ततमणियरें ण वियाणिय णिरु कूरें इयरें ।
अग्गइ हरिसियतिमिरविहंगिहिं धवइ वसहु फुरंतहिं सिंगहिं ।
को वि परोहउ अमरविसेसउ कालहि कालिहि मग्गपयासउ ।
देवयचोइइ आवयकुंठइ लग्गइ माहवचरणगुट्ठइ ।
जमलकवाडइ गाढविइण्णइ विहडियाइ णं थइरिहि पुण्णइ ।
कुलिसायसवलयंकियपाएं बोल्लिउ सुमेंहुरु महुराराएं ।
छत्तालंकिउ को किर णिग्गइ को णिसिसमइ दुवारहु लग्गइ ।
भासइ सीरि ससि य सुहवसणु जो तुह णिविडणियलविद्धंसणु ।
जो जीवंजसयइविहावेणु पोमावइकेरमरिमेल्लावणु ।
सो णिग्गउ तुह सोक्खजणेरउ उग्गसेण हुँव अच्छहि सेरउ ।

घत्ता—एव भणत गय ते हरिसें कहिं मि ण माइय ॥
थियरहु णीसरिवि जउणाणइ झ त्ति पराइय ॥ १ ॥

1 १ PS केसवु २ B उचाइय ३ AP हरिवसकंदणव° ४ P °तमरओ ५ B जोयउ ६ S थाइउ ७ S वासुएउ ८ S सचरिय ९ AP पयाविउ १ A मग्गु पयासिउ; BP मग्ग पयासिउ ११ P चोइय १२ A आवयकुइए B आवयकुठए १३ A समहुरु १४ A णिग्गउ १५ A लग्गउ १६ B णिवडणियल° १७ AP °विद्दारणु १८ ABPS °करिमरि° १९ AP णिव B णिउ

1 1 हयणियवसहु हतनिजयशस्य कसस्य यमदण्ड इव 4 दीवएण दीपतेजसा; मिहिरओ सूर्यं 7 *b* वारिवारणु छत्रम् 8 *a* छत्ततमणियरें छत्रच्छायया *b* इयरें कंसेन 9 *a* विहंगिहिं °विमर्दैः विनाशकैः *b* वसहु वृषभः 10 *b* कालहि कालिहि कृष्णायां रात्रौ मग्गपयासउ मार्गप्रकाशकः 11 *a* देवयचोइइ देवताप्रेरिते आवयकुंठइ आपदाविनाशके 13 *b* महुराराए उग्रसेनेन 15 *b* णिविडणियल गाढशृंखला 16 *a* जीवंजसयइ° कंस *b* करमरिमेल्लावणु बन्दिनीमोचकः 17 *b* सेरउ (स्वैर) मौनेन

## 2

दुवई—ता कालिंदि तेहिं अवलोइय मंथरवारिगामिणी ॥
णं सरिरूवुं धरिवि थिय महियलि घणतमजोणि जामिणी ॥ छ ॥

णारायणतणुपहपंती विव | अंजणगिरिवरिंदकंती विव ।
महिमयणाहिरइयरेहा इव | बहुतरंग जरढयदेहा इव ।
महिहरदंतिदाणरेहा इव | कंसरायजीवियमेरा इव ।
वसुहणिलीणमेहमाला इव | सीम समुत्ताहल बाला इव ।
णं सेवालवाल दक्खालइ | फेणुप्परियणु णं तहि घोलइ ।
गेरुयरत्तु तोउ रत्तंबरु | णं परिहइ सुयकुसुमहिं कब्बुरु ।
किंणरिथणसिहरइं णं दावइ | विब्भमेहिं णं संसउ भावइ ।
फणिमणिकिरणहिं णं उज्जोयइ | कमलच्छिहिं णं कण्हु पलोयइ ।
भिसिणिपत्तथालेहिं सुणिम्मल | उच्चाइय णं जलकणतंदुल ।
खलखलंति ण मंगलु घोसइ | णं माहवहु पक्खु सा पोसइ ।
जउ कासु वि सामण्णहु अण्णहु | अवसें तूसइ जवण सवण्णहु ।
विहिं भाएहिं थक्कउ तीरिणिजलु | णं धरणारिविहत्तउं कज्जलु ।

घत्ता—दरिसिउ ताइ तलुं किं जाणहुं णाहहु रत्ती ॥
पेक्खिवि महुमहणु मयणें णं सरि वि विगुत्ती ॥ २ ॥

2 B पविलोइय २ P सरिरूउ. ३ AP read 4 *b* as 5 *a* ४ A जलहरदेहा, P जलधरवेला. AP read 5 *a* as 4 *b* ६ A सोम ७ AB माला इव ८ AP रत्ततोय रत्तंबर ९ AP कव्बुर, B कन्चुरु १० A भउहउ ११ B उज्जोवइ १२ B पलोवइ. १३ A उच्चायइ. १४ P घोलइ १५ A समुण्णहो १६ BS भायहिं १७ A धरणारिहि हित्तउ, P धरणारिविहित्तउ. १८ A तणु १९ A °महणु ण मयणेण व सरी विव गुत्ती २० P ण व सरि वि २१ B विग्गुत्ती.

2 घणतमजोणि जामिणी काल्रात्रि 4 *a* महिमयणाहिरइयरेहा इव भूमे कस्तूरिकारेखा इव, *b* जरढयदेहा वृद्धावस्यया वलीयुक्तदेहा. 5 *a* महिहरदंति° गिरिरेव गज, *b* °मेरा मर्यादा 6 *b* साम श्यामा समुत्ताहल नदीमध्ये शुक्तिकाया मुक्ताफलानि वर्तन्ते 7 *a* सेवालवाल शैवालमेव केशा, *b* फेणुप्परियणु फेन एव उपरितन वस्त्रम् 8 *a* तोउ तोय जलम्, रत्तंबरु रक्तवस्त्रम् 9 विब्भमेहिं जलभ्रम भ्रान्तिश्च, संसउ संदेह 10 *b* कमलच्छिहिं कमलनेत्रैः. 13 *b* जवण यमुना सदृशवर्णस्य हरेरेव तुष्यति कृष्णवर्णत्वात् महत्त्वाच्च 14 *b* °विहत्तउ विभक्तम् 15 तलु नाभि अध प्रदेशश्च

## 3

दुवई—णइ उत्तरेवि जाय थोवंतरु अति समीहियासए ॥
दिट्ठउ णदु तेहिं सो पुच्छिउ णिक्कुडिल समासए ॥ छ ॥

मइं कंतइ देवय ओलग्गिय धूय ण सुंदरुं पुत्तु जि मग्गिय ।
देविइ दिण्णी सुय किं किज्जइ तहिं केरी लइ ताहि जि दिज्जइ ।
जइ सा तणुरुहु पहिं मइं देसइ तो पणइणिहि आस पूरेसइ ।
पं तो गंधधूवचरुफुल्लइं चारुभक्खरूयाइं रसिल्लइं ।
देमि ताम जा देवि णिरिक्खमि ता हलहेइ भणइ सुणि अक्खमि ।
लइ लइ लच्छिविलासरवण्णउ एहु पुत्तु तुह देविइं दिण्णउ ।
भंतिं म करहि काइं मुहु जोवहि मेरइ करि तेरी सुय होयहि ।
ता हियउल्लइ णदु वियप्पइ णरवेसेण भडारी अंपइ ।
लेमि पुत्तु किं पउरपलावें परिपालमि सणेहसब्भावें ।
एम चवेप्पिणु अप्पिय बाली थलकरकमलि कमलसोमाली ।
लइउ विहु साणंदें णंदें मेहु व आलिंगियउ गिरिंदें ।
हुउ संकयत्थउ गउ सो गोउलु जणय तणय पडिआया राउलु ।

घत्ता—सुय छणससिवयण देवइयहि पुरउ णिवेसिय ॥
केण वि किंकरिण णरणाहहु वत्त समासिय ॥ ३ ॥

## 4

दुवई—पुरणहहस कस परघरिणिविलयविरहारहारिणा ॥
जाया पुत्ति देव गुरुघरिणिहि वहरिणि मलयदारुणा ॥ छ ॥

---

3 १ A सुदर २ BP °धूय° ३ B °रूआइं ४ S दिव्वए ५ A omits म and reads करेहि for करहि ६ AP भणेप्पिणु ७ PS वरकरकमलि ८ Als सुकयत्थउ against Mss ९ AS जणण तणय

4 १ A °पलयदारुणा P °पलयदारुणो

---

3 1 थोवंतरु स्तोकमन्तरम्; समीहियासए वाञ्छितवाञ्छया 2 णदु नन्दगोपः; णिक्कुडिल निष्कपटम् 3 a पहिं मइं मां प्रति b पणइणिहि यशोदायाः 7 a हलहेइ हलहेतिः बलभद्र 11 a पउरपलावें प्रचुरप्रलापेन 12 b कमलसोमाली कमलवत् कोमला 13 a विहु विष्णुर्वासुदेव; साणंदें सहर्षेण 16 णरणाहहु कंसस्य

4 1 पुरणहहस हे नगरगगनसूर्य; हारहारिणा हे हारहारिन्, 2 मलयदारुणा वसुदेवेन इति पौराणिकी कथा

तं णिसुणेप्पिणु णरवइ उट्ठिउ जाइवि ससहि णिहेलणि संठिउ ।
तेण खलेण दुरियवसमिलियहि छुहु जायहि णं अंचयकलियहि ।
तलहत्थें सरलहि कोमलियहि चप्पिवि णासिय दिर्ह्निदिलियहि ।
रूवु विणासिवि सुट्ठु रउद्दें भूमिभवणि घल्लाविय खुद्दें ।
सरसाहारगासपियवायइ तहिं मि थीय वड्ढारिय मायइ ।
हूई णवजोव्वणसिंगारें भज्जइ ण टसं त्ति थणभारें ।
सुव्वयखंति सधम्मु समीरइ आउ आइं सुंदरि तउ कीरइ ।
णासाभंगें रूवु विणट्ठउं जाणिवि सा दप्पणयलि दिट्ठउं ।
णिग्गय गय वयधारिणि होइवि थिय काणणि ससरीरु पमोइवि ।
धोयइं धवलंबरइं णियत्थी जिणु झायति पलंवियहत्थी ।
कुसुमहिं मालिय चउहिं मि पासहिं पुज्जिय णाहलसंबरसहासहिं ।

घत्ता—गय ते णियभवणु एक्कल्ली कण्ण णिरिक्खिय ॥
अरिहु सरंति मणि वणि भीमें वग्घें भक्खिय ॥ ४ ॥

5

दुवई—गय सा णियकएण सुरवरघरं अमलिणमणिपवित्तयं ॥
उव्वरियं कहं पि अलियल्लहिं तीए करंगुलित्तयं ॥ छ ॥

तं पुज्जिउं णाहलकुलवालें कुहियउं सडियउं जंतें कालें ।
अंगुलियाउ ताहि संकप्पिवि लकुडलोहविरइउं थप्पिवि ।
गंधफुल्लचरुयहिं मणमोहें पुणु तिसूलु पुज्जिउ सवरोहें ।
दुग्ग विंझवासिणि तहिं हूई मेसहं महिसहं णं जमदूई ।
पत्तहि केसउ माणियभोयहि णंदें जाइवि दिण्णु जसोयहि ।

२ P दिण्णेंदिलियहो ३ P रूउ. ४ S विणासवि. ५ B दसत्ति ६ AP सुधम्मु. ७ A सुदरु. ८ P रूउ. ९ S जाणवि १० B णिग्गय सावय° ११ S होयवि. १२ S पमायवि. १३ A धोइयधवलवर° १४ B चउह मि, S चउहु मि. १५ BPS °सवर° १६ B एकली.

5 १ A °घरममलिण°, B °घोर अमलिण°, P °वरु घरममलिण°, S °घरममलिण°. २ B उव्वरिय. ३ PS कहिं पि ४ B कुलवालें, P कुलपालें ५ S लकुड° ६ BP °लोहें. ७ P विरइय. ८ AP गंधधूयचरु°, BS गंधपुप्फचरु°. ९ S केसवु १० P जायवि

3 *b* ससहि भगिन्या देवक्या 4 *b* जायहि जातमात्राया., *b* दिल्लिदिलियहि बालाया.. 7 *b* तहिं सि भूमिमध्येऽपि. 11 *b* ससरीरु पमाइवि निजशरीरं मुक्त्वा कायोत्सर्गेण स्थिता. 12 *a* णियत्थी परिहिता 13 *a* मालिय वेष्टिता.

5 1 णियकएण पुण्येन, सुरवरघर स्वर्गम् 2 अलियल्लहि व्याघ्रात् 3 *a* तं तत् त्र्यङ्गुलम्; °कुलवालें कुलपालकेन, *b* कुहियउ कुथितम् 4 *b* थप्पिवि स्थापयित्वा.

णं मंगलणिहिकलसु मणोहरु हुहिकरकमलइ ण इंदिंदिरु ।
ण घणघडइ तमालदलोहउ छज्जइ मोहउ माहउ जेहउ ।
दामोयरु दुत्थियचिंतामणि समरगहीरवीरचूडामणि ।
अरिणरमहिहरिंदसोदामणि जणयसियरणकरणविज्जामणि ।
पविउलभुवणमोरुहदिणमणि णियेंवि पुत्तु हरिसिय गोसामिणि ।
घिप्पंइ णाहु पसारियहत्थहिं णदगोवगोवालिणिसत्थहिं ।

घत्ता—गाइउ कलरवहिं आलाविउ ललियालावहिं ॥
वड्ढइ महुमहणु कइगणु जेम रसभावहिं ॥ ५ ॥

## 6

दुवई—धूलीधूसरेण वरमुक्कसरेण तिणा मुरारिणा ॥
कीलारसवसेण गोवालयगोवीहिययहारिणा ॥ छ ॥

रंगंतेण रमंतरमंतें मथउ धरिउ ममंतु भणतें ।
मदीरउ तोडिवि आवट्टिउ अद्धविरोलिउ दहिउ पलोट्टिउ ।
का वि गोवि गोविंदहु लग्गी एण महारी मंथणि भग्गी ।
एयहि मोल्लु देउ आलिंगणु ण तो मा मेल्लहु मे पंगणु ।
काहि वि गोविहि पहुरु चेलउ हरितणुतेएं जायउं कालउ ।
मूढें जलेण काइं पक्खालइ णियजडत्तु लेहियहिं दक्खालइ ।
थण्णरसिच्छिरु छायावंतउ मायहि समुहु परिधावंतउ ।
महिससिलिंवउं हरिणा धरियउ णं करणिबंधणाउ णीसरियउ ।
दोहउ दोहणहत्थु समीरइ मुइ मुइ माहव कीलिउ पूरइ ।
कत्थइ अगणमयणालुद्धउ बालेवच्छु बालेण णिरुद्धउ ।

११ S माहवु माहवु १२ B adds after 11 *a* अणुदिणु परिणिवसइ सुहियणमणि १३ A भवणमो° १४ P णिएवि १५ APS घेप्पइ १६ BP कलरवेहिं १७ A महमहणु

6 १ A वरमुक्क° S वरमुक्कु २ P आवट्टिउ ३ A मथिणि S मत्थणि ४ B मुंडु ५ A मा मेल्लउ घरपंगणु P महु पंगणु S मेल्लउ मे पंगणु. ६ P पहरु ७ A मूढि ८ B का वि ९ AS सहियइ P सहियहु १० P मायए. ११ ABPS महिसि° १२ BP सिलिंवउ १३ AP सिसुणा १४ P णउ करबंधणाउ १५ P च्चवछु वच्छु

8 *b* इंदिंदिरु भ्रमरः 9 *a* दलोहउ पत्रसमूहः *b* माहउ लक्ष्मीभर्ता 12 *b* गोसामिणि यशोदा

6 4 *a* मदीरउ लोहमयः अंकुशः (लोहनु आंकडु) आवट्टिउं भ्रमम्. 5 *b* मथणि दधिभाण्डम् 8 *a* मूढ मूर्खा 9 *a* थण्णरसिच्छिरु दुग्धस्वादेच्छया छायावंतउ क्षुधावान् *b* मायहि महिष्याः 10 *a* सिलिंवउ शिशुः 11 *a* दोहउ गोपालः 12 *b* बालवच्छु तर्णकः

गुंजाहलुयरइयपओएं मेल्लाविउ दुक्खेहिं जसोएं।
करयह लोणियपिंडु णिरिक्खिउ कण्हें कंसहु णं जसु भक्खिउं।
घत्ता—पसरियकरयलेहिं सदंतिहिं सुद्दिसुहकारिणिहिं ॥
महिइ णियडि थिए घरयम्मु ण लग्गइ णारिहिं ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—णउ भुंजंति गोव कयसरस णिज्जियणीलमेहइं ॥
केसवकायकंतिपविलित्तइं दहियइं अंजणाहइं ॥ छ ॥
घयभायणि अवलोइवि भावइ णियपडिबिंबु विट्ठु बोल्लावइ।
हसइ णंदु लेप्पिणु अवरुडइ तहु उरयलु परमेसरु मंडइ।
अम्माहीरएण तंदिज्जइ णिहंधइयउ पेरियंदिज्जइ।
हल्लरु हल्लरु जो जो भण्णइ तुज्झु पसाएं होसइ उण्णइ।
हलहरभायर वेरिअगोयर तुहुं सुहुं सुयहि देव दामोयर।
तहु घोरंतहु णहयलु गज्जइ सुत्तविउद्धु ण केण लइज्जइ।
पुहइणाहु किर कासु ण वल्लहु अच्छउ णरु सुरहं मि सो दुल्लहु।
वियलियपयकिलेससंतावें पसरंतें तहु पुण्णपहावें।
णंदहु केरउ गोउलु णंदइ महुरहि णारि मसाणइ कंदइ।
महि कंपइ पडंति णक्खत्तइं सिविणंतरि भग्गइं णिवछत्तइं।
घत्ता—णिएवि जलंति दिस कंसें विणएण णियच्छिउ ॥
जोइससत्थणिहि दिउ वरुणु णाम आउच्छिउ ॥ ७ ॥

१६ AB °थिदुउ. १७ APS °पओयए. १८ APS जसोयए. १९ A °करयलइ सद्दतहिं. २० P °सुहिसुह° २१ APS °कारिहिं.

7 १ B °भाइणि २ P अयलोयवि, S अवलोवइ. ३ AP णादिज्जइ. ४ AP परिअदिज्जइ ५ AP वइरियगोयर, S वइरिअगोयर. ६ A णयलु. ७ APAls. सुत्तु विउद्धु, B उद्धु विउद्धु. ८ B केण वि णज्जइ. ९ P सुदुल्लहु १० P णदउ. ११ P मसाणहि १२ A कदउ. १३ ABP णिवछत्तइ. १४ P णिएवि १५ A णाउ

13 *a* गुजाहलुयरइयपओए गुञ्जाकृतकन्दुकप्रयोगेण. 14 *a* लोणियपिंडु नवनीतपिण्डः. 16 महिइ विष्णौ कृष्णे इत्यर्थ..

7 2 दहियइ गोपाः कृष्णवर्णदधिनि कृतसदेहाः, अंजणाहइ कज्जलनिभानि. 3 *a* घयभायणि घृतभाजने निजप्रतिबिम्बं विलोकयति. 5 *a* अम्माहीरएण जो जो इति नादविशेषेण, तंदिज्जइ निद्रां कार्यते, *b* णिहंधइयउ निद्रातुरः. 8 *b* सुत्तविउद्धु शयनानन्तर उत्थित जाग्रत् सन्, ण केण लइज्जइ केन न गृह्यते अपि तु सर्वेण गृह्यते, अथवा मायाप्रधानत्वात् न केनापि ज्ञायते. 10 *a* वियलियेत्यादि विगलितप्रजाक्लेशसंतापेन. 11 *a* णंदइ वृद्धिं प्राप्नोति. 13 णियवि दृष्ट्वा. 14 जोइससत्थणिहि ज्योतिष्कशास्त्रप्रवीणः, दिउ विप्रः, आउच्छिउ पृष्टः.

## 8

दुवई—भणु भणु चवुवयण जइ आणसि जीवियमरणकारणं ॥
मह कह विहिवसेण इह होही असुहसुहावयारणं ॥ छ ॥

कि उप्पाय जाय किं होसइ तं णिसुणिवि णेमित्तिउं घोसइ।
तुज्झु णराहिव बलसपुण्णेउ गरुयँउ को वि सत्तु उप्पण्णउ।
ता चिंतवइ कंसु हयछायउ हउं जाणमि असेसु रिसि जायउ।
हउं जाणमि ससहुय विणिवाइय हउं जाणमि महु अत्थि ण दाइय।
हउं जाणमि महिवइ अजरामरु हउं जाणमि अम्हंह किर को परु।
हउं जाणमि पुरि महु णउ णासइ णवर कालु क किर ण गवेसइ।
इय चिंततु जाम विद्दाणउ तिलु तिलु छिज्जइ हियवइ राणउ।
सव्वाहरणविहूसियगत्तउ तो तहिं देवयाउ संपत्तउ।
ताउ भणंति भणहि किं किज्जइ को बंधिवि बंधिवि आणिज्जइ।
को मारिज्जइ को वसि किज्जइ किं वसि करिवि वसुह तुह दिज्जइ।
हरि बल मुएवि कहसु को जिप्पइ को लोट्टिवि दलवट्टिवि थिप्पइ।

घत्ता—भणइ णराहिवइ रिउं कहिं मि पत्थु महु अच्छइ ॥
सो तुम्हेंह हणहु तिह जिह जमणयरहु गच्छइ ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—कहियं देवयाहिं जो णवणिहेलणि वसइ बालओ ॥
सो पइं णिय ण भंति क दियसु वि मारइ मच्छरालओ ॥ छ ॥

आणिइ अरिघरि ता तहिं अवसरि।
कसाएसें मायावेसें।
बल मायाविणि धाइय ओहणि।

8 १ A जाणसु २ A महु कहया भविस्सिही णिच्छिउ असुहरणावयारण P मह कहया भविस्सिहीदि णिच्छउ असुहरणावयारण ३ AS णेमित्तिउ ४ AB सपण्णउ ५ B गरुयउ S गरुयउ ६ S जाणवि throughout ७ AP अम्हहं को किर पर ८ ABPS किं किर. ९ A छिज्जइ. १० A ता चवति देविउ मिगणेत्तउ ११ A धरहि वि दिज्जइ को मारिज्जइ P धरेहिं थिहि जइ को मारिज्जइ १२ AP रिउ पत्थु कहिं मि S रिउ कहिं वि पत्थु १३ A तुम्हइ हणह १४ S जिय

9 १ ABP णिव

8 2 अवयारण अवतार 3 *a* उप्पाय उत्पाता 6 *a* ससहुय भगिन्याः पुत्री *b* दाइय दायादः 7 *a* महिवइ जरासंधः 8 *a* पुरि मथुरा

9 4 *b* मायावेसें मातृवेषेण यशोदारूपेण 5 *a* बल बलयुक्ता *b* ओहणि व्यन्तरी

वच्छरवाउलु गय तं गोउलु ।
जयसिरितण्हहु णवमहु कण्हहु ।
पासि पवण्णी झ त्ति णिसण्णी ।
पभणइ पूयण हे महुसूयण ।
पियगरुडद्धय आउ थणद्धय ।
दुद्धरसिल्लउ पियहि थणुल्लउ ।
त आयण्णिवि चंगउं मण्णिवि ।
चुयपयपंडुरि वयणु पैओहरि ।
हरिणा णिहियउं राहुं गहियउं ।
णं ससिमंडलु सोहइ थणयलु ।
सुरहियपरिमलु णं णीलुप्पलु ।
सियकलसुप्परि विंभिंउ माणि हरि ।
कडुयं खीरें जाणिय वीरें ।
जणणि ण मेरी विप्पियगारी ।
जीवियहारिणि रक्खसि वइंरिणि ।
अज्जु जि मारमि पलउ समारमि ।
इय चिंततें रोसु वहंतें ।
माणमहंतें भिउडि करंतें ।
लच्छीकंतें देवि भणंतें ।
दंतहिं पीडिय मुंट्ठिइ ताडिय ।
दिट्ठिइं तज्जिय थामें णिज्जिय ।
अंणु वि ण मुक्की णहहिं चिलुक्की ।
खलहि रसंतहि सुंण्णु हसंतहि ।
भीमें धालें कयकल्लोलें ।
लोहिउ सोसिउ पलु आकरिसिउं ।
दाणवसारी भणइ भडारी ।
हियकहिरासव मुइ मुइ केसव ।

२ AP अहो ३ P पयोहरे ४ P राहु व ५ S विम्हिउ ६ P वयरिणि, S वेरिणि ७ A adds after 20 *b* कूरविनारिणि, मायाजोइणि, B adds it in second hand ८ S मारवि, समारवि ९ P माणइ मतें १० B दंतिहिं ११ BP मुट्ठिहिं, S म[illegible]
१३ AP एणु वि १४ P णहेहिं १५ AP तहि असइतिहि

6 *a* वच्छरवाउलु तर्णकशब्दयुक्तम् 7 *b* णवमहु कण्ह[illegible] राक्षसी 10 *b* थणद्धय हे पुत्र 11 *a* दुद्धरसिल्लउ [illegible] पाण्डुरे 11 *b* राहु गहियउ राहुणा गृहीतम् 24 *b* देवि श्री [illegible] *b* थाम बलेन. 25 *a* खलहि रसंतहि दुर्जनायां शब्दं कुर्वत्या . 32 *a* हियकहि[illegible] रासव हृतरक्तमद्य

पवाणंवण　　मेल्लि जणद्दण ।
कसु ण सेवमि　　रोहुं ण वावमि ।
जहिं तुहु अच्छहि　　कील समिच्छहि ।
तहिं णउ पइसमि　　छंलु ण गवेसमि ।

घत्ता—इय रुयति कलुणु कइ कह व गोविंदें मुक्की ॥
गय देवय कहिं मि पुणु णदणिवासि ण ढुक्की ॥ ९ ॥

## 10

दुवई—वरकोइलियघसरवबहिरिए गाइयगेयरससए ॥
रोमथंतथक्कगोमहिसिउलसोहियपएसए ॥ छ ॥

अण्णहिं पुणु दिणि　　तहिं णियंपगणि ।
जणमणहारी　　रमइ मुरारी ।
घोट्टइ खीर　　लोट्टइ णीर ।
भजइ कुंभ　　पेल्लइ डिंभ ।
छंडइ महिय　　चक्खइ दहिय ।
कड्ढइ चिंधि　　धरइ चलंधि ।
इच्छइ केलि　　करइ दुवोलि ।
तहिं अवसरए　　कीलाणिरए ।
कयजणराहे　　पकयणाहे ।
रिउणा सिट्ठा　　देवी दुट्ठा ।
अयरा घोरा　　सयडायारा ।
पत्ता गोट्टं　　गोवइरट्टं ।
चक्कचलंगी　　दलियभुयंगी ।
उप्परि एंती　　पलउ करंती ।
दिट्ठा तेण　　महुमहणेण ।

१६ S दोसु　१७ S पइसवि　१८ S छुच्छु समासवि　१९ APS उविंदें　२ APS °णिवासु

10　१ A °काइलेय° BS °काहिलय°　२ AP गाइयगोवरासए　३ B रोमथकबहुलगो°　४ P °महिसीउल° S °महिसिउले　५ A अण्णहिं मि दिणे P अण्णम्मि दिणे　६ AP णियमवणे　७ PS छड्डइ　८ A चलंधि　९ B पेठी　१० B दुवाली PS दुयालि　११ S गोपइ°　१२ BS यंती　१३ A महमहणेण

10　1 घसरव बहिरिए वेणुशब्दबधिरे　गेयरससए गेयरसशते　7 *a* महिय मथितं तक्रम्. 8 *a* चिंधि अग्निम्, *b* चलंधि चपलां ज्वालाम्. 9 *a* पेलि क्रीडाम्, *b* दुवालि गुल्लाई (?) 11 *a* कयजणराहे हृतजनशोभे 14 *a* गोट्ठ गोकुलम्. 15 चक्कचलंगी चक्रेण चलशरीरा　16 *a* एंती आगच्छन्ती　*b* पलउ प्रलयो विनाशो मरणम्.

पीयं पहया णीसिवि विगया ।
रविकिरणावहि अवरंदिणावहि ।
इदाइणिए पियचारिणिए ।
दिहिचोरेणं दंडडोरेणं ।
पयलचलालो वद्धो बालो ।
उदूखलए णिहियउ णिलए ।
सीयसमीरं तीरिणितीरं ।
सिसुकयछाया विगया माया ।
ता सो दिव्वो अव्वो अव्वो ।
इय सद्दंतो परियड्ढंतो ।
तमुद्दूहलय पयणियपुलय ।
णवकयकण्हहु जयजसतण्हहु ।
जाणियमग्गो पच्छइ लग्गो ।
अरिविज्जाए गयणयराए ।
ता परिमुक्कं णियडे ढुक्कं ।
मारुयचवलं तरुवरजुयलं ।
अंगे घुलिय भुयपडिखलिय ।
कीलंतेण विहसंतेणं ।
बलवंतेण सिरिकंतेणं[३१] ।

घत्ता—होइवि तालतरु रंगतहु पहि तडितरलइं ॥
रक्खसि केसवहु सिरि घिवइ कढिणतालहलइं ॥ १० ॥

१४ P पाएण हया. १५ P णालेवि गया. १६ P °किरणरहे. १७ P अवरम्मि १८ AP णदाणीए १९ AP पियघरणीए २० A दहिचोरेण. २१ A दड्डदोरेण २२ उड्डुखलए, S उड्डुक्खलए २३ P णिहियो, S णिहिओ २४ AP परियदंतो, B परिअद्दंतो, S पट्टतो. २५ B तमदूहल° २६ A पयल्लिय°, B पयणय° २७ A थणवयतण्हो, P [illegible] २८ AP सहसा कण्हो २९ AP पच्छा लग्गो ३० AP साहसुवक्क ३१ B सिरकंतेण ३[illegible] रक्खसे ३३ PS °ताडहलइं

19 *a* रवि किरणावहि किरणाना पथे मार्गे आधारे इत्यर्थ, *b* अवरदिणावहि अपरदिन 20 *a* इदाइणिए यशोदया, *b* पियचारिणिए भर्त्रा सह गतया 21 *a* दिहिचोरेण धृतिचिना- 25 *a* सिसुकयछाया पुत्रजन्मना कृतशोभा. 27 *b* परियड्ढन्तो आकर्षन् 29 *a* णवकयक नवीनपुष्पयुक्तकृष्णस्य 35 *a* घुलिय पतितम्, *b* भुयपडिखलिय भुजाभ्यां वृक्षयुग्मं स्खलितम्.

## 11

दुवई—सिरिरमणीविलासकीलाघरि वच्छयले घडंतइं ॥
ण अरियरसिराइं विहिलुकइं दसदिसिवहि पडंतइं ॥ छ ॥

ताइं इच्छेप      सो पडिच्छेप ।
पंजलीयरो      कीलणायरो ।
गयणसछुप      णाइं झिंदुपं ।
ता महारवा      तिव्वभेरवा ।
पुंछलालिपी      कण्णचालिपी ।
धाइया खरी      विंभिओ´ हरी ।
उल्ललंतिया      णहि मिलंतियां ।
वेयवंतिया      दीहदंतिया ।
उवरि पंतियों      घाउ देंतियों ।
णद्धवासिणा      आयवेसिणा ।
आहया खरे      धारिया खुरे ।
मेहसगद्दे      भामिया णहे ।
धुंदु चाविरी      कसकिंकरी ।
तीइ ताडिओ      महिहि पाडिओ ।
तालरुक्खओ      पुणु वियक्खओ ।
जगि ण माइओ      तुरउ धाइओ ।
गहिरहिंसिरो      जीवहिंसिरो ।
वकियाणणो      थोइ दुज्जणो ।
हिलिहिलंतओ      महि धुलंतओ ।
कालचोइओ      एहुँ जोइओ ।
लच्छिधारिणा      चित्तहारिणा ।
घुसिणपिंजरे      बाहुपंजरे ।
छुहिवि पीलिओ      गँयणि घालिओ ।

---

11 १ A विलासि २ A वडपकतइं ३ P इच्छिए ४ P पडियच्छिए ५ S सेडुए ६ A मिचमहरवा B तिव्व महरवा ७ B पुच्छ° ८ S विंभिओ ९ B मिलितिया १ BP यतिया ११ B दतिया १२ AP धुदुचाविरी १३ P °कंकरी १४ B वकिया° १५ B णाय १६ A सो पराइओ १७ AS गयण°

---

11 0 घडंतइं पतन्ति २ विहिलुकाइं विधान्ना छेदितानि 5 *b* सिंदुए कन्दुके क्रीडारत 6 *a* महारवा महाशब्दा खरी 11 *b* घाउ प्रहारम्. 12 *b* आयवेसिणा यादवेनेन 14 *a* मेहसगहे मेघानां संग्रहो यत्र आकाशे 1o *a* चाविरी चर्वणशीला 18 *b* तुरउ अश्व 19 *a* गहिरहिंसिरो गम्भीरहेषारवयुक्त 25 *a* छुहिवि क्षिप्त्वा बाहुमध्ये

मोडिओ गलो पत्तपच्छलो ।
रणि हओ हओ णिग्गओ गओ ।
घत्ता—ता जसोय भणिय णइपुलिणइ पाणियहारिहिं ॥
णंदणु कहिं जियइ जायउ तुम्हारिसणारिहिं ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—मरुहयमहिरुहेहिं पहि चप्पिउ गद्दह तुरय चूरिओ ॥
अवरु उदूहलम्मि पइं बद्धउ आणहुं वालु मारिओ ॥ छ ॥
धाइय तासु जसोय विसट्ठुल करयलजुयलपिहियचलथणयल ।
बद्धउ उक्खलु मेल्लिवि घल्लिउ महु जीविएण जियहि सिसु बोल्लिउ ।
फणिणरसुरह मि अइअइसइयउ हरि मुहि चुंबिवि कडियलि लइयउ ।
किं खरेण किं तुरए दट्ठउ मायइ सयलु अंगु परिमट्ठउं ।
अण्णहिं दिणि रच्छहि कीलंतहु बालहु बालकील दरिसंतहु ।
दुट्ठु अरिट्ठदेउ विसवेसें आइउ महुराबइआएसें ।
सिंगजुयलसंचालियगिरिसिलु खरखुरग्गउक्खयधरणीयलु ।
सरवरवेल्लिजालविलुलियगलु कमणिवायकंपावियजलथलु ।
गज्जियरवपूरियभुवणंतरु हरवरवसहणिबद्धभयजरु ।
ससहरकिरणणियरपंडुरयरु गुरुकेलाससिहरसोहाहरु ।
किर थाइ णिविडु देइ आवेप्पिणु ता कण्हें भुयदंडें लेप्पिणु ।
मोडिउ कंठु कउ त्ति विसिंदहु को पडिमल्लु तिजगि गोविंदहु ।
घत्ता—ओहामियधवलु हरि गोउलि धवलेंहिं गिज्जइ ॥
धवलाण वि धवलु कुलधवलु केण ण थुणिज्जइ ॥ १२ ॥

१८ B °पुलिणए.

**12** १ B Als. उदूखणम्मि, P उदूखलम्मि. २ B धाविय. ३ A तास, B तासु ४ B विधट्ठुड, P विसथुल, S दुसथुल ५ B °जुवल° ६ B °थणयड. ७ S ओक्खलु ८ P मल्लेवि. ९ BP जीएण १० A हरिमुहु चुंविवि. ११ AP बालकील. १२ PS आयउ १३ AP °सचालियथिरसिल. १४ A °गुरग्गखयधरधरणीयलु १५ A गजणरव° १६ A हयवर° १७ P पुरु केलास°, BAls. गिरिकेलास° १८ S °सिहरि° १९ B सोहावरु २० P णिवड. २१ PS °दडहिं. २२ A कधु. २३ P हरे. २४ B गोउल° २५ B धवलिहि

26 *b* पत्तपच्छलो प्राप्तपश्चाद्भाग पूर्वे, पश्चाद्गलो मोटित . 28 णइपुलिणइ नदीतटे, पाणियहारिहिं पानीयहारिणीभि स्त्रीभि

**12** 1 मरुहयमहिरुहेहिं वायुताडितवृक्षै . 4 *b* महु जीविएण मम जीवितेनापि त्व जीव दीर्घकालम् 6 *a* तुरए अश्वेन 8 *a* अरिट्ठदेउ अरिष्टनामा राक्षस., विसवेसें वृषभवेषेण, *b* महुराबइ° कस 10 *b* कमणिवाय° चरणनिपातेन 11 *b* हरवरवसह° रुद्रस्य वृषभ . 12 *b* गुरु° गरिष्ठ . 14 *a* विसिंदहु वृषभप्रधानस्य 15 ओहामियधवलु तिरस्कृतवृषभ , धवलहिं धवलगीतै .

## 13

दुवई—ता फलयलु सुणंति गोवालहं पणयजलोहवाहिणी ॥
सुयविलसिउ मुणंति णिग्गय णियगेहहु णंदगेहिणी ॥ छ ॥

भणइ जणणि ण दुआलिहि धायउ पुत्तु ण रक्खसु कुच्छिहि जायउ ।
किह थलहु मोडिउ ओत्थरियउ दइयवसें सिसु सई उव्वरियउ ।
हरिखरखरसद्दहिं सहुं सुउ जुज्झइ अणु जोवंइ महु हियवउ डज्झइ ।
केत्तिउं मइ कुमार सतावहि आउ जाहुं घरु बोल्लिउ मायहि ।
तेयवंतु तुहु पुत्त णिरुत्तउ रक्खहि अप्पाणउ करि वुत्तउ ।
परमहि भडकोडिहिं आरूढउ बाहुबलेण बालु जणि रूढउ ।
महुरापुरि घरि घरि वण्णिज्जइ णंदगोट्ठि पत्थिवहु कहिज्जइ ।
तहु देवइमायरि उक्कठिय पुत्तसिणेहें खणु वि ण संठिय ।
गोमुहकूवउ सहउ वउत्थी लोयहु मिहु मडिवि वीसत्थी ।
चलिय णंदगोउलि सहु णारिहं सहु रोहिणिसुएण वदार्हे ।

घत्ता—मायइ महुमहणु बहुगोवइ माज्झे णिरिक्खिउ ॥
पयपरिवेढियउ कलहंसु जेम ओलक्खिउ ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—हरि भुयजुयलदलियदाणवबलु णवजोव्वणविराइओ ॥
उग्गयपउरपुलय पइहच्छें वहुपवेण जोइओ ॥ छ ॥

मायव सिसुकीलारयरंगिउ हलहरेण दिट्ठिइ आलिंगिउ ।
भुयजुयलउ पसरंतु णिरुद्धउं जायउ हरिसें अणु सिणिद्धउ ।

13 १ A जणणि आलिहि णो धायउ २ P थलहु S थलहु ३ P मोडिय उत्थ° ४ PS हयसर° ५ AS जोयइ P जोयउ ६ B जाइ घरि ७ ABP add after 8 *b* केह्य ण जाणइ किं मणि मूढउ K gives it but scores it off BP add further जयसिरिमाणणु ( B माणणि ) जायउ पोढउ ८ S पुत्तहणेहें ९ AP कई मि ण थठिय १ P गोमुहु कु मि वउ S गोमुहु कूवउ ११ APS गोउल

14 १ PS °भुयल° २ P जोवण° ३ P वसुदेवेण ४ APS °रहरंगिउ

13 2 *मुणंति* ज्ञातवती 3 *b तुज्ज* इत्यादि *मम गर्भे त्वं राक्षस* इत्योत्पन्न 4 *a ओत्थरियउ* क्रुद्धा आगत 6 *b आहु* गच्छाव' *मानहि* चेतसि आनय 8 *a परमहि भडकोडिहि* भटकोट्या परमप्रकर्षे 11 *a गोमुहकूवउ* सर्वतीर्थमयो गोमुखकूप', गोमुखकूप किमपि मिथ्यामनम्, सहउ सहताम् वउत्थी उपोषिता 12 *b वदार्हे* चन्द्राभेन 14 *बयपरिवेढियउ* बकपरिवेष्टित'

14 2 *पइहच्छें* शीघ्रम्, 3 *a रयरंगिउ* रजोभूषित

चिंतिवि तेण कसंपेसुण्णउ आलिंगणु देंतेण ण दिण्णउं ।
गाढसिणेहवसेण णवंतइ आणाविय रसोइ गुणवंतइ ।
गंधफुल्लदीवउ सजोइउ भोयणु मिट्ठउं मायइ ढोइउ ।
अल्लयदलदहिओल्लियकूरहिं मंडयपूरणेहि घियपूरहिं ।
णाणाभक्खविसेसहि जुत्तउं सरसु भाविभूणाहें भुत्तउं ।
सिरि णिबद्धवेल्लीदलमालह कंचणदंड दिण्ण गोवालह ।
सुण्हइं मउदेवगइं वत्थइं भूसणाइं मणिकिरणपसत्थइं ।
पुणु जणणिइ तिपयाहिण देंतिइ तणयहु उप्परि खीरु सवंतिइ ।
घत्ता– पोरिसरयणणिहि गुणगणविब्भाविियवासेउं ॥
कुलहरलच्छियइ ण सइं अहिसित्तउ केसउं ॥ १४ ॥

15

दुवई—दीसइ णदणंदु णागयणु जणणीदुद्धसित्तओ ॥
णाइ तमालणीलु णवजलहरु ससहरकरविलित्तओ ॥ छ ॥

कामधेणु णं सइं अवइण्णी गलियथणथणि जणणि णिसण्णी ।
जाव ण पिसुणु को वि उवलक्खइ ता तहिं संकरिसणु सइं अक्खइ ।
सुललियंगि भुक्खासमरीणी उववासेण पमुच्छिय राणी ।
तेणिय भणिवि सुपहिं समत्थिउ दुद्धकलसु देविहि पल्हत्थिउ ।
हरि जोइवि णीवतहिं णयणहिं मणि आणदु पणच्चिउ सयणहिं ।
सवलाहणमिसेण सफासिवि आउच्छणमिसेण सभासिवि ।
भोयणाइ होइवि" संतोसहु गयइं ताइं महुराउरिवासहु ।

५ B कसु. ६ P णमतइ ७ P °दीवय°, S दीवइ ८ A मडिय°. ९ ABS घियऊरहिं १० A भाऊभूणाहें, BK भाइभूणाहे ११ B सुम्हइ, PS सण्हइ. १२ P उप्परे. १३ B खीर. १४ S °विम्हाविय°. १५ S वासउ १६ S केसउ

**15** १ B णदु णदु. २ B णामि ३ B °थणथलि. ४ B ओलक्खइ ५ A तिं इय भणेवि, P तें इय भणेवि. ६ BAls. समुट्ठिउ ७ A omits this line. ८ BS जोयवि ९ A omits 8*a*. १० A मोयणाइ. ११ P होयवि

6 *a* णवतइ नतया मात्रा. 8 *a* अल्लयदल° पत्रभाजनम्, °दहिओल्लिय° दधिमिश्रैः 9 *b* भाविभूणाहें भविष्यन्नाथेन. 11 *a* सुण्हइ सूक्ष्माणि.

**15** 1 णदणदु नन्दस्य आनन्द. 3 *b* गलियथणथणि गलितस्तन्यस्तनी 5 *a* भुक्खासमरीणी क्षुधाश्रमश्रान्ता. 6 *a* तेणिय भणिवि तेन सीरिणा इय इद भणित्वा, *b* समत्थिउ उद्धृतः उच्चलितः, *b* देविहि देवक्युपरि 7 *a* णीवतहिं णयणहिं आप्यायमाने शीतीभवद्भिर्नेत्रै, *b* सयणहिं स्वजनेषु मनसि. 8 *a* सवलाहणमिसेण विलेपनच्छद्मना, *b* आउच्छण° वयं गच्छामः इति पृच्छा.

कालें जंतें छज्जइ पत्तउ　　आसाढागमि आसारत्तउ।

घत्ता—हरियउ पीयलउ दीसइ जणेण तं सुरधणु ॥
उवरि पओहरहं ण णहलच्छिहि उप्परियणु ॥ १५ ॥

## 16

दुवई—विद्दवं इयचाउ पुणु पुणु मेहं पाथियहियथमेयहो ॥
घणघारणपवेसि ण मगलतोरणु णहणिकेयहो ॥ छ ॥

जलु मलइ　　झलझलइ।
धरि भरइ　　सरि सरइ।
तडयडइ　　तडि पडइ।
गिरि फुडइ　　सिहि णडइ।
मरु चलइ　　तरु घुलइ।
जलु थलु वि　　गोउलु वि।
णिरु रसिउ　　भयतसिउ।
थरहरइ　　किर मरइ।
आ ताव　　थिरभाव।
धीरेण　　वीरेण।
सरलच्छि-　　जयलच्छि-।
तण्हेण　　कण्हेण।
सुरथुएण　　भुयजुएण।
थिरथोरिउ　　उद्धरिउ।
महिहरउ　　दिहिथरउ।
तमजडिउ　　पायडिउं।
महिविवरु　　फणिणियरु।
फुंफुवइ　　विसु मुयइ।
परिघुलइ　　चलचलइ।
तरुणाइ　　हरिणाइ।

१२ APS घणेण सुरवरधणु

16　१ AP अइपथियं°　२ S घर वारण°　३ A तडयडइ　४ P दिहिहरउ　५ AB फुफुवइ PS फुंफुयइ

10 *a* छज्जइ शोभते वर्षतुं मासः　11 *a* सुरधणु तत् इन्द्रधनुः　12 पओहरहं मेघानाम्

16　1 मेयहो मेदकस्य 2 घणवारण° मेघ एव राजः　णहणिकेयहो नमोगृहस्य　6 *b* सिहि मयूरः　9 *a* रसिउ आरटितं　13 *a b* सरलच्छि जयलच्छि　सरलाक्षी जयलक्ष्मी　16 *a* थिरथोरिउ विस्तृतः　17 *b* दिहिथरउ धृतिकर.

तट्ठाइं णट्ठाइं ।
कायरइं वणयरइं ।
पंडियाइं रडियाइं ।
घित्ताइं चत्ताइं ।
हिंसाल- चंडाल- ।
चंडाइं कंडाइं ।
तावसइं परवसइं ।
दरियाइं जरियाइं ।

घत्ता—गोवद्धणपरेण गोगोमिणिभारु व जोइउ ॥
गिरि गोवद्धणउ गोवद्धणेण उच्चाइउ ॥ १६ ॥

## 17

दुवई—ता सुरखेयरेहिं दामोयरु[1] वासारत्त[2]रुंधणो ॥
गोवद्धणु भणेवि हक्कारिउ कयगोजूहवद्धणो ॥ छ ॥
कण्हें बाहुदंडपरि[3]यरियउ गिरि छत्तु व उच्चाइवि धरियउ ।
जलि पवहंतु जंतु ण उवेक्खिउ धारावरिसें[5] गोउलु रक्खिउं ।
परउवयारि सजीविउ दिंतहं वीणुद्धरणु विहूसणु संतहं ।
पविमल कित्ति भमिय महिमंडलि हरिगुणकह हूई आहंडलि ।
कालि गलंतइ कंतिइ अहियइं कलिमलपंकपडलपविरहियइं ।
महुरापुरवरि अमरहिं महियइं अरहंतालइ रयणइं णिहियइं ।
तिण्णि ताइं तेलोक्कपसिद्धइं खरटंकारदेहसुहणिद्धइं ।
तं रयणत्तउं कहिं मि णिरिक्खिउं पुच्छिउ कंसें वरुणें अक्खिउं ।
णायामिज्जइ विसहरसयणें जो जलयरु आऊरइ वयणें ।
जो सारंगकोडि गुणुं पावइ सो तुज्झु वि जमपुरि पहु दावइ ।

६ B वडियाइ. ७ AP रत्ताइ. ८ A रड्डियाइ ९ A गोवद्धणधरेण, P गोवद्धणयरेण. १० A उच्चायउ, S उच्चारउ.

**17** १ S दामोयर. २ B वासारत्तु ३ S परियरिउ. ४ A उपेक्खिउ, BP उवक्खिउ. ५ P °वरिसहो, Als. वरिसें against Mss ६ A णहमडलि. ७ S हुई. ८ AP °परिरहियइ. ९ S रयणत्तिउ १० BS गुण ११ P °पुरे.

26 *a* घित्ताइं क्षिप्तानि 30 *a* दरियाइ भय प्राप्तानि, *b* जरियाइ ज्वरसंताप.. 31 गोवद्धणपरेण धेनुवृद्धिकरेण, गोगोमिणि° भू लक्ष्मीश्च

**17** 4 *a* उवेक्खिउ निराहतम्. 7 *a* कंतिइ अहियइं कान्त्या अधिकानि. 8 *b* अरहंतालइ जिनमन्दिरे 9 *b* खर° शङ्ख., °टंकार° धनु, °देहसुह° नागशय्या. 10 *b* वरुणें नैमित्तिकेन विप्रेण 11 *a* णायामिज्जइ न दुःखीक्रियते, *b* जलयरु शङ्ख 12 *a* सारंगकोडि गुणु पावइ धनुश्चटापयति.

घत्ता—उग्गसेणसुयणु विहुरंधरासि तारिव्वउ ॥
तेण णराहिवइ जरसिंधु समरि मारिव्वउँ ॥ १७ ॥

## 18

दुवई—पत्तिय कस कुसलु णउ पेक्खमि पत्ता मरणवासरा ॥
पूयण वियडसयडजमलज्जुणतलखरदुट्ठियह्यधरा ॥ छ ॥

जित्ती जेण णंदगोवालें पडिभडमयणदप्पुत्तालें ।
जाउहाणु पसु भणिवि ण मारिउ जेण अरिट्ठवसहु ओसारिउ ।
फुल्लकंडवियडविडिण्णाउसि सत्त वियह वरिसतइ पाउसि ।
गिरि गोवद्धणु जें उच्चाइउ सो आणमि तुम्हारउ दाइउ ।
जीविउ तहु रज्जेण हरेसइ पच्छइ पोरिसु काइं करेसइ ।
त णिसुणिवि णियबुद्धिसहाएं पुरि डिंडिमु देवाविउ राए ।
जो फणिसयणि सुयइ धणु णावइ संखु ससासें पूरिवि वायइ ।
तहु पहु देइ देसु दुहियइ सहु तं घाइयउ णिवहु सइं मइं महु ।

घत्ता—वसविसु वत्त गय मंडलिय असेस समागय ॥
ण गणियारिकए दीहरकर मयमत्ता गय ॥ १८ ॥

## 19

दुवई—भाणु सुभाणु णाम विसकंधर वरजरसिंधणंदणा ॥
सपत्ता तुरंत जउणायडि थिय खाचियसंदणा ॥ छ ॥

अरिकरिदंतमुसलहय कलुसिय अइ वि तो वि भरविंदहिं विथसिय ।

१२ ABPS विहुरधुरासि १३ PS जरसंधु १४ S मारेवउ

18 १ AP °ज्जुणतरुखर° २ B जित्तउ ३ A कयत्व° P °कदब° ४ B पावसि ५ AP जेणुच्चायउ ६ S जाणवि ७ P पहो ८ A देसु देइ ९ B दुहिए १ BAls ता घाइय णिव होसइ महु महु ११ S समागया १२ P दीहरमर १३ AP मयमत्त १४ S गया

19 १ PS अरसंध° २ AP जउणातडे ३ A सचिय°

13 विहुरंधरासि दुःखान्धकारश्रेणि

18 1 पत्तिय मनीषि कुरु २ जमलज्जुण सादड़ीवृक्षयुग्मम्, तल तालवृक्ष °खर दुट्ठिय गर्दभी 4 a जाउहाणु राक्षसोऽरिष्ट 5 a कडंबविडवि कदम्बवृक्ष 9 a णावइ नामयति 10 a दुहियइ सहुं पुत्र्या सह 6 णिवहु नृपाणां निवहः समूहः मम मम इति भणन्, मे सर्वं भविष्यतीति वाञ्छया 12 गणियारिकए हस्तिन्याः कृते

19 1 भाणु सुभाणु भानो पुनः सुभानु विसकंधर वृषभस्कन्धौ 2 जउणायडि यमुना तटे संदणा रथाः

कौली कंतिइ जइ वि सुहावइ तो वि तंब जणघुसिणें भावइ ।
जइ वि तरंगहिं चवलहिं चवइ तो वि तुरंगहं सा ण पहुच्चइ ।
जइ वि तीरि वेल्लीहर दावइ तो वि ण दूसहं सपय पावइ ।
पविउलु दिट्ठउं सिविरें पमुक्कउं गोवविंदु साणंदु पढुक्कउ ।
तणकयवलयविहूसियथिरकरु वणकणियारिकुसुमरयपिंजरु ।
ससुसिरवेणुसद्दमोहियजणु काणणधरणिधाउमंडियतणु ।
कूरणिवघणवेढियकंदलु कंदलदलपोसियमहिसीउलु ।
घत्ता—गुंजाहलजडियदडयविहत्थु सचल्लिउ ॥
महिवइतणुरुहेण आसण्णु पढुक्कउ बोल्लिउ ॥ १९ ॥

## 20

दुवई—भो आया किमत्थु किं जोयइ दीसइ पवर दुज्जया ॥
पभणइ णंदपुत्तु के तुम्हइं कहिं गंतु समुज्जया ॥ छ ॥
अम्हइं णंदगोव फुडु वुत्तउ आया पुच्छहुं भणहुं णिरुत्तउं ।
भणइ सुभाणु जणणु अम्हारउ अद्धमहीसरु रिउसघारउ ।
वढ जाएसहुं महुरापट्टणु संखाऊरणु फणिदलवट्टणु ।
तहिं विरयंति सरासणचप्पणु कण्णारयणु लएसहुं घणथणु ।
पुलयवसेणुग्गयरोमंचुय तं णिसुणिवि जोयंतें णियभुय ।
हउं मि जामि गोविंदें भासिउं करमि तिविहु जं पइं णिद्देसिउं ।
तरुणि ण लहमि लहमि विहि जाणइ हालिउ किं नृवधीयउ माणइ ।
तं णिसुणेप्पिणु वालें वालउ जोयउ कंसहु अयसु व कालउ ।
घत्ता—माहवपयजुयलु उद्दिट्ठु सुभाणुं रत्तउं ॥
दिसकरिकुंभयलु सिंदूरें णावइ छित्तउ ॥ २० ॥

४ B कालिए. ५ S चवल पवचइ ६ APS तीरवेल्ली°. ७ AP सिमिरु ८ B गोववट्ठु
९ A वरकणियार°, BP वणकणियार° १० B दडहत्थु.

**20** १ AP परमदुज्जया. २ B मणहि, P भणइ. ३ S सखाओरणु. ४ S फणिदलु. ५ A सरासणकप्पणु. ६ AP णियतें. ७ S जावि. ८ ABP णिवधूयउ. ९ APS ओइउ. १० A कतिहि अजसु. ११ AP °जुवलु. १२ P ओदिट्ठु १३ A लित्तउ.

4 *a* सुहावइ शोभते, *b* तंब ताम्रा रक्ता 6 *b* दूसइं सपय वस्त्राणा शोभाम् 8 *a* तणकय° तृणकृतम्, *b* °कणियारि° कर्णिकारवृक्ष 9 *a* ससुसिर° सच्छिद्र., *b* °धाउ° गैरिकादि°. 10 *a* कूर° ईषत्, °कंदलु मस्तकम्, *b* कंदलदल° वल्लीपत्रै 12 महिवइतणुरुहेण चक्रिपुत्रेण.

**20** 2 समुज्जया समुद्यताः 5 *a* वढ मूर्ख 6 *b* लएसहु ग्रहीष्याम. 8 *b* तिविहु त्रिविध कार्यम् 9 *a* विहि जाणइ कन्या लभे न वा लभे इति विधिरेव जानाति, *b* हालिउ कर्षको गोपः. 10 *a* वालें चक्रि (जरासंध-) पुत्रेण, वालउ कृष्ण, *b* अयसु अपकीर्ति, 11 सुभाणु सुभानुना. 12 छित्तउ स्पृष्टम्.

## 21

दुवई—कण्णणसणिहाइं कइयवइं विरइयअवहासइं ॥
णक्खइं बहुहह णाइं मुहपंकयपविलोयणविलासइं ॥ छ ॥

अवरउ पुणु लक्खणहिं समग्गउ     चारणआरोहणकिणजोग्गउ ।
ऊरुउ बहुसोहग्गपवित्तिउ     तियमणकउँयथुलपणपवित्तिउ ।
मयणगिरिंदणियंबु व कडियलु     सोहइ धुयवडु जइ वि अमेहलुं ।
मज्झपएसु किसु पिसुणपहुसें     णाहि गहीर हियवगहिरत्तें ।
वलिरेहंकिउ उयरु सुपत्तलु     विरहिवियणइणिसरणु व उरयलु ।
दीह बाहु पालियणियवक्खहं     कालसप्पु णावइ पडिवक्खह ।
हारेण वि विणु कंठु वि रेहइ     पट्टयडु भालयलु समीहइ ।
मुहु सुहमुहु जममुहु पडिवण्णाउ     सज्जणदुज्जणाहं अवइण्णउ ।
कण्णजुयलु कयकमलहिं सोहिउ     णं लच्छीइ सचिंधु पसाहिउ ।
केस कुडिल मुद्धइ मता इव     मइ परमणहारिणि कंता इव ।

घत्ता—तें तहु माहवहु जो जो पएसु अवलोइउ ॥
सो सो तहु जि समु उवमाणविसेसु पढोइउ ॥ २१ ॥

## 22

दुवइ—चिंतइ सो सुभाणु सामण्णु ण एहु अहो महाभडो ॥
णिज्जउ णयरु करउँ त साहसु रमणीरमणलंपडो ॥ छ ॥

अग्गि व अंबरेण ढंकेप्पिणु     गय ते स पुरु कण्हु लएप्पिणु ।
जिणघरसुरदिसि जक्खीमंदिरि     तहिं मिलियइं णेरपियरि णिरंतरि ।

---

21 १ AP वहुहणाइमुह Als वहुहणारिमुह° against Mss and against gloss २ P समग्गउं ३ B किं ण ४ B कडुयं° P °कडुय° ५ S अमेलहु ६ B मज्झयेसु ७ B णाही गहिर ८ B मुहु मुहु मुह P मुहु मुहु मुहु K महु सुहमुहु ९ PS °जुयलु १० P पएसु ११ B उवमाणु १२ A अढोइउ P व ढोइउ

22 १ P णिज्जइ २ P करइ ३ APS णरणियर°

---

21 1 कइयवइं कान्तियुक्तानि विरइयअवहासइं चन्द्रतिरस्कारकाणि 2 णक्खइं पृथिव्या मुहपंकयपविलोयणविलासइं मुखकमलप्रविलोकने आदर्शा इव 3 b किण मालग्रन्थि 4 b तियमण स्त्रीचित्तम् 5 b अमेहलु मेखलारहितम् 6 a पिसुणपहुसें कठस्य प्रमुखचिन्तया b हियवगहिरत्तें हृदयगम्भीरत्वेन 8 a णियवक्खह निजपक्षाणाम्, 10 a मुहु इत्यादि मुखं सज्जनानां सुखमुखं शुभमुखं वा शत्रूणां यममुखप्रायम् 11 a कयकमलहिं कृते धृतेरवतंसिते कमले 12 b मइ मति 14 सो सो इत्यादि उपमानं उपमेयं च सदृशमेव, तादृशमन्यत् नास्ति

22 2 णिज्जउ नीयताम्, 3 a अंबरेण वस्त्रेण ढंकेप्पिणु आच्छाद्य

दिट्ठी णायसेज्ज दिट्ठउं धणु दिट्ठउ पंचयण्णु गुरुणीसणु ।
गोविंदें मयवंत सुदुम्मह दिट्ठ चडत पुरिस णाणाविह ।
पडिय भुयंगमजतें पीडिय फणताडिय अच्छोडिय मोडिय ।
ता हरिणा फणि तणु व वियप्पिउ कुप्परकरकडिदेसें चप्पिउ ।
लइउ संखु णं जसतरुवरफलु उरसरि तासु अहिहि णं सयदलु ।
दीसइ धवलु दीहु णं मउलिउं णाचइ कालिंदीद्दहि विलुलिउं ।
अविरकिंचिवेल्लिकंदो इव करदाहुं धरियउ चंदो इव ।
मुहणीलुप्पलि हंसु व सारिउ केसवेण कंबुउ आऊरिउ ।
पेच्छालुयमाणवेउलु पुलइउं पायंगुट्ठएण धणु वलइउं ।
घत्ता—एक्कु ण चाउ जगि अण्णु वि णयमग्गें आयउं ॥
गुणणवणें सहइ सुविसुद्धवंसि जो जायउ ॥ २२ ॥

## 23

दुवई— विसहरसयणरावजीयारवजलरुहरवपऊरियं ॥
भुवणं ससरि सदरिगिरिवलयमहो णिहिलं पि जूरियं ॥ छ ॥
विहडियफुडियपडियघरपंतिहिं मुडियालाणखंभगयदंतिहिं ।
खरखुरहणणवणियमणुयंगहिं चउदिसिवहि णासंततुरंगहिं ।
कण्णदिण्णकरणरहिं मरंतहिं हा हा एउं काइं पलवतहिं ।
पउरहिं महिमंडलि घोलतहिं धावतहिं कंदंतकणंतहिं ।
हल्लोहलिउ णयरु ता पेक्कें कंसहु वत्त कहिय पाईकें ।
पूरिउ संखु जलहिगज्जणसरु परमारणउ मयंदभयंकरु ।
अहि अक्कतउ चाउ चडाविउं पट्टणु तेण णिणायं ताविउं ।

४ A मयवति. ५ AP फढताडिय, K फणिताडिय. ६ P अच्छोड्डिय. ७ AP कोप्परकरकडियलखचप्पिउ, S कोप्पर° ८ AP कालिंदिदहि. ९ AP किर राहु व. १० PS धरिउ. ११ A कंटउ ओसारिउ. १२ B पिच्छाल्लुव°. १३ A माणव अवलोइउ

**23** १ A °सयणचाव. २ AP °जलहररवपूरिय, B °जलरुहराघऊरिय ३ BP चउदिसु. ४ P डरतहिं. ५ AP एकहिं. ६ AP पाइकहिं. ७ ABPS °गज्जण°. ८ AP पईहु भयकरु, BS मयपु भयकरु, Als. मयधभयकरु.

5 *b* पचयण्णु शखः, गुरुणीसणु महाशब्द. 7 *a* भुयगमजतें सर्पयन्त्रेण, *b* अच्छोडिय आस्फालिताः. 9 *b* तासु तस्य हरेर्हृदयतडागे शख. स्थित, क इव ? अहे. वप्रस्य मध्ये कमलमिव 10 *b* °द्दहि हृदे. 11 *b* फरराहु हस्तराहुणा 12 *a* सारिउ स्थापित 13 *a* पेच्छालुय° प्रेक्षका..

**23** 1 °सयणराव° शय्याशब्द, °पऊरिय प्रपूरितम् 4 *a* °वणिय° व्रणितानि. 5 *a* कण्णदिण्णकर° रौद्रशब्दत्वात् कर्णौ कराभ्या झम्पितौ 6 *a* पउरहिं पौरैः 8 *a* °गजण° तिरस्कृत, *b* मयदभयकरु सिंहवद्भयानक. 9 *a* अक्कतउ आक्रान्त.

कालएण कालु व आइयँ  अॅपसिद्धेण सुमाणुहि सिद्धँ ।
घत्ता—णिसुणेवि त वयणु जीवजसवइ तहु अक्खइ ॥
वइरिउ लइ मइ पवहिं मारमि को रक्खइ ॥ २३ ॥

## 24

दुवई—एँय पभणतु लेंतु करवालु सँसेण्णु सरोसु णिग्गओ ॥
ता रोहिणिसुएण अवलोइउ मायरु जित्तदिग्गओ ॥ छ ॥

फणदलि देहणालि फणिपकइ  अच्छइ मायर्वं मुक्कउ सकइ ।
सखें ण चंदेण पयासिउ  सावणमेहु व वलए भूसिउ ।
सो सकरिसणेण समासिउ  तुहु दुव्वासणाइ किं वासिउ ।
किं भाओ सि एउ किं रइयउ  गोउलु तेरउ मिछुहि लइयउ ।
णियसुईहत्ततेयपरियारियउ  त णिसुणिवि पुराउ णीसरियउ ।
वसहँघिंदढेकारविसट्टहि  लग्गउ गोवउ गोउलवट्टहि ।
अवरहि गवि पहेण तुरंतहि  कपियदेहपहि सँयभतिहिं ।
सुयचित्तु पिउहि समईरिउ  चपिउ ं चाउ सखु आऊरिउ ।
विसहरथरसयणयलु णिसुणिउ  त आयण्णवि पुत्तवियभिउ ।
णट्ठउ कहिं मि रायभयतासिउ  गोउलु अण्णत्तहिं आवासिउ ।
घर आयउ रोमचियगत्तेँ  अवलहिउ हरिसंसुयणेत्तेँ ।
घत्ता—मायर भणिउ हरि णउ मुक्कउ पुत्तु ढुँवालिइ ॥
पत्थिवसयणयलि किह ं चडियउ डिंभयकेलिइ ॥ २४ ॥

९ P काइएण कालुप १० A अविसिद्धेण

24 १ B एम भणतु S इय भणंतु २ B ससेणु ३ AP ममइ व ४ AP °मेहु व चावें भूसिउ ५ P आयो सि ६ B सुइहत्तु ७ ABS वसहवद° ८ B विसहहि ९ A भयभंतहि BK सयभतिहि and gloss in K उत्तमयतसदेहै I S सयमतहि Als भयभंतहि against Mss १० AP चम्पिउ ११ S आओरिउ १२ A °गत्तउ १३ A हरिअंसुय° P हरि अंसुय° १४ A °णेत्तउ १५ P दुवालिइ १६ AP कह

10 *a* काळएण कृष्णवर्णेन आइ वें आघातेन 11 तहु भ्रातुस्य

24 2 त्रिजग्दिग्गजो जितदिग्गजेन्द्र: 3 *a* फणदलि फणा एव पत्र, शरीरमेव नाळं सर्प एव कमलं तत्र 4 *b* वलए धनुर्वलयेन 8 *b* विसट्टहि समूहायाम् *b* वट्टहि मार्गे 9 *a* अवरहिं अन्यगोपैः *b* सयभतिहिं किं भविष्यतीति उत्तमयतसदेहैः 12 *a* णट्ठउ नष्टो नन्दगोपः तासिउ त्रासितः 15 पत्थिव पार्थिवो राजा

## 25

दुवई—णंदें णंदणिज्जु णियणंदणु सस्सणेहँ णिहालिओ ॥
पाहुणयाइ जाहुं सुयबंधुहुं इय चउरिवि चालिओ ॥ छ ॥

तावग्गइ पारद्धु णिहेलणु तेहिं मि परिट्ठिउ महिवइरक्खणु ।
मिलिय जुवाण अणेय महाबल पायपहरकंपावियमहियल ।
को वि ण सचालइ जे थामें ते महुमहणें जयसिरिकामें ।
उच्चाइवि सुरकरिकरचंडहिं पत्थरखंभणिहियसुयदंडहिं ।
अरिवरणरणियरें परियाणिउ णंदगोउ लहु जणणिइ णीणिउ ।
आउ जाहुं हो पुत्त पहुच्चइ गोउलु सुण्णउं सुइरु ण मुच्चइ ।
एव भणेप्पिणु कण्हपयावें परिमुक्काइं ताइं भयभावें ।
मलवज्जिइ महिदेसि समाणइ पुणरवि तेत्थु जि ठाणि चिराणइ ।
आणिवि गोविंदु वि गोविंदु वि थियइं ताइं दइउ जि अहिणदिवि ।

घत्ता—सुपसिद्धउ भरहि सो णंदगोट्ठु गुणरोहहिं ॥
पुप्फयंतसमहिं वण्णिज्जइ वरणरणाहहिं ॥ २५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महा-
भव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णारायणबालकीलावण्णणं णाम
पचासीमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८५ ॥

---

25 १ AP वद्धणिज्ज २ B ससिणेहें ३ A महिवइ तहिं मि परिट्ठिउ रक्खणु ४ A महाभट. ५ A °थइयल ६ AP वचालइ णियथामें. ७ B °थंभ°. ८ A पइ मुक्काइ. ९ B महिदेस°. १० A देउ जि, BS दइउ जि. ११ B णदगोट्ठु, P णदगोउ, S णदगोठु, Als णदगोउ 13 P पुप्फदंत°. १४ A बालक्रीडा ° १५ S पचासीतितमो.

---

25 1 णदणिज्जु वर्धमान 2 पाहुणयाइ प्राघूर्णका वय गच्छाम . 3 a णिहेलणु मार्गमध्ये आवास . 5 a ते पाषाणस्तम्भा 7 b णीणिउ प्रेरित. 10 a समाणइ उच्चनीचरहिते, b चिराणइ पूर्वस्मिन्विजस्थाने 11 a गोविंदु हरिः, गोविंदु गोसमूहः, b दइउ दैवम्. 12 णदगोट्ठु गोकुलम्, °राइहि शोभायुक्तैः.

पारि जलोयहिं पुत्तु इय कर्से मणि परिछिण्णउ ॥
कमलाहरणु रउद्दु तें णंदहु पेसणु दिण्णउ ॥ ध्रुवक ॥

1

सिहिचुंचलिभूउ गडे रायदूउ ।
तें भणिउ णंदु मा होहि मंदु ।
जहिं गरलगाहि णिवसइ महाहि ।
अउणासरत्तु त तुहुं तुरंतु ।
जायंवि जवेण कयजणरवेण ।
आणहि घराइ इंदीवराइं ।
ता णंदु कणइ सिरकमलु धुणइ ।
जहिं दीणसरणु तहिं हुक्कु मरणु ।
जहिं राउ हणइ अण्णाउ कुणइ ।
किं धरइ अण्णु तहिं विगयगण्णु ।
हउ काइ करमि लइ जामि मरमि ।
फणि खुद्दु चडइ त कमलखडइ ।
को करिण छिवइ को झंपें पिवइ ।
धगधगधगंति हुयवहि जलंति ।
उप्पण्णसोय कंदइ जसोय ।
महु एक्कु पुत्तु अहिमुहि णिहित्तु ।
मा भरउ बालु मंइ गिलउ कालु ।
इय जा रसंति बीहइं ससंति ।
पियरइं रसंति ता विहियसंति ।
आलिकायकंति रणि धीरु भंति ।
पभणइ उविंदु णिहणेवि फणिंदु ।
णलिणाइं हरमि जलकील करमि ।
घत्ता—इय भंणिवि गउ कण्हु संपाइउ अउणासरवरु ॥
उब्भडफडवियंडगु जमपासु व धाइउ विसहरु ॥ १ ॥

1 १ P °चुवलिय भूउ २ P गय ३ APS आइवि ४ A विगयमण्णु ५ ABP हर... ६ B गिलिउ ७ S दीहरु ८ A रणवीर मति S रणभीरु मति ९ APS णिहणेवि १ B मणेवि ११ P संपाइउ १२ A °विहरु

1 1 परिछिण्णउ ज्ञातम् 3 a सिहिचुंचलिभूउ अग्निज्वालाभून 6 a सरंतु हृदमध्ये 7 b कयजणरवेण तत्र हृदे लोककोलाहलेन सर्पस्य भयोत्पादनार्थम् 9 a कणइ क्रन्दति 12 b विगयगण्णु गणनारहित 15 b झंप झंपा 19 b मइ माम्. 21 b विहियसंति कृतशान्तिः

## 2

णं कंसकोवहुयवहहु धूमु णं णहतरुणीकडिसुत्तदामु ।
णं ताहि जि फेरउ जलतरगु ण कालमेहु दीहीकयंगु ।
सियदाढाविज्जुलियहिं फुरंतु चलजमलजीहु विसलव मुयंतु ।
हरिसउहुं फडंगुलिरयणणक्खु पसरिउ जमेण करु घायदक्खु ।
ण दंडदाणु सरसिरिइ मुक्कु णहवेयउ कण्हहु पासि दुक्कु ।
फणि फुप्फुयंतु चलु जुज्झलोलु णं तिमिरहु मिलियउ तिमिरलोलु ।
दीसइ हरि देहिं भसलउलकालु णं अजणगिरिवरि णवतमालु ।
तणुकतिपरजियघणतमासु णक्खइ फुरंति पुरिसोत्तमासु ।
सिरि माणिकइं विसहरवरासु दीसतइ देंति व देहणासु ।
तंबेहिं[14] कुसुममणियरहिं तंबु णं[16] सरिवेल्लिहि पल्लउ पलंबु ।
अहि घुलिउ अंगि महुसूयणासु ण कत्थूरीरेहाविलासु ।

घत्ता—विसहरघोलिरदेहु सरि भमंतु रेहइ हरि ॥
कच्छालंकिउ तुगु णं मयमत्तउ दिसकरि ॥ २ ॥

## 3

फणि दाढाभासुरु फुक्करंतु महुमहणु वि जुज्झइ हुंकरंतु ।
फणि उरुफणाइ ताडइ तड त्ति पडिखलइ तलप्पइ हरि झड त्ति ।
फणि वेढइ उव्वेढइ भणतु फणि लुचइ वंचइ लच्छिकतु ।
फणि धरइ सरइ सो वासुएउ णउ वीहइ सप्पहु गरुडकेउ ।
इय विसमजुज्झसंमद्दु सहिवि दामोयरेण पत्थाउ लहिवि ।
पीयलवासें हउ उत्तमंगि मणिकिरणसिहासंताणसंगि ।

**2** १ S °हुयवहो २ B ° विज्जलियहिं. ३ S °जवल°. ४ B °लक्खु. ५ A दडबाणु सरसरिपमुक्क. ६ BP गयवेयउ. ७ S कसहो पासु. ८ A पुप्फवतु, PS पुप्फुयतु ९ A देहि ण भसल°, P देहए, S देहें. १० S अजगिरि°. ११ S °परिजय° १२ B पुरुहो°. १३ B देहभासु in second hand, P दीहणासु १४ S णतेहिं १५ P कुसुमणियरेहि. १६ A सरवेल्लीपल्लवपलबु, S सरिपेल्लिउ. १७ S पल्लवु १८ B कत्थूरिय°

**3** १ AP वि. २ P °फडाए. ३ A तडप्पए. ४ S सरइ धरइ. ५ P जुज्झु समद्दु. ६ APS उत्तिमगि ७ A °किरणसहासें तेण सगि

---

**2** २ *b* दीहीकयगु दीर्घीकृतशरीरः 3 *a* सिय° श्वेता 4 *a* हरिसउहु हरिसमुखम्, फडगुलिरयणणक्खु फटाया अङ्गुलिरदशनख. 7 *a* दहि हृदे. 10 *a* तबेहिं ताम्रैः, कुसुममणियरहिं पुष्परागमणिकरैः. 12 सरि जले. 13 कच्छा° वरत्रा

**3** 2 *a* उरुफणाइ गरिष्ठफणया. 5 *b* पत्थाउ लहिवि प्रस्ताव प्राप्य. 6 *a* पीयलवासें पीतवस्त्रेण वासुदेवेन, *b* °सिहासताणसगि ज्वालासमूहसगे उत्तमाङ्गे.

गउ णासिवि विधरंतरि पइट्ठु जयसिरिइ विहूसिउ इय त्ति दिट्ठु ।
जलि कीलइ अमरगिरिंदधीरु कल्लोलुप्पेल्लियविउलतीरु ।
विहडियसिप्पिउडसमुग्गयाइं मुत्ताहलाइं दसदिसु गयाइं ।
मीणउलइं भयरसमधियाइं ण सत्तुकुंडुयइं दुत्थियाइं ।
घत्ता—उड्डिवि गयणि गयाइं कीलतहु हरिहि ससंसहु ॥
दिट्ठइं हंसउलाइं अट्ठियइं णाइं तहु कंसहु ॥ ३ ॥

4

भसलउलइं चउदिसु गुमुगुमंति ण कंसमरणि बंधव रुयंति ।
कण्हहु तेण जाया विणीय रंगति कक्क ण पिसुण भीय ।
कमलाइं अलीढइं तेण केंव खुडियइं अरिसिरकमलाइं जेंव ।
हरियइं पीयइं लोहियसियाइं महुरापुरणाहहु पेसियाइं ।
पयपब्भट्ठइं मलिणगयाइं जलविहिणा सुकयाइं व हयाइं ।
पडिवक्खभिच्चकरपेल्लियाइं वद्धाइं धरगणि घल्लियाइं ।
णलिणाइं णिवेण णिहालियाइं ण णियसयणइं उम्मूलियाइं ।
अण्णहिं दिणि सुयंयलवूढगाव हक्कारिय सयल वि णंदगोव ।
परजीवियहारणु मंतगुज्झु पारद्धउ राए मल्लजुज्झु ।
घत्ता—कंसहु णाउ सुणंतु तिव्वकोवपरिणामें ॥
चल्लिउ देउ मुरारि ण केसरि गयणामें ॥ ४ ॥

5

सच्चलिय णंदगोवाल सयल दीहरकर ण मायग पवल ।
वियइल्लफुल्लबद्धकेस उब्भुत्त थत्त जमदूयवेस ।

८ A जुयसिरिए ९ APS °उप्पेल्लिय° १० AP °विउलणीरु ११ PS विउडिय° १२ A °सिप्पिउल° १३ P दसदिसि १४ B कुडयइं P कुडुयइं

4 १ AP महुराउरि° P महुरापुरि° २ A णिमूलियाइं B णिम्मूलियाइं ३ B °भुव° ४ P °ऊढ° ५ AP सुणतु णिव तिव्व° ६ A चलिउ मुरारि समोउ णं P चलिउ मुरारि सगोउ णं

5 १ AP ता चलिय २ AP चवल ३ A पवर ४ P वियउल्ल° ५ P ठत्त

9 *a* विहडिय° स्फुटितानि 11 ससंसहु प्रशसायुक्तस्य 12 अट्ठियइं अस्थीनि

4 2 *b* कक्क बकाः ३ *a* अलीढइं अङ्गीकृतानि ५ *a* पयपब्भट्ठइं स्थानच्युतानि जलच्युतानि च *b* सुकयाइं पुण्यानि 10 णाउं नाम 11 गयणामें गजनाम्ना

5 2 *a* वियइल्ल विकसितानि

सिंदूरधूलिधूसरियदेह गज्जिय णं संझारायमेह ।
कालाणल कालकयतधाम भसलउलगरलघणजालसाम ।
चलतोलियमहिमहिहर रउद्द मज्जायरहिय णं पयसमुद्द ।
सणिदिट्ठिविट्ठिविसविसहराह रणि दुण्णिवार अरिहरिणवाह ।
कयभुयरव दिसि उट्ठियणिहाय पडुपडहसद्दकोहलणिणाय ।
खलमलणकउज्जम जमदुपेच्छ जयलच्छिणिवेसियवियडवच्छ ।
रत्तच्छिणियंच्छिर मच्छरिल्ल महुराउरि पत्त महल्ल मल्ल ।

घत्ता—तौं त रोलविमद्दु उब्भगणसंचालियधरु ॥
गोवयविंदु णिएवि आरूसिवि धायउ कुंजरु ॥ ५ ॥

## 6

मउल्लियगंडु पसारियसुंडु ।
सरासणवंसु सयापियपंसु ।
घणंजणवण्णु समुण्णयकण्णु ।
दिसागयभिंगु धरायरतुंगु ।
महाकरि तेण जसोयसुएण ।
पडिच्छिउ एंतु णियट्ठिवि दंतु ।
सिरग्गि तड त्ति गओ हउ झ त्ति ।
भएण गयस्स विसाणु गयस्स ।
घलेण समत्थि सिरीहरहत्थि ।
विरेहइ चारु जसो इव सारु ।
रिउस्स पयंडु जमेण व दंडु ।
पयासिउ दीहु मुरारि णसीहु ।

घत्ता—अप्पडिमल्लहु मल्लु पडिभडमारणमभियमिसु ॥
अक्खाडइ अवइण्णु हयवाहुसद्दबहिरियदिसु ॥ ६ ॥

६ S सेंदूर°. ७ AP कयतथाम ८ B °काहलि° ९ A चियडविच्छ १० B °णियच्छिय. ११ S महुराउरि. १२ A त तहि रोलविसदु १३ P °वैंदु, S °वदु १४ AS धाइउ.

6 १ P मओल्लिय° २ PS °सोंडु. ३ P °कतु. ४ B णिवट्टिवि, S णियट्टिवि ५ A हउ गओ झत्ति, P हओ गओ झत्ति ६ ABP णिसीहु ७ PS °मल्लह. ८ BAls हयबहुसद्द°, PS हदवाहु°.

3 *b* संझारायमेह सन्ध्यारागेण वेष्टिता मेघा इव. 4 *a* कालकयतधाम मारणयमसदृशतेजसः, *b* °घणजाल° मेघजालम् 6 *a* सणिदिट्ठिविट्ठि° शनिदृष्टिसदृशाः विष्टिसदृशा.. 7 *a* °णिहाय निघातो वज्रनिर्घोषः. 8 *a* जमदुपेच्छ यमवत् दुःप्रेक्षाः 10 उब्भगण° परस्परसंघट्टशब्द.

6 1 *a* मउल्लियगंडु मदार्द्रकपोलः. 2 *b* सयापियपंसु सदाप्रियधूलिः. 6 *a* पडिच्छिउ आकारित., *b* णियट्ठिवि आकृष्य. 8 *a* गयस्स गतस्य नष्टस्य, *b* विसाणु दन्तः. 9 *b* सिरीहरहत्थि श्रीधरहस्ते 12 *b* णसीहु नृसिंहो महामल्ल 14 अक्खाडइ युद्धभूमौ.

**7**

| | |
|---|---|
| सुयपक्खु धरिवि | परिछेउ करिवि । |
| ओहामियक्कु | सण्णहिवि थक्कु । |
| गयलीलगामि | वसुएवसामि । |
| कण्हहु वलेण | सुहिवच्छलेण । |
| पइसरिवि रंगि | लग्गेवि अंगि । |
| वज्जरिउ कज्जु | गोविंद अज्जु । |
| जुज्झेवि कंसु | दलवट्टियंसु । |
| करि वप्प तेम | णउ जियइ जेम । |
| तुह जम्मवेरि | उव्वूढखेरि । |
| खलु खयहु जाउ | उग्गिण्णणाउ । |
| मद्दभुयरवालि | कोवग्गिजालि । |
| पडिवक्खजूरि | वज्जततूरि । |
| आहयरसिल्लि | णच्चंतमल्लि । |
| थिप्पंतफुल्लि | कुंकुमजलोल्लि । |
| अण्णण्णवण्णि | चिक्खिल्लतुण्णि । |
| आसण्णवज्झि | तहिं बाहुजुज्झि । |
| रिउणा विमुक्क | चाणूरु ढुक्कु । |
| पसरियकरासु | दामोयरासु । |
| ता सो वि सो वि | आलग्ग दो वि । |
| उच्चालणेहिं | अप्फोलणेहिं । |
| आवट्टणेहिं | अंवि लुट्टणेहिं । |
| परिभमिवि लद्धु | संबंधु वद्धु । |
| वंधेण वधु | रुंधेण रुंधु । |
| वोहेइ वाहु | गाहेण गाहु । |
| विट्ठीइ दिट्ठि | मुट्ठीइ मुट्ठि । |
| चित्तेण चित्तु | गत्तेण गत्तु । |

7 १ S ऊहामिय° २ BP गोविंदु ३ A उव्वूढवेरि ४ AP मद्दभुयवमालि ५ AP णिक्खित्तपुण्णे ६ ABPS तहिं ७ AP पढुक्क ८ A वे ९ AP add after 20 *b* उल्लालणेहिं आवीलणेहिं १ AP पविहट्टणेहिं ११ B बद्ध १२ AP खंधेण खंधु १३ AP बंधेण बंधु १४ P वाहेण वाहु

7 1 *b* परिछेउ करिवि स्वपक्षो विभागीकृत 2 *b* सण्णहिवि सनह्य 4 *a* वलेण बलभद्रेण 7 *b* दलवट्टियंसु चूर्णितभुजशिखर 9 *b* उव्वूढखेरि धृतवैर. 11 *a* °भुयरवालि भुजमेलापके भुजास्फालनिनादे वा 21 *b* अवि अपि

परिकलिवि तुलिवि उल्ललिवि मिलिवि।
तासियगहेण सो मल्लमहेण।
पीडिवि करेण पेल्लिवि[15] उरेण।
संभिवि छलेण मोडिउ वलेण।
भंगि जणियसल्लु चाणूरमल्लु।
कउ मासपुंजु णं गिरिणिउंजु।
गेरुयविलित्तु थिप्पंतरत्तु।
महियलणिहित्तु पचत्तु पत्तु।
घत्ता—विणिवाइवि चाणूरु पहु बहुदुव्वयणें दूसिवि॥
पुणु हक्कारिउ कंसु कण्हें कालेण व रूसिवि॥ ७॥

## 8

णवर ताण दोण्हं भुयारणं जायचं जणाणंदकारणं।
सरणधरणसंवरणकोच्छरं भिउडिभंगपायडियमच्छरं।
करणकत्तरीबंधबंधुरं कमणिवायणाविययवसुंधरं।
मिलियवलियमहिलुलियदेहयं णहसमुल्ललणदलियमेहयं।
पवरणयरणरमिहुणतोसणं परिघुलंतणाणाविहूसणं।
परपरक्कमुल्लुहियदूसणं जुज्झिऊण सुइरं सुभीसणं।
चरणचप्पणोणवियकंधरो वरमयाहिवेणेव सिंधुरो।
घत्ता—कड्ढिउ पएहिं धरिवि णिद्दलिउ गलियरुहिरोल्लिउ॥
कंसु कयंतहु तुंडि कण्हेणं भमाडिवि घल्लिउ॥ ८॥

१५ B पेल्लवि. १६ APS मण°. १७ P दुव्वयणेहिं १८ P हक्कारिवि.

**8** १ A बधुवधुर. २ A °णामिय°. ३ P °मिथुण°. ४ A परपरक्कम छुहियदूसण, B परपरक्कमउल्लुहियदेहय, S °मुल्लिहिय°. ५ A चप्पणोण्णमिय° ६ A वरमहाहवेण व्व, B वरमयाहिवेणेव्व ७ S सेंधुरो. ८ BK गलिउ ९ APS तोंडि. १० BP केसवेण

32 *b* गिरिणिउंजु गिरिनिकुञ्ज. 33 *b* थिप्पंतरत्तु श्च्योतद्रुधिर. 35 विणिवाइवि मारयित्वा.

**8** 2 *a* °कोच्छर कौतुकोत्पादकम्, *b* °पायडिय° प्रकटित. 3 *a* करणेत्यादि आवर्तननिवर्तनप्रवेशादि, *b* कमणिवायणाविय° चरणनिपातनामिता 5 *a* °णयरणर° नागरिका., 6 *a* पर° उत्कृष्ट., °उल्लुहिय° दत्त भर्त्सनबलात् 8 पएहिं पादाभ्याम् 9 कयंतहु तुंडि यमस्य मुखे.

## 9

इह कसि वियभिय तियसतुट्ठि आयासहु णिवडिय कुसुमविट्ठि।
किंकर वर णरवइ उत्थरंत कण्हेण भणिय भडणि भिडंत।
मा मइ आरोडेहु गलियगव्व मा पयडहु पर्थे जाईं सव्व।
तहिं अवसरि हरि सकरिसणेण आलिंगिउ जयहरिसियमणेण।
वसुपवें भणियें म करह भंति ईहु केसरि तुम्हइ मत्त दंति।
सो मुर्यइ मुयइ णियमणि अखंति कण्हहु बलेयत वि पयडु अंति।
उप्पण्णउ देविहि देवईहि गब्भम्मि पसण्णि महासईहि।
कुलधवलु वसुधरभारधारि हुउ मज्झु कंसविद्धंसकारि।
पच्छण्णु पयट्टिउ णंदगोट्ठि पवहिं करु होइउ कालवेट्ठि।
जो कुज्झइ जुज्झइ सो जि मरइ गोविंदि[11] कुद्धइ किं कोईं धरइ।

घत्ता—जाणिवि जायवणाहु णियगोत्तहु भगलगारउ ॥
वंदिउ णूंवणियरेहिं दामोयरु वइरिवियारउ ॥ ९ ॥

## 10

कण्हेण समाणउ को वि पुत्तु सजणउ जणणि विहवियसत्तु।
दुद्धरभररणधुरविण्णखंधु उद्धरिय जेण णिवडंत बंधु।
मंजिवि णियलइ गयवरगइह सहु माणिणीइ पोमावईइ।
अहिणंदियजिणवरपायरेणु महुरहि सणिहियउ उग्गसेणु।
कइवयदियहहिं रंइकीलिरीहिं बोल्लाविउ पहु गोवालिणीहिं।
पगुत्तउ पइं माहव सुहिल्लु कालिंदितीरि मेरउ कडिल्लु।
पवहिं महुराकामिणिहिं रत्तु महुं उप्परि दीसहि भथिरचित्तु।

9 १ P ओत्थरंत २ P आरोलहु ३ S पंथि ४ S जाइ ५ B भणिउ ६ B करहि P करहु ७ A पहु ८ B मुअहि मुअहि ९ A बलवतहो १ B देवीदेवईहिं ११ A कालविट्ठि B कालवट्ठि १२ A गोविंदें कुद्धें १३ AP को वि १४ AP णिव°

10 १ B सजणिउ २ AAls दुद्धररणभरधुरदिण्णकंधु B दुद्धरभररणदिण्णखंधु ३ BAls अहिवंदिय° ४ AP °कीलणीहिं B कीलरीहिं

9 1 इइकसि हते कंसे *b* आयासहु गगनात् 3 *a* आरोडहु अस्माक मा रोपमुत्पादयन्तु 6 *a* अखंति मोभ 9 *b* कालवट्ठि कालगुप्तनाम्नि धनुषि 11 जायवणाहु यादवनाथ

10 5 *a* रइकीलिरीहिं रतिक्रीडनशीलाभि 6 *a* पगुत्तउ पूर्वं परिहितम् *b* कडिल्लु कटीवस्त्रम्. 8 *b* उ भथिया इ उद्भ्रान्तया

क वि भणइ दहिउँ मंथंतियाइ　　तुहुं मइं धरियउ उब्भंतियाइ ।
लवणीयलित्तु करु तुज्झु लग्गु　　क वि भणइ पलोयइ मज्झु मग्गु ।
तुहुं णिसि णारायण सुयहि णाहिं　　आलिंगिउ अवरहिं गोवियाहिं ।
सो सुयरहि किं ण पउण्णवंछु　　संकेयकुडंगुड्डीणरिंछु ।

घत्ता—का वि भणइ णासंतु उद्धरिवि खीरभिंगारउ ॥
किं वीसरियउ अज्जु जं मइं सित्तु भडारउ ॥ १० ॥

## 11

इय गोवीयणवयणइं सुणंतु　　कीलइ परमेसरु दरहसंतु ।
संभासिउ मेल्लिवि गव्वभाउ　　इहजम्महु महुं तुहुं ताय ताउ ।
परिपालिउ थणंथण्णेण जाइ　　वीसरमि ण खणु मि जसोय माइ ।
कइवयदियहइं तुहुं जाहि ताम　　पडिवक्खकुलक्खउ करमि जाम ।
इय भणिवि तेण चिंतविउ विण्णु　　वरवसुहारइ दालिद्दु छिण्णु ।
आलाविय भाविय णियमणेण　　गोवालय पूरिय कंचणेण ।
पट्ठविउ णंदु महुसूयणेण　　ओहामियदेवयपूयणेण ।
सहुं वसुएवें सहु हलहरेण　　सहुं परियणेण हरिकरिजणेण ।

घत्ता—सउरीणयरि पइट्ठु अहिसुरणरेहिं पोमाइउ ॥
भरहधरित्तिसिरीइ हरि पुप्फयंतु अवलोइउ ॥ ११ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे कंसचाणूरणिहणणो णाम
छासीतिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८६ ॥

५ AP महिउ. ६ A णवणीय°. ७ A °वत्थु ८ AP उद्धरमि ९ AP मइ अहिसित्तु भडारउ.
**11** १ B सभासिवि मेल्लिउ. २ B थणि थण्णेण ३ B वीसरिमि. ४ B खणु वि. ५ S चिंतविउ. ६ PS वसुधारए. ७ AP वाले आकरिसियपूयणेण. ८ B वसुएवइ. ९ APS हरि॰करिभरेण १० A छयासीमो, P छायासीमो, S छासीतितमो.

9 *a* लवणीयलित्तु नवनीतलिप्त . 11 *a* पउण्णवछु प्रपूर्णवाञ्छ , *b* °कुडंग° ह्रस्वशाखः स्वल्पवृक्षः.
**11** 2 *b* तुहु नन्दगोपः. 3 *b* माइ हे मातः 5 *a* चिंतविउ वाञ्छित वस्तु, *b* °वसुहारइ सुवर्णधारया. 7 *b* ओहामियदेवयपूयणेण तिरस्कृतदेवतापूजनेन. 8 *b* हरि° अश्वाः. 9 सउरीणयरि शौरिपुरे, पोमाइउ प्रशंसित..

# LXXXVII

मारिय महुराणाहे जीवजस असंविधहु ॥
गय सोयण रुयति पिउहि पासि जरेंसिधहु ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

दुवई—दुम्मण णीससंति पियविरहहुयासणजालजालिया ॥
वणवद्दहणहुणियणवबेल्लि व सव्वावयवकालिया ॥

गयकंकण दुब्भिक्खलीला इव पुप्फविराहिय मेलमहिला इव ।
णट्ठपत्त फग्गुणवणराइ व सुट्ठु खीण णवचंदकला इव ।
मोक्कलकेस कउलदिक्खा इव ण्हाणविवज्जिय जिणसिक्खा इव ।
पउरविहार भउद्धपुरी विव वरविमुक्क कोणीणसिरी विव ।
कंचिविवज्जिय उत्तरमहि विव पड्डच्छाय छणवयहु सहि विव ।
णिरलंकारी कुकइहि वाणि व दुक्खइ भायण णारयजोणि व ।
गलियंसुयजलसित्तपओहर भयलोप्पवि धीय मउलियकर ।
भणइ अणणु गुरु भायइ पाविय किं कज्जेण केण संताविय ।
भणु तुह केण कयउ विहवत्तणु को ण गणइ महुं तणउ पहुत्तणु ।
जीविउ अज्जु जि कासु हरेसइ कासु कालु कीलालि तरेसइ ।
घत्ता—जीवजसइ पवुत्तुं पुणि किं मच्छरु किज्जइ ॥
ताय सत्तु बलवंतु तुज्झु समाणु भणिज्जइ ॥ १ ॥

## 2

दुवई—धासारत्ति पत्ति पहुसलिलुप्पेल्लियणंदगोउले ॥
जेणेक्केण धरिउ गोवद्धणु गिरि हत्थेण णहयले ॥ छ ॥

---

1 १ A पहुरे पासि २ AP असेंघहो ३ P दुब्भिक्ख° ४ P काणीणे ५ P महि उत्तर ६ A पंडुच्छाय सहि छणइंदहो इव ७ AP कयउ केण ८ B अज्जु वि ९ AP पउत्तु S उपत्तु
2 १ S गोवद्धणगिरि

---

1 4 °दवदहणहुणिय अग्नौ हुता 5 *a* गयकंकण गतकङ्कणा, पक्षे दुर्भिक्षकाले गत नष्टं कं जलं कणं धान्यम्; *b* मेलमहिला वृद्धा अरती यस्या ऋतुपुष्प न 6 *a* णट्ठपत्त नष्टवाहना, नष्टानि नागवल्लीदलानि वा वणराइ वनश्रेणी 7 *a* कउलदिक्खा योगिमदा 8 *a* पउरविहार प्रकर्षेण उरसि विगतो हारो यस्या, पक्षे प्रचुरा विहारा यत्र बौद्धाना नगरे *b* वरविमुक्क वरो भर्ता स्वयम्‍ 9 *a* कंचि कटिमेखला, पक्षे उत्तरदेशे काञ्चीपुरी न 12 *a* गुरु आयइ पाविय गरिष्ठामापद प्राप्ता 14 *a* हरेसइ यमो हरिष्यति *b* कासु यम कीलालि रुधिरे.

वइरिणि णियथामेण विणासिय बालत्तणि जें पूयण तासिय।
मायासयडु जेण संचूरिउ जेण तुरंगु तुंगु मुसुमूरिउ।
जेण तालु धरणीयलु पाविउ जेण अरिट्ठवयणु वंकाविउं।
तरुजुवलउं मोडिउं भुयजुयलें णायसेज्ज आयामिय पवलें।
चाउ पणाविउ संखापूरणु किंयउं जेण णियपिसुणविसूरणु।
कालियाहि तासिवि अरविंदइं खुडियइं जेण पउरमयरंदइं।
दंतिहि जेण दंतु उप्पाडिउ सो ज्जि पुणु वि कुंभत्थलि ताडिउ।
जो वग्गिवि मंडरंगि पइट्ठउ कालसलोणउ लोएं दिट्ठउ।

घत्ता—जेण मल्लु चाणूरु जममुहकुहरि णिवेइउ ॥
तेण णंदगोवेणं मारिउ तुह जामाइउ ॥ २ ॥

## 3

दुवई—वसुएवेण पुत्तु सो घोसिउ भायरु सीरहेइणा ॥
ससयणमरणवयणु णिसुणेप्पिणु ता कुद्धेण राइणा ॥ छ ॥

पेसिया सणंदणा ससंदणा।
धाविया सवाहणा ससाहणा।
सूरपट्टणं चियं धयंचियं।
कण्हपक्खपोसिरा ससेरोसिरा।
णिग्गया दसारुहा जसारुहा।
जाययं सकारणं महारणं।
दिण्णघायदारुणं पलारुणं।
रत्तवारिरेल्लियं रसोल्लियं।
दंतिदंतपेल्लियं विहेल्लियं।
छिण्णछत्तचामरं णियामरं।

२ A तिय थामेण. ३ S बालत्तें. ४ B तुरगतुग. ५ BAls. अरिट्ठु ६ APS °जुयलउं. ७ ABPS सखाऊरणु. ८ ABP कयउ ९ B पवर १० PS मड्डु ११ PS णिवाइउ. १२ B णदगोविंदें. १३ P जामाइओ.

**3** १ A धाइया. २ PS सुरोसिरा. ३ A दहारुहा. ४ S वसोल्लिय. ५ A वहिल्लिय. ६ A णियामर, P णयोमर.

**2** 3 *a* वइरिणि वैरिणी पूतनादेवी, °थामेण बलेन. 4 *a* °सयडु शकटम्. 5 *b* अरिट्ठ° वृषभ. 6 *b* णायसेज नागशय्या, आयामिय चम्पिता. 8 *a* कालियाहि कालियसर्पः. 9 *a* दंतिहि गजस्य.

**3** 3 *b* ससंदणा सरथाः. 4 *b* ससाहणा ससैन्याः. 5 *a* चिय चित वेष्टितम्, *b* धयंचिय ध्वजसहितम्. 7 *b* जसारुहा यशोयोग्या. 10 *b* रसोल्लिय रुधिरार्द्रम्. 11 *b* विहेल्लिय कम्पितम्.

पुप्फवासवासिय　　णिससिय ।
घत्ता—णवर तुरंतरयाइ दुप्पेच्छइ गयणायइ ॥
णट्ठा वइरिणरिंद णारायणणारायइ ॥ ३ ॥

## 4

दुवई—णासंतेहिं तेहिं महि कपइ णाणामणियरुज्जला ॥
महुमयणरयाहि मंहिमहिलहि ढलइ जलहिमेहला ॥ छ ॥

णिवपयपंकयतलि आसीणा　　ते अवलोइवि सगरि दीणा ।
राए अवरु पुत्तु अवरायउ　　पेसिउ जो केण वि ण पराइउ ।
तेण वि ऑइवि जयसिरिलोहें　　रहकिंकरहयगयसंदोहें ।
लउडीपुरु चउदिसहिं णिरुद्धउ　　णीसरियउ जायवबलु कुद्धउं ।
करिकरथेंढणेहिं असरौलिहिं　　रहसकडि पडंतमहिंपालहिं ।
चंडगयौसणिदलियधुरिल्लहिं　　णिवडियकोंतसूलहलसेल्लहिं ।
फुरियकिरणमालापइरिक्कहिं　　विहडियमउडकडयमाणिक्कहिं ।
भडकरगाहधरियसिरमालहिं　　भसिसघट्टणहुयवहजालहिं ।
पर्वेवियलियलोहियकल्लोलहिं　　दिसिविदिसामिलंतवेयालहिं ।
दाढाभासुरभइरववकायहिं　　किलिकिलिसद्दहिं भूयपिसायहिं ।
घत्ता—जुज्झइं णरघोरीहं करि करवालु करेप्पिणु ॥
छायालीसइं तिण्णि सयइं पम जुज्झेप्पिणु ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—गइ अवराइयम्मि वसुएवतणूरुहसरणिसुमिए ॥
पविउलसयलभुवणभवणगणजसयहहे वियंभिए ॥ छ ॥

4 १ B णिवपंकयतल २ B आयवि ३ P णेरुद्धउ ४ A विमलेहिं B °थेढणेहिं ५ APS असरालहिं ६ P °महिपालहिं ७ B °गयासिणि° ८ AP °हलमल्लहिं ९ B °पयरिक्कहिं १ APS °कडयमउड° ११ B °करवाल १२ AP सिरवालहिं १३ B °हुयवव° १४ ABP वण° १५ BKP मिलति १६ A णरथोरेहिं B णरथोराइ १७ A लएप्पिणु

5 १ B अवरायम्मि २ B तणुरुह° ३ S °सयलभुवणगण°

13 *b* णिससिय नी प्रशस्त नृपस्य वा 14 तुरंतरयाइ तुद्यावसानवेगानाम् गयणायइं गगनागतानां गजनादानां वा 17 णारायइं बाणानाम्

4 1 °मणियरुज्जला मणिकिरणे' उज्ज्वला २ महुमयणरयाहि वासुदेवे रताया' भूमे.. 7 *a* असरालिहिं बहुले 8 *a* धुरिल्लहिं °मुख्ये सारथिभिर्वा 9 *a* पइरिक्कहिं प्रचुरे 10 *a* सिरमालहिं सीवके (शिरस्त्राणे) शिरोगताभि पुष्पमालाभिर्वा 13 जुज्झइं युद्धानाम् 14 छायालीसइं तिण्णि सयइं पट्चत्वारिंशदधिकानि त्रीणि शतानि युद्धानां युध्दा

5 1 अवराइयम्मि अपराजिते गते सति °सरणिसुमिए मार्गे विप्लले

अण्णु वि सुउ जरसिंधहु केरउ विहेलियसुयणहं सुहइं जणेरउ।
कालु व वइरिवीरजीवियहरु उट्ठिउ कालजमणु दट्ठाहरु।
पभणइ ताय ताय आयण्णहि दीण वईरि किं हियवइ मण्णहि।
पित्तिपहिं सहुं समरि धरेप्पिणु आणमि णंदगोउ बंधेप्पिणु।
पुलउ जणतु णराहिवदेहहु सहुं सेण्णेण विणिग्गउ गेहहु।
जलि थलि णहयलि कहि मि ण माइउ सो सरोसु सहरिसु उद्धाइउ।
गपिणु पिसुणचरिउं जं दिट्ठउं तं तिह हरिहि चरेण उवइट्ठउं।
त णिसुंणेप्पिणु जाणियणाएं सहुं मंतिहिं सुहु सुहिसघाएं।
बंधुवग्गु मंतणइ पइट्ठउ मंतिहिं मतु महंतउ दिट्ठउ।
जइ सबलेहिं अबलु आढप्पइ तो णासइ जइ सो पडिकुप्पइ।
बेण्णि जि[12] होंति विणासहु अंतरु तप्पवेसुं[13] अहवा देसंतरु।
तहिं पहिलारउ अज्जु ण जुज्जइ देसगमणु पुणु णिच्छउं किज्जइ।
हरि असमत्थु दइउ को जाणइ को समरंगणि जयसिरि माणइ।
खलरामाहिरामसुविरामें तं णिसुणेप्पिणु अलिउलसामें।

घत्ता—बोल्लिउ महुमहणेण हउं असमत्थु ण वुच्चमि॥
मइं मेल्लह रणरंगि पच्छ जि रिउहुं पहुच्चमि॥ ५॥

## 6

दुवई—णासिउ जेहिं वइरिविज्जागणु भेसिउ जेहिं विसहरो॥
मारिउ जेहिं कंसु चाणूरु वि तोलिउ जेहिं महिहरो॥ ध्रु॥

ते भुय होंति ण होंति व भेरा किं एवहिं जाया विवरेरा।
इय गज्जतु मुरारि णिवारिउ हलिणा मतमग्गि सचालिउ।
जं केसरिसरीरसंकोयणु तं जाणसु करिजीवविमोयणु।
अज्जु कण्ह ओसरणु तुहारउ पुरउ पहोसइ परत्थयगारउं।

४ PS जरसेंधहो. ५ A विहडिय° ६ AP दीणवयणु. ७ K पित्तिएण, but gloss पितृव्यैर्नेवमि सह ८ S आणेवि ९ B चरें उव°. १० AP णिसुणेवि वियाणियणाय, S णिसुणेविणु जाणियणाए. ११ P मंतिउ मतु महंतहिं. १२ A वि १३ P तप्पविसु १४ P दइउ. १५ P रिउहं.

6 १ S हरिणा

3 *b* विहलिय° दुःखितानाम् 6 *a* पित्तिएहिं पितृव्यैर्नेवमि सह, *b* णदगोउ कृष्ण.. 9 *a* पिसुणचरिउ शत्रुचेष्टितम् 12 *a* आढप्पइ मारयितुमारभ्यते, *b* णासइ म्रियतेऽबल.. 16 *a* खलेरादि खलरामाणामभिरामस्य रमणीरत्नस्य सुष्ठु विरामो यस्मात्

6 1 °विज्जागणु देवतासमूह, भेसिउ भय प्रापित कान्यादि. 2 महिहरो गोवर्धनगिरि. 3 *a* भेरा मम. 4 *b* मतमग्गि मन्त्रमार्गे, सचालिउ प्रवर्तित. 6 *b* पुरउ अग्रे, पहोसइ प्रभविष्यति; पर° शत्रु

इय कहेवि मच्छरु ओसारिउ मईइ दाणवारि णीसारिउ ।
गयउरसउरीमहुरापुरवइ णिग्गय जायव सयल वि णरवइ ।
वहइ सेण्णु अणुदिणु णउ थक्कइ महि कपइ अहि मरहु ण सक्कइ ।
भूवइ भूमि कमतकमतइ अतइ ताइ पहेण मेहतइ ।
कालु व कालायरणि ण भग्गउ कालजमणु अणुमग्गे लग्गउ ।
जलियजलणजालासंताणइ डज्झमाणपेयाइ मसाणइ ।
हरिकुलदेवयविसेसहि रइयइ सिवजबुयवायसंसयछइयइ ।
णायरणारिरूवेण रुवंतिउ दिट्ठउ देवयाउ सोयंतिउ ।

घत्ता—हा समुद्दविजयक हा धारण हा पूरण ॥
थिमियमहोयहिराय हा हा अचल अकंपण ॥ ६ ॥

7

दुवई—हा वसुएव वीर हा हलहर दुम्महदणुयमद्दणा ॥
हा हा उग्गसेण गुणगणणिहि हा हा सिसु जणद्दणा ॥ छ ॥

हा हा पंडु जइ किं जायउ पत्थियवइरु विडुरु समायउ ।
हा हा धम्मपुत्त हा मारुइ हा हा पत्थ विजयमहिमारुइ ।
हा सहएव णउल कहिं पेक्खमि वत्त कासु कहिं जाएवि अक्खमि ।
हा हा कोंति मद्दि हा रोहिणि हा देवइ अणंगसुहवाहिणि ।
हा महिणाहु कुइउ जमदूयउ सव्वहं केम कुलक्खउ हूयउ ।
त आयण्णिवि चोज्जु वहंतें पुच्छिउ णियसुएण विहसंतें ।
कज्जें केण दुहेण विसण्णी किं सोयइ के मरणु पवण्णा ।
त णिसुणेवि देवि तहु ईरइ भणु णरणाहि कुद्धि को धीरइ ।
तेहु भीयहिं सिविरें संचालिउ महियलि सरणु ण कहिं मि णिहालिउ ।

१ AP मडुर B मडुभ ३ B वहतइ ४ A काळजमण ५ S हरिउळवसविसेसहिं ६ A °जंबू° P °जबुर° ७ ABP णयरणारिरूवेण S णायरणारीरूवि ८ P रुयतिउ ९ P °महोवहि°

7 १ P कं २ A सजायउ, P समाइउ ३ P आयवि ४ ABPS सव्वहु ५ B कुज ६ P दुहेहि ७ A णिसण्णा ८ S णरणाह ९ A तुह १ PS सिमिर

9 *b* अहि मरहु ण सक्कइ शेषनाग भारं न शक्नोति 10 *a* भूवइ राजान भूमि कमतकमतइ भूमिं भ्रमन्तो गच्छन्त 11 *a* कालायरणि कालस्य मरणस्य आचरणे आदरणे वा 12 *b* °पेयाइ मृतकानि 13 *b* सिव शृगाली °जबुय शृगाल 16 थिमियमहोयहिराय स्तिमितसागर

7 3 *b* पत्थियवइरु विडुरु समायउ शत्रुमि कृत्वा दुःख प्रापित 4 *a* मारुइ भीम *b* विजयमहिमारुइ विजयमहिम्ना रुचिर्दीप्तिर्यस्य ५ *b* वत्त वार्ताम्. 6 *b* °वाहिणि नदी 8 *a* चोज्जु वहंतें आश्चर्यं धरता

हयँ पुण्णक्खइ णं जरपायव अग्गिपवेसु करिवि मय जायव ।
तं णिसुणेप्पिणु रणभरजुत्तें भासिउ खोणीयलवइपुत्तें ।
घत्ता—भल्लेंउ सुहडणिहाउ णिग्घिणजलणें तं[13] दड्ढउ ॥
आहवि सेंउहुं भिडेवि महं जसु जिणिवि ण लद्धउ ॥ ७ ॥

8

दुवई—हा मइ कंसमरणपरिहवमलु रिउरुहिरें ण धोइओ ॥
इय चिंतंतु थक्कु मलिणाणणु जणणसमीवि आइओ ॥ छ ॥
पायपणामपयासियविणएं दिट्ठउ ताउ तेण पियतणएं ।
ओइउ सुयउ सच्चु विण्णवियउ अरिउलु णिरवसेसु सिहिदावियउं ।
अत्थमिएण णियाहियवंदें थिउ मेइणिपहु परमाणंदें ।
पत्तहिं पहिं पयट्टत महाइय हरि बल जलहितीरु संपाइय ।
दिट्ठउ भद्दिएण रयणायरु वेलालिंगियचंददिवायरु ।
वाडवग्गिजालाहिं पलित्तउ जलकरिकरजलधाराहिं सित्तउ ।
णवपवालसरलंकुररत्तउ णं कुंकुमराएण विलित्तउ ।
जलयरघोसें भणइ व मंगलु हसइ णाइ मोत्तियदंतुज्जलु ।
तलणिहित्तणाणामणिकोसें णच्चइ संवड्ढियसंतोसें ।
परगंभीरु पयइगंभीरउ ण सहइ मलु ण असहु भडारउ ।
महुमह आउ आउ साहारइ णं तरंगहत्थें हक्कारइ ।
घत्ता—भूसणदित्तिविसालु णावइ तारायणु थक्कउ ॥
जायवणाहें तेत्थु सायरतडि सिविरु विमुक्कउ ॥ ८ ॥

११ AP णियपुण्ण°. १२ AP भग्गउ. १३ ABPS om त १४ B सम्मुहु

8 १ B पयासियपणए. २ S णियतणए. ३ K सच्चु and gloss सर्वे सत्य वा, ABPS सच्चु. ४ P अरिकुलु ५ A णियाहियचंदें. ६ AP सपाइय. ७ A भद्दएण. ८ AP वेलाढकिय°. ९ B °करजलधारासित्तउ, S °करधाराहिं सित्तउ १० AP गज्जइ ण वड्ढिय°. ११ AP परहु दुलंघु १२ ABPS हत्थहिं. १३ S सिमिरु.

12 *a* जरपायव जीर्णवृक्षाः. 14 °णिहाउ समूहः, °णिग्घिणजलणें निर्दयाग्निना. 15 सउहु सम्मुखम्

8 4 *a* जोइउ सुयउ दृष्ट श्रुतम् 5 *a* णियाहियवंदे निजशत्रुसमूहेन. 6 *a* महाइय महर्द्धिका. 7 *a* भद्दिएण हरिणा. 8 *a* पलित्तउ प्रज्वलित 10 *a* जलयर° शंख 12 *a* परगभीरु परैरक्षोभ्यः, पयइगभीरउ प्रकृत्या गम्भीरो जिन. 13 *a* महुमह हे कृष्ण, आउ आउ आगच्छागच्छ, साहारइ धीरयति. 15 जायवणाहें यादवनाथेन समुद्रविजयेन, सिविरु सैन्यम्

## 9

दुवई—खविय रह तुरग मायगोयारियसारिभारया ॥
दंतभि णिबद्ध कें वि गय के वि कराहयभूरिभूरया ॥ छ ॥

णिंयसलावयारिरविलयणइ उम्मूलंति के वि करि णलिणइं ।
केंण वि पकु सरीरि णिहित्तउ सीयलु महलु विलेंवणु थक्कउ ।
दाणबिंदुचंद्रियचित्तलजलु दीसइ काणणु चूंरियदुमदलु ।
मुक्कइं दालिणइं मणिपरियाणइं तुरयइं मउइ विविहतणुताणइं ।
थाणुणिबद्धइं तवसिउलाइं व गुणपसरियइं सुधम्मफलाइं व ।
उब्भियाइं दूसइं बहुवण्णइं चलियधिंधं मंडवि वित्थिण्णइं ।
कइवय दियह तेत्थु णिवसंतह गय दुग्गमपएसें जोयंतहं ।
पुणु अण्णहिं दिणि मतु समत्थिउ गुरुयणेण माइडें अब्भत्थिउ ।
हरि तुहुं पुण्णवंतु जं इच्छहि तं जि होइ णिर्येसाचि णियच्छहि ।
तिह करि जिह रयणायरैंपाणिउ देइ मग्गु मयरोहरमाणिउ ।
णिरसणु अट्ठ दियह मलणासणि ता रक्खसरिउ थिउ दब्भासणि ।
णइगमु अमरु णिसिहि सपत्तउ हरिवेसें हरि तेण पवुत्तउ ।

घत्ता—आउ जिणिंदु णवेवि जणियवायजयतुट्ठिहि ॥
माहेंव चिंतहि काइं चडु मडु तणियहि पुट्ठिहि ॥ ९ ॥

## 10

दुवई—ता हय गमणभेरि कउ कलयलु लंघियदसदिसामरे ॥
मणिपल्लाणपट्टंचलचामरि चडिउ उविंदु हयवरे ॥ छ ॥

चवलंतुरगतरगणिरंतरि तुरउ पइट्टु समुद्दब्भंतरि ।

9 १ B °गोचारिय° २ S खम° ३ A के वि करहाहिय वसइ वि भूरिमारया BPS कय-हिय° ४ AP णिव° ५ APS वेहिं मि ६ AP सीयलु णाइ विलेवणु थिवउ ७ B विलेयणु ८ A °वरिय° ९ AP छरिय° १ B °भग ११ A मउय° १२ APS पवेहु १३ S माइडु १४ A णियवति १५ AP °यरवाणिउ १६ AP जणियजयत्तयतुट्ठिहे १७ K माइड १८ B तणिहिं

10 १ P °पट्टे २ A चवलु तुरउ तरग°; P चलतरगंगवणिरतरि.

9 1 ओयारियसारि अवतारितपर्याणा 2 कराहयभूरिभूरया शुण्डाहतप्रचुरभूमिरजसः 5 *a* दाणेत्यादि दानबिन्दुभिर्मदजलैः जले जनितचन्द्रिकाभिश्चित्रितं जलम् 6 *a* दालिणइ कणिकाः °परियाणइ पल्याणानि *b* तणुताणइ गात्रत्राणानि 7 *a* थाणु स्थाणु कीलक *b* गुण° रज्जु 11 *b* णियच्छहि पश्य 12 *b* ओहर जलचरविशेष 13 *b* रक्खसरिउ हरि 14 *b* हरिवेसें अश्वरूपेण 10 जणियवायजयतुट्ठिहि उत्पादितवातजयतुष्टौ

10 3 *a* तुरगतरग तुरङ्गवपुञ्जा तरङ्गाः *b* तुरउ अश्वः

हरिवरगहमज्झायइ धरियउं   पाणिउं विहिं भाइहिं ओसरिउं ।
तहु अण्णुमग्गें साहणु चल्लिउं   हयदंकारवहरिसरसोल्लिउं ।
थियउं सेण्णु सुरणिम्मिइ गयमलि   वेसादप्पणसंणिहि महियलि ।
भवसंसरणदुक्खदुक्खियहरि   बावीसमु समुद्दविजयहु घरि ।
तित्थंकरु सिवदेविहि होसइ   छम्मासहिं सुरणाहु पघोसइ ।
पयहं दोहिं मि पंकयणेत्तहं   वणि णिवसंतहं वहुवरइत्तहं ।
जक्खराय तुहुं करि पुरु भल्लउं   चिंधजयतिपंतिसोहिल्लउं ।

घत्ता—भत्ति पसाउ भणेवि गउ पेसिउ सहसक्खें ॥
पुरि परिहाजलदुग्ग कय दारावइ जक्खें ॥ १० ॥

## 11

दुवई—कच्छारामसीमणदणवणफुल्लियफलियतरुवरा ॥
सोहइ पंचवण्णचलचिंधहिं दूरोरुद्धरवियरा ॥ छ ॥

घरइं सत्तभउमइं मणिरंगइं   रयणसिहरपरिहट्टपयंगइं ।
पंगणाइं माणिक्कणिवद्धइं   तोरणाइं मरगयदलणिद्धइं ।
जलइं सकमलइं थलइं ससासइं   माणुसाइ पालियपरिहासइं ।
कुंकुमपंकें धूलि कप्पूरें   पउ धुप्पइ ससिकंतहु णीरें ।
महुयर रुणुरुणंति महु थिप्पइ   परहुयं वासइ पूसउ कुप्पइ ।
कह कहंतु जायउ रसु खचइ   कलभकणिसु एमेव विलुंचइ ।
कुसुमरेणु पिंगलु णहि दीसइ   कालायरुधूमउ दिस भूसइ ।
वेण्णि वि ण संझाघण णवघण   जहिं दुहु णउ मुणंति णायरजण ।
जहिं जिणहरइं वरइं रमणीयइं   वीणावंसविलासिणिगेयइं ।

घत्ता—तहिं सभवणि सुत्ताए रयणिहि दुक्कियहारिणि ॥
दिट्ठी सिविणयपंति सिवदेविइ सिवकारिणि ॥ ११ ॥

३ APS भायहिं ४ P °ढक्काराए हरिस°. ५ A °दुक्खिन° ६ AP करि तुहु.

11 १ B सोहिय २ P °भोमइ ३ AP पगणाइ ४ B °पक°. ५ A ससियतहो. ६ BS परहुव. ७ AP णहु ८ P °गीयइ ९ AB तहिं जि भवणि.

4 *b* विहिं भाइहिं द्वाभ्यां भागाभ्याम् 5 *a* तहु अश्वस्य 6 *a* गयमलि निर्मले महीतले द्वीपे, *b* वेसा° वेश्या 7 *a* °दुक्खियहरि दुःखितानां प्राणिनां धारके गृहे 8 *b* पघोसइ कथयति धनदस्य. 9 *b* वणि वने जले, वहुवरइत्तइ वधूवरयो. १० *b* °जयति° ध्वजा

11 1 कच्छ° गृहवाटिका. 2 दूरोरुद्ध° दूरादवरुद्धा 3 *a* मणिरगइ मणिस्थानानि मण्डपस्थानानि, *b* परिहट्टपयगइ धृष्टसूर्याणि 5 *a* ससासइ धान्ययुक्तानि, *b* पालिय° कृत.. 6 *b* धुप्पइ प्रक्षाल्यते 7 *a* महु मकरन्द, थिप्पइ क्षरति, *b* वासइ शब्दं करोति, पूसउ शुक.. 8 *a* कह कहंतु कथा कथयन् 10 *a* वेण्णि वि पुष्परज अगुरुधूमश्च द्वौ. 12 रयणिहि रात्रौ.

## 12

दुवई—वियलियदाणसलिलचलधारासित्तकवोलमूलओ ॥
पसरियकण्णतालमद्दाणिलघोलिरभसलमेलओ ॥ छ ॥

विट्ठउ मत्तउ णयणसुहावउ समुहु पत्तउ करि महरावउ ।
कामधेणुकीलारसलीणउ विट्ठु ईसाणविसिंदसमाणउ ।
रायसीहु उल्लंघियदरिगिरि सिरि पुणु विट्ठी ण तिहुयणसिरि ।
झुल्लतउ णहि भमरझुणिल्लउ सुरतरुकुसुमदामजुयलुल्लउ ।
सारयससहरु जोण्हइ धुंद्धउ हेमतागमदिणयरु विट्ठउ ।
मीण झसकझसा इव रइघर गंगासिंधुकलस मंगलधर ।
सरु माणसु समुद्दु खीरालउ मयरमच्छकच्छवरावालउ ।
सेहीरासणु जणमणमोहणु इंदविमाणु फणिंदणिहेलणु ।
रयणपुंजु हुयवहु भयलोहउ मुद्धइ सिविणउ वियंतु णिवेइउ ।

घत्ता—सिविणयफलु जउजेट्ठु कहइ सेंहिहि णिवकेसरि ॥
होसइ तिहुयणणाहु तुज्झु गब्भि परमेसरि ॥ १२ ॥

## 13

दुवई—हिरिसिरिकित्तिसतिदिहिबुद्धिहिं देविहिं कित्तिलच्छिहिं ॥
सेविय रायमहिसि महिसामिणि अहिणवपकयच्छिहिं ॥ छ ॥

सक्कणिओइयाहिं पणवंतिहिं अवराहिं मि उवयरणइ देंतिहिं ।
तहिं पहुभवणि पउरदरियइ आणइ पउरपुण्णपरिचोरियइ ।

12 १ PS °कवोल° २ B °सुहावइ ३ B महरावइ ४ B पुण ५ S सायरसस ६ AP झुल्लउ ७ A दिणयरि दिचउ P °दिणयरदित्तओ ८ A रइयर P रइधर ९ B कच्छमच्छव° १ B सेरीहासणु ११ B पुंज ११ B पियहि १३ A जणजेट्ठु B जउजिट्ठु १४ AP पियहे १५ P तिहुवण°

13 १ S दिहिं २ A सासामिणि P तियसामिणि ३ A अमराहिवउवयरणइ देंतिहिं ४ AP °पगणि ५ APS परियरियइ

12 4 *b* ईसाणविसिंदसमाणउ रुद्रवृषभसदृशः 5 *a* रायसीहु सिंहराज इत्यर्थः 6 *a* झुल्लतउं अवलम्बमानम् 7 *a* सारय शरत्काल°; धुद्धउ प्रीत्या सेवित 8 *a* झसकझसा कामध्वजमत्स्यौ रइघर रतिगृहौ *b* गंगासिंधुकलस गङ्गासिन्धुभ्यां यौ चक्रिणे मङ्गलार्थं धृतौ तादृशौ 9 *b* रावालउ शब्दयुक्त 12 जउजेट्ठु यादवज्येष्ठो राजा

13 3 *a* सक्कणिओइयाहिं इन्द्रनियोजिताभिः सेविता राज्ञी; *b* अमराहिं अपराभिः उवयरणइं उपकरणानि 4 *a* पउरदरियइ पुरंदरस्य इन्द्रस्य

मणिमयमउडपसाहियमत्थउ    पुव्वमेव णिहिकलसविहत्थउ।
उहुमाणाइं तिण्णि पविउड्डउं    धणयमेहु धणधारहिं वुड्डउ।
कत्तियसुक्कपक्खि छट्ठइ दिणि    उत्तरआसाढइ मयलंछणि।
देउ जयंतु णाणसंपण्णउ    गयरूवेण गब्भि अवइण्णउ।
आय देव देवाहिव दाणव    वंदिवि भावें सफणि समाणव।
पुज्जिवि जिणपियराइं महुच्छवि    णच्चिय पवियंभियभंभारवि।
णवमासावसाणकयमेरें    पुणु वसुपाउसु विहिउ कुबेरें।
पंचलक्खवरिसेहिं णरसंकरि    संजायइ णमिणाहजिणंतरि।
सावणमासि समुग्गइ ससहरि    पुण्णजोइ पुव्वुत्तइ वासरि।
तक्कालंतजीवि णिम्मलमणु    जणणिइ जणिउ देउ सामलतणु।

घत्ता—उप्पण्णे जिणणाहे सग्गि सुरिंदहु आसणु॥
कंपइ ससहावेण कहइ व देवहु पेसणु॥ १३॥

## 14

दुवई—घंटाझुणिविउद्ध कप्पामर हरिरवखेण पेल्लिया॥
जोइस हरिरवेहिं वेंतर पडुपडहरवेहिं चल्लिया॥ छ॥

भावण संखणिणायहिं णिग्गय    गयणि ण माइय कत्थइ हय गय।
सिवियाजाणहिं विविहविमाणहिं    उल्लोवेहिं दियंतपमाणहिं।
मोरकीरकारंडहिं चासहिं    फणिमंजारमरालहिं मेसहिं।
करिदसणाहयणीलवराहिं    आया सुरवर सहुं सुरणाहिं।
दारावइ पइट्ठ परियंचिवि    मायाडिंभें मायरि वंचिवि।
जय परमेट्ठि परम पभणंतिइ    उच्चाइउ जिणु सुरवइपत्तिइ।
पाणिपोमि भसलु व आसीणउ    इंदहु दिण्णउ तिहुयणराणउ।
अणिमिसणयणहिं सुइरु णियच्छिउ    कयपंजलिणा तेण पडिच्छिउ।

६ AP परिउड्डउ, S परिवुड्ढउ ७ P छट्ठहि ८ P जयत. ९ B माणु. १० B मेर. ११ P °वरिसइ १२ B पुण्णु १३ S उप्पण्णहि १४ A दइवहो, S दइयहो.

14 १ P हरिवचतेण. २ APS पडहसरेहिं ३ APS °मज्जार°. ४ B पयइ ५ S सुरवर°. ६ AP पाणिपोम°. ७ AP तिहुवण°.

6 *a* उहुमाणाइं तिण्णि ऋतुत्रय षण्मासानित्यर्थं, पविउड्डउ प्रवृष्ट., धणयमेहु कुबेर एव मेघ.. 10 *b* पवियंभिय° प्रविजृम्भित 11 *b* वसुपाउसु धनवृष्टि 13 *b* पुण्णजोइ त्वष्टृयोगे, पुव्वुत्तइ पष्ठयाम् 14 *a* तक्कालंतजीवि तत्काल पञ्चलक्षवर्षकाल तस्यान्त्य यद्वर्षसहस्र तत्कालान्त्यजीवी.

14 1 °विउद्ध सावधाना जाता 2 हरिरवेहिं सिंहनादैः. 4 *b* उल्लोवेहिं उल्लोचैः, दियंतपमाणहिं दिगन्तप्रमाणैः 6 *a* णीलवराहिं मेघैः 7 *a* परियंचिवि त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य, *b* मायरि मातरम् 8 *b* सुरवइपत्तिइ इन्द्रपत्न्या शच्या.

झत्ति णिहिउ कंचणवण्णुज्जलें　　हरिणीलु व सोहइ मंदरयलि ।
घत्ता—ईसाणिंदें छत्तु देवहु उप्परि धरियउ ॥
सोहइ अहिणवमेहि ससिबिंबु व विप्फुरियउ ॥ १४ ॥

## 15

दुवई—मंगलतूरथीरणिग्घोसें महिहरभित्तिदारणो ॥
चरणंगुट्ठएहिं सचोइउ सुरवइणा सवारणो ॥ छ ॥
तारायणगहपंतिउ लंघिवि　　सुरगिरिसिहरु झ त्ति आसंघिवि ।
दससिरिसिंधहि धाइयजोण्हाजालि　　अद्धचंदसंकासि सिलायलि ।
णच्चियसुररामारसणासणि　　णिहिउ सुणासीरें सिंहासणि ।
णाहणाहु परमक्खरमंतें　　सायारें हरिंदुरेहंतें ।
इंदजलणजमणेरियवरुणइ　　पवणकुबेरुद्दहिमकिरणइ ।
पडिवत्तीइ दिणेसफणीसइ　　जणणभाउ दोइवि णीसेसइ ।
पउरेहिं णिज्झियणीहारहिं　　कलसहिं चयणविणिग्गयखीरहिं ।
ण कित्तीथणेहिं पयलंतहिं　　ण संसारमलेण णिहणंतहिं ।
णावइ रइरसतिस णिरसंतहिं　　ण भट्टारहदोस धुयंतहिं ।
सित्तउ देवदेउ देविंदहिं　　गज्जंतहिं सिहरि व णवकंदहिं ।
घत्ता—इय जिणणिहियाइ पुप्फइ तंतुयबद्धइ ॥
ण धम्मइ कंडाइ आयमसुत्तणिबद्धइं ॥ १५ ॥

## 16

दुवई—हरिणा कुंकुमेण पविलित्तउ छज्जइ णाहदेहओ ॥
संझारायएण पिहियंगउ णावइ कालमेहओ ॥ छ ॥

८ P ईसाणदें　९ B °मेहें
**15** १ A °दारणो　२ PS गुट्ठएण　३ AS °घइ°　४ A P °धवलियजोण्हा°　५ BP सीहासणि　६ P °फणेसइं　७ B कत्तीथणेहिं　P कित्तीथणेहिं　८ S देवदेउ　९ P सद्दहिं वद्धइ　१० P कुडाइ

11 हरिणीलु इन्द्रनीलमणि　13 अहिणवमेहि नवीनमेघे
**15**　4 *a* °थइ मार्गे　7 *a* रसणासणि कटिमेखलाशब्दे　6 *b* सायारें हरिंदुरेहंतें स्वाकारेण परमाक्षरेण, हकारेण बिन्दुना ओंकारेण राजता, बिन्दुरोंकारवाचक ॐ स्वाहा इत्येवरूपेण स्वयं　8 *a* पडिवत्तीइ प्रतिपत्त्या आदरेण　10 *a* कित्तीथणेहिं कीर्तिस्तनैरिव कलशैः　पयलंतहिं प्रगलद्भिः　11 *a* तिस णिरसंतहिं तृष्णास्फेटकैः　12 *b* सिहरि व णवकंदहिं नवमेघैर्गिरिवत्
14 आयमसुत्तणिबद्धइ आगमसूत्रेण बन्धनं प्रापितानि
**16**　1 हरिणा इन्द्रेण

णिवसणु कोइं तासु वण्णिज्जइ    जो णिग्गंथभाउं पडिवज्जइ ।
सहइ हारु वच्छयलि विलंबिरु    णं अंजणगिरिवरं सरणिज्झरु ।
कुंडलाइं रयणावलितंबइं    कण्णालग्गइं णं रविबिंबइं ।
भणु कंकणहिं कवण किर उण्णइ    भुयबंधणइं व मुणिवइ मण्णइ ।
पहु मेल्लेसइ अम्हइं जोएं    पयणेउरइं कणंति व सोएं ।
सयमहु जाणइ जिणहु ण रुच्चइ    भूसणु सो परिहइ जो णच्चइ ।
लोयायारें सव्वु समारिउं    तियसिंदें थुइवयणु उईरिउं ।
णाणासद्दमहामणिखाणिइ    पुणु लज्जिउ वण्णंतु सवाणिइ ।
तुच्छइ जिणगुणपारु ण पेक्खइ    अण्णु जडंण्णु मुक्खु किं अक्खइ ।

घत्ता—अमर मुणिंद थुणंतु बाल वि बुद्धिइ कोमलं ॥
तो सव्वहं फलु एक्कु जइ मणि भत्ति सुणिम्मल ॥ १६ ॥

## 17

दुवई—दहिअक्खयसुणीलदूवंकुरसेसासीहिं णंदिओ ॥
धम्ममहारहस्स गइगुणयरु णेमि सद्दिओ ॥ छ ॥

पुणु दारावइपुरु आवेप्पिणु    सुरइभाउ भावें भाविप्पिणु ।
तियरणसुविसुद्धिइ पणवेप्पिणु    जिणु अणणीउच्छंगि थवेप्पिणु ।
णच्चइ सुरवइ दससयलोयणु    देहसयंदपहालियपवराणणु ।
दिसिदिसिपसरियवलद्दससयकरु    डोल्लइ णहयलु सरवि ससहरु ।
महि हल्लइ विसु मेल्लइ विसहरु ।
दिण्णुद्दंडवाउ णहि णज्जइ    पायंगुट्ठणक्खु ससि छज्जइ ।
चलइ जलहि धरणीयलु रेल्लइ    लीलइ बाहुदंडु जहिं घल्लइ ।

16 १ A तासु काइ २ S °माइ ३ S वच्छयल°. ४ A गिरिवर ५ P तियसेदें. ६ B समीरिउ ७ P सवागिउ. ८ PS पेच्छइ. ९ S जडण्णु १० A कोमल.

17 १ S °दुव्वकुर° २ ABPS °पुरि ३ BS आणेप्पिणु ४ AP read 3 *b* as 4 *a*. ५ S °भाउ ६ B पणवेप्पिणु ७ AP read 4 *a* as 3 *b*. ८ AB तिरयण°, K तिरयण in second hand but gloss त्रिकरण ९ AB सुविसुद्धि, P सुद्धबुद्धि १० ABP दस°. ११ A सहसमद°. १२ B adds तवीमइलआइमहुरसरु १३ A दिण्णदंडपाउ वि णहि, P ओडुंड°

4 *b* सरणिज्झरु जलनिर्झर 5 *a* रयणावलि° रत्नश्रेणि 6 *a* कंकणहिं कङ्कणेषु, उण्णइ गर्वं 7 *a* जोएं दीक्षावसरेण 10 *a* णाणेत्यादि नानाविधशब्दमहारत्नखाणिरिव, *b* सवाणिइ स्ववाण्या 12 कोमल मुग्धा

17 1 °सेसासीहिं शेषापुष्पै आर्शीर्वादैश्च 2 गइगुणयरु गमनस्य गुणकर्ता, णेमि व चक्रधारावत् 4 *a* तियरण° त्रिकरणस्य. 6 *b* सरवि सूर्यसहित 8 *a* °वाउ पाद ; णज्जइ ज्ञायते.

तहिं कुलमहिहरणियरेंद विसदृइ विप्फुरंति तारावलि तुट्टइ ।
णेच्चिवि एम सरसु भायर्दे थर्दिवि जिणुं सहु सुरवेंदर्दे ।
गउ सोहम्मराउ सोहम्महु पुरवरि णाहहु पालियधम्महु ।
णियसतहु थउ णिंदयमरूवउ दहधणुदडपमाणु पहूयउ ।
णयजोव्वणु सिरिहरु णित्तामसु सामिउँ एक्कु सहसवरिसाउसु ।

घत्ता—थिउ भुंजंतु सुहाइ णेमि सरयघसशुउ ॥
मरहसरोरुहसूरु पुप्फदंतगणसथुउ ॥ १७ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णेमितित्थकँरउप्पत्ती णाम
सत्तासीतिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ८७ ॥

१४ AB सिहरु १५ B णच्चवि १६ P जिणवरु सहु सुरविंदें १७ PS सुरविंदें १८ B णिरुपम°
१९ S पमाणु २० A सामिउ एक्कु वरिसु सहसाउसु; I सामिउ सहसु एक्कु वरिसाउसु
२१ A °तित्थकर° S तित्थयर° २१ P सत्तासीमो; S सत्तासीतितमो

14 *a* णित्तामसु अदैन्य·

धणुगुणमुक्कविसक्कसरु ओरुद्धदिवायरकरपसरु ॥
णं वणकरि कैरिहि समावडिउ जरेसिंधहु रणि मुरारि भिडिउ ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

दुवई—सउरीपुरि विमुक्कि जउणाहेँ मउलियसयणवत्तए ॥
णिवसुइ कालजमणि कुलदेवयमायाँवसणियत्तए ॥ छ ॥

गज्जिइ हरिपयाणभेरीरवि    खंचिइ अमरिसविसरइ णवि णवि ।
पंथि पंडुरि कप्पूरें वासिइ    करिघंटाटंकारवविलसिइ ।
दसदिसिवहमयणिवहि पणासिइ    सायरतीरि सेण्णि आवासिइ ।
पित्तिइँ मंति महति अणुट्ठिइ    णारायणि कुससयणि परिट्ठिइ ।
आवाहिइ मणहरसुरहयवरि    दोहाईहूयइ रयणायरि ।
लद्धइ मग्गि विणिग्गइ हरिबलि    पुणरवि चलियमिलियजलणिहिजलि ।
जिणपुण्णाणिलकंपियसयमहि    रयणकिरणमंजरिपिंजरणहि ।
बारहजोयणाइं वित्थिण्णइ    रइयइ णयरि रिद्धिसंपण्णइ ।

घत्ता—संगामदिक्खसिक्खाकुसलि    वसुएवचरणसररुहभसलि ॥
असुरिंदमहाभडमयमहणि    सिरिरमणीलंपडि महुमहणि ॥ १ ॥

P has, at the beginning of this Samdhi, the following stanza —

बम्भण्डाखण्डलखोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।
खण्डस्स सम समसीसियाइ कइणो ण लज्जन्ति ॥ १ ॥

This stanza occurs at the beginning of xxxii for which see Vol I. page 511. ABKS do not give it at all

1 १ PS °मुक्कपिसक्क°. २ ABP रुद्ध°, KS ओरुद्ध ३ P °करिहो, S °करिहे ४ PS जरसेंधहो. ५ A विक्कमु. ६ A मउलियइ, P मिलियए ७ BK माय° ८ B गज्जिय°. ९ B णवणवि १० A पवर°, PS पउर° ११ AP °ठंकारए १२ P °दिसिवहे १३ B °णिवह° १४ S पयासिए. १५ B पित्तए, P पित्तिय°, S पितृमयते, Als पितृयमते against Mss. १६ B मत. १७ BP आवाहिय° १८ B सुरवरहरि १९ B विणिगाय २० B चलिए मलिए P वलिय मिलिय, Als वलिए मिलिए against Mss २१ Als °कंपिए २२ B सरोरुह°

1 1 °मुक्कविसक्कसरु मुक्तबाणशब्द, बाणेन सह मुक्तहुंकार इत्यर्थः, ओरुद्ध° अवरुद्ध. 3 विमुक्कि विमुक्ते रिपुभयात्त्यक्ते सति, जउणाहें विष्णुना. 4 णिवसुइ जरासंधपुत्रे निवर्तिते सति किं जातम् 5 b अमरिसविसरइ क्रोधविसरये वेगे 7 a °मयणिवहि मृगसमूहे 8 a पित्तिइ पितृव्ये समुद्रविजये. 9 a °सुरहयवरि नैगमदेवचराश्वे, b दोहाईहूयइ द्विभागीभूते 14 a °मय° मद..

## 2

दुवई—दीहरणक्खविहवियउम्मूलेणगयवरगरुयंसाहले ॥
पिये सुहिसीरिविहियआणाविहियणेयमयपरब्बसे ॥ छ ॥

उप्पण्णइ सामिइ णेमीसरि तयहुयवहमुहहुयवम्मीसरि।
कालि गलंतइ पहहि णिरंतरि एत्तहि रायगिहकइ पुरवरि।
मगहाहिउ अत्थाणि वइट्ठउ केण वि वणिणा पणविवि दिट्ठउ।
ढोइयाइं रयणाइं विचित्तइं तासु तेण करि णिहिय पवित्तइं।
सपसायण वयणु जोएप्पिणु पुच्छिउ राएं सो विहसेप्पिणु।
काहिं लद्धइं माणिकइं दिव्वइं मलपरिचत्तइं णावइ भव्वइं।
भणइ सेट्ठि हउ गउ वाणिज्जहि पत्थिव दविणावज्जणकज्जहि।
दुव्वाए जलजाणु ण भग्गउ आइवि कत्थइ पुरवरि लग्गउ।
मइं पुच्छिउ णरु एक्कु जुवाणउ पुरवरु कवणु एत्थु को राणउ।
कहइ पुरिल्लु पडिभडदलवहणु किं ण मुणहि दारावइ पट्टणु।
किं ण मुणहि वहुपुण्णहं गोयरु राणउ एत्थु देउ दामोयरु।
ता हउ णयरि पइट्ठउ केही मणहारिणि सुरवरपुरि जेही।
घत्ता—तेहिं णियच्छिउ साणिडु मंदरहु अणुहरइ णरिंदु पुरंदरहु॥
पेंरं सुर सुतिरिच्छणियच्छिरउ णारिउ णावइ अमरच्छरउ ॥ २ ॥

## 3

दुवई—त पेच्छतु सतु हउ थिमिउ गेण्हिवि रयणसारय ॥
आयउ तुज्झु पासि मगहाहिव पसरियकरवियारय ॥ छ ॥

त णिसुणिवि विहिवंचणढोइउ पहुणा कालजमणसुहुं जोइउं।
मइं जियंति जीवंति ण जायव हुयवहु लग्गु घरंति ण पायव।

2 १ P °उम्मूलणे २ S गरुय° ३ Als पिए against Mss ४ A °णइयरपरवसे BS °णयहय° ५ P गलति पईहे ६ S मगहाहिउ ७ S दविणायज्जण° ८ S दुव्वाइ ९ B पुरि वरि १ P °पुरे जेही ११ P ताहिं १२ S नूवधरु १३ A अणुहवइ १४ A णवसरमिसिणिणियच्छिरउ १५ APS तिरिच्छि° B तिरच्छि°

3 १ S विण्हिउ २ S तुज्झ ३ A करवियायर

2 1 विहविय वृक्ष॰ गय गजवत् 2 सुहि सुहृत् 4 a पइहि पतेः प्रजाया वा 13 a गोयरु स्थानम्. 15 b अणुहरइ उपमां धरति 16 a णर सुर नरा सुरसमाः सुतिरच्छणियच्छिरउ शोभन तिर्यगवलोकन यासाम् b अमरच्छरउ अमराप्सरस

3 2 करवियारय किरणसघातम् 3 b कालजमणसुहु ज्येष्ठपुत्रस्य मुखम्

कहिं वसंति णियजीविउं लेप्पिणु　　वणि सियाल सीहहु ल्हिक्केप्पिणु ।
हउं जाणउं ते सयल विवण्णा　　सिहिपैइट्ठ प्राणभयदण्णा ।
णवरज्ञ वि जीवंति विवक्खिय　　णंदगोवभुयबलपरिरक्खिय ।
मारमि तेण समउं णीसेस वि　　फेडमि बलविलासु पसरच्छवि ।
ता संगामभेरि अप्फालिय　　गुरुरवेण मेइणि संचालिय ।
उट्ठिय जोह कोहदुद्दंसण　　कचणकवयविसेसविहूसण ।
चावचक्ककोंतासणिभीसण　　गुलुगुलंति मयमयगलणीसण ।
खलकुलदूसण णियकुलभूसण　　हिलिहिलंत हरिवर वद्धासण ।
हक्कारिय दिसिविदिससवासण　　रुहिरासोसण डाइणिपोसण ।
इच्छियजयसिरिकरसंफासण　　मग्गियअमरविलासिणिदंसण ।

घत्ता—रह रहियहिं चोइय हयपवर　　धाइय सुहडुक्खयखग्गकर ॥
णहि कहिं मि ण माइय सुरखयर　　गुरुडमरडिंडिमोमुक्कसर ॥ ३ ॥

4

दुवई—लहु सचलिउ राउ जरसंधु मयंधु महारिदारणो ॥
गउ कुरुखेत्तमरुणचरणंगुलिचोइयमत्तवारणो ॥ छ ॥

भुयबलचप्पियसयणफणिंदहु　　णारयरिसिणा पभणिउ उविंदहु ।
कहिउ गहीर वीर गोवद्धण　　णियपोरिसगुणरंजियतिहुयण ।
दुज्जउ पइं जरसिंधु समायउ　　बहुविज्जाणियरेहिं समेयउ ।
अच्छइ कुरुखेत्तइ समरंगणि　　सुहडादिण्णसुरबहुआलिंगणि ।
अज्ज वि किं तुहुं काइं चिरावहि　　णियदुयालि किं णउ मणि भावहि ।
किं संधारिउ तहु जामाइउ　　किं चाणूरु रणंगणि घाइउ ।
तं णिसुणिवि हरि कयपहरणकरु　　उट्ठिउ हणु भणंतु वड्ढाहरु ।

४ P जाणमि　५ P सिहिहि पइट्ठ　६ AP पाण°　७ PS पडिरक्खिय. ८ AB °विलास. ९ BPS सणाहभेरि. १० ABPS गुळगुलत　११ B रहियइ. १२ AB °डामर°

4　१ ABPS जरसेंधु. २ B °खेत्त अरुण°, P °खेत्तिमरुण°　३ B चरणुगुलि°. ४ S °सयल°. ५ P °तिहुवण　६ B इहु, PS एहु. ७ PS जरसेंधु. ८ P समाइउ. ९ AP °दिंत°. १० AP तुहु किर. ११ P दावहि　१२ S सहारिउ　१३ P °पहरणु

6 *a* विवण्णा विपन्ना मृता, *b* °दण्णा विदीर्णा भग्ना. 7 *a* विवक्खिय शत्रव. 8 *b* पसरच्छवि प्रकृष्टशरसदृश, अथवा, प्रसरन्ती छविः कान्तिर्यस्य. 11 *b* गुलगुलंति शब्दं कुर्वन्ति, मयमयगल° मदोन्मत्ता.. 13 *a* °सवासण राक्षसा शवाशना. 15 *a* रहियहिं सारथिभिः, *b* उक्खयखग्गकर उत्खातखड्गकरा 16 *b* °डमर° भयोत्पादकः, °ओमुक्क° अवमुक्त..

4　1 मयंधु मदान्ध. 3 *a* °सयण° नागशय्या. 7 *a* चिरावहि कालक्षेप किं करोषि; *b* णियदुयालि निजोत्सकत्व (?) स्वआलीगारपणु (?).

हलहर अज्ज धरवि णिहोरमि　　दे आपसु असेसु वि मारमि ।
ता सण्णद्ध कुद्ध ते णरवर　　चोइय गयवर वाहिय हयवर ।
पहयइं रणतूराइं रउद्दइं　　रवपूरियगिरिकुहरसमुद्दइं ।
जायववलु जलणिहिजलु लंघिवि　　थिउ कुरुखेत्तु झ त्ति आसंघिवि ।
घत्ता—सण्णद्धइं धाइयमच्छरइं　　करवालसूलसव्वलकरइं ॥
　　अब्भिट्टइं कयरणकलयलइं　　दामीयरजरसिंधह बलइं ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—हयगंभीरसमरभेरीरवबहिरियणहदियंतयं ॥
　　उक्खयखग्गतिक्खसरपसरणरवखंडियदंतिदंतयं ॥ छ ॥
कोंतकोडिझुल्लियकुंभयलइं　　कड्ढियवारिपूरियधरणियलइं ।
ख़ुयमुत्ताहलणियरुज्जलियइं　　विलुलियंतसुमलपक्खलियइं ।
सेल्लविहिण्णवीरवच्छयलइं　　सरवरपसरपिहियगयणयलइं ।
उच्छलंतधणुगुणटंकारइं　　जोहविमुक्कफारहुंकारइं ।
तोसियफणिदिणयरससिसक्कइं　　वज्जमुट्ठिचूरियसीसक्कइं ।
हयमत्थइं मत्थिंकरसोल्लइं　　दलियट्ठियधीसदयसोगिल्लइं ।
मोडियधुरइं विहिण्णतुरंगइं　　लंडियायज्जरियरहंगइं ।
पग्गहणिल्लूरणविहिमीसइं　　करकड्ढियसारहिसिरकेसइं ।
भग्गरहाइं झुणियजंपद्धइं　　मोसलदप्पोणियभरुद्धइं ।
ख़ुड्डागेद्धखग्गपप्पसरइं　　सुरकामिणिकरघल्लियसेसइं ।
वणवियलियधारापकीलालइं　　किलिकिलंति ओहणिवेयालइं ।
घत्ता—ता रहवरहरिकरिवाहणह　　जुज्झतह दोहं मि साहणह ॥
　　जो सुहडहं मच्छरग्गि जलिउ　　तेंहु धूमु व रउ णहि उच्छलिउ ॥ ५ ॥

१४ B णिहारिमि १५ ABP कुद्ध णिव णरवर १६ PS रहवर. १७ B °जरसिंधबलइ PS °जरसंधह
5 १ P °तूरमेरी° २ BPSAls °दियंतइं ३ APAls °तिक्खसमा° ४ BPSAls °दंतइं ५ P विझुल्लियभत° ६ A °पिहिण्ण° S °विहीण° ७ P °धणगुण° ८ APS हयमत्थय° ९ B भकिक° १० A रसगिल्लइं ११ P छ्युडि° १२ AP खग्गाइ° १३ A णिव्वुरियहय° १४ AP °सीसइ १५ B °करकेसइ १६ S झुलिय° १७ B भस° १८ A °पवेसइ १९ B °विग लिय° २० ABP किलिकिलंत° S किलिगिलंत° २१ B दोहिं २२ P तहे धूम २३ B धूमरओ

13 *a* जायववलु यादवसैन्यम्

5　3 *a* झुविय स्रस्तानि　5 *a* सर बाणा　7 *b* सीसक्कइं शिरस्त्राणानि　8 *b* वीसढ बीभत्सा　9 *b* लउडि यष्टिः　रहंगइं चक्राणि　10 *a* पग्गह रज्जु　12 *a* खद्धंग पप्पसइ भक्षितशरीरप्रदेशानि　*b* सेसइं पुष्पाणि　13 *b* किलि किलंति शब्दं कुर्वन्ति　14 *a* हरि अश्वा·　15 *b* रउ रजो धूलि·

## 6

दुवई—णं मुहवडु णिहित्तु जयलच्छिहिं लोयणपसरहारओ ॥
णं रणरक्खसस्स पवणुद्धुउ पिंगलकेसभारओ ॥ छ ॥

असिधारातोएण ण पसेमिउ　　पंडुरछत्तहु णवरुप्परि थिउ ।
उद्धु गंपि कुंभत्थलि पडियउ　　णिच्चब्भासें गयवरि चडियउ ।
गंडि थंतु कण्णेण झडप्पिउ　　मइलणसीलउ कासु ण विप्पिउ ।
वंसि थंतु चिंधेण गलत्थिउ　　दंडि थंतु चमरेणं विहत्थिउ ।
करपुक्खरि पइसइ गणियारिहिं　　लोलइ थोरथणत्थलि णारिहिं ।
चेलंचलपडिपेल्लिउ गच्छइ　　चउदिसि णिब्भंछिउ किं अच्छइ ।
दिट्ठिपसरु असिपंसरु णिवारइ　　अंतरि पहासिवि णं रणु वारइ ।
भेणि विलग्गु वीसासु व मग्गइ　　पयणिवडिउ णं पायइ लग्गइ ।
हरिखुरखउ रोसेण व उट्ठइ　　जं जं पावइ तोहिं तहिं संठइ ।
ढंकइ मणिसंदणजंपाणइं　　जोयंतइं सुरवरइ विमाणइं ।

घत्ता—धूलीरउ रुहिररसोल्लियउं　　णं रणवहुराए पेल्लियउं ॥
थिउ रंत्तु पउ वि पउ चल्लियउं　　णं वम्महवाणें सल्लियउं ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—पसमिइ धूलिपसरि पुणरवि रणरहसुद्धाइया भडा ॥
अंकुसवस विसत विसमुब्भड चोइय मत्तगयघडा ॥ छ ॥

कासु वि णारायहिं उरु दारिउं　　णायहिं णं वसुहयलु वियारिउं ।

---

6　१ A णहरक्खसस्स. २ S पवणुद्धउ. ३ A पसरिउ. ४ P °उपरि ५ B गह्ल. ६ P चमरेण विहत्थिउ. ७ A रउदिसु, PS चउदिसु. ८ AB णिब्भच्छिउ, S णिब्मढिउ. ९ AP add after this अवारउ करतु दिस गच्छइ, A मतु पपुच्छइ कहिं किर गच्छइ, P अह चवलु किं णिचलु अच्छइ. १० AP °पसर. ११ A सवणि पइसि वीसासु १२ APS व. १३ PS पयवडियउ. १४ APS पायहिं १५ A त वहिं. १६ B रत्तपओ वि, P रत्तउ पउ वि, Als. रत्तउ पउ वि against Mss. १७ S ण चल्लियउ. १८ A °बाणइ.

7　१ S °सुद्धाविया. २ A °विसविसत.

---

6　1 मुहवडु मुखवस्त्र अन्तरपटः २ पवणुद्धुउ पवनकम्पित.. 4 *b* णिच्चब्भासें गजो जले स्नान करोति तदनन्तरं शुण्डया निजपृष्ठे रजः क्षिपति, तस्य तु रजसो गजपृष्ठोपरिपतनाभ्यासः सजात, तदभ्यासवशेन तस्य पृष्ठे रजः पतितम्. 7 *a* करपुक्खरि शुण्डाग्रे मुखे, गणियारिहि हस्तिन्याः. 8 *b* चउदिसि णिब्भछिउ सर्वत्र भर्त्सित 10 *a* वीसासु अ मग्गइ विश्वास याचते, *b* पयणिवडिउ पादलग्नम्. 13 *b* रणवहुराए रणवधूरागेण. 14 *a* पउ वि पादमपि.

7　3 *a* णारायहिं नाराचैर्बाणै, *b* णायहिं नागैर्वसुधातलं विदारितमिव.

को वि अद्धइदें सिरि[४] भिण्णउ सोहइ भडु रहु व मयरण्णउ।
गुणमुक्केहिं सगुणसजुत्तउ बहुलोहेहिं लोहपरिचत्तउ।
को वि सुहडु धरणियलु ण पत्तउ मग्गणेहिं चाइ व उक्खित्तउ।
केण वि जसु धवलिउ णिरु णिद्धें असिधेणुयंपिढत्तजसदुद्धें।
धरहु ण सक्किउ छिण्णकरग्गहिं केण वि धरिउ चक्कु दंतग्गहिं।
कासु वि सिरु अच्चततिसाइउ असिधरपाणियधारहिं धायउ।
कासु वि अंतइं पयजुयखुलियइं पहुरिणयधणाइ ण दुलियइं।
कासु वि गलिउ रत्तु गत्ततहु फेडइ तिस णिरु तिसियकयंतहु।
कासु वि सिव कामिणि व णिरिक्खइ णाहहिं वियारिवि हियवउ चक्खइ।
को वि सुहडु पहरणु णउ मुज्झइ मुच्छिउ उम्मुच्छिउ पुणु जुज्झइ।
को वि सुहडु जहिं जहिं परिसक्कइ तहिं तहिं समुहुं को वि ण ढुक्कइ।
घत्ता—चलचामरपट्टोलकारिय हरिथाहिय मच्छरफुरफुरिय ॥
भिंभिडिय गयघरणभारधर पवरासवारकरवालकर ॥ ७ ॥

## 8

दुवई—हयसणाहदेहणिवट्टियलोट्टियतुरयसकडे ॥
के वि समोयडंति पडिभडथडि विरसियतूरसघडे ॥ छ ॥
जयसिरिरामालिंगणलुद्धइं पक्कमेक्क पहरंतइं कुद्धइं।
असिसंघट्टणि उट्ठिउ हुयवहु कडकडंतु सोसिउ सोणियदहु।
वसविविसासइ तेण पलित्तइं पक्खरचमरइं चिंधइं छत्तइं।
ता पडिवक्खपहरभयतट्ठउं महुमहबलु दसदिसिपहणट्ठउं।

३ APS अद्धयदें ४ AP सिर ५ AP धरणियले ६ A णावइ उक्खित्तउ ७ P °धेणुव° ८ B °पिढत्त° ९ A णच्चतु P अच्चतु. १० PS °धारहे ११ PS धाइउ १२ P °जुव° १३ A खुलियउ १४ A रलियउ P चलियइ S मलियइ १५ P °कतहो १६ A पहरणि ण समुज्झइ P पहरणे णउ १७ A मुच्छिउ पुणु उ मुच्छिउ जुज्झइ P मुच्छिउ मुच्छिउ पुणु पुणु जुज्झइ १८ P समुहु १९ A °पट्टोलकारिय २० A °फुरफुरिय S फुरहरिय २१ AP भिंमिड गयव° S भिंभिडिय

8 १ A °णिवडिय° २ B °लुट्टिय P °लोहिय° ३ A °तूरसकडे ४ P °दिसिवहे S °दिसवह°

4 *a* अद्धइंदें अर्धचन्द्रेण 5 *a* गुणमुक्केहिं मार्गणैर्याचकैश्च सगुण यागी दातृवत् 6 *b* उक्खित्तउ उद्ध (ऊर्ध्वं) स्थापित 9 *a* अच्चततिसाइउ अतीव तृषित जातम्, *b* धायउं तृप्तम्. 11 *a* गत्ततहु देहमध्यात् 12 *a* सिव शृगाली 13 *a* णउ मुज्झइ न विस्मरति 14 *a* परिसक्कइ प्रसरति

8 2 समोयडंति अवपतन्ति सघडे युग्मे उभयसैन्यतूर्यत्वात् 4 *b* कडकडंतु क्वाथ कुर्वन्, सोणियदहु रक्तह्रद 5 *a* आसइ मुखानि; पलित्तइं प्रज्वालितानि 6 *a* तट्ठउं भीतम्

पोरिसगुणविंभावियवासउ हणु भणंतु सइं धाइउ केसउ ।
णरहरि तुरय रहिय संचूरइ सारइ दारइ मारइ जूरइ ।
धीरइ हक्कारइ पच्चारइ हणइ वणइ विहुणइ विणिवारइ ।
दमइ रमइ परिभमइ पयट्टइ संघट्टइ लोट्टइ आवट्टइ ।
सरइ धरइ अवहरइ ण सचइ खचइ कुंचइ लुंचइ वंचइ ।
उल्लालइ वालइं अप्फालइ रूसइ दूसइ पीलइ हूलइ ।
ईहइ संखोहइ आवाहइ रोहइ मोहइ जोहइ साहइ ।
अंतइं ललंतइं गीढइं ताडइ रुंडमुंडखंडोहइं पाडइ ।
वेढइ उव्वेढइ सदाणइ रक्खे भुक्खीरीणइं पीणइ ।
वग्गइ रंगइ णिग्गइ पविसइ वलइ मलइ उल्ललइ ण दीसइ ।
घत्ता—कुसपास विलुंचइ हयवरहं गलगिज्जउं तोडइ गयवरहं ॥
वरवीर रणंगणि पडिखलइ मंडलियहं रयणमउड दलइ ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—जुज्झइ वासुएउ परमेसरु परबलसलिलमंदरो ॥
सुरकामिणिणिहित्तकुसुमावलिणवमयरंदपिंजरो ॥ छ ॥
गयमयपंकभमिइ चलमहुयरि हयलालाजलवाहिणि दुत्तरि ।
संदणसंदाणियइ दुसचरि रुंडमुंडविच्छंडभयंकरि ।
लोहियंभंथिभेहिं सुसचुपइ कडयमउडकुंडलहारंचिइ ।
सामिपसायदाणरिणणिग्गमि ढुक्क विहंगमि तहिं रणसंगमि ।

५ S °विग्हाविय° ६ S °वासडु ७ AP सघायउ ८ S केसडु ९ AP सो णरहरि तुरयहिं ( P तुरयह ) सचूरइ, BAls. णरकरि though Als. thinks that क is written in second hand, K records a *p* णरकरि इति वा पाठ, T also records a *p* णरकर ( रि ? ) इति वा पाठ.. १० S रहेण. ११ ABS खुचइ, P कोंचइ १२ A चालइ १३ B अप्फालइ १४ P लूहइ १५ S जोहइ मोहइ १६ A अतलल्त, S अण्णेणण्ण १७ APS गाढं. १८ AS °रीणे, P रिण ( इ ) १९ S रगाइ २० B णिवसइ २१ P पइसइ

**9** १ A °मदिरो २ ABS °कुसुमजलि°. ३ PS °सयरिंद°. ४ P °भमिय°. ५ K °जलि वाहणि दुत्तरि but gloss नदी on जल्विाहणि ६ BPS °विच्छडु°. ७ S °यभेहिं. ८ APS सुसिंचिए, B सुसचिए. ९ B रणि

7 *a* °वासउ इन्द्र. 8 *a* णरहरि नरैरारूढा अश्वा, रहिण रथिकान् 9 *a* धीरइ स्वपक्षान् धीरयति. 10 *a* पयट्टइ प्रवर्तते 12 *a* हूलइ प्रोइ (?) शूलप्रोत करोति (?) 15 *b* रक्खे राक्षसान् 17 *a* कुसपास तर्जनकान्, °गिज्जउ ग्रीवाभरणम्

**9** 1 °सलिलमदरो° सलिलमन्थने मन्दर.. 3 *a* गयमयपक° गजमदकर्दमे. 4 *b* °विच्छड° समूहेन. 5 *a* °थिभेहिं बिन्दुभि .

सिरिसिंकुलसामत्थमयंधें माहउ पचारिउ जैरसंधें।
णवगोव घियदुद्धें मत्तउ जं तुहुं महु करि मरणु ण पत्तउ।
तं जाणहि करिमयररउद्दइ लिहिकिवि थक्कउ लवणसमुद्दइ।
पइ विणु गाईहिं महिसिहिं रुण्णउ णंदहु केरउं गोउलु सुण्णउ।
जाहि जाहि गोवाल म दुक्कहि अज्जु मज्झु कमि पडिउ ण चुक्कहि।
णियकुलकमलसरोयरहंसहु जेण परक्कमु भग्गउ कंसहु।
तं मुयवलु तेरउ दक्खालहि पेक्खहु कुलकलंकु पक्खालहि।
पर्वहिं तुज्झु ण णासहु जुत्तउ तं णारायणेण पडिवुत्तउ।

घत्ता—पइं मारेवि दारिवि अज्जु रणि तोसावमि सुरेंवर णर भुवणि॥
उज्झोलिवि णंदहु तणउ कउ गोमंडलु पालमि गोउं हउं॥९॥

## 10

दुवई—अवर वि पेक्खु पेक्खु हरिसुअलसिरिथणकुंकुमारुणा॥
एए वाहुदंड मेहु केरा वैहरिकरिंदवारणा॥ छ॥

एए बाण एउ बाणासणु पहु हउं करिवरखंधासणु।
हउं सो तुहुं रिउ एउ रणंगणु पेउ सक्खि सुरभरिउ णहंगणु।
अइ णियकुलपरिहवें ण गवेसमि जइ पइं कंसपहेण ण पेसमि।
तो बलएवहु पय ण णमंसमि अरहंतहु सासणु ण पसंसमि।
हउं णउ णासमि धाउ पयासमि अज्जु तुज्झु जीविउ णिण्णासमि।
एंयं गज्जंतहिं भंगुरभावइं दोहिं मि अप्फालियइं सचावइं।
उट्ठिउ गुणटंकारणिणायउ वेविउ थाउ वरुणु जहुं आयउं।
सहसयण व तेण चमक्कइ सुरकरि दाणु देंतु णउ थक्कइ।
तासि तसियउ हुउ झीणंकलालउ थिउ जमु ण भयभीए कालउ।
जलणिहिजलइं चलइं परिघुलियइं गहणक्खत्तइं महियलि लुलियइं।
कंपियाइं सत्त वि पायालइं गिरिसिहरइं णिवडियइं करालइं।

१ AP सिरिकुलबलसामत्थ° ११ P जरसेंधें १२ S नृवकुल° १३ A तोसावमि; P तोसावेमि
१४ सुर णरवर णर १५ A उज्जालउ S उज्जालमि १६ P गो हउ

10 १ S पेक्खु once २ S वइरिंददारणा ३ P पहु ४ S °परिहइ ५ P बाइउ
६ PS चवकइ ७ ABPSAls झीणु कला° ८ APS भयभीयए

7 *a* सकुल° स्वकुलम्. 10 *a* रुण्णउ रुदितम्. 13 *b* कुलकलंकु त्वं गोपपुत्रो जनैर्गीयते इति कुलकलङ्कः 16 *a* कउ कृत्मः *b* गोमंडलु भूमण्डलम् गोउ गोप

10 3 *b* हउं बलभद्रः 4 *b* सक्खि साक्षिभूतम्. 5 *a* गवेसमि स्फेटयामि 9 *b* वेविउ कम्पितः जहुं जलजातः 10 *a* चमक्कइ बिभेति

घत्ता—अमरासुरविसहरजोइयइं तोणीरइं खंधारोइयइं ॥
उप्पुखविचित्तइ संगयइं णं गरुडहु पिंछइं णिग्गयइं ॥ १० ॥

## 11

दुवई—वलईयरयणसारि बहुपहरण चहुलसमीरधुयधया ।
ता जरसिंधरायदामोयरपयजुयचोइया गया ॥ छ ॥

करडगलियमयमिलियमहुयरा जलहर व्व पविमुक्कसीयरा ।
सायर व्व गज्जणमहारवा वइवसु व्व तइलोकभइरवा ।
मुणिवर व्व कयपाणिभोयणा थीयण व्व लीलावलोयणा ।
पत्थिव व्व सोहंतचामरा खलणर व्व परिचित्तभीयरा ।
सुपुरिस व्व दढबद्धकच्छया रक्खस व्व मारणविणिच्छया ।
सुररह व्व घंटालिमुहलिया वासर व्व पहरेहिं पयलिया ।
णवणिहि व्व रयणेहिं उज्जला कज्जलालिपुंज व्व सामला ।
चरणचालचालियधरायला खलखलंतसोवण्णसंखला ।
पुक्खरग्गसंगहियगंधया एक्कमेक्कमारणविलुद्धया ।
रोसजलणजालोलिछाइया विहिं मि कुंजरा सउहु धाइया ।

घत्ता—कालउ सुरचावालंकरिउ कोंडिछुरियइ विज्जुइ विप्फुरिउ ॥
सरधारहिं वुट्ठउ महुमहणु णं णवपाउसि ओत्थरिउ घणु ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—सरणीरंधपसरि संजायइ खगु वि ण जाइ णहयले ॥
विद्धतेण तेण भड सूडिय पाडिय मेइणीयले ॥ छ ॥

८ BP °रोहियइ. ९ S सगइ. १० BP पिच्छइ. ११ K णिग्गइ.

**11** १ P वलविय°. २ A °रणसारि. ३ PS जरसेंध° ४ ABS वइवस व्व ५ B तिहुक्क°, P तेलोक्क°. ६ BAls लीलाविलोयणा ७ S खलयण व्व. ८ AB परचित्त°. ९ ABP सुरहर व्व १० BS घटाहिं मुह°. ११ P णिवणिहि. १२ P पुखर व्व १३ S ढाइया १४ A सहुउहु, BP समुहु. १५ B करि. १६ P °छुरिए. १७ P विप्फुरियउ. १८ B उत्थरिउ.

**12** १ AP °णीरभयारे २ S विंधतेण.

14 *b* खधारोइयइ स्कन्धारोपितानि. 15 *a* सगयइ गतानि.

**11** 1 °रयण° दन्ता., °सारि° पल्याणम्, °धुयधया कम्पितध्वजा.. 4 *b* वइवसु व्व यमवत्. 7 *a* °कच्छया वरत्रा ब्रह्मचर्यं च 8 *a* सुररह व्व देवरथवत्, *b* पहरेहिं यामैर्घातैश्च. 9 *a* रयणेहिं रत्नैर्दन्तैश्च. 11 *a* पुक्खरग्ग° शुण्डाग्रम्. 14 *a* सर° जल बाणश्च.

**12** 1 सरणीरंधपसरि निश्छिद्रतया शरप्रसरे, निरन्तरे, खगु पक्षी. 2 तेण नारायणेन.

परधम्मेण जाइ वि परिचत्ता लोहणियद्धा वित्तविचित्ता ।
परणरजीयहारि दुद्दसण चवलयर णावइ कामिणियण ।
धम्मविहंसण पिसुणसमाणा दूरोसारियभमरविमाणा ।
धणुहँ दिण्णउं जइ वि णवेप्पिणु कोडिउ ताउ दो वि मेल्लेप्पिणु ।
लक्खहु धावइ ण तिट्ठालुय भइ किं किर करंति जड गुणचुय ।
मग्गणा वि णिय मोक्खहु कण्हें धइरिवीराणिद्दारणतण्हें ।
ता मगहाहिवेण रूसंतें हरिधणुवेयणाण दूसंतें ।
णियसरेहिं विणिवारिय रिउसर विसहरेहिं छिण्णा इव विसहर ।
घत्ता—ता कण्हें विद्धउ पइसरिवि धयछत्तइं चमरइं कप्परिवि ॥
णरवइ णारायहिं थणिउ किह धुत्तेहिं विलासिणिलोउ जिह ॥ १२ ॥

## 13

दुवई—ता देवइसुयस्स बलसत्ति पलोइवि णिज्झियावणी ॥
मणि चिंतविवि विज्ज जेरासिंधें विसरिसविविहरूविणी ॥ छ ॥
दडउँ—णवर पवरदायाहिराएण संपेसिया दारणी मारणी मोहणी थंभणी सव्वविज्जावलच्छेडणी ॥ १ ॥
पलयंघरवारणी सगया खग्गिणी पासिणी चक्किणी सूलिणी हुंकणी मुडमालाहरी कालकावालिणी ॥ २ ॥
पयडियमुहदंतपंतीहिं हीं हि त्ति हासेहिं पिंगुद्धकेसेहिं मायीविरुद्धेहिं भीमेहिं भूएहिं रुद्दा रद्दा ॥ ३ ॥
हरिकरिवरे किंकरे छत्तदंडम्मि चावम्मि चिंधम्मि जाणे विमाणम्मि कण्हेणं जुज्झे रिऊ दीसए ॥ ४ ॥

२ S कामिणिअण ४ AP तो वि मेण्णि BAls ताउ दोण्णि ५ PAls धाइय ६ AP कुणंति ७ PS णाणु

**13** १ B बलउत्तिए लो° २ S पलोयवि ३ S णिज्झया° ४ A चिंतविय S चिंतवीय ५ PS जरसेंधें ६ P वेविहरूविणी ७ A omits दंडउ ८ S omits मोहणी ९ B °छेयणी १ AP पलयघणधारिणी B पलयघरवारिणी Als पलयघरवारणी against Mss and against gloss in all Mss ११ A omits हुंकणी S हूंलिणी १२ S हा इं ति १३ AP मायाविरुद्धेहिं १४ P भूवेहिं १५ K omits चावम्मि चिंधम्मि १६ P कण्हेण कुद्धेण जुज्झेवि रिऊ १७ BK रिउ

5 *a* धम्मविहंसण मर्मविध्वंसका 7 *a* तिट्ठालुय तृष्णालव: 8 *a* मोक्खहु मोक्षे लक्ष्यं प्रति बाणा: प्रेषिता: 9 *b* °धणुवेयणाण दूसंतें धनुर्वेदज्ञानदूषणं कुर्वता 11 *a* विद्धउ राजा विद्ध: 12 *a* थणिउ भणित:

**13** 4 पलयघरधारणी प्रमादप्यविकल्पयुक्ता इत्यर्थः सगया एकत्रीभूता; कालकावालिणी कृष्णा कापालिनी

विहुणेइ सयलं बलं जाव फुट्टंतसव्वट्टिअंगेहिं तावंतराले चलंतुग्ग-
पक्खिदकेऊहरो संठिओ ॥ ५ ॥
फणिसुरणरसंथुओ सूरसंगामसंघट्टसोढो महामंतवाईसरो तप्पहावेण
णिण्णासिया ॥ ६ ॥
जलहरसिहरे खलंती चलंती घुलंती तसंती रसंती सुसंती चलायास-
मग्गे सुदूरं गया देवया ॥ ७ ॥
घत्ता—हरिदंसणि णहयलि दिण्णपय जं बहुरूविणि णासेवि गय ॥
तं परतरुणीगलहारहर पहुणा अवलोइय णिययकर ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—पभणइ कोवजलणजालारुण दिट्ठि घिवंतु माहवे ॥
किं कीरइ खलेहिं भूएहिं थिएहिं गएहिं आहवे ॥ छ ॥
तेण दुंछिओ हरी णृपिंडमुंडखंडणे किं बहूहिं किंकरेहिं मारिएहिं भंडणे।
होइ भू हए णिवे ण वुज्झसे किमेरिसं एहि कट्ठु धिट्ठ दुट्ठ पेच्छ मज्झ पोरिसं।
केसरि व्व दुद्धरो करग्गणक्खराइओ सो वि तस्स संमुहो समच्छरो पधाइओ।
ता महीसरेण झ त्ति पाणिपल्लवे कय लोयमारणक्कबिंबसंणिहं सचक्कयं।
उत्तमेण कुंकुमेण चंदणेण चच्चियं भामिय करेण वीरदेहरत्तसिंचियं।
गुत्थपंचवण्णपुप्फदामएहिं पुज्जियं राहियामणोहरस्स समुहं विसज्जियं।
चंडसूररस्सिरासिचिच्चियच्चिसच्छहं कालरूवभीमभूयमच्चुदूयदूसहं।
वेरितासयारि भूरिभूइभाइ भासुरं भीयजीयभेट्टचेट्ठतट्ठकिंणरासुरं।

१८ BKP विहुणेइ. १९ B फुट्टत, P फुट्टति २० B सव्वट्ठिअगम्हि. २१ A °केऊरहो, P °केऊरहे. २२ A फणिणरसुर° २३ APS °सगाम°, P °सगामि सघाविओ सो महापुण्ण-णेमीसरो तप्पहा° in second hand. २४ A बल्ती. २५ B तहु दसणि in second hand; S जिणदंसणि.

**14** १ A दोच्छिओ, B दुच्छिओ, S दोंछिओ २ ABP णिपिंड°. ३ P होउ ४ B डज्झसे, P जुज्झसे ५ Als °मारणक° against Mss misunderstanding the gloss. ६ A °विंबसण्णिहं पिसक्कय ७ A गुत्तु, PS गुथ° ८ BP °पुप्प° ९ A चदसूरासि°, B चडसूरतेय-रासि°. १० A °सच्छिहं ११ A °भट्ठकिट्ठणट्ठकिंणरा°.

6 जाणे वाहने, जुज्झे युद्धविषये 7 चलतुग्गपक्खिदकेऊहरो सठिओ चलोग्रगरुडकेतुधरः संस्थित.. 9 चला चपला 11 *a* °हर अपहर्ता.

**14** 3 *a* दुछिओ तिरस्कृत., णृपिंड° मनुष्यशरीरम्. 4 *a* होइ इत्यादि नृपे हते सति पृथ्वी भवति स्ववशा 5 *a* करग्गणक्खराइओ कराग्रस्थितखड्ग एव नखराजितः. 6 *b* लोयमारणेऽक्कबिंबसणिहं लोकमारणे प्रलयार्कबिम्बसदृशम् 8 *b* राहिया° गोपाङ्गना. 9 *a* °चिच्चियच्चि° अभ्यर्चि. 10 *a* °तासयारि त्रासकारि, भूरिभूइभाइ प्रचुरविभूतिदीप्त्या.

घत्ता—णाणामाणिक्कहिं वेयडिउ तं रिउरहंगु हरिकरि चडिउ ॥
णियकंकणु तिहुयणसुंदरिए णं पाहुडु पेसिउ जयसिरिए ॥ १४ ॥

## 15

दुवई—तं हत्थेण लेवि दुव्वोलिउ पुणरवि रिउ णरोहिओ ॥
अज्ज वि देहि पुहइ मा णासहि अणुणहि सीरि सामिओ ॥ छ ॥

तं णिसुणेवि वुत्तु मगहेसें आरुट्ठें कयतमभडभीसें ।
तुहुं गोवालु बालु णउ जाणहि सहुं होंति कामिणियणु माणहि ।
जउ किं सिहि सिहाहिं सतावहि महु अग्गइ सुहडत्तणु दावहि ।
चक्कें एण कुलालु व मत्तउ अज्जु मित्त कहिं जाहि जियंतउ ।
ओसरु सरु पइसरु मा जमपुरु जाम ण भिंदमि सत्तिइ तुह उरु ।
राउ समुद्दविजउ कम्मारउ पसुपउ वि पाइक्कु महारउ ।
तुहुं पइं तासु पुत्तु किं गज्जहि धिट्ठ घरणि मग्गंतु ण लज्जहि ।
हरिणु व सीहें सहुं रणु इच्छहि भिक्खु होवि रायत्तणु वंछहि ।
खल खज्जिहिसि पाव पावें तुहुं णासु णासु मा जोयहि महुं मुहुं ।
ता हरिणा रहचरणु विमुक्कउ रविबिंबु व अत्थइरिहि ढुक्कउ ।

घत्ता—णरणाहहु छिण्णउ सिरकमलु णावइ रइहु णवकुसुमदलु ॥
थिउ हरि हरिसें फुरइयभुउ पवरच्छरकोडीहिं थुउ ॥ १५ ॥

## 16

दुवई—हए जरसिंधराइ महुमहसिरि कंजियमहुयरालओ ॥
सुरयरकरविमुक्कु णिवडिउ णववियसियकुसुममेलओ ॥ छ ॥

---

१२ B विपडिपडं

**15** १ PS णराहिवो २ B पुहइ ३ PS पत्थिवो ४ P पउत्तु ५ B ण हु ६ AP चक्केण ७ B मित्तु ८ AP अभिंतउ ९ P ऊसरु १० B पइसइ ११ A तहु पइं तासु B पइ P परि १२ BS होइ १३ ASAls रायत्तणु १४ APS अत्थइरिहि १५ A णावइ १६ AP रइहे

**16** १ B जरसिंधु P जरसेंधे S जरसेंध° २ S कंजिय ३ P °विमुक्क

---

11 *a* वेयडिउं जटितम्.

**15** 2 अणुणहि प्रार्थय 5 *a* सिहि सिहाहिं सतावहि अग्निं ज्वालाभिर्ज्वालयसि 6 *a* कुलालु व कुम्भकारवत् 7 *b* उरु हृदयम्. 9 *a* पइ पादपूरणे 10 *b* भिक्खु होवि इत्यादि भूत्वा राजत्वं वाञ्छसि 12 *b* अत्थइरिहि अस्ताचले

आरिणारिद्दणारीमणजूरइं  कउ कलयलु पहयइं जयतूरइं।
पायपोमपाडियगिव्वाणें  दहधणुतणुउच्छेहपमाणें।
चिरभवचरियपुण्णसंपुण्णें  णवघणकुवलयकज्जलवण्णें।
एक्कसहसवरिसाउणिबंधें  रणभरधरणधोरथिरखंधें।
मागहु वरतणु समउं पहासें  साहिय कयदिग्विजयविलासें।
सुरसरिसिंधुवकंठणिकेयइं  मेच्छरायमंडलइं अणेयइं।
सिरिविरइयकडक्खविक्खेवें  णिज्जियाइं णारायणदेवें।
विप्फुरंत णहयलि पेसिय सर  विज्जाहरदाहिणसेढीसर।
जिणिवि गरुडसोहंतधयग्गें  महि तिखंडमंडिय जिय खग्गें।
णियपयमुद्दिय दप्पुल्ललियहं  चूडामणि णाणामंडलियहं।
घत्ता—कोत्थुयमाणिक्कु दंडु अवरु  गय संखु चक्कु धणुहु वि[१०] पवरु॥
सिद्धइं सहुं सत्तिइ सत्त तहु  रयणइं मेइणिपरमेसरहु॥ १६॥

## 17

दुवई—अट्टसहास जासु वरदेवहं मणहररिद्धिरिद्धहं॥
सोलह वलणिहित्तदिण्णायहं रायहं मउडवद्धहं॥ छ॥
कइयवकरणालिंगणणिलयहं  घरि तेत्तियइं सहासइं विलयहं।
रुप्पिणि सच्चहाम जंवावइ  पुणु सुसीम लक्खण मंथरगइ।
हावभावविब्भमपाणियणइ  सई गंधारि गोरि पोमावइ।
पयडउ साहिय पुहइणरिंदहु  अट्ठमहाएविउ गोविंदहु।
वलएवहु माणवमणहारिहिं  अट्टसहासइं मंदिरि[७] णारिहिं।
रयणमाल गय मुसलु सलंगलु  चउ रयणाइं तासु बहुभुयवलु।
कसण धवल वेण्णि वि णं जलहर  पुरि दारावइ गय हरि हलहर।

४ PS °खंधें ५ A °सिंधुकंठ°, PS °सेंधुवकंठ° ६ BS °सोहति. ७ P °मडुलियइ. ८ P कोत्थुह°. ९ P माणिक्क. १० B मि पवरु, P वि अवरु

**17** १ B °देवहिं २ BK कइवय° but gloss in K कैतव, P कइविय. ३ A °णालियई. ४ A तेत्तियइ जेट्टे वरविलयइ, P तेत्तिय सहसइ वरविलयहं. ५ B सहु. ६ B एहउ. ७ A मदिरणारिहिं ८ AP धवल ण वेण्णि वि

**16** 4 *a* °गिव्वाणें कृष्णेन मागधवरतन्वादय साधिता इति सबन्ध. 5 *b* णवघण° श्रावणमेघ. 7 *b* कयदिग्विजयविलासें कृतदिग्विजयविलासेन 8 *a* सुरसरीत्यादि गङ्गासिन्धूपकण्ठ समीपनिकेतनानि. 12 *a* °मुद्दिय मुद्रिता अलकृताः चूडामणयः, दप्पुद्दलियइ दर्पोल्ललितानाम् 13 *b* गय गदा.

**17** 2 °दिण्णायइ दिग्गजानाम् 3 *a* कइयव° कैतवम्, *b* विलयइ वनितानाम्. 5 *a* °पाणियणइ जलनद्यः.

अहिसिंचिउ उविंदु सामंतहिं गिरि व घणोहिं णवघणु सवंतहिं ।
थक्कउ पहु विरेहइ केहउ तडिविलासु घरमेहु जेहउ ।
दिव्वकामसोक्खइं भुंजंतहु णेमिकुमारहु तहिं णिवसंतहु ।
अण्णहिं दिवसि कुसुमहुयहरिउ णियभत्तेउरेण परियारिउ ।
घत्ता—पप्फुल्लयवेल्लिपल्लवियवणि गयपाउसि सरयसमागमणि ॥
गउ जलकेलिहि हरि सीरधरु णामेण मणोहरु कमलसरु ॥ १७ ॥

## 18

दुवई—सोहइ चिक्कमंति जहिं धारु सलील मरालपंतिया ॥
णं रुंदारविंदकयणिलयहि लच्छिहि देहकंतिया ॥ छ ॥
पोमहि णियवहिणियहि गवेसिय णं चंदेण जोण्ह संपेसिय ।
उड्डिय भमरावलि तेहि अंगें अयसकित्ति णं कित्तिहि संगें ।
बहुगुणवंतु जइ वि कोसिल्लउ जइ वि सुपत्तु सुमित्तु रसिल्लउ ।
तो वि णालिणु सालूरें चप्पिउ जडपसंगु किं ण करइ विप्पिउ ।
जहिं सारसइं सुपीयलियगइं णं सरसिरिथणवट्टइं तुंगइं ।
तहिं जलकील करइ तरुणीयणु अहिसिंचंतु देउ णारायणु ।
कांहि वि थियलिय हारावलिलय सयदलदलजलकणसंसय गय ।
पयलिउं थणकुंकुमु पइ सित्तउ णावइ रइरसु रावियगत्तउ ।
काहि वि सुण्णुं वत्थु तणुघडियउ अणाययवत्तु सव्वु पीयडियउ ।
काहि वि सित्तहि पंचविहि व थेरे णं णिग्गय रोमावलिअंकुरे ।
काहि वि उव्हाणेउ कयलियवलुं कण्हजलंजलिहउ विरहाणलु ।

१ S omits °घर° १ B दियहि

18 १ B कयणिलहिं K कयणिवलहि but gloss कृतनिलयाया २ ABS देहकंतिया ३ B पहु S तहिं ४ B सुसुउ ५ B °णालिण ६ BP वहइ ७ B काइ ८ A पयसित्तउ B पइ सित्तउ K पइ सित्तउ and gloss भर्ता K records *a p:* पय पाठे जलसिक्त S पयइसित्तउ T पयसित्तउ जलसिक्त ९ A सण्हु १ BK पायडिउ ११ A तियवेल्लिहे वर P णिव Als णववेल्लिहे वर १२ B वरु १३ B °अंकुरु १४ ABAls उण्हाणउ P ओज्झाणउ १५ P °पलु

10 *b* णवघणु नवजलम्. 13 *a* भडु जरासंधः 14 *b* सरयसमागमणि शरत्कालागमने

18 1 मरालपंतिया हंसश्रेणि 2 रुंदारविंदकयणिलयहि विस्तीर्णकमले कृतनिलयाया लक्ष्म्याः 3 *a* पोमहि इत्यादि लक्ष्म्याः पद्मायाः चन्द्रेण भ्राता ज्योत्स्ना प्रेषिता इव 4 *a* तहि अंगें तस्या हंसपङ्क्तेः अङ्गेन 5 *a* कोसिल्लउ कर्णिकायुक्तः *b* सुमित्तु सूर्यः रसिल्लउ मकरन्दयुक्तः 6 *a* सालूरें भेकेन 7 *a* सुपीयलियगइं पीतशरीराणि *b* सर जलम्, °वट्टइं पृष्ठानि 9 *b* सयदलदल कमलपत्रे 10 *a* पइ भर्ता 11 *a* तणुघडियउं शरीरसंलग्नम् 12 *a* थर मरा मिश्रितः 13*a* कयलियवलु कवलितवल

काँहि वि दिण्णुँ कण्णि णीलुप्पलु　　　गेण्हइ णाइ णयणवइहवहलु ।
का वि कण्हतणुकंतिहि णासइ　　　बलदेवहु धवलत्तें दीसइ ।
कंठि लग्ग क वि णेमिकुमारहु　　　णाइं अहिंस धम्मवित्थारहु ।
घत्ता—तहिं सच्चहामदेविइ सहइ　　　ण विज्झसिहरि रेवाणइइ ॥
अइसरसवयणरोमंचियउ　　　णीरें णेमीसरु सिंचियउ ॥ १८ ॥

## 19

दुवई—जो देविंदचंदफणिवंदिउ तिहुयणणाहु वोल्लिओ ॥
सो वि णियंविणीहिं कीलंतिहिं जलकीलाजलोल्लिओ ॥ छ ॥
देवें चारुचीरु परिहंतें　　　तरलतरंगणयणेहिं णियंतें ।
पुणु वि तेण तहि कील करंतें　　　उप्परि पोत्ति घित्त विहसंतें ।
णिप्पीलहि कडिल्लु परिवोल्लियं　　　थिय सुंदरि णं सल्लें सल्लिय ।
णारिउ णउ मुणंति पुरिसंतरु　　　जो देवाहिदेउ सइं जिणवरु ।
जासु पायधूलि वि वंदिज्जइ　　　तहु ओल्लणिय किं ण पीलिज्जइ ।
ता देवेण भणिउ णउ मण्णिउं　　　पेसणु दिण्णउं किं अवगण्णिउं ।
भणु भणु सच्चभामि सच्चउं तुहुं　　　किं कालउं किउं जरकमलु व मुहुं ।
ता वीलावसमउलियणयणइ　　　उत्तउं उत्तरु तहु ससिवयणइ ।
बहुकल्लाणणाणविहिथुण्णइं　　　जइ वि तुम्ह पुण्णइं संपुण्णइं ।
तो वि ण एहु महापहु जुज्जइ　　　एएं महुं सरीरु णिरु झिज्जइ ।
किं पइं संखाऊरणु रइयउं　　　किं सारंगु पणामिवि लइयउं ।
किं तुहुं फणिसयणयलि पसुत्तउ　　　जं कडिल्लु मज्झुप्परि घित्तउं ।
होसि होसि भत्तारहु भायरु　　　किं तुहुं देवदेउ दामोयरु ।
घत्ता—इय जं खरदुव्वयणेण हउ　　　तं लग्गउ तहु अहिमाणमउ ॥
णारायणपहरणसाल जहिं　　　परमेसरु पत्तउ झत्ति तहिं ॥ १९ ॥

१६ P काए　१७ PS कण्णे दिण्णु　१८ B णामि　१९ ABPS बलएवहो. २० B णामि
२१ S सच्चभाम°

**19** १ P तिहुवण°. २ P °ताल°. ३ BAls णिप्पीलेहि. ४ AS पव्वोल्लिय, BAls. पवोल्लिय, P पचेल्लिय. ५ S °देवु ६ ABPS उल्लणिय ७ BP सचहामे ८ PS एउ ९ B जिज्जइ १० PS पणावेवि ११ AP किं कणीससयणयले पसुत्तउ, S किं पइ फणि° १२ S देवदेव. १३ A लग्गउ तहो मणे अहिमाणगउ

14 *b* णयणवइहवहलु नेत्रवैभवफल गृह्णातीव 15 *a* णासइ प्रच्छाद्यते 17 *b* रेवाणइइ नर्मदानद्या

**19** 2 °जलोल्लिओ जलार्द्रीकृत 3 *b* णियतें पश्यता 5 *b* थियइत्यादि वस्त्रनिश्चोतनहीनकर्म मम कथितमित्यभिप्रायेण 7 *b* ओल्लणिय पोतिका ( स्नानशाटी ) 9 *b* जरकमलुव जीर्णकमलवत् 10 *a* वीला° व्रीडा, *b* ससिवयणइ चन्द्रवदनया

## 20

दुवई—चप्पिउ कुप्परेहिं फणिसयणु पणाविउ थामपावेंण ॥
धणु करि णिहिउ सखु आऊरिउ जसु वहिरिउं णिणावेंण ॥ छ ॥

महि थरहरिय डरिय णिग्गय फणि गयणगणि कंपिय ससि दिणमणि ।
थथविसद्दइ सरिसरतीरइं पडियइं पुरगोउरपायारइं ।
मुक्कियखभे भयवस गय गयवर गलियणिबधण णट्ठा हयवर ।
कण्णदिण्णकर महिणिवडिय णरे पडिय ससिहर सघर णाणाभर ।
हरिणा रयणकिरणविप्फुरियहि उप्परि हत्थु दिण्णु कंडछुरियहि ।
हल्लोहलउ णयरि सजायउ जंपइ जणु भयकंपियकायउ ।
वट्टइ पलयकालु कहिं गम्मइ किं हयदइयहु पसरइ दुम्मइ ।
तहिं अवसारि किंकरु गउ तेत्तहि अच्छइ घरि महुसूयणु जेत्तहिं ।
तेण तेत्थु पत्थाउ लहेप्पिणु दाणवारि विण्णविउ णवेप्पिणु ।

घत्ता—तुह किंकर वलिमइर घरिथि घरि णेमिकुमारें पइसरिवि ॥
धणु णाविउ जलयरु पूरियउ सयणयलि महोरउ चूरियउ ॥ २० ॥

## 21

दुवई—पइ रइयाइं जाइं परियाडिइ हयजणसवणधम्मइं ॥
पच्छहिं खणि कयाइं वलवंतें तिण्णि मि तेण कम्मइं ॥ छ ॥

सिंधसखसरु जो तहिं णिग्गउ तेण असेसु वि जणवउ भग्गउ ।
सच्चभाम पवियभिय पसिउ णिप्पीलिउं ण धीरु धरि थिउ ।
महिलइ णत्थि मतणेउण्णउ जणि पयडति ज पि पच्छण्णउं ।
चावपणामणु विसहरजूरणु वण्णिउं तेरउ सखाऊरणु ।
अवरु भणिउ णउ हरि सकरिसणु किह महु उप्परि घल्लहि णिवसणु ।
त णिसुणिवि हियउल्लउ कलुसिउ इय पहुउ णेमीसें विलसिउ ।
ता कण्हेण कयउं कालउ मुहु णउ दाइज्जयोत्ति कासु वि सुहु ।

20 १ PS कोप्परेहिं २ A धरहरिय ३ P omits खम ४ P कर ५ S omits ण in रयण° ६ APS °दहवहो ७ B महसूअणु ८ A मवए. ९ AP णामिउ

21 १ BS वि २ B सिंथ° ३ B सच्चहाम P सचिहाम ४ A णिप्पीलिऊण ५ S °पणावणु ६ AP ववसिउ ७ BPS दायज्ज°

20 1 पणाविउ प्रणम्रीकृतम्. 4 *b* पायारइं प्राकारा 5 *a* गय गता नष्टा 6 *a* कण्णदिण्णकर कराभ्यां कर्णौ पिधाय *b* ससिहर शिखरे सहितानि 12 *b* घरि आयुधशालायाम्.

21 1 परियाडिइ अनुक्रमेण सवणधम्मइं कर्णस्वभावानि, बधिरत्व कृतमित्यर्थ 3 *a* सिंध प्रत्यञ्चा 7 *a* णउ हरिस्स हरिणे सकरिसणु बलभद्रोऽपि न 9 *b* दाइज्जयोत्ति स्वगोत्रसुतौ

बलएवेण भणिउं लइ जुज्जइ मच्छरु तेत्थु भाय णउ किज्जइ।
जसु तेए कंपइ रविमंडलु पायहि जासु पडइ आहंडलु।
सगिरि ससायर महि उच्चल्लइ जो सत्त वि सायर उत्थल्लइ।
जासु णाउं जगि पुज्जु पहिल्लउं कुसुमसयणु तहु फणिसयणुल्लउ।
खुब्भइ सखु सरासणु पिंजणु किं सुहडत्तें णियमहि णियमणु।
घत्ता—हलहर दामोयर बे[13] वि जण ता मंतिमत्तें विहिदिण्णमण ॥
जिणबलेंपविलोयणगलियमय ते चित्तकुसुममहिभवणु गय ॥ २१ ॥

## 22

दुवई—मंतिउ मतिमंतु गोविंदें लहु काणाणि णिहिप्पए ॥
कुलवइ सत्तिवंतु तेयाहिउ जइ दाइउ ण जिप्पए ॥ छ ॥

पइ मि मइं मि सो समरि जिणेप्पिणु भुंजेसइ महिलच्छि लएप्पिणु।
त णिसुणिवि सकरिसणु घोसइ णारायण णउ पहउं होसइ।
चरमदेहु भुवणत्तयसामिउ सिवपवीसुउ सिवगइगामिउ।
परमेसरु पर णउ संतावइ रज्जु अकज्जु तासु मणि भावइ।
रज्जु पथु दावियभयजरयहं धूमप्पहतमतमपहणरयहं।
रज्जें जइ माणुसु वेहविर्येउं अम्हारिसहुं रज्जु गउरवियउं।
जिणु पुणु तिणसमाणु मणि मण्णइ रायलच्छि दासि व अवगण्णइ।
जइ पेच्छइ णिव्वेयहु कारणु तो पविदिर्यभडसघारणु।
करइ णाहु तवचरणु णिरुत्तउ ता महुमहणें कवडु णिउत्तउ।
तणुलायण्णवण्णसंपण्णी जयेंवइदेविर्डयरि उप्पण्णी।
मग्गिउ उग्गसेणु सुवियक्खण रायमइ त्ति पुत्ति सुहलक्खण।
घत्ता—णिरु सालंकार सारसरस भुयणयलि पयडसोहग्गजस ॥
परमेसरि सुणिहिं मि हरइ मइ णं वरकइकव्वहु तणिय गइ ॥ २२ ॥

८ AP पथु. ९ APS पडइ जासु १० PS ओत्थल्लइ. ११ ABPS णामु १२ ABPS खुब्भउ. १३ AP बेण्णि जण १४ AP °मत्तसदिण्णमण १५ A जिणवर°

**22** १ APS भासइ. २ B वेहावियउ ३ P तेणु समाणु, S तणसमाणु. ४ PS पचेंदिय°. ५ P बइवइ°, K जयवय°. ६ AP °गब्भि. ७ P सपण्णी ८ P राइमइ. ९ P तणि गई

10 *a* जुज्जइ मत्सरो न क्रियते इति युज्यते योग्य भवति 13 *a* णाउ नाम. 14 *b* णियमहि नियमित सुभटत्वेन निश्चित किं करोषि. 15 *b* मतिमत्तविहिदिण्णमण मन्त्रिमन्त्रविधिदत्तमनसौ. 16 *b* चित्तकुसुममहिभवणु चित्रकुसुममन्मथशालागृहम्.

**22** 1 मतिमइ मन्त्रिणा मन्त्रः, णिहिप्पए स्थाप्यते 2 कुलवइ कुलपतिः. 7 *a* रज्जु इत्यादि राज्य नरकाणा मार्गः. 12 *b* जयवइ इत्यादि उग्रवंशोत्पन्नोग्रसेनजयवतीसुता, राज्मितिरित्यर्थे. 14 *a* सारसरस सारा चार्थी सरसा च.

## 23

दुवई—पत्थिय माहवेण महुराबइघरु गपिणु सपइहहो ॥
सुय तेरी मरालगयगामिणि ढोयहि णेमिणाहहो ॥ छ ॥

त आयण्णिवि कसहु ताए दिण्ण घाय गोविंदहु राए ।
ज ज काइ मि णयणाणदिरु ज ज घरि अम्हारए सुदरु ।
त त सव्वु तुहारउं माहव धीयइ किं जियवइरिमहाहव ।
अवरु वि देवदेउं आमाइउ कहिं लब्भइ बहुपुण्णविराइउ ।
ता मडवि चामीयरघडियइ पचवण्णमाणिक्कहिं जडियइ ।
कचणपकयकेसरवण्णहि अग्गुत्थलउ छुडुं करि कण्णहि ।
जयजयसद्दें मगलघोसें वधिणदाणकयविहलियतोसें ।
णाहविवाहकालि णर ससि रवि आय सुरासुर विसहर खयर वि ।
पडुरदेवगइ वरणियसणु कडयमउडमणिहारविहूसणु ।
दंडाहयपहुपडहणिणाए णच्चतें सुरवरसघाए ।
कामपाससंकासलयासुय पहु परिणेहु चल्लिउ पत्थिवसुय ।
सुदरेण सुहयत्तणरूढें ताम तेण मणिसिबियारूढें ।
थिरसोरसणसमुट्ठियकलयलु वइवेढिउं अवलोइउ मिगउलु ।
घत्ता—अहिंसियघोयसुरमहिहरिण ता सहयरु पुच्छिउ जिणवरिण ॥
भणु भणु कंदतइं भयगयइं किं रुब्भइ णाणामिगसयइं ॥ २३ ॥

## 24

दुवई—ता भणिय णरेण पारद्धियवद्दहयाइ काणणे ॥
पयइ तुह विवाहकज्जागयणिवपारद्धभोयणे ॥ छ ॥

हरियइ धरियइं वाहसहासें देवदेव गोविंदाएसें ।

23 १ AP पत्थिउ २ ABPS मरालगइगामिणि ३ AP तुम्हारउ ४ B °वयरि° ५ S देवदेउ ६ B छुडु किर ७ A देवगवर° ८ B परियणहु चलिउ ९ ABP समुट्ठिउ १ S मृगउलु ११ S मृगसयइं

24 १ A °रव°

23 1 सपइहहो शोभायुक्तस्य 3 *a* कसहु ताए आर्षपुराणे उग्रवंशोत्पन्नोग्रसेनराजा कथितः, तदभिप्रायेण तस्य राज्ञोऽपि कंसनामा पुत्रोऽस्ति, अन्यथा स्वगोत्रमध्ये विवाहो न घटते 8 *b* छुडु मुद्रिका क्षिप्ता 9 *b* विहलिय दरिद्राः 13 *b* परिणहु परिणेतुम्, 15 *a* ओरसण अवरसन शब्दः *b* वइवेढिउ वृतिवेष्टितम्, 16 *a* घोयमहिहरिण धौतमेरुणा *b* सहयरु सहचरो भृत्यः

24 2 विवाहेत्यादि विवाहकार्यागतराज्ञां भोजननिमित्तं धृतानि 3 *a* वाह° व्याधा भिल्लाश्च

आणियाइं सालणयणिमित्तें ता चिंतइ जिणु दिव्वें चित्तें ।
जे भक्खंति मासु सारंगहं ते णर कहिं मिलंति सारंगहं ।
खद्धउ जेहिं पिसिउ मोराणउं तेहि ण कियउं वयणु मोराणउं ।
जंगलु जेहिं गसिउं तित्तिरयहु ते पेच्छंति ण मुहुं तित्तिरयहु ।
जेहिं जूहु विद्धंसिउ रउरउ ते पावहिं णरउ णिरु रउरउ ।
कवलिउ जेण देहिदेहामिसु तहु खंडंति कालदूयामिसु ।
पासिउ कव्वु जेण तं हारिणु तहु दुक्किउ वड्ढइ णं हा रिणु ।
होइ अणंतदुक्खचिंतावइ जो पसुअट्ठिउं हुयवहि तावइ ।
सो अट्ठियसवंधु ण पावइ किं किज्जइ रायाणीपावइ ।
जहिं मूगमारणु मोक्खु णिउत्तउं तेण विवाहें महुं पज्जत्तउं ।

घत्ता—जइ इच्छह सासयपरमगइ तो संचेह परहंणि जंतं मइ ।
महु मासु परंगण परिहरहु सिरिपुप्फयंतु जिणु संभरहु ॥ २४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जरसिंघणिहणणं णाम
अट्ठासीतिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ८८ ॥

२ AP पिसिउ जेहिं, B जेण पिसिउ. ३ AP असिउ ४ AP भुजंति ५ AP कोलदेहामिसु
६ A वड्ढइ ७ AB लिंगमारणु ८ B इच्छइ ९ BP संचहु १० A परहण ११ P जंते
१२ P ° पुप्फदंतु १३ A जरसंघणिव्वाण १४ S अट्ठासीमो

4 *a* सालणय° शाकम्. 5 *b* सारंगह उत्तमशरीराणाम्. 6 *a* मोराणउं मयूरसबन्धि, *b* मोराणउ मम सबन्धि. 7 *b* तित्तिरयहु तृप्तियुक्तस्य सुरतस्य. 8 *a* रउरउ रुरूणाम्. 9 *b* कालदूयामिसु कालदूता आमिषम्. 10 *a* हारिणु हरिणानामिदम्, *b* हा रिणु ऋणमिव हा कष्टम्. 11 *a* °चिंतावइ चिन्तापतिः. 12 *a* अट्ठियसवंधु ण पावइ गर्भे एव विलीयते, *b* रायाणीपावइ राज्ञीप्राप्त्या. 15 *b* परंगण परस्त्री.

## LXXXIX

जोइवि हरिणइं तिहुयणसामिहि ॥
मणि करुणारसु जायउ णेमिहि ॥ ध्रुवकं ॥

### 1

दुवई—एक्कहु तिर्सि णिमिसु अण्णेक्क वि जहिं प्राणिहिं[3] विमुच्चए ॥
तं भवविहुरकारि पलभोयणु महु सुवरु ण रुच्चए ॥ छ ॥

संसारु घोरु चिंततु संतु गउ णियणिवासु एव भणंतु ।
णाणें परियाणिउ कवडु सव्वु णारायणकउ मायापवंचु ।
रोहियससमूरसबराइं जिह धरियइं णाणावणयराइं ।
अवियाणियपरमेसरगुणेण कुद्धेण रज्जलुद्धेण तेण ।
णिव्वेयहु कारणि दरिसियाइं रोवंतइं वेवंतइं थियाइं ।
एए जीविएण असासएण किं होसइ परदेहें हएण ।
झायंतु एम मउलियकरेहिं संबोहिउ सारस्सयसुरेहिं ।
जय जीव देव भुयणयलमाणु पइं दिट्ठउ परु अप्पेहु समाणु ।
तुहुं जीवदयालुउ लोयबंधु लहु ढोयहि संजमभरहु खंधु ।
तुहुं रोसमुसाहिंसावहित्थु अणि पयडहि बावीसमउ तित्थु ।

घत्ता—अमरवरुत्ताइं णिज्जियमारहु ॥
वयणाइं लग्गाइं णेमिकुमारहु ॥ १ ॥

### 2

दुवई—तहिं अवसरि सुरिंदसंदोहें सिंचिउ विमलवारिहिं ॥
वीणाततिसहसंताणें गाइउ विविहणारिहिं ॥ छ ॥

उत्तरकुरुसिबियारूढदेहु ण गिरिसिहरासिउ कालमेहु ।
सोहइ मोत्तियहारें सिएण णहभाउ व तारावलिसिएण ।

---

1 १ P तिहुवण° २ AP णिमिसतिसि P णिविस तिसि Als णिमिसविसि ३ AP पाणहिं B पाणिहिं S प्राणहिं ४ B कज्ज° ५ P कारण ६ APS दरिसियाइं ७ APS अप्पयसमाणु ८ B °दयालुयु ९ S मरइ १ S अमरु.

2 १ APS °सताणहिं २ BK गायउ ३ P °हारिए ४ B भावउ

---

1 3 णि विसु निमेषमात्र तृप्ति 4 पलभोयणु मांसभोजनम् 6 *a* सबु सर्वम् 7 *a* रोहिय° रोहितमत्स्यः 10 *a* जीएण जीवितेन 14 *a* वहित्थु बहि स्थितम्.

रत्तुप्पलमालइ सोह देंतु  णं जउणाइहु जणमैल हरंतु ।
ससिसेयसियैयसोहासमेउ  ण अंजणमहिहरु तुहिणतेउ ।
सिरि वलईयवरमउडेण दित्तु  णं सो ज्जिं रयणकूडेण जुत्तु ।
पियवयणाउच्छियमित्तबंधु  णिच्छिंहुं सिढिलीकयपणयबंधु ।
पडुपडहसंखकाहलैरवेहिं  उच्चाइउ णरखयरामरेहिं ।
तरुसाहासयढंकियपयगु  फलरसणिवडियणाणाविहंगु ।
मंदारकुसुमरयपसरपिंगु  गुमुगुमुगुमुमंतपरिभमियभिंगु ।
कंकेल्लिलुलियदलवैलयतंबु  सहसंबयवणु फुल्लियैकैयंबु ।
गउ सईं पंरिलुंचिउ केसभारु  पडिवण्णउ दुद्धु जिणवइविहारु ।
तरुणीयणु बोल्लइ रोवमाणु  हा हा अत्थमियउ कुसुमबाणु ।
उप्पण्णहु एयहु बवगयाइं  हलि माइ तिण्णि वरिसहं सयाइं ।
सिवणंदणु ऊँज्जि वि सुँद्धु बालु  रिसिधम्महु एहु ण होइ कालु ।

घत्ता—एण विमुक्किया रायमई सई ॥
महुराहिवसुँया किह जीवेसई ॥ २ ॥

### 3

दुवई—चामरधवलछत्तसीहासणधरणिधणाइं पेच्छंहे ॥
णिंहे जरतणसमाइं मणि मण्णिवि थिउ मुणिमग्गि दूसहे ॥ छ ॥

जिणु जम्में सहुं उप्पण्णबोहि  हलि वण्णइ को एयहु समाहि ।
सावणपवेसि ससिकिरणभासि  अवरण्हइ छट्ठइ दिणि पयासि ।
चित्ताणक्खत्तइ चित्तु धरिवि  छट्ठोववासु णिब्भंतु करिवि ।
सहुं रायसहासें हासहारि  जायउ जहुत्तचारित्तधारि ।
माणवमणमइलणधंतमाणु  संजमसंपैण्णचउत्थणाणु ।
अच्चंतवीरैतवतावतविउ  वलएववासुएंवेहि णविउ ।

५ S °द्दहु. ६ P जणमणु, S जणमलु ७ A °सिचय°, B °वत्थ for सियय°, S °सिअय°. ८ AB विरइय° ९ S व for ज्जि १० B णिच्छिह ११ B °काहलरवेहिं १२ B °कुदरय°. १३ B °वयल° १४ S °कलवु. १५ ABPS आलुंचिउ १६ B अत्थिमियउ. १७ B अज्ज. १८ B सुद्दु. १९ B उग्गसेणसुअ in second hand.

3 १ B °सिंहासण°. २ B पिच्छहो ३ B णिच्छउ जरतणाइ मणि मण्णिवि. ४ A °सपत्त°, B °सपुण्ण°. ५ A °धीर°, B °धीरु ६ B °वासुएवहिं

2 6 *a* °सियय° सिचय वस्त्रम्, *b* तुहिणतेउ चन्द्रयुक्तो गिरिः. 8 *b* णिच्छिहु नि स्पृहः. 10 *a* °पयगु सूर्यं.

3 4 *a* ससिकिरणभासि शुक्लपक्षे 5 *a* चित्तु धरिवि मनोव्यापार संकोच्य.

पिंडहु कारणि णिद्धाइ णिट्ठु   अण्णहिं दिणि बारावइ पइट्ठु ।
वरयत्तणरिंदहु भवणि थक्कु   ण अब्भँतरि भासुरक्कु ।
परमेट्ठिहि णवविहपुण्णठाणु   तहु दिण्णउ तेणाहारदाणु ।
माणिक्कविट्ठि णवकुसुमवासु   गंधोअयवरिसणु देवघोसु ।
दुंदुहिणिणाउ जिणु जिमिउ जेत्थु   जायाइं पंच चोज्जाइं तेत्थु ।
माहवपुरि मेल्लिवि जंतु जंतु   पासुयपएसि पय देंतु देंतु ।
छप्पण्ण दियहं हयमोहजालु   वोलीणहु तहु छम्मत्थकालु ।

घत्ता—कुसुमियमहिरुह छिंडियसावय ॥
पत्तो जइवइ रेवयपव्वय ॥ ३ ॥

## 4

दुवइ—पविउलवेणुमूले आसीणउ जाणियजीवमग्गणो ॥
तयचरणग्गलग्गधाराहयदुद्धरकुसुममग्गणो ॥ छ ॥

परियाणिवि चलु संसारु विरसु   रसगिद्धिलुद्धु णिज्जिणिवि सरसु ।
परियाणिवि धुउ परमत्थरूउ   आसत्तु कवि णिज्जियउ रूउ ।
परियाणिवि सुद्धु परियालियसद्दु   जोईसरेण णियमियउ सद्दु ।
परियाणिवि मोक्खु विमुक्कगंधु   एक्कु वि ण समिच्छिउ तेण गंधु ।
परियाणिवि सिद्धहु णत्थि फासु   णिज्जिउ णेमिं बहुविहु वि फासु ।
अवइण्णियाहि सिसुचंदसियहि   आसोयमासि पडिवयदियहि ।
णक्खत्ति चारुचित्ताहिहाणि   पुव्वण्हयालि पयलंतमाणि ।
गुणभूमिसुणि तिहुयणपहाणि   चडियउ तेरहमइ सालु ठाणि ।
उप्पण्णउ केवलु दलियकम्मि   उट्ठियँ घंटारवेँ कम्मि कम्मि ।

घत्ता—चलिय आसण हरिसुप्पिल्लिओ ॥
जिणसंथुइमणो इंदो चल्लिओ ॥ ४ ॥

---

७ A ण अब्भतरि माभासुरक्कु ८ B °हुडि ९ B गंधोवय° P गंधोयपवरिसणु १ P पुरे. ११ B °पदेसे १२ B दियहइं हउ १३ AB जयवई १४ B रेवइ° १५ P पव्वय

4 १ BAls चरणग्ग° २ P परियाणेविणु संसारु ३ AS णिज्जियउ P णिज्जिउ ४ S धुउ ५ S °रूउ ६ BP णेमे ७ A बहुलिहिं ८ A पडिवइय° ९ B तिहुवण° १ S उट्ठिउ ११ BS घंटारउ १२ AS चलिय १३ A संथुउ मणे

---

12 *b* गंधोअय गन्धोदकम् 14 *a* माहवपुरि द्वारवतीम् 16 *b* सावय श्वापदम् 17 *b* रेवयपव्वय ऊर्जयन्तगिरिम्.

4 4*a* धुउ परमत्थरूउ शाश्वतपरमार्थरूपमात्मा *b* आसत्तु इत्यादि रूपे आत्मनि आसक्त तथा सति नेत्रेन्द्रियं जितम्. 6 *b* समिच्छिउ वाञ्छितः 8 *a* अवइण्णियाहि अवतीर्णायां प्रतिपदि

## 5

दुवई—वहुमुहि वहुयदंति वहुसयदलपत्तपणच्चियच्छरे ॥
आरूढउ करिंदि अइरावइ चिलुलियकण्णचामरे ॥ छ ॥

दंडउ—विणयपणयसीसो सुरेसो गओ वंदिउं देवदेवो अताओ असाओ महाणीलजीमूयवण्णो पसण्णो ॥ १ ॥

गणहरसुरवंदो अमंदो अणिंदो जिणिंदो मइंदासणत्थो महत्थो पसत्थो असत्थो समत्थो ससत्थो अवत्थो विसत्थो ॥ २ ॥

वियलियरयभारो गहीरो सुवीरो उयारो अमारो अछेओ अभेओ अमेओ अमाओ अरोओ असोओ अजम्मो ॥ ३ ॥

विसहरधरसंरुद्धणाणादुवारंतरो पंडुडिंडीरपिंडुज्जलुद्दामभाभूरिणा चामरोहेण जक्खेहिं विज्जिज्जमाणो ॥ ४ ॥

अमरकरविमुक्कंतपुप्फंजलीगंधलुद्धालिसामंगणो देवेसामंगणाणच्च-णारद्धगेयज्झुणीदिण्णतोसो ॥ ५ ॥

सयलजणपिओ धम्मवासो सुभासो हयासो अरोसो अदोसो सुलेसो सुवेसो सुणासीरईसो ससीरीसिरीसंथुओ ॥ ६ ॥

सुरवरतरुसाहासुराहासमिल्लो जयंको जणाणं पहाणो जरासंध-रायारिभीसावहो भिण्णमायाकयंको ॥ ७ ॥

पविउलपरंभामंडलुब्भूयदित्ती विहिज्जंतघोरंधयारो विराओ विरेहंतछत्तत्तओ पत्तसंसारपारो ॥ ८ ॥

अमरकरणिहम्मंतभेरीरवाहूयतेलोक्कलोयाहिरामो सुधीमो सुणामो अधामो अपेम्मो सुसोम्मो ॥ ९ ॥

कलिमलपरिवज्जिओ पुज्जिओ भावणिंदेहिं चंदेहिं कप्पामरिंदाहमिं-देहिं णो णिज्जिओ भीमपंचिंदियत्थेहिं णिग्गंथपंथस्स णेयारओ ॥ १० ॥

5 १ P वहुभुयदले २ A आरूढ करिंदे ३ P अइरावण ४ P वंदिओ ५ PS अतावो. ६ PS असावो. ५ P मइंदासण°. ६ A समत्थो असत्थो, P समग्गो समत्थो ७ ABS सुधीरो. ८ P अमायो ९ AP °वर° for धर° १० P दिव्व°. ११ S °जणपीओ. ११ P पविउलपभा-मडल°. ११ AB सधम्मो सुथुव्वतणामो अवामो १२ AP सुसम्मो. १३ PS °पचेंदिय°.

5 3 असावो अशाप' 4 °मइंदासण° सिंहासनम्, ससत्थो सशास्त्र, अवत्थो नग्नः. 5 अमारो अकन्दर्प 6 पडु° श्वेत. 7 °सामगणो कृष्णप्राङ्गण 8 ससीरीसिरीसंथुओ बलभद्र-सहितेन विष्णुना स्तुत 9 सुराहासमिल्लो सुशोभासहित. 10 भिण्णमायाकयको भिन्नमाय इति कृत. अङ्को चिह्नं यस्य.

कलसकुलिससखकुसमोयसयलिंदवत्तीधरित्तीधरामहातीरिणी लक्खणालंकिओ वक्कभावेण मुक्को रिसी अजेवो उज्जुओ सिद्धत्थो सुसत्थो ॥ ११ ॥

जणमणगयसल्लयाण कयतो महतो भणतो कणताण ताणेण हीणाण दुक्खेण रीणाण पहू जिणो कम्मवाहीण वेज्जो ॥ १२ ॥

घत्ता—सुरवरवंदिओ महहु महाहिय ॥
सिवपयवासुओ देवो माहिय ॥ ५ ॥

## 6

दुवई—णिम्मलणाणवंत सम्मत्तवियक्खण चरियमणहरा ॥
वरदंसाइ तासु एयारह जाया पवर गणहरा ॥ छ ॥

साहुहु सव्वंह सपयरयाइ जहिं पुव्वावियहुइं चउसयाइं ।
पासुयभिक्खासणभिक्खुयाह एयारहसहसइ सिक्खुयाह ।
परिगणियइ अट्ठसयाहियाइ अप्पत्थि परत्थि सया हियाइ ।
पण्णारह सय अवहीहराह केवलिहिं मि जाणियसवराह ।
ससोहियवम्महसरवणाह एयारह सय सविउव्वणाह ।
मणपज्जयणाणिहिं जहिं पयासु एक्के सएण ऊणउ सहासु ।
परवयणविणासविराइयाह वसुसमइ सयाइ विवाइयाह ।
चालीससहासइ सजईहिं जहिं एक्कु लक्खु मंदिरजईहिं ।
परिवड्ढियवयपालणरईहिं लक्खाइ तिण्णि वरसावईहिं ।
सखाय तिरिय सुरवर असख वंदति पढइ महल असख ।
जहिं पइसइ लोउ असेसु सरणु तहिं किं वण्णिज्जइ समवसरणु ॥

१४ Als °सइलिंदवती° P °सइलिंदवत्ती° १५ BS धरत्ती १६ P अजुवो १७ BP देउ १८ AP समाहिय

6 १ B °णाणवत्त २ BAls चरियघणहरा S चरियघण मणहरा ३ B वरयत्ताइ ४ A सव्वइ सजयरयाइ P सुव्वयसजयरयाइ ५ S सहइ ६ P omits this foot. ७ B अवहीसराइ ८ ABKS सहस विउव्वणाइ B has इ for य in second hand ९ S वक्कर १ P ससख

13 सयलिंदवत्ती मेरुयुक्ता भूः धरा पताका अजवो उज्जुओ वाकायाभ्यामवक्र 14 °सस याण कयंतो सशल्यस्येटक 15 b महहु त्व पूजय 16 b माहिय मायै लक्ष्म्यै हितं यथा भवति, लक्ष्मीवृध्यर्थमित्यर्थं

6 1 चरिय° चारित्रेण 3 a सपयरयाइ मोक्षसंपद्रतानि 4 a भिक्खुयाह भोजकानाम्. 5 b अप्पत्थि इत्यादि आत्मार्थे परार्थे च सदा हितानि 7 a वणाइं व्रणानाम्.

घत्ता—जियकुरारिणा वसुमइहारिणा ॥
णेमी[11] सीरिणा णविवि मुरारिणा ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—धम्माधम्मकम्मगइपुग्गलकालायासणामहं ॥
पुच्छिउ किं पमाणु[1] परमागमि चउदहभूयगामहं[2] ॥ छ ॥

किं खणविणासि किं णिच्चु एक्कु किं देहत्थु वि कम्मेण मुक्कु ।
किं णिच्चेयणु चेयणसरूउ किं चउभूयहं संजोय[3]भूउ ।
किं णिग्गुणु णिक्कलु णिव्वियारि किं कम्महं कारउ किं अकारि ।
ईसरवसेण किं रयवसेण संसरइ देव संसारि केण ।
परमाणुमेत्तु किं सव्वगामि अप्पउ केहउ भणु भुवणसामि ।
त णिसुणिवि णेमीसरिण[4] वुत्तु जइ खण[5]विणासि अप्पउ णिरुत्तु ।
तो किं जाणइ णिहियउ णिहाणु वरिसह सए वि णिहिदव्व[6]ठाणु ।
णिच्चहु किर[7] कहिं उप्पत्ति मच्चु जंपइ जणु रइलंपडु असच्चु ।
जइ एक्कु जि तइ को सग्गि सोक्खु[8] अणुहुंजइ णरइ महंतु दुक्खु[9] ।
जइ भूयवियारु भणंति भाउ तो किर[10] किं लब्भइ महइविहाउ ।
णिक्किरियहु कहिं करणइं हवंति[11] कहिं पयइवंधु[12] जुत्ति वि थवंति ।
जइ सिवचलु हिंडइ भूयसत्थु तो कम्मकंडु[13] सयलु वि णिरत्थु ।
घत्ता—जइ अणुमेत्तउ जीवो पहउ ॥
तो सजीवउ किह करिदेहउ ॥ ७ ॥

## 8

दुवई—जीउ[1] अणाइणिहणु गुणवंतउ सुहुमु सकम्मकारओ ॥
भोत्तउ गत्तमेत्तु रयचत्तउ उड्ढगई भडारओ ॥ छ ॥

११ S omits घत्ता lines. १२ BK णेमि.

7 १ A कि पि माणु २ APS चोद्दह° ३ PS संजोए हूउ ४ APS णेमीसेण. ५ A खणि विणासि ६ APS णियदव्व°. ७ APS कहिं किर ८ S सग्गसोक्खु ९ P सक्खु. १० APS किर कहिं ११ P वहंति १२ A °बंधजुत्ति १३ A कम्मकडु

8 १ APS जीउ

15 b मुरारिणा कृष्ण इत्युत्तरेण सम्बन्ध.

7 6 a खण° क्षण. 9 b णिहिदव्व° निधिद्रव्यम् 12 a भाउ भावो जीवपदार्थ, b महइविहाउ मतिज्ञानविभाग स्वरूपम् 14 b कम्मकडु क्रियाकाण्डम् 16 b करिदेहउ चेदणुमात्र तर्हि गजशरीर महत्, तत्सर्वं सचेतन कथम्

8 2 भोत्तउ भोक्ता

इय वयणइं सवणसुहासियाइं आयण्णिवि जिणवरभासियाइं।
बलएवें गुणहरिसियमणेण सम्मंतु लइउ णारायणेण।
अरहंतहु केरी परम सिक्ख अवरेहिं लइय णिग्गंथदिक्ख।
अवरोह चारुसावयवयाइं णिम्मूढइं परिपालियदयाइं।
एत्थंतरि सुरगयवरगईइ वरदत्तु पंपुच्छिउ देवईइ।
सजमसलिलेण सुहाइयाइं चरियामग्गें घरु आइयाइं।
जइजुयलइं तिण्णि पलोइयाइं महु णयणइं णेहें छाइयाइं।
किं किर कारणु पणयाणुराइ ता भणइ भडारउ णिसुणि माइ।
पिहुजंबुदीवि इह भरहखेत्ति महुराउरि जिणवरघरपवित्ति।
सपयावपरज्जियवइरिसेणु णरवइ तहिं णिवसइ सूरसेणु।
तेत्थु जि पुरि वणिवइ भाणुदत्तु जउणायत्तांसइरइहि रत्तु।
तहु पढमपुत्तु णामें सुभाणु पुणु भाणुकित्ति पुणु अवरु भाणु।
पुणु भाणुसेणु पुणु सूरदेउ पुणु सूरदत्तु पुणु सूरकेउ।

घत्ता—तेत्थु महारिसी समजलसायरो ॥
जियपंचेंदिओ णाणदिवायरो ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—पणविवि अभयणदि णरणाहें णिसुणिवि धम्मसासण ॥
मुइवि सियायवत्तचलचामरमेइणिहरिवरासण ॥ छ ॥

णरवरसाहियसग्गापवग्गि लइयउं मुणितुं जइणिंदमग्गि।
वणिणाहु वि तवसिरिभूसियगु थिउ तेण समउ णिम्मुक्कसंगु।
जउणादत्तइ वणि फुल्लणीवि थउं लइयउ जिणदत्तासमीवि।
ते पुत्त सत्त वसणाहिहूय सत्त वि दुद्धर ण कालदूय।
णिद्धाडिय पाए पुरवराउ मयपरवस ण करिवर सराउ।
तें गय अवंति णामेण देसु उज्जेणिणयरु मणहरपवेसु।
तहिं सपत्ता रयणिहि मसाणु सुज्झंतकुडंदासिवसाणठाणु।

२ B समत्तु लयउ ३ B लयइय ४ AP वि पुच्छिउ ५ S तहिं आइयाइं ६ PS भाणुयत्तु
७ AP °दत्तासइरत्तचित्तु ८ S तहे

9 १ B सयायवत्त° २ P मुणिवउ ३ AP थउ ४ APS गय ते ५ S °पवेसु

9 a जइजुयलइ यतियुग्मानि 10 a महारिसी अभयनन्दी

9 5 a फुल्लणी वि फुल्लभीपे फुल्लकदम्बे 7 b सराउ तडागात् 9 b °सा ण° शुनक..

संणिहिउ तेत्थु सो सूरकेउ अवर वि पइट्ठु पुरु धवलकेउ।
तहिं चोर किं पि चोरंति जाम अण्णेक्कु कालंतरु होइ ताम।
पुरपए घसउक्कउ तासियारि सहमभडु भिच्चु तहु दढपहारि।
धणसिरि घरिणि सिसुहरिणदिट्ठि तहि तणुरुहु णामें वज्जमुट्ठि।
घत्ता—विमलतणूरुहा रइरसवाहिणी ॥
णामें मंगिया तहु पियगेहिणी ॥ ९ ॥

10

दुवई—तं सहुं पत्थिवेण महुसमयदिणागमणि वणं गया ॥
जा कीलंति किं पि सव्वाइ वि ता पिसुणा सुणिद्दया ॥ छ ॥
आरूढ दुट्ठ वरइत्तमाय मुहि णिग्गय णउ कहुयवर घाय।
सुकुसुममालइ सहुं अहमहंतु घरि थिउ सप्पु कुमारि देंतु।
ससिमुहि छउओयरि मज्झखाम संपत्त सुणइ णवपुप्फकाम।
आलिंगिय कोमलयरभुयाइ मणुं जाणिवि मोहिउ सासुयाइ।
तुह जोग्गी पवलमहुयररवाल मइं णिहिय कलसि वरपुप्फमाल।
अमुणंतिइ गइ अनुहारिणीहि पवलुण्णविसहरहि मइरिणीहि।
वालीइ करि करयलु णिहित्तु उग्गाइउ फणि चंडु रत्तणेत्तु।
हा हा करंति सा खद्ध तेण णिवडिय महियलि मुच्छिय विसेण।
तणवेंटइ वेढिवि पिहियणयण गयकायतेय मउलंतवयण।
पेसुण्णसलिलसरणरुहरीइ घल्लिय पिउवणि पावमायरीइ।
घत्ता—तावाओ पिओ भणइ सुमंगिया ॥
कहिं सामंगिया अच्छो मंगिया ॥ १० ॥

६ B धवलकेउ. ७ दुक्कु ताम.

**10** १ ABP ते सहं. २ B कडुयनयर, P कडुअयर ३ A कुमारु. ४ B सासोअरि, P छुच्छोयरि. ५ A °जाणेविणु मोहिउ. ६ ABPS वालय कुंभे. ७ A मलरस° ८ S मणति. ९ A तणुवेढियवेढिए, BAls. तणविंटए वेढिवि, P तणवेढिए. १० A तावागउ, B तावाइउ.

12 *a* घसइक्कउ ग्रामभञ्जकः. 14 *a* विमलतणूरुहा निर्मलस्य पुत्री.

**10** 2 पिसुणा पापश्रीः. 3 *a* वरइत्तमाय वधूश्वश्रूः. 5 *a* ससिमुहि चन्द्रवदना, छउओयरि क्षामोदरी. 7 *b* कलसि घटे. 8 *a* गइ स्वभाव गमनं, *b* पच्छण्णविसहरहि अभ्यन्तरसर्पाया 11 तणवेंटइ तृणवेष्टनेन. 13 *a* पिओ भर्ता वज्रमुष्टिः; *b* सुमंगिया शोभनाङ्गा. 14 *a* सामंगिया श्यामाङ्गी.

## 11

दुवई—कहिय अयियाइ विसहरदाढागरलेण घाइया ॥
पुत्तय तुज्झ घरिणि खयकालमुहे विहिणा णिवाइया ॥ छ ॥
अम्हेहिं मोहरसपरवसेहिं दड्ढी ण जीवियासावसेहिं ।
घल्लिय कत्थइ दुग्गतरालि पेयग्गिजालमालाकरालि ।
ता चल्लिउ सो सगरसमत्थु उक्खायतिक्खकरवालहत्थु ।
हा हे सुंदरि परिसोयमाणु परिभमइ पेयमहि जोवमाणु ।
ता तेण दिट्ठु तहिं धम्मणामु रिसि दूसहतवसंतावखामु ।
ओयाइउ भासिउ ताहु पम जइ देच्छमि पिययम कह व देव ।
चलचचरीयघुयकेसरेहिं तो पइ पुज्जमि इंदीवरेहिं ।
इय भणिवि भमंतें तहिं मसाणि अणवरयदिण्णणरमासदाणि ।
दिट्ठी पणइणि णासियगरेण मुणिवरतणुपवणोसहभरेण ।
जीवाविय जाय सचेयणंगि पेरिभिट्ठ रइगें ण रइगि ।
रमणीदंसणपुलइयसरीरु गउ कमलेंहं कारणि कहिं मि धीरु ।
गइ पिययमि मणीहियययेणु कयखेण पढुक्कउ सूरसेणु ।
घत्ता—तेण मणोहर तहिं तिह बोल्लिय ॥
जिह हियउल्लय तीइ विरोल्लिय ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—परपुरिसंगसंगरइरसियउ मयणवसेण णीयओ ॥
महिलउ कस्स होंति साहीणउ बहुमायाविणीयओ ॥ छ ॥
परिहरिवि चिराणउ चारु रमणु पडिवण्णउ तें सहु तीइ रमणु ।
तहिं अवसरि आयउ वज्जमुट्ठि कंताहि करि अप्पिय खग्गलट्ठि ।

11 १ APS तुज्झ २ P घरणि ३ A णिवेइया ४ A उक्खय° P omits th[is] foot ५ ABPS हा हा हे सुंदरि सोयमाणु ६ AS चिया° P चिहा° ७ APS जोयमाणु ८ B वि ९ B मइते but notes a p भमते या पाठ° १ A adds after this अवलोइ परबलरिउमहेण ११ AS परिमइ B पहमइ १२ B कमलहो १३ AP वीरु
12 १ B गमणु

11 4 *a* दुग्गतरालि वनमध्ये श्मशाने *b* पेयग्गि प्रेताग्नि 11 *b* मुणिवरेत्यादि मुनिशरीरपवनौषधेन जीविता 12 *b* परिमिट्ठ परिमृष्टा 14 *a* मणीहिययथेणु मन्नीहृदयचौरः 15 *b* तहिं तिह बोल्लिय तत्र तथा जल्पितम्

12 1 णीयओ नीचा, नीता गृहीता वा 2 मायाविणीयओ मायायुक्ता° 3 *b* रमणु क्रीडनम्

इच्छिवि[2] परणररइरसपवाहु सा ताइ जाम किर हणइ णाहु।
ता वणिसुएण उद्दिउ सवाहु णित्तिंसु पडिउ ण कालगाहु।
अगुलि खडिय ण पावबुद्धि कम्मुवसमेण वड्डिय विसुद्धि।
चिंतवइ होउ माणिणिरएण दरिसावियधणजीवियखर्पेण।
दुग्गधुँ पुरीसहिँ तणउ देहु मणु पुणु बहुकवडसहासगेहु।
रप्पिज्जइ किं किर कामिणीहिँ वद्दसियमंदिरि चूडामणीहिँ।
किं वयणें लालाणिग्गमेण अहरें किं वल्लूरोवमेण।
किं गरुयगडसरिसेण तेण माणिज्जतें थणथणजुएण।
परिगलियमुत्तसोणियजलेण किं किज्जइ किर सोणीयलेण।
पररत्तिइ गुणविद्दावणीइ पत्थतरि दढमायाविणीइ।
मइ खग्गु मुक्कु भीयाइ माइ धरइत्तहु उत्तरु दिण्णु ताइ।

घत्ता—घेत्तुं[6] परहण छुद्दु अकायरँ॥
ताम पराइया तें तहिं भायरा॥ १२॥

## 13

दुवई—दिण्ण तेहिं तस्स दविण तहिं तेण वि तं ण इच्छिय॥
हिंसालियवयणचोरत्तणपरयार दुगुछिय॥ छ॥

तणमिव मण्णिउ त चोरदव्वु भंगीविलसिउ वज्जरिउ सव्वु।
खलमहिलउ किं किर णउ कुणति भत्तारु जारकारणि हणति।
तियचरिउ कहतें भायरेण छिण्णगुलि दाविय ताहं तेण।
त णिसुणिवि मेल्लिवि मोहजालु सरकरिहरि दयदाढाकरालु।
वासिकिय पचेंदिय णियमणेहि णिव्वेइएहिँ वणिणदणेहि।
आसाविउ धम्ममहामुणिंदु तउ लइउ तेहिँ पणविवि जिणिंदु।
जिणदत्तहि खतिहि पायमूलि उवसामियभवयरसल्लसूलि।
वउ लइयउ लहु तणुअगियाइ णियचरियविसण्णइ भगियाइ।

२ A इच्छिय° ३ B खवेण ४ B दुग्गध ५ APS °मदिर°. ६ AP वित्त. ७ S अकारया.
८ B तहिं ते

**13** १ B तिण. २ B परयाइ. ३ Als तृय, S ग्रिनचरिउ. ४ A सरहरिकरिहयदाढा°.
५ ABP वउ ६ S तणुथगि°

5 *b* ताइ तया पञ्जनट्या 6 *a* सवाहु सबाहु. 10 *b* वद्दसिय° माया. 11 *b* वल्लूरोवमेण शुष्कमासोपमेन 12 *a* °गड° स्फोटक, *b* माणिज्जतें मुक्तेन. 15 *a* मइ इत्यादि मातः इत्यादरे, कपटेन वा, परनर दृष्ट्वा भीताया मम करात्पतित खड्गम् (?) 16 *a* घेत्तु गृहीत्वा

**13** 6 *a* सरकरीत्यादि स्मरकरिहरिर्दंताद्धाकराल इति धर्ममहामुनेर्विशेषणम्, दया एव दष्ट्रा. 9 *b* भवयरसल्लसूलि ससारजरशल्यस्फटके 10 *a* तणुअगियाइ क्षामशरीरया.

हिंतालताल्रतालीमहवि  उज्जेणीबाहिरि काणणंति ।
अच्छंति जाम सपुंण्णतुट्ठि  परमेट्ठि पणासियमोहपुट्ठि ।
अंचिवि णयकमलहि सव्वदिट्ठि  सपत्तु ताम सो वज्जमुट्ठि ।
पुच्छियउ तेण जिणसहु पणमिम  पव्वइअइ किं णयजोव्वणम्मि ।
मंगीयियाइ तवचरणहेउ  वज्जरिउ तेहिं त मयरकेउ ।
विद्दसिवि लइयउ रिसिचरित्तु  तहु गुरुहि पासि गुणगणपवित्तु ।
सोहम्मसग्गि सोहासमेय  धारित्तिवर घदकतेय ।
सणाहु करेप्पिणु लद्धसस  हुर जाया सत्त वि तीयविस ।

घत्ता—तीहिंतो चुया धादइसडए ॥
भरहे खेत्तए वरतरुसडए ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—णिच्चालोयणयरि अरिकरिकुंभुद्दलणकेसरी ॥
पत्थिउ चित्तचूलु तहु पियपणइणि णामें मणोहरी ॥ छ ॥

चित्तंगउ जायउ पढमपुत्तु  धयवाहणु पकयपत्तणेत्तु ।
अण्णेक्कु गरुलवाहणु पसत्थु  मणिचूलु पुप्फचूलु वि महत्थु ।
पुणु णंदणचूलु वि गयणचूलु  तेत्थु जि दाहिणसेढिहि विसालु ।
मेहउरि धणंजउ पहु दुधारि  सव्वसिरि णाम तहु हुणारि ।
कालेण ताइ ण मयणजुत्ति  धणसिरि णामें सजाणिय पुत्ति ।
तेत्थु जि णिण्णासियरिउपयाउ  आणदणयरि हरिसेणु राउ ।
सिरिकंत कंत हरिवाहणक्खु  सुउ सजायउ कमलाहचक्खु ।
साकेयणयरि ण हरि सिरीइ  सोहतु महतु सुहकरीइ ।
तहिं चक्कवट्टि पुरि पुप्फदंतु  तहु सुड्डु ढुड्डु तणुरुहु सुदंतु ।
पावेण तेण णवषेणुवण्ण  हरिवाहणु मारिवि लइय कण्ण ।

---

७ A संपण्णवुद्धि, BPS सपण्णवुद्धि  ८ AP मोहबुद्धि.  ९ APS पावज्जए  १ Als तें against Mss  ११ A तवचरित्तु  १२ B वायतीस  १३ P ताइतो  १४ B भारहे खित्तए
**14**  १ PS णिच्चालोए  २ ABP °कुंभयलदलण°  S °कुंभयलदलण°  ३ S पत्थिवु.  ४ AP तहो पणइणि घद णामें  ५ S गरुल°  ६ P णंदणु चूलु  ७ Als मेहउरे  S मेहउरु  ८ A तें छद्द सयवरि धामवण्ण

---

11 *a* हिंताल° पिण्डखर्जूरा  12 *b* पुट्ठि पुष्टि  14 *a* णिवसइ यूय निवसथ  19 *a* ताहिंतो तस्मात् सौधर्मस्वर्गात्  20 *b* सडए घने
**14**  1 णिच्चालोयणयरि नित्यालोकनगरे  7 *b* धणसिरि सा धनश्री हरिवाहन हत्वा चक्रिपुत्रेण सुदत्तेन गृहीता  10 *a* हरि सिरीइ श्रिया इन्द्र इव  11 *a* पुरि अयोध्यापुरे  12 *a* णववेणुवण्ण नीलवंशवदर्णा  *b* कण्ण धनश्री

सुचिरत्तचित्त संसारवासि भूयाणदहु जिणवरहु पासि ।
त पेच्छिवि ते चित्तगयाइ मुणिवर सजाया जइणवाइ ।
अरिमित्तवग्गि होइवि समाण अणसणतवेण पुणु मुइवि प्राण ।
घत्ता—सग्गि चउत्थए सामण्णा सुरा ॥
ते सजायया सत्त वि भायरा ॥ १४ ॥

## 15

दुवई—सत्तसमुद्दमाणु परमाउसु भुंजिवि पुणु वि णिवडिया ॥
कालें इद चद धरणिद वि के के णेय विहडिया ॥ छ ॥

इह भरहखेत्ति सुपसिद्धणामि कुरुजंगलि देसि विचित्तधामि ।
गयउरि धणपीणियणिद्धणीसु वणिणाहु सेयवाहणु णिहीसु ।
बधुमइ घरिणि तहि धम्मकखु हुउ सुउ सुभाणु णामेण संखु ।
तहिं पुरवरि राणउ गंगदेउ णंदयसघरिणिमणमीणकेउ ।
उप्पण्णाउ णदणु ताहं गंगु गगसुरु अवरु णावइ अणंगु ।
पुणु गगमित्तु पुणु णदवाउ पुणरवि सुणदु संपुण्णकाउ ।
पुणु णंदिसेणु णिद्धगराय अवरोप्परु णेहणिबद्धछाय ।
अण्णम्मि गब्भि सभूइ राउ उब्वेइउ वर णदणु म होउ ।
मा पहउ महु संतावयारि डहु पावयम्मु सतोसहारि ।
उप्पण्णउ रेवइधाइयाइ रायाएसें सचोइयाइ ।
बधुमइहि वालु विइण्णु गपि रक्खइ माणुसु भवियव्वु किं पि ।
णिण्णामउ कोक्किउ ताइ सो वि अण्णहिं दिणि उववणि सह भमेवि ।
छ वि ते भायर भुजति जाम णिण्णामु पराइउ तहिं जि ताम ।
घत्ता—संखें बोल्लिउ महु मणु रजहि ॥
आवहि बघव तुहु सहु भुजहि ॥ १५ ॥

९ A °तावेण १० AP पाण ११ B सजाया.

**15** १ A णय २ P घरणि. ३ P णदजस°. ४ APS णदिसेणु ५ S °ठाय. ६ S सभूये. ७ A adds after this जइ हुवइ एहु वरु खयहो जाउ, K writes it but scores it off ८ B दहु, P इहु. ९ S भवियत्थु (?) १० P omits छ वि. ११ B परायउ. १२ B तुहुं, S सह.

14 *b* जइणवाइ जैनवादिन 16 *b* सामण्णा सामानिका

**15** 4 *a* °पीणियणिद्धणीसु दरिद्रा नित्य प्रीणिता येन स. 5 *b* सुभाणु पूर्वोक्तसप्तभ्रातृषु मध्ये सुभानुचर', स खु बलभद्रजीव 6 *b* °मीणकेउ काम 7 *a* ताइ गङ्गदेवनन्दयशसोः 8 *a* णदवाउ नन्दपाद. 9 *a* णिद्धगराय स्निग्धाङ्गरागा 10 *a* अण्णम्मि अन्यस्मिन् सप्तमे पुत्रे गर्भे आगते सति. 13 *a* बधुमइहि शखस्य मातुः.

हिंतालतालतालीमहंति　उज्जेणीथाहिरि काणणंते ।
अच्छंति जाम संपुण्णतुट्ठि　परमेट्ठि पणासियमोहपुट्ठि ।
अवियि णवकमलहिं सव्वदिट्ठि　संपत्तु ताम सो चक्कमुट्ठि ।
पुच्छियउ तेण णियसहु वणम्मि　पव्वेज्जइ किं णवजोव्वणम्मि ।
मणीवियारु तवचरणहेउ　वज्जरिउ तेहिं त मयरकेउ ।
विद्धसिवि लइयउ रिसिचरित्तु　तहु गुरुहि पासि गुणगणपवित्तु ।
सोहम्मसग्गि सोहासमेय　भारित्तयत चउक्कदेय ।
सण्णासु करेप्पिणु लद्धसस　सुर जाया सत्त वि तीयतिस ।
घत्ता—तहिंतो चुया घादइसंडए ॥
भरहे खेत्तए वरतरुसंडए ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—णिच्चालोयणयरि अरिकरिकुंभदलणकेसरी ॥
पत्थिउ चित्तचूलु तहु पियपणइणि णामें मणोहरी ॥ छ ॥
चित्तगउ जायउ पढमपुत्तु　धयवाहणु पकयपसणेत्तु ।
अण्णेक्कु गरुलवाहणु पसत्थु　मणिचूलु पुप्फचूलु वि महत्थु ।
पुणु णहणचूलु वि गयणचूलु　तेत्थु जि दाहिणसेढिहि विसालु ।
मेहउरि घणजउ पहु हयारि　सव्वसिरि णाम तहु इट्ठणारि ।
कालेण ताइ ण मयणजुत्ति　घणसिरि णामें सजणिय पुत्ति ।
तेत्थु जि णिण्णासियरिउपयाउ　आणंदणयरि हरिसेणु राउ ।
सिरिकंत कंत हरिवाहणक्खु　सुउ सजायउ कमलाहचक्खु ।
साकेयणयरि ण हरि सिरीइ　सोहइ महंतु सुहकरीइ ।
तहिं चक्कवट्टि पुरि पुप्फदंतु　तहु सुद्धु दुट्ठु तणुरुहु सुदंतु ।
पावेण तेण णववेणुवण्ण　हरिवाहणु मारिवि लइय कण्ण ।

७ A संपण्णतुट्ठि, BPS संपुण्णतुट्ठि　८ AP मोहपुट्ठि　९ APS पावज्जए　१ Als तें against Mss　११ A तवचरित्तु　१२ B तायतीस　१३ P ताहंतो　१४ B भारहे खित्तए
14　१ PS णिच्चालोए. २ ABP कुंभयलदलण° S कुंभयलदलण°　३ S पत्थिवु. ४ AP तहो पणइणि सइ णामें　५ S गरुल°　६ P णंदणु चूलु　७ Als मेहउरे S मेहउर　८ A तं लइ सयवरि सामवण्ण

11 *a* हिंताल° पिण्डखर्जूर·　12 *b* °पुट्ठि पुष्टि　14 *a* णियसह यूथ निवसथ　19 *a* ताहिंतो तस्मात् सौधर्मस्वर्गात्　20 *b* संडए वने

14　1 णिच्चालोयणयरि नित्यालोकनगरे. 7 *b* घणसिरि सा धनश्री हरिवाहनं हत्वा चक्रिपुत्रेण सुदंतेन गृहीता　10 *a* हरि सिरीइ श्रिया इन्द्र इव　11 *a* पुरि अयोध्यापुरे. 12 *a* णव वेणुवण्ण नीलवर्णा *b* कण्ण धनश्री·

सुचिरत्तचित्त संसारवासि　　भूयाणदहु जिणवरहु पासि ।
त पेच्छिवि ते चित्तगयाइ　　मुणिवर संजाया जइणवाइ ।
अरिमित्तवग्गि होइवि समाण　　अणसणतवेण पुणु मुइवि पैाण ।
घत्ता--सग्गि चउत्थए सामण्णा सुरा ॥
ते संजायया सत्त वि भायरा ॥ १४ ॥

## 15

दुवई--सत्तसमुद्दमाणु परमाउसु भुंजिवि पुणु वि णिवडिया ॥
कालें इह चइ धरणिइ वि के के णेय विहडिया ॥ छ ॥
इह भरहखेत्ति सुपसिद्धणामि　　कुरुजंगलि देसि विचित्तधामि ।
गयउरि धणपीणियणिद्धणीसु　　वणिणाहु सेयवाहणु णिहीसु ।
बंधुमइ घरिणि तहि धम्मकंखु　　हुउ सुउ सुभाणु णामेण संखु ।
तहि पुरवरि राणउ गंगदेउ　　णंदयसघरिणिमणमीणकेउ ।
उप्पण्णउ णंदणु ताहं गंगु　　गंगासुरु अवरु णावइ अणंगु ।
पुणु गंगमित्तु पुणु णंदवाउ　　पुणरवि सुणंदु संपुण्णकाउ ।
पुणु णंदिसेणु णिद्धगराय　　अवरोप्परु णेहणिबद्धछाय ।
अण्णम्मि गब्भि संभूइ राउ　　उव्वेइउ वरु णंदणु म होउ ।
मा पहउ मज्झु सत्तावयारि　　डर्हु पावयम्मु सतोसहारि ।
उप्पण्णउ रेवइधाइयाइ　　रायाएसें सच्चोइयाइ ।
बंधुमइहि चालु विइण्णु गंपि　　रक्खइ माणुसु भवियव्वुं किं पि ।
णिण्णामउ कोक्किउ ताइ सो वि　　अण्णहिं दिणि उववणि सह भमेवि ।
छ वि ते भायर भुजति जाम　　णिण्णामु पराइउ तहिं जि ताम ।
घत्ता--संपें बोल्लिउ मज्झु मणु रंजहि ॥
आवहि बधव तुहुं सेंहुं भुजहि ॥ १५ ॥

९ A °तावेण. १० AP पाण ११ B सजाया.

**15** १ A ण य. २ P घरणि. ३ P णदजस°. ४ APS णदिसेणु. ५ S °छाय. ६ S सभूये ७ A adds after this जइ हुवइ एहु वरु सयहो जाउ, K writes it but scores it off. ८ B दइ्ढ, P इड्ढ. ९ S भवियत्वु (?). १० P omits छ वि ११ B परायउ. १२ B हुहुं, S सइ

14 *b* जइणवाइ जैनवादिनः. 16 *b* सामण्णा सामानिकाः.

**15** 4 *a* °पीणियणिद्धणीसु दरिद्रा नित्य प्रीणिता येन स　5 *b* सुभाणु पूर्वोक्तसप्तभ्रातृषु मध्ये सुभानुचरः, संखु शंखभद्रजीवः. 6 *b* °मीणकेउ काम. 7 *a* ताइ गङ्गदेवनन्दयशसोः. 8 *a* णंदवाउ नन्दपाद. 9 *a* णिद्धगराय स्निग्धाङ्गरागाः. 10 *a* अण्णम्मि अन्यस्मिन् सप्तमे पुत्रे गर्भे आगते सति 13 *a* बंधुमइहि श्रावस्य मातु..

भायरवयणें उवसतभाउ णिक्किउ णवयसहि पुत्तु जाउ।
णिण्णामउ ओहच्छइ ण भंति तें वासवतणयहि मणि भक्ति।
इय णिसुणिवि चल परिचत्त फारु ससारु असारु सरीरु भारु।
छ वि णियंणदण पावज्ज लेवि थिय मिच्छासजमु परिहरेवि।
सो सखु वि सहु णिण्णामएण ण्हायउ मुणिवरदिक्खामएण।
सुव्वय पणवेप्पिणु सजइंड जायउ णवयसारिवइंड।
ए सत्त वि दढपडिवद्धपणेय अण्णहि मि जम्मि महु होंतु तणय।
इय णवयसइ बद्धउ णियाणु को णासइ विहिलिहियउ विहाणु।
कालें जतें सयलइ मुयाइ वहमेइ दिवि अमरत्तणु गयाइ।
सोलहसमुद्दमुसाउयाइ पुणु तहि होंतइ सव्वइ चुयाइ।
सो सखणामु बलएउ जाउ रोहिणिहि गब्भि आयवइ राउ।

घत्ता—छुहधयलियघरि घणपरिपुण्णए ॥
मयवइदेसइ णयरि दसेण्णए ॥ १८ ॥

## 19

दुवई—जाया देवसेणराएण सुया धणयविगब्भए ॥
सा णवयसं पुत्ति देवइ णामेण पसिद्धिया जए ॥ छ ॥

वरमलयदेसि पुरि भद्दिलंकि पासायतुगि वियलियकलकि।
धणरिद्धियत्तु तहिं वसइ सेट्ठि वइसवणसरिसु णामें सुदिट्ठि।
रेयइ तहु सेट्ठिणि अलयणामें हूई पीणत्थणि मज्झखाम।
छह तणुरुह देवइगब्भि जाय लक्खणलक्खिय ते चरमकाय।
दरिसियसज्जणसुहसगमेण इदाएसें णिय णइगमेण।
वणिघरिणिहि अप्पिय मइणयरि कलहोयसिहरकीलतखयरि।

५ S णिक्किउ ६ P जस पुत्तु ७ B ठहरच्छइ in first hand and ठुइ इच्छइ in second hand S ओच्छइर Als पहु अच्छइ against Mss ८ S वासवणयहि, omits म ९ A परिचत्तपारु १ S सरीरु ११ S रवणदण १२ A °परिहर° १३ A दसइ P दसमए १४ P दसण्णवे

19 १ P णदजस २ A महिलदेसे ३ B णाउं ४ B खाम ५ B भद्दिणयरि ६ B सिहरि

5 *a* भायरवयणें लघुभ्रातृवचनेन *b* णिक्किउ निर्दयत्वर 6 *a* ओहच्छइ एष तिष्ठति *b* तें इत्यादि तेन कारणेन वासवपुत्र्या मनसि अक्षमा 7 *a* फारु स्फार. प्रचुर· ससारः त्यक्तस्तै 9 *b* दिक्खामएण दीक्षामृतेन 17 *b* दसण्णए दशार्णे

19 3 *a* भद्दिलक्कि भद्रिलनाम्नि 4 *b* वइसवणसरिसु धनदसम 7 *b* णिय नीता णइगमेण नैगमदेवेन 8 *a* वणिघरिणिहि रेवतीनाम्नी अलकाया *b* कलहोय° सुवर्णम्.

सिसु देवदत्तु पुणु देवपालु पुणु अणियदत्तु भुयवलैविसालु ।
अण्णेक्कु वि पुत्तु अणीयपालु सत्तुहणु जित्तसत्तु वि जसालु ।
जरमरणजम्मविणिवारणेण हूया रिसि केण वि कारणेण ।
पिंडत्थिं णयरि घरि घरि पइट्ठ चिरभवतणुरुह पइं माइ दिट्ठ ।
वियलियथणथण्णें सित्त[11] देहु तें कज्जें तुह उप्पण्णु णेहु ।
पुव्विल्लि[12] जम्मि चलगरुडकेउ पेच्छेवि सयंभु पहु वासुदेउ ।
तवचरणजलणहुयकामएण वद्धउ णियाणु णिण्णामएण ।
एही दावियवसुहद्धसिद्धि आगामि जम्मि महु होउ रिद्धि ।

घत्ता—कप्पि[16] सुरो हुउ चुउ किसलयभुए ॥
रिसि णिण्णामउ आयण्णहि सुए ॥ १९ ॥

## 20

दुवई—कंसकेढोरकंठमुसुमूरणभुयबलदलियरिउरहो ॥
णिवजरसिंघगरुयजरतरुवरसरजालोलिहुयवहो ॥ छ ॥

भीसणपूयणथणरत्तलित्तु घरु आय कायवहणेक्कचित्तु ।
उत्तुंगतुरगमसिरकयंतु जमलज्जुणभंजणमहिमहंतु ।
उप्पाडियमायावसहसिंगु णित्तेइकयखयदिणपयंगु ।
उड्डाविय जउणासरविहंगु करतिक्खणक्खणत्थियभुयंगु ।
धोरेउ धराधरधरणवाहु कमलावइहु सिरिकमलणाहु ।
तुह आयउ तणुरुहु रिउविरामु णारायणु णवघणभसलसामु ।
त णिसुणिवि सीसें देवईइ गुरु वंदिउ सुविसुद्धइ मईइ ।

७ P भुयवलि. ८ B सत्तुहण. ९ B पिंडत्थए पुरि घरि. १० P °घणथण्णें. ११ ABS सित्तु. १२ ABS पुव्विल्ल°. १३ A णिच्छेवि, S पच्छेवि. १४ A सयपहु, B सइभु, S सइभू. १५ P वासुएउ. १६ BAls कप्पसुरो.

**20** १ PS °कठोर°. २ PS °जरसंध°. ३ B °गरुव°. ४ A °पहणेक°, S °महणेक्क°. ५ AS उत्तुगु तुरगासुरकयंतु, P उत्तुगत्तुरगासुरकयंतु ६ S °वसहिसगु ७ B णित्तेइयकय°, S णित्ते-कय°. ८ A °वल्लहो. ९ B घणघण°.

12 *a* पिंडत्थि आहारार्थम्. 14 *b* सयंभु स्वयंभूः तृतीयनारायण 17 *b* किसलयभुए हे कोमलभुजे.

**20** 1 °कठमुसुमूरण° गलचूर्णक., °रहो रथ. 2 °सरजालोलिहुयवहो बाणजालश्रेणिवैश्वानर 5 *b* °खयदिणपयगु प्रलयकालदिनसूर्य.. 6 *b* °णत्थियभुयगु नाथितकालनाग. 7 *a* °धराधर° गिरि, *b* °कमलणाहु पद्मनाभो नारायण, कृष्ण इत्यर्थ. 8 *a* रिउविरामु शत्रुविच्छेदक. 9 *a* सीसें मस्तकेन

केहिं मि छइयाइ महब्भयाइ तहिं केहिं मि पयाणुव्वयाइ ।
भो साहु साहु विच्छिण्णकम्मु जिणु णेमि भणिउ पच्छण्णधम्मु ।

घत्ता—इय सोउ कह भरहसुरमाणिया ॥
णिसुहों पहसिया सुकुसुमवसणिया ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे देवइबलएवसमीयरदामोयर
भवावलिवण्णणं णाम एऊणणवदिमो
परिच्छेउ समत्तो ॥ ८९ ॥

१ S पच्छण्णु धम्मु ११ B भारह° १२ A णिसुह १३ P कुसुम° ( omits सु ) १४ A °समायरवण्णण १५ S °भवावली°

11 *b* पच्छण्णधम्मु धर्मो नेमिरूपेण स्थित इत्यर्थं 12 *b* भरहसुरमणिया भारतकुलोत्पन्नकौरव धयजाता देवकी १३ *a* णिसुहा पहसिया तूर्णा सभा च कथां श्रुत्वा हृष्टा

णिसुणिवि देवइंदेविहि भवइं पाय णवेप्पिणु णेमिहि ॥
हरिकरिसरहंहगरुडद्धयहु धम्मचक्कवरणेमिहि ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

दुवई—तो[४] सोहग्गरूवसोहावहि गुणमणिमहि महासई ॥
पभणइ सच्चभोम मुणिपुंगमं भणु मह जम्मसंतई ॥ छ ॥

भासइ गणहरु वियसियतरुवरि मालइगंधि मलयदेसंतरि ।
भद्दिलपुरि मेहरहु णरेसरु सूहउ णं पंचमु मणसियसरु ।
णंदादेवि चंदबिंबाणण णहपहरंजियदिच्चक्काणण ।
अवरु वि भूइसम्मु तहिं बंभणु कमलाबंभणिथणलोलिरमणु ।
णंदणु णाम मुंडसालायणु अइकामुय कामियबालायणु ।
जणि जायइ चुयचारुविवेयइ सीयलणाहतित्थि वोच्छेयइ ।
तेण जिणिंदवयणु विद्धंसिवि गाइभूमिदाणाइ पसंसिवि ।
कव्वु करिवि रायहु वक्खाणिउ मूढें राएं अण्णु ण याणिउं ।
किं किज्जइ घोरें तवचरणें किं णरिंद सणासणमरणें ।
विप्पहं वाहणु णयणाणंदिरु दिज्जइ कण्ण सुवण्णें सुंदिरु ।

घत्ता—मंचउ सहुं महिलइ मणहरइ रयणेंविहूसणु णिवसणु ॥
जो ढोवइ धम्में वभणह मेइणि मेल्लिवि सासणु ॥ १ ॥

## 2

दुवई—वीर वि णर तसंति घरदासि व णिवसइ गोमिणी घरे ॥
तस्स णरिंदचंद किं बहुएं होइ सुहं भवंतरे ॥ छ ॥

केसालुंचणु णिच्चेलत्तणु णग्गत्तणु तणुमलमइलत्तणु ।

---

1 १ ABPS पय पणवेप्पिणु २ S °कररुह° ३ A धम्मचक्कु ४ B ता. ५ ABP सच्चहाम. ६ B °पुंगव in second hand. ७ P विहसिय°. ८ S भद्दलपुरे ९ APS °कामुउ १० B कमीबालोयणु ११ S जाए १२ सुवण्णु. १३ P समदिरु १४ PS रयणु १५ S ढोयइ.

---

1 2 हरीत्यादि भालामृगेन्द्रादिध्वजायुक्तस्य 6 *b* पंचमु मणसियसरु पञ्चमो मारण. कामबाण 7 *b* °दिच्चक्काणण दिक्समूहमुखम्. 9 *b* अइकामुय अतिकामुक, कामियबालायणु वाञ्छितस्त्रीजन. 10 *a* चुयचारुविवेयइ च्युतचारुविवेके जने जाते सति, *b* वोच्छेयइ उच्छिन्ने सति. 12 *a* कव्वु शास्त्रम् 14 *a* विप्पह वाहणु विप्राणा वाहन दीयते, *b* कण्ण कन्या, सुवण्ण शोभनवर्णा.

2 2 सुह शुभम्, 3 *b* णग्गत्तणु णग्नत्वावरणत्यक्तम्

केहिं मि लइयाइं महव्वयाइं    तहिं केहिं मि पंचाणुव्वयाइं।
भो साहु साहु विच्छिण्णकम्मु    जिणु णेमि भणिउ पच्छण्णधम्मु।

घत्ता—इय लोउ कहइ भरहसुरमणिया ॥
णिसुणेवि पहसिया हुँकुसुमदसणिया ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे देवइबलएवसभौयरदामोयर
भवावलिवण्णणं णाम एक्कूणणवदिमो
परिच्छेओ समत्तो ॥ ८९ ॥

१० S पच्छण्णु धम्मु ११ B भारह° १२ A णिसह १३ P कुसुम° ( omits हुं ) १४ A °सभायरवण्णण १५ S °भवावली°

11 *b* पच्छण्णधम्मु धर्मो नेमिरूपेण स्थित इत्यर्थः 12 *b* भरहसुरमणिया भारतकुलोत्पन्नकौरव वधमाता देवकी १३ *a* णिसहा पहसिया नूनं सभा च कथां श्रुत्वा हृष्टा

णिसुणिवि देवइदेविहि भवइं पाय णवेप्पिणु णेमिहि ॥
हरिकरिसिरकॅहगरुडद्धयहु धम्मचक्केवरणेमिहि ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

दुवई—तो सोहग्गरूवसोहावहि गुणमणिमहि महासई ॥
पभणइ सच्चभोम मुणिपुगमं भणु मह जम्मसतई ॥ छ ॥

मालइ गणहरु वियसियतरुवरि मालइगंधि मलयदेसंतरि ।
भद्दिलपुरि मेहरहु णरेसरु सूहउ ण पंचमु मणसियसरु ।
णंदादेवि चदाविंबाणण णहपहरंजियदिच्छकाणण ।
अवरु वि भूइसम्मु तहिं बंभणु कमलावभणियणलोलिरमणु ।
णइणु णाम मुंडसालायणु अइकामुय कामियवालायणु ।
जणि जायइ चुयचारुविवेयइ सीयलणाहतित्थि वोच्छेयइ ।
तेण जिणिंदवयणु विद्धंसिवि गाइभूमिदाणाइ पसंसिवि ।
कव्वु करिवि रायहु वक्खाणिउं मूढें राएं अण्णु ण याणिउं ।
किं किज्जइ घोरें तवचरणें किं णरिंद सणासणमरणें ।
विप्पहं वाहणु णयणाणदिरु दिज्जइ कण्ण सुवण्णें सुंमदिरु ।

घत्ता—मंचउ सहुं महिलइ मणहरइ रयणविहूसणु णिवसणु ॥
जो ढोवइ धम्में बभणहं मेइणि मेल्लिवि सासणु ॥ १ ॥

## 2

दुवई—वीर वि णर तसंति घरदासि व णिवसइ गोमिणी घरे ॥
तस्स णरिंदचंद किं बहुएं होइ सुहं भवंतरे ॥ छ ॥

केसालुंचणु णिच्चेलत्तणु णग्गत्तणु तणुमलमइलत्तणु ।

---

1 १ ABPS पय पणवेप्पिणु. २ S °करसह°. ३ A धम्मचक्क ४ B ता. ५ ABP सच्चहाम. ६ B °पुगव in second hand. ७ P विहसिय° ८ S भद्दलपुरे. ९ APS °कामुउ. १० B कमीवालोयणु ११ S जाए १२ सुवण्णु. १३ P समदिरु १४ PS रयणु १५ S ढोयइ.

---

1 2 हरीत्यादि मालामृगेन्द्रादिध्वजायुक्तस्य 6 *b* पचमु मणसियसरु पञ्चमो मदन कामबाण. 7 *b* °दिच्छकाणण दिक्समूहमुखम्. 9 *b* अइकामुय अतिकामुक, कामियवालायणु वाञ्छितस्त्रीजनः. 10 *a* चुयचारुविवेयइ च्युतचारुविवेके जने जाते सति, *b* वोच्छेयइ उच्छिन्ने— 12 *a* कव्वु शास्त्रम्. 14 *a* विप्पहं वाहणु विप्राणां वाहन दीयते, *b* कण्ण कन्या, सुवण्ण शोभन—

2 2 सुहं शुभम्. 3 *b* णग्गत्तणु पर्णाद्यावरणत्यक्तम्.

माणुसु समणधम्मविग्गुत्तउ　　मरइ परत्तपिसाए भुत्तउं ।
अम्हारइ मईयालि महु पिजइ　　सिद्धउ मिट्ठउ मासुं गसिज्जइ ।
अम्हारइ णिच्चं वियलियमइरइ　　होइ सम्गु सउयामणिमइरइ ।
अम्हारइ गोसंउ विरइज्जइ　　जणणि वि बहिणि वि तहिं जि रमिज्जइ।
धम्मु परिट्ठिउ वेयपमाणें　　किं किर खवणएण अण्णाणें ।
कत्ताणेहणिबंधणवद्धउ　　जीहोवत्थासत्तिइ खद्धउ ।
जइ धुत्तागमकरणें णडियउ　　सत्तमणरइ डोडुं सो पडियउ ।
दीहरकालचक्कि णिद्धाडिइ　　इयर वि छ वि खिंदिउ परिवाडिइ ।
पुणु तिरिंचिव पुणु णरइ णिहम्मइ　　को दुक्खाइं ण पावइ दुम्मइ ।
विमलगंधमायंणगिरिणिग्गय　　जलकल्लालगलत्थियदिग्गय ।
णीरपूरपूरियमहिहिरदरि　　गंधावइ णामेण महासरि ।
ताहि तीरि ण ढुक्कियवेल्लिहि　　पसुमसुहरभैल्लकियपल्लिहि ।
सो सालायणु भवविब्भुल्लउ　　फासु णाम जायउ सबरुल्लउ ।

घत्ता—वर धम्मरिसिहि णिसुणेवि गिर मासाहारु मुंएप्पिणु ॥
वेयड्ढि पैयरअलयाउरिहि खेयरु हुयउ मरेप्पिणुं ॥ २ ॥

## 3

दुवई—पुरुंबलपत्थिवस्स जुइमालाबालालियतणुरुहो ॥
सो वि अणतवीरकहियामलतवणिरओ महाबुहो ॥ छ ॥

मरिवि दव्वसजउ रिसि भद्दवलु　　हुउ सोहम्मि लहिवि जिणवयहलु ।
खगमहिहरि रहणेउरपुरवरि　　पहुंहि सुकेउहि णहयरकुलहरि ।
पुत्ति सयपहाहि संभूउ　　सव्वभीम णं कामविहूइं ।

2　१ B धमणु　२ P °धम्मु　३ S °विगुत्तउ　४ AP महालि　S मइयाले　Als मइयलि
५ APS मासु वि खज्जइ　६ S नुच　७ B सउयामिणि°　८ S गोसवु विरजइ　९ P मि for जि
१०　AB डोड्डु　११ A °मायणि　१२ S °महिहरि　१३ S मल्लकी°　१४ S सा साला°　१५ B मुए-
विणु　१६ A पउर　१७ P मुएप्पिणु
　3　१ A पुरबल°　२ B पुहुहि　३ ABP सव्वहाम

4 *b* परत्तपिसाएं परलोकपिशाचेन　5 *a* मइयालि यज्ञकाले　*b* सिद्धउं निष्पन्नम्　6 *a* वियलिय मइरइ विगलितमतिपापया मदिरया　*b* सउयामणि मइरइ सौत्रामणियज्ञमदिरया　9 *b* जीहोवत्था सत्तिइ जिह्वोपस्थाशक्त्या भक्षित　10 *b* डोडु स्थूल　11 *b* इयर वि छ वि अन्येषु अपि षट्सु नरकेषु परिवाडिइ क्रमेण　13 *a* गंधमायण मलयाचल
　3　1 पुरुबलपत्थिवस्स महाबलराज्ञः　2 सो वि अतिबलनामा

णेमित्तियणरेहिँ तुहुं दिट्ठी पही वच्च णरिंदहु सिट्ठी ।
पुत्ति तुहारी सिय माणेसइ अद्धचक्कवट्टिहि पिय होसइ ।
परिणिय राए जायववंदें णायसेज्ज चप्पिवि गोविंदें ।
एवहिं मुक्की बहुभवकम्में महएविचणु लद्धउं धम्में ।
महुं केहाइ देवँ कयछम्मइं पभणइ रुप्पिणि भणु भणु जम्मइं ।
कहइ मुणीसरु इह दीवंतरि भरहवरिसि मागहदेसंतरि ।
सँमरिगामि विप्पु सोमिल्लउ लच्छीमइहि कंतु रिद्धिल्लउ ।
तहु सा वंभणि दप्पणु जोवँइ घुसिणपंकु मुहि मंडणु ढोवँइ ।
ताम समाहिगुत्तपडिविंवउं अहइ दिट्ठउं मुक्कविडंवँउं ।
घत्ता—पुव्वक्कयकम्मविहिण्णमइ भणइ लँच्छि उब्भेवि करु ॥
णिल्लँज्जु अमंगलु विद्दलउ किह आयउ मेरउ घरु ॥ ३ ॥

4

दुवई—खरसूयरसमाणु दुग्गंधु दुरासउ दुक्खभायणो ॥
किह मइं दिट्ठु एहु मलमइलिउ भिक्खाहारभोयणो ॥ छ ॥
दप्पिट्ठहि दुट्ठहि णिक्किट्ठहि एम चवंतिहि तैहि गुणभट्ठहि ।
मच्छियमिट्ठइ सुट्ठु अणिट्ठहि अंगु विणट्ठउं उंवरकुट्ठइ ।
तक्खणि सडियइं रोमइं पक्खइं भग्गइं णासावंसकडक्खइं ।
परिगलियउ वीस वि अंगुलियउ तणुलायण्णवण्णु खणि ढलियउ ।
रुहिरपूयकिमिपुंजकरंडउ देहु परिट्ठिउ मासहु पिंडउँ ।
पावयम्म पुरिलोएं तज्जिय वंधवेयणभत्तारविवज्जिय ।
जणि भिक्ख वि मग्गंति ण पावइ पाविट्ठहं को वण्णइ आवइ ।
भोयणु घणु हियवइ सँमरेप्पिणु मुय सा सुण्णालइ पइसेप्पिणु ।

४ S णेमिय°. ५ P तुम्हारी ६ S सय. ७ A देवि कयकम्मइ ७ S पहणइ ८ B रूपिणि ९ B मुणीरु १० P सोमरि°. ११ AS जोयइ १२ AS ढोयइ १३ P °गुत्तु १४ P °विडविउ १५ P बाल १६ B करि १७ S णिल्लु १८ B मेरए घरि

4 १ AP दुट्ठु दिट्ठु मल°. २ B एहउ ३ B चवतिहिं तिहिं ४ A मच्छिरसिट्ठहे. ५ P °लावण्ण°, S °लायण्णु ६ B °वणु ७ S उडउ ८ APS पुरलोए. ९ P बंधवजण°. १० APS सुयरेप्पिणु ११ S पएसेप्पिणु

6 *a* णेमित्तिय° नैमित्तिकै 7 *a* सिय लक्ष्मीम् 11 *b* अद्दइ दर्पणे, मुक्कविडवउ मुक्तकन्दर्प.. 15 °विहिण्ण° विघटिता, उब्भिवि ऊर्ध्वीकृत्य

4 4 *a* मच्छियमिट्ठइ मक्षिकामृष्टया 10 *a* भोयणु इत्यादि भर्तृरहस्य भोजन घन च स्मृत्वा, *b* सुण्णालइ शून्यगृहे.

णियघरइत्तहु मविरि सुवरि　　हूई वीहवेहें छुच्छुवरि ।
धाइय रमणहु उवरि सणेहें　　तेण वि सभयंबमकियवेहें ।
धल्लिय मच्छोडिवि घरप्रंगणि　　भगरुहिरु उच्छलिउ णहंगणि ।
मुयें तहिं पुंणु गहहजम्मतरु　　भुसउ भीसणु दुक्खु णिरंतरु ।
पुव्वभासें णयणपियारउ　　घरु भावतु सणाहहु केरउ ।
चउदडसिलधाए तासिउ　　गहहु बहुवंपेहिं विद्धासिउ ।
भयरहि पंडिउ मुउ सूयंरु जायउ　　पेक्खिवि थोरमासखघायउ ।
घत्ता—सो खडिवि पउलिवि घइ तलिवि समारमें सिंभिवि ॥
खद्धउ जीहिंदियलुद्धेहिं लोएहिं लुचिवि लुचिवि ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—मविरणामेगामि महकिहि मेच्छाघिणिहि हूया ॥
सूयंरु मरिवि पुत्ति दुग्गयतणू णामेण पूइया ॥ छ ॥
मायइ मइयइ मायामहियइ　　पालियकरुणाभावें सहियइ ।
बप्पु ताहिं कहिं जीवइं पावहि　　बहुवालिहदुक्खसंतावहि ।
विदिगिच्छासरितीरि अहिट्ठिहि　　मुणिहि समाहिगुत्तपरमेट्ठिहि ।
चिरु दप्पणि दिट्ठहु तहु सतहु　　पडिमाजोयठियहु मयवंतहु ।
दल मलय णिवडत णिवारइ　　चेलंचलपवणेणोसारइ ।
दुरियतिमिरहर णासियबहुभय　　मलइ चलेण कोमलकरपल्लव ।
सजमभाउ वहतइ सतइं　　जेण चाडु विरइउ गुणवंतहु ।
तासु किलेसु असेसु वि णासइ　　रविउग्गमणि धम्मु रिसि भासइ ।
घत्ता—तुहुं पुंसिइ जीवइं करहि वय मज्जु मासु महु वज्जहि ॥
दुज्जयंबल पचिंदिय जिणिवि जिणु मणसुद्धिइ पुज्जहि ॥ ५ ॥

---

१२ P देहवेह　१३ PS °चवकिय°　१४ BP °पगणे　१५ APS मव　१६ AP गय for पुणु　१७ AP बहुयएहिं　१८ P वढिउ　१९ APS सुयरु　२० AP तलिमउ　२१ APS छुवएण B °छुवएहिं　२२ APS लोएण लोएहिं　२३ P लुचिवि once

5　१ S °णामम्मामे　२ S omits मच्छघिणिहि　३ B सूअर　४ A मायासहियए.　५ P मावए.　६ B जीवहि　७ A विदिगिंछा° B विजिगिंछा° PS विजिगिन्छा°　८ P °हरे.　९ A दप्पणु　१० APS चरण　११ AS सजमसारु महतु वहंतइं B सजमसारु वहंतु वहतइं PAls सजमभारु महतु वहतइ　१२ BS पुच्चिय　१३ P omits °मल°　१४ S omits जिणु

---

11 *a* घरइत्तहु मह' सुदरि सुन्दरे　16 *b* वहुवएहिं छात्रै　17 *a* अयरहि सूपे; *b* पेक्खिवि पापिभिर्लोकैर्दृष्ट्वा　मासखघायउ माससमूह..　18 पउलिवि पक्त्वा　घइ घृते　समारमें समारोदकेन

5　3 *a* मायामहियहि मातृमाता ( मातामहा )　4 *a* पावहि पापिन्या　5 *a* अहिट्ठिहि मुने　9 *b* चाडु चाडुवचन विनयभ　11 पुंसिइ हे पुत्रिके　12 मणसुद्धिइ भावपूजया

## 6

दुवई—इय धम्मक्खराइं आयण्णिवि मेण्णिवि ताइ कण्णए ॥
अणुवयगुणवयाइं पंडिवण्णइं उवसमरसंपसण्णए ॥ छ ॥

मुणिपायारविंदु सेवंतिहि णियजम्मंतराइं णिसुणंतिहि ।
भोयदेहसंसारविहेयँउ हियउल्लइ वहिउ णिव्वेयउ ।
गामा गामंतरु हिंडंतिहि अज्जियाहिं सहुं जिण वदंतिहि ।
गयइ कालि जरकथाधारिणि पासुयपाणाहारविहारिणि ।
सिट्ठसिट्ठणिट्ठाइ सुणिट्ठिय त्रउं चरंति गिरिविवरि परिट्ठिय ।
पव्वि पव्वि उववासु करंती दुक्कियाइं घोराइं हरंती ।
अण्णइ वालइ वालवयंसिय पुण्णवंत तुहुं भणिवि पसंसिय ।
अणसणु केरिवि तेत्थु मुणिमंतिणि हूई अच्चुइंदसीमंतिणि ।
पणपण्णासपल्लथिरदेही रूवें जोव्वणेण सा जेही ।
तिहुयणि अण्णं ण दीसइ तेही त वण्णंती कइमइ केही ।
चविवि वियब्भदेसि कुंडलपुरि वासवरायहु सहसिरिमइउरि ।
आसि कालि जा होंति[10] वंभणि सा तुहु पवहु हूई रुप्पिणि ।

घत्ता—कोसलपुरि भेसहु पुहइवइ महि तासु पियं गेहिणि ॥
सोहग्गभवणचूडामणि व ण सिसिरयरहु रोहिणि ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—जायउ ताहं विहिं मि सिसुपालु कयाहियकंदभोयणो ॥
पसरियखरपयावें मत्तहु व चंडवहु तिलोयणो ॥ छ ॥

अण्णहिं दिणि[4] णेमित्तिउ भासइ जें दिट्ठें तइयच्छि पणासइ ।

6 १ S omits मण्णिवि. २ S omits पडिवण्णइं ३ B °रसपुण्णइए. ४ P °विंद. ५ B °विदेहउ. ६ ABP वउ ७ AP तेत्थु करेवि ८ S सा हेजी. ९ P दीसइ अण्ण ण. १० BS होंति. ११ S प्रिय

7 १ B सिसुवालु २ P °पयाउ, S °पयाउ ३ B चडयवहु, P चडु पहु ४ S दिणिहि णिमित्तिउ ५ AP विणासइ

6 4 a °विहेयउ विभेद. त्रिप्रकार. 7 a सिट्ठसिट्ठणिट्ठाइ महर्षिभिः कथितचारित्रेण. 9 a अण्णइ वालइ अन्यया स्त्रिया. 10 a मुणिमंतिणि पञ्चनमस्कारयुक्ता 15 भेसहु भेषजराजा. 16 सिसिरयरहु चन्द्रस्य

7 1 कयाहियकंदभोयणो कृतशत्रुकन्दभोजनः, तस्य भयाद्रिपवो वन गता इत्यर्थ. 2 मत्तहु व सूर्यवत्, चडवहु प्रचण्डाना वधकर्ता रुद्रवत्, त्रिनेत्रो वा चण्डी शतचण्डी पार्वती वधूर्यस्या 3 b तइयच्छि तृतीयनेत्रम्.

णियघरपंगणु मंदिरि सुंदरि　　हुई कीडंतें[11] कुम्भुंदरि ।
धाइय रमणहु उवरि सणेहें　　तेण वि सभयंचमक्कियदेहें[12] ।
घल्लिय बच्छोक्किवि[13] अरमोंणि　　अंगवहिय उच्छलिउ णहंगणि[14] ।
मुउ तहिं पुंणु गहइजम्मंतरु　　भुत्तउ भीसणु दुक्खु णिरंतरु ।
दुक्खभासें णयणपियारउ　　घर आयतु सणाहहु केरउ ।
वढइडसिलधाए तासिउ　　गहइडु बहुवएहिं विद्धासिउ ।
अयहिं पडिउ मुउ सुयंरु जायउ　　पेक्खिवि घोरमाससंघायउ ।

घत्ता—सो आढिवि पउलिवि मइ तलिवि[20] समारमें सिंधिवि ॥
अदउ जीहिंदियलुद्धएहिं लोएहिं[21] कुचिवि[22] कुम्भिवि ॥ ४ ॥

5

दुवई—मदिरणामंगामि मंडुक्किहिं मेच्छुधिणिहिं हूयया ॥
सुयेरु मरिवि पुसि दुग्गयतणू णामेण पूइया ॥ छ ॥

मायइ मइयइ मायोंमहियइ　　पालियकरुणाभावें सहियइ ।
चप्पु ताहि कहिं जीवइ पावहि　　बहुदालिद्दुक्खसंतावहि ।
विविगिच्छासरितीरि अहिद्विहि　　मुणिहिं समाहिगुत्तपरमेट्ठिहि ।
चिरु दुप्पेपि दिट्ठहु तहु संतहु　　पडिमाजोयट्ठियहु भयवंतहु ।
दस मसय णिवडंत णिवारइ　　वेलचलपवणेणोसारइ ।
दुरियतिमिरहर णासियवहुभय　　मलइ सलील कोमलकरपल्लव ।
सज्जमभारु वहंतहु संतहु　　झीण थाहु विरइउ गुणवंतहु ।
ताहु किलेसु असेसु वि णासइ　　रविउग्गमणि धम्मु रिसि भासइ ।

घत्ता—तुहु पुंत्ति जीवहं कराहि दय मज्जु माहु महु वज्जहि ॥
दुज्जयपंच पंचिंदिय जिणिवि जिणुं मणसुद्धिइ पुज्जहि ॥ ५ ॥

१२ P वेहवेह　१३ PS °चवक्किय°　१४ BP °णगणे　१५ APS मय　१६ AP गय for पुण　१७ AP बहुयएहिं　१८ P वढिउ　१९ APS सुयरु　२ AP तलियउ　२१ APS °लुद्धएण B °लुद्धएहिं　२२ APS लोएण लोएहिं　२३ P कुचिवि once.

5　१ S °णामगामे　२ S omits मच्छंधिणिहि　३ B सूअर.　४ A मायासहियए.　५ P °मावए.　६ B जीवहि　७ A विदिगिंछा°; B विविगिंछा° PS विचिगिच्छा°　८ P °सरे.　९ A दप्पणु　१ APS पाण　११ AS सजमसार महदु महंतहे; B सजमसार महंतु महंतहं PAls सजमभारु महंतु महंतहं　१२ BS पुत्तिय　१३ P omits °मज्ज°　१४ S omits जिणु

11 *a* घरइपंडु मध्ये　सुंदरि सुन्दरे　16 *b* बहुवएहिं छागैः　17 *a* अवडि कूपे; *b* पेक्खिवि पापिभिर्लोकैर्दृष्ट्वा; मासस घायउ माससमूह　18 पउलिवि पक्त्वा　मइ मृते　समारमें समारोदकेन

5　3 *a* मायामहियइ मातृमाता ( मातामही )　4 *a* पावहि पापिन्याः　5 *a* अहिट्ठिहि मुनेः　9 *b* थाहु चाटुवचन विनयश्च　11 पुत्तिइ हे पुत्रिके　12 मणसुद्धिइ भावशुद्धया

## 6

दुवई—इय धम्मक्खराइं आयण्णिवि भेण्णिवि ताइ कण्णए ॥
अणुवयगुणव्वयाइं पडिवण्णइं उवसमरसपसण्णए ॥ छ ॥

मुणिपायारविंदु सेवंतिहि णियजम्मंतराइ णिसुणंतिहि ।
भोयदेहसंसारविहेयेंड हियउल्लइ वड्ढिउ णिव्वेयउ ।
गामा गामंतरु हिंडंतिहि अज्जियाहिं सहु जिण वंदंतिहि ।
गयइ कालि जरकयाधारणि पासुयपाणाहारविहारिणि ।
सिद्धसिद्धणिद्धाइ सुणिद्धिय थंडें चरंति गिरिविवरि पणिद्धि ।
पव्वि पव्वि उववासु करंती दुक्कियाइ घोराइ हरंती ।
अण्णइ वालइ वालवयंसिय पुण्णवंत तुहु भणिवि पसंसिय ।
अणसणु करिवि तेत्थु मुणिमंतिणि हुई अच्चुइदसीमंतिणि ।
पणपण्णासपल्लथिरदेही रूवें जोव्वणेण सा जेही ।
तिहुयणि अण्णु ण दीसइ तेही तं वण्णंती कइमइ केही ।
चविवि वियब्भदेसि कुंडलपुरि वासवरायहु सिरि...
आसि कालि जा होंती वभणि सा तुहु पवहु हूई ...

घत्ता—कोसलपुरि भेसहु पुहइवइ मद्दि तासु पिय गेहिणि ।
सोहग्गभवणचूडामणि व णं ससिरयहु रोहिणि ॥ 6 ॥

## 7

दुवई—जायउ ताहं विहिं मि सिसुपालु कयाहि...
पसरियखरपयावें मत्तइ व चंडेवहु तिलो... ॥ छ ॥
अण्णहिं दिणि णेमित्तिउ भासइ जें दिट्ठें ...

तहु हत्थेण मरणु पावेसइ महिलुउ जमपुरु जाएसइ।
त सुइविरसु वयणु णिसुणेप्पिणु मायापियरइं तणउ लएप्पिणु।
सहसा सगयाइं दारावइ दिट्ठउ हरि सिरिकयमारावइ।
सइसाणि मालयलुयरिद्धउ बालहु तइयउ णयणु पणट्ठउ।
जाणिउं तक्खणि मायाताए पुत्तु मरेसइ महुमहघाए।
महिउ वारवार बोलग्गिवि पत्थिउ मेहिह पायहिं लग्गिवि।
महु तणुरुहहु रइयसुहिडाहहु पइं खमियव्वउ सउ अवराहहं।
त पडिवण्णउ कण्हें मणहरु ताइं गयाइं पुणु वि णियपुरवरु।
पइरिहि सउ अवराहहं पुण्णउ विसेंहिउ हरिणा महिहि दिण्णउ।
सो णिहणिवि तुहु परिणिय कण्हें आणिय दारावइ जसतण्हें।
त णिसुणिवि मुणिवरकुलें वंदिउ अप्पेंणु देविइ पुणु पुणु णिंदिउ।
घत्ता—ता जयवइ णमसियउ पुच्छिउ भावें मुणिवरु॥
आहासइ जलहरगहिरसरु णिसुणहि हुँइ समवतरु॥ ७॥

## 8

दुवई—जंबूणामदीवि पुव्विल्लविदेहइ पुक्खलावइ॥
वेसु असेसदेसलच्छीहरु पसमियमाणवावइ॥ छ॥

वीयसोयपुरि दमयहु वणियहु देवमइ त्ति घरिणि घणघणियहु।
देविल सुय सउमित्तहु दिण्णी पइमरणेण मोयणिछिण्णी।
मुणि जिणदेउ णाम आसंघिउ वम्महु ताइ तवेणवलंघिउ।
गुरुचरणारविंदु सुमरेप्पिणु कालि पउण्णइ तेत्थु मरेप्पिणु।
देवय णवपल्लवपायवणि उप्पण्णी मदरणदणवणि।

६ AS जमपुरे B समउव ७ S सुणेप्पिणु ८ B °वरिड्डिउ ९ P महए. १ B पण्णउं ११ P विसहिवि १२ AP कय महएवि पेमजलतण्हें १३ P कुइ १४ A अप्पउं, PS अप्पणु १५ PAls जयवइए १६ P मुणिवरु मावें १७ B सह

8 १ S पुव्विल्लविल्लवि° २ B °विदेवे ३ B असेसु ४ B °सोयउरि. ५ B देमइ ६ B घरिणी ६ PAls घणघणियहो ७ A सोयणि° ८ ABP तवेण विलंघिउ ९ P सुयरेप्पिणु

5 *a* सुइविरसु कर्णविरसम्. 6 *b* सिरिकयमारावइ श्रिया कृता मारापदा कामापदा येन सः 7 *a* मालयलुवरिड्डउ मालोपरि क्षिप्तम्. 9 *a* महिउ हरिः 10 *a* रइयसुहिडाहहु कृत सुहृदां दाहो यैः 12 *b* विसहिउं क्षमित 16 हुइ हे पुत्रि

8 1 आवइ आपत् 3 *a* दमयहु दमयस्य *b* घणघणियहु धन चतुष्पदं सुवर्णादि च तद्विद्यते यस्य 4 *a* सउमित्तहु सौमित्रस्य 5 *b* तवेणवलंघिउ तपसा उल्लंघितः 7 *a* देवय देवता उत्पन्ना, *b* मदरणदणवणि मेरुसंबंधिनि नन्दनवने

तहि भुंजंतिहिं सोक्खु सहरिसहं चउरासीसहास गय वरिसहं ।
पुणु महुसेणवंधुवइणामह तुहुं हूई सि पुत्ति सुहकामहं ।
वधुजसंक विहियजिणसेवहु अवर धूय सुंदरि जिणदेवहु ।
सा जिणयत्त णाम विक्खाई तुज्झु वयसुंल्लिय पियँ हूई ।
जिणकमकमलजुयलगयमइयउ वेण्णि वि संणासेण जि मुइयउ ।
पढमसग्गि तुहुं देवि कुवेरहु चिरसंचियसँकम्मसुदेरहु ।
पुणु वि पुंडेरिकिणिपुरि तरुणिहि वज्जें वणिएं सुप्पहघरिणि ।
तुहुं सुय सुमइ णाम संभूई तोँ णं धम्में पेसिये दूई ।
सुव्वय भिक्खोमग्गि पइट्ठी भवणंगणि चँडंति पइ दिट्ठी ।
सहुं पणिवाएं पय धोएप्पिणु दिण्णउं दाणु समाणु करेप्पिणु ।
अवरें वि तणुसतवियपयासें रयणावलिणामेणुववासें ।
मुय सणासें णिरु णिम्मच्छर हूई वंभलोइ तुहु अच्छर ।
घत्ता—इह जवूदीवइ वरभरहि इह खेयरकिइँ महिहरि ॥
उत्तरसेढिहि ससियरभवणि जणसंकुलि जंवूपुरि ॥ ८ ॥

**9**

दुवई—अरिकरिरत्तलित्तमुत्ताहलमंडियखग्गभासुरो ॥
खगवइ जंववंतु तहिं णिवसइ वलणिज्जियसुरासुरो ॥ छ ॥
जंवुसेणदेविहि गयवरगइ पुणु हूई सि पुत्ति जंवावइ ।
पवणवेयखयरहु कोमलियहि तुह मेहुणउ पुत्तु सामलियहि ।
णमि णामें कामाउरु कपइ पक्कहिं दिणि सो एम पजंपइ ।
वालकयलिकदलसोमाली माम माम जइ देसि ण साली ।

१० A भुजतें सोक्खु, B भुजतिहिं सोक्ख, P भुजति सोक्ख सहयरिसह ११ B विअसुल्लय १२ S प्रिय १३ ABS मइयउ १४ B °सकम्मसदेरहो, P सुकम्मसोंदेरहो १५ AP पुडरीकिणि-उरि, Als. पुडरीगिणि° against Mss, S पुडरिगिणिपुरि १६ B णामें. १७ B omits ता १८ B सपेसिय. १९ P °मग्ग पइट्ठी. २० P चडत. २१ S धोवेप्पिणु. २२ BS सुमाणु. २३ B अवर. २४ B °णामें उववासे २५ S खरयरकिइ. २६ B °कियमहिहरे. २७ P °सेहिहे.

9 १ A °लित्तरत्त°. २ AP हूई सुपुत्ति, S हूसि. ३ AP वाली

10 *a* वधुजसक वन्धुयथा नाम. 11 *b* वयंसुल्लिय सखी. 13 *b* चिरेत्यादि चिरसञ्चितस्वकर्मसौन्दर्यस्य, 'अनकन्दुकसौन्दर्योदावेत्' इति अनेन सूत्रेण आदेरत्य एत्वं, अत्रस्थाने एत्य, कदुक, गेंदुव, सौंदर्य, सुदेर. 17 *b* समाणु सन्मानपूर्वकम्. 21 ससियरभवणि चन्द्रकिरणयुक्ते गृहे

9 4 *b* मेहुणउ विवाहवाञ्छक, पुत्तु नमिनामा. 6 *a* वालकयलि° नवीनकदली, *b* साली कन्या.

धरो अवहरमि णेमि[4] बलदप्पें । त णिसुणेवि तेण तुह बप्पें ।
मच्छियविज्जइ सो खावाविउ । भाइणेउ ससुरें सतावियउ ।
किंणरपुरणाहेण ससेल्लें । आयेप्पिणु ससयणवच्छल्लें ।
मच्छियाउ विद्धंसिवि चित्तउ । जम्बुकुमारें ताव तहिं पत्तउ ।
णिरु गज्जंतु णाइ जयसायरु । जयधवलेंसुउ तेरउ भायरु ।
तेण असेलउ विज्जउ छिण्णउ । पडिभडभिमयरु दिसावलि दिण्णउ ।
णेमिणा सह दिणयरकरपविमलि । जक्खमालि गउ णासिवि णहयलि ।
तहिं अवसरि संगामपियारउ । आइवि कण्हहु अक्खइ णारउ ।

घत्ता—जंबुपुरि जंबवतखगहु जसुसेण पणइणि सइ ॥
रूवें सोहग्गें णिरुवमिय तहिं धीय जंबावइ ॥ ९ ॥

## 10

दुवई—ता सरसुच्छुदंडकोयंडविसज्जियसरवियारिओ ॥
रणि मयरद्धएण गरुडद्धउ कह वि हु ण मारिओ ॥ छ ॥

हरि असहंतु मयणबाणावलि । गउ जिणपयणिहिंचकुसुमंजलि ।
खयरागिरिंदणियंबु पराइउ । आणिउ जेंबवंतु अवराइउ ।
उयवासिउ दब्भासणि सुत्तउ । ताधायउ सिणेहसंजुत्तउ ।
जक्खिलु चिरभवभाइ सहोयरु । भासिवि तासु महासुकामरु ।
साहणविहि फणिखेयरपुज्जहं । खोहणिमोहणिमारणविज्जहं ।
गउ तियसालिउ तियसविमाणहु । लग्गु जणद्दणु मणियविहाणहु ।
मंतें खीरसमुद्दु रएप्पिणु । तहिं अहिसयणहु उवरि चडेप्पिणु ।
विज्जउ साहियाउ गोविंदें । पुणु रणि जुज्झिवि समउ खगिंदें ।
दुहु परिणिय कण्हें बलगावें । महएविसु दिण्णु सब्भावें ।

४ S अवहरेवि　५ P णिमि　५ A समल्लें　६ AP मक्खियाउ　७ B °कुमार.　८ S संपत्तउ
९ B णामि　१　BP °वइ　११ S मणिणा　१२ P महियले　१३ S आयवि　१४ AP जाहिं
10　१ S सरसुच्छदंड°　२ P कोदंड°　३ °णिहिदु　४ जसुवइ　५ AP गरुडसीहि
( B मीहि ) वाहिणिमई विज्जइ　६ S तियसाहिउ　७ AP विवाणहो ( P विहाणओ also )
८ S बलगामें

7 *a* णेमि नयामि　8 *a* मच्छियविज्जइ मक्षिकाविद्यया　9 *a* किंणरपुरणाहेण यक्षमालिना राज्ञा
14 *b* णारउ नारद

10　4 *a* °णियंबु तटम्　*b* अवराइउ अपराजित जेतुमशक्य　6 *a* जक्खिलु यदयचरः
7 *a* साहणविहि विद्यानां साधनविधि　8 *b* मणियविहाणहु देवकथितविधेः　9 *b* अहिसयणहु
उवरि नागशय्योपरि

तां जंपवइ सभेंवु सुणतिइ मुणिकमकमलजुयलु पणवंतिइ ।
घत्ता—भत्तिइ पणिवाउ कॅरंतियइ संचियसुहदुहकम्महं ॥
ता भणिउं सुसीमइ वज्जरहि महुं वि देव गयजम्महं ॥ १० ॥

## 11

दुवई—पभणइ मुणिवरिंदु सुणि सुंदरि धायइसंडदीवए ॥
पुव्विल्लम्मि भाइ पुव्विल्लविदेहि पहुल्लणीवए ॥ छ ॥
मंगलवइजणवइ मंगलहरि रयणंचियइ रयणसंचयपुरि ।
वीसदेउ पहु देवि अणुंधरि मुउ पियपसु रणि अरिकरिवरहरि ।
करि करवालु करालु करेप्पिणु उज्झाणाहं सहुं जुज्झेप्पिणु ।
पणइणि समउ पइट्ठी हुयवहि पयडियथावरजंगमजियवहि ।
विंतरसुरि खयरायलि हूई दससहससहं भुत्तविहूई ।
भवविब्भमि भमेवि इह दीवइ भरहखेत्ति पुणु सामरिगामइ ।
यक्खहु हलियहु रइरसवाहिणि देवसेण णामें तहु गेहिणि ।
तहि उप्पण्णी वरमुहसररुह जक्खदेवि णामें तहु तणुरुह ।
धम्मसेणु मुणि महियाणंगउ कयमासोववासु खीणंगउ ।
पय पक्खालेप्पिणु विणु गावें ढोइउ तासु गासु पइं भावें ।
घत्ता—अण्णहिं दिणि वणि कीलंति तुहु महिहरविवरि पइट्ठी ॥
तहि भीमें अजयरेण गिलिय मुय सयणेहिं ण दिट्ठी ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—हरिवेरिसतराले उप्पण्णी मज्झिममोयभूमिहे ॥
किह आहारदाणु णउ दिज्जइ जिणवरमग्गगामिहे ॥ छ ॥
तहिं मरेवि बहुसोक्खणिरंतरि णायकुमारदेवि भवणंतरि ।
पुणु इह पुव्वविदेहि मणोहरि देसि पुक्खलावइहि सुहंकरि ।

९ P जा. १० P समउ, S समयु ११ ABP मुणि वंदियउ सीसु विहणविए. १२ S करतिए.

**11** १ S रयणचिए २ B °सचिय°, P °संचिए ३ A वीसदउ ४ S वेंतरसुर. ५ S °गावए. ६ APS जक्खहो. ७ Als तुहु, PS तुहु ८ P धम्मसेण. ९ AP पक्खालेप्पिणु पय विणु १० AS अजगरेण

**12** १ B °वरसतराले.

**11** 2 °णीवए नीपे, कदंबे. 4 *a* वीसदेउ विश्वदेव. 5 *a* करि हस्ते. 6 *a* पणइणि अनुधरी, *b* °जियवहि °जीववधे अग्नौ. 7 *a* खयरायलि विजयार्धे 11 महियाणंगउ मथितकामः.

पुरिहि पुंडरीकिणिहि असोयहु सोमसिरिहि भुजियणिवमोयहु ।
सुय सिरिकंत णाम झोएप्पिणु जिणयत्तहि सेमीवि मउ लेप्पिणु ।
कणयावलिउववासु करेप्पिंणु सल्लेहणउत्तीइ मरेप्पिणु ।
उहुपब्भारपरज्जियचंदह हूइ देवि कप्पि माहिंदइ ।
अणणिहि जेट्ठहि णयणरविंदहु पुणु सुरद्ववट्टणहु णरिंदहु ।
तुहुं सुसीम सुय हरिघरिणित्तणु पत्ती भाइ परमगुणकित्तणु ।
पुणु लक्खणइ वियक्खणसारउ णियभवं पुच्छिउ देउ भडारउ ।
अक्खइ गणहरु धरिसियमेहइ जबूदीवइ पुव्वविदेहइ ।
पवरपुक्खलावइविसयंतरि सारि अरिट्ठणयरि कुवलयसरि ।
वासवराए वसुमइदेविहि सिसु सुसेणु जायउ सियसेविहि ।
ताए सउजमेण अइसाहउ सैयरसेणपासि तउ लइयउ ।

घत्ता—अइमहउववासवसेण सुय पुत्तसेंणेहें वसुमइ ॥
हूई पुँलिंदि गिरिवरकुहरि मिच्छत्तें मइलियमइ ॥ १२ ॥

## 13

दुवई—विहुउ ताइ कहिं मि तहिं काणणि सायरणंदिवंदणो ॥
चारणमुणिवरिंदु पणवेप्पिणु सिढिलियकम्मबंधणो ॥ छ ॥

सावयवयइं तेण तहि दिण्णइं उज्झियधम्मइं कम्मइं छिण्णइं ।
भत्तपाणपरिचायपयासें सवरि मरेप्पिणु तेत्थु सणासें ।
हूई हावभावविब्भमखाणि अट्ठमसग्गसुरिंदहु णाणि ।
पुणु इह भरहखेत्ति खयरायलि दाहिणसेढिहि चवयरुआलि ।
पुरि चंदउरि महिंदु महापहु तासु अणुधरि णामें पियसहु ।
तुहुं तहि कणयमाल देहुब्भव हूई हंसगसवीणारव ।
लइयउ पइ रइरमणरसालइ घरु हरियाहु सयंवरमालइ ।

२ S पुंडरिगिणिहि ३ A असोयहे ४ A णिवमोयहे S नृव° ५ S समीहे ६ ABP वउ चरेप्पिणु B धरेप्पिणु ८ A सरडुप्पणहो ९ B तुह १० B माय ११ A लक्खणपवियक्खण° १२ ABS मउ P भड १३ ABP सायरसेणपासि S सायरेण पासित्तउ १४ A °सिणेहें १५ P पुलिंदिए

13 १ S तित्थ २ A महिंद ३ ABPAls °रमणविसालए

12 8 *a* छुइ° द्युति· *b* कप्पि स्वर्गे 9 *a* णयणरविंदहु कमललोचनस्य *b* सुरट्ठवट्टणहु सुराष्ट्रवर्धनस्य 10 *a* हरिघरिणित्तणु कृष्णभार्यात्वं धजादेव्यर्थे 11 *a* लक्खणइ लक्ष्मणया 13 *b* सारि उत्तमे 15 *a* ताए वासवराज्ञा 16 वसुमइ राज्ञी

13 4 *b* सवरि भिल्ली 8 *a* देहुब्भव पुत्री 9 *b* वरु भर्ता

अण्णहिं दिणि तिहुयणचूडामणि वंदिवि सिद्धकूडि जमहरमुणि ।
वोलीणाइं भवाइं सुणेप्पिणु मुत्तावलिउववासु करेप्पिणु ।
तइयसग्गि देविंदहु वल्लह हूई पुण्णविहूणहु दुल्लह ।
णवपल्लोवमाइं जीवेप्पिणु पुणु सुरबोंदि अणिंद चएप्पिणु ।
संवरराएं हिरिमइकंतहि तुहुं संजणिय विविहगुणवंतहि ।
पउमसेणधुयसेणहु अणुई लक्खण णाम पुत्ति तणुतणुई ।

घत्ता—पईमेव पसंसिवि गुणसयइं णहसायरचलमयरें ॥
तुहुं आणिवि अप्पिय महुंमहहु पवणवेयवरखयरें ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—तेण वि तुज्झु दिण्णु देविंत्तणु पट्टणिबंधभूसियं ॥
ता तीए वि णमिउं णेमीसरु दुच्चरियं विणासियं ॥ छ ॥

पुच्छइ माहवु मयणवियारा महुं अक्खहि वरयत्तभडारा ।
गंधारि वि गोरि वि पोमावइ किह पत्ताउ भवेसु भवावइ ।
भणइ भडारउ महुंमह मण्णहि गंधारिहि भवाइं आयण्णहि ।
जंबुदीवि कोसलदेसंतरि पहु सिद्धत्थु अत्थि उज्झाउरि ।
विणयसिरि त्ति पत्ति पत्तलतणु बुद्धत्थहु करि दिण्णउं सुअसणु ।
मुणिहि तेण पुण्णेणुत्तरकुरु तहिं मुउ णाहु कहिं मि जायउ सुरु ।
घरिणि मरेप्पिणु जोण्हारुंदहु चंदवई पिय हूई चंदहु ।
एत्थु दीवि पुणु खयरमहीहरि उत्तरसेढिहि णहवल्लहपुरि ।
विज्जुवेयकंतहि सदित्तिहि पुत्ति पहूई उत्तिमसत्तिहि ।
णिच्चालोयणयरि रुद्दरुंदहु णाम सुरूविणि दिण्ण महिंदहु ।
मुणि विणीयचारणु वंदेप्पिणु अण्णहिं दिवसि धम्मु णिसुणेप्पिणु ।

घत्ता—तउ लइउ महिंदें पत्थिविण पंच वि करणइं दंडियइं ॥
अट्ठ वि मय धाडिवि णिज्जिणिवि तिण्णि वि सल्लइं खंडियइं ॥ १४ ॥

४ P तिहुवण°., S तिहृयण°. ५ S देवेंदहो. ६ A सुरवदि, BP सुरवोंदि, S सुरवोदि. ७ AP पणवेवि पसंसिवि ८ S माहवहो.

**14** १ B °णिरद्ध° २ S णविउ ३ P माहउ ४ B मउमह. ५ S उज्झायरे ७ S °णुत्तरु कुरु ८ B चदमई ९ P विज्जवेय° १० A उत्तम°. ११ A सरूविणि. १२ S दिवसें १३ A धाडिवि, B धाडिउ.

12 *b* °तिहुयणइ त्रिलोकस्य 13 *b* सुरवोंदि देवशरीरम्. 15 *a* अणुई लघुभगिनी, *b* तणुतणुई कृशांगा 16 णहसायरचलमयरें नभःसमुद्रमत्स्येन खगेन

**14** 1 *b* भवावइ ससारापत्. 7 *a* पत्ति पत्नी भार्या, *b* बुद्धत्थहु करि बुद्धार्थस्य मुनेः करे, सुअसणु सुष्ठु अशनम्. 11 *a* सदित्तिहि सदीप्तिनाम राज्ञ

## 15

दुवइ—ताइं सुहद्दियाहिं पयमूलइ मूलगुणेहिं जुत्तउं ॥
तउं अणुतघोरु मारायहु तणुतावयरु तत्तउ ॥ छ ॥

मुयं सणासें पुणु णिरु णिरुवमु पडिलइ सग्गि पढमु पल्लोवमु ।
भुत्तउ ताइं ताव देविचणु ढुक्कउ तहिं वि कालि परियंचणु ।
इह गयारिंधिलइ कोमलवणि विउलपुक्खलावइवरपट्टणि ।
सुपसिद्धहु रायहु इंदगिरिहि असिधारादारियणियवइरिहि ।
मेरुमईहि गब्भि उप्पण्णी धूय पढम णयारि रवण्णी ।
किर मेहुणयहु दिज्जइ लग्गी अक्खिउ चारणेण तुहं जोग्गी ।
पइं आढवि त पडिवल्लु जि्तउ कण्णारयणु पउं रणि छित्तउ ।
णिसुणि साम पियराम पयासमि गोरीभवसमवणु समासमि ।
णायणयरि हेमाहु णरेसरु जलसइभजयणतरुकयपंकरु ।
चारणु जसहरु पियइ णियच्छिउ धरिवि णियजम्मतरु पुच्छिउ ।
त सभरिवि पईहि धक्खाणिउ ज णियगुरुसमीवि सुवियाणिउं ।
वड्ढमाणपुरिसित्थीपवइ भण्णइ महासइ धाइसइ ।
पुव्वामरगिरिअवरविदेहइ पवरासोयणयरि वरगेहइ ।
आणदहु जायौ णियधस णद्दयसा सयसा कयरइरस ।
ताइं दयालुयाइ गुणवतइ णेयविहु पुण्णवतु वणिकंतइ ।
दिण्णउं अण्णदाणु भयवतहु अमियाइहि सायरहु मुणिंदहु ।
णाहि देवइ पचक्खइ आयइ पचच्छरियइ घरि सजायइ ।

घत्ता—सुय कालें जंते मुगणयण उत्तरकुरुहि हवेप्पिणु ॥
पुणु भावणिदमहएवि हुय हउ उप्पण्ण चएप्पिणु ॥ १५ ॥

15 १ B °गुणाहिं २ PS तहु ३ B सुइ ४ S देवत्तणु ५ APS परिवत्तणु ६ B वर पुक्खलावइ° S विउले पोक्खलावइ° ७ S °करकरु ८ A omits this line ९ AS °समीवि सलु जाणिउ B °समीवि सुयाणिउ P समीसुवियाणिउं १ BS वड्ढमाण° P वद्धमाण° ११ B पोरिसि थियसहए १२ AP महारिसि १३ ABPS जाया जाया वस १४ S णवविहपुण्णवतु P पुण्णु पत्तु Als णवविहपुण्णवतवणि° १५ AP हयणिंदहो BAls भयवदहो १६ P अमियायहि १७ AP मिग° P मिगणयणे १८ B भावणेंद° १९ A तहे त देहु मुएप्पिणु P हउ तं देहु मुएप्पिणु

15 2 मारायहु कामापघातकम् 4 *b* परियत्तणु मरणम् 6 *a* इदइरिहि इन्द्रगिरेः 10 *a* साम इ साइन्चेव पियराम हे प्रियमार्य, प्रिया रामा यस्य *b* भवसमवणु भवभ्रमणम् 11 *b* जससइ° यशस्वती 14 *a* वड्ढमाणेत्यादि वर्धमानपुरस्त्रीनपुंसके *b* महासइ महासती स्वमतुखे कथयति 16 *a* आणदहु वणिज णियधस भार्या वश जाता *b* सयसा स्वयशा॰ यशोयुक्ता 18 *a* भयवदहु भये तन्द्रा आलस्य यस्य, निर्भयस्येत्यर्थः *b* अमियाइहि सायरहु अमितसागरस्य 21 हउं इत्यादि अहं तस्माच्च्युत्वा नन्दयशभरी यशस्वती जाता

## 16

दुवई—पुंणु केयारणयरि णरवइसुय संजमंदमदयावरं ॥
इय त्ति समासिऊण सब्भावें सायरयत्तमुणिवरं ॥ छ ॥

किउं तवचरणु परमरिसिआणइ मयं गय थिय सोहम्मविमाणइ ।
सुमइहु समइहि घणजलवाहहु कोसंबिहि णयरिहि वणिणाहहु ।
पुणरवि अमरालावणिसद्दहि हूई सुय सेट्ठिणिहि सुहद्दहि ।
जणथण कोक्किय सुहकम्मिणि धम्मसील सा णामें धम्मिणि ।
अइखंतियहि समीवि पसत्थी जिणवरगुणसंपत्ति वउत्थी ।
वीयसोयपुरि पुणु कयणिरइहि मेरुचंदरायहु चंदमइहि ।
गोरी पढ धीय उप्पण्णी विजयपुरेसें विजयं दिण्णी ।
आणिवि तुज्झु कण्ण कयणेहें पइं वि अणंगबाणहयदेहें ।
परिणिय पीणियरइमयरद्धउ महपवित्तेंणपट्टु णिबद्धउ ।
पुणु आहासइ देउ दियवरु णिसुणहि पोमावइजम्मंतरु ।
एत्थु जि उज्जेणिहि विजयंकउ पहु सोमत्तगुणेण ससंकउ ।
तासु देवि अवराइय णामें गुणमंडिय धणुलट्ठि वँ कामें ।

घत्ता—तहि पुत्ति सलक्खण विणयसिरि हत्थसीसपुरि रायहु ॥
दिण्णी हरिसेणहु हरिसिएण तापं लच्छिसहायहु ॥ १६ ॥

## 17

दुवई—गयपंचेंदियत्थपरमत्थसिरीरयरमणथुत्तहो ॥
दिण्णउं ताइ भोज्जु घरु आयहु रिसिहि समाहिगुत्तहो ॥ छ ॥

तेण फलेण सोक्खसंपत्तिहि हुय हेमवयइ भोयधरित्तिहि ।
पुणु वि वरामरचित्तणिरोहिणि हूई देवहु चंदहु रोहिणि ।

---

16 १ B पुण. २ P समसजमदया°. ३ P °दयाधर. ४ A सायरपरममुणिवर, BP सायरदत्त°. ५ P सुय. ६ P सुमइदे. ७ A अमलालाविणि°, PS °लाविणि° ८ BS अइक्खंति° ९ BPS add after this सा मह ( P महि ) सुक्कसग्गे देवी हुय, तेत्थु सोक्खु भुजेवि पुणरवि चुय. १० AP °त्तणे, BS °त्तणु ११ S णिसुणइ १२ S सकसउ. १३ S अवराय १४ S य for व १५ P हत्थिसीसे.

17 १ B °रइरमण° २ B आयहि. ३ APS देवय

---

16 1 °दयावर मुनिम् 2 समासिऊण समीपमाश्रित्य 4 a सुमइहु सुमते श्रेष्ठिन, समइहि मतिसहितस्य 5 a °आलावणि° वीणा. 7 a अइखंतियहि जिनमत्या. 8 a कयणिरइहि पुण्यनिरताया. 9 b विजए तव सुहृदा. 13 b ससकउ चन्द्र.. 14 b कामें कामेन गुणमण्डिता धनुर्यष्टिः कृतेव. 16 हरिसिएण हर्षेण

17 1 °परमत्थ° मोक्षश्री., °रय° रतम्. 4 a °चित्तणिरोहिणि मनोरोधिका.

पहु पहु तहिं हुडु माणेप्पिणु जोइसजम्मसरीरें मुएप्पिणु ।
घणकणपउरि मगहदेसंतरि सामेलगामि वेणुविरइयघरि ।
विजयदेवहलियहु पिय देविल दुमुहि सुमासिणि सुहयलयाइल ।
पउमदेवि तहु दुहिय घणत्थणि सा चंदाणी गुणचिंतामणि ।
रिसिणाहहु कर मउलि करेप्पिणु वरधम्महु पयाइं पणवेप्पिणु ।
गहिउ ताइ रसणिंदियणिग्गहु अवियाणियतरुहलहु अवग्गहु ।
मुहमरुविलासियभिंगयसद्दहिं णिहिउ गाउ णाइलहिं रउद्दहिं ।
भयंणहचिणणासें चिहाणउ भइयइ लोउ असेसु पलाणउ ।
घत्ता—गउ काणणु जणु णिरु दुव्भिक्खियउ विसवेल्लिहिं फलु भक्खइ ॥
अमुणंतणासु सा हलियसुय परतरु किं पि ण चक्खइ ॥ १७ ॥

## 18

दुवई—मुउ णेरणियरु सयलु वयभंगभएण ण खाइ विसहलं ॥
जीविय पउमदेवि विहुरे वि मण गरुयाण णिच्चलं ॥ छ ॥
कालें मय गय सा हिमैवयहु देसहु कप्परुक्खभोयमयहु ।
पलिओवमु जि तेत्थु जीवेप्पिणु भोयभूमिमणुयत्तु मुएप्पिणु ।
दीवि सयपहि देवि सयपह सुरहु सयपहणामहु मणमह ।
हुई पुणु इह दीवि सुहावहि चदसूरमावकइ भावहि ।
चारुजयतणयरि विक्खायहु सिरिमतहु सिरिसिरिहररायहु ।
सिरिमइदेविहि विमलसिरी सुय णवमालइमालाकोमलभुय ।
दिण्णी जणणें पालियणीयहु महिलपुरवरि मेहणिणायहु ।
तिविहेण वि णिव्वेए लइयउ रंजु मुएवि सो वि पव्वइयउ ।

४ S °सरीर ५ A सामरिगामे BPS सामलिगामे ६ B समुहि ७ APS तहि ८ B °खिंगय° ९ AP गहिउ १ A मवणि दविणु ११ BP भुक्खियउ B records a p ' जण णिरु दुक्खियउ ' वा पाठ· १२ ABPS अमुणति

**18** १ S जणणियरु २ BAls खाएवि विसहल and Als thinks that वि in his other Ms is lost ३ A विहुणेवि ४ A गरुपाण B गरुवाण ५ AIS हेमवयहो ६ S मुयेप्पिणु ७ P पुण ८ B देवि ९ S °णाहहो १ AP वरधम्महो समीवि पावइयउ

6 *b* वेणुविरइयं° वंशविरचितम् 7 सुहयलयाइल सुभगलताम् 8 *b* चंदाणी रोहिणीचरी 10 *b* अवियाणियेत्यादि अज्ञातफलस्य मत गृहीतम् 11 *a* मुहमरु° मुखवात· भिंगय° मधुकरी मक्षिकाशृंगवाद्यादि· *b* णाइलहि भिल्लै·

**18** 2 गरुयाण गरिष्ठानाम् 3 *a* हिमवयहु हैमवतक्षेत्रे 6 *a* °मावंकइ मा प्रभा यत्र धनुराकारा क्षेत्रम् अथवा भावकय स्वरूपचिह्निते 7 *b* सिरिसिरिहररायहु श्रीश्रीधरराज्ञ· 9 *a* °णायहु न्यायस्य

घत्ता—मुउ जइवइ हुउ सहसारवइ मेहरउ मेहाणिहि ॥
गोवंइखंतिहि पासि कय विमलसिरीइ सुतवविहि ॥ १८ ॥

## 19

दुवई—अच्छच्छंविलेण भुंजंती अणवरयं सुरीणिया ॥
जाया तस्सं चेय णियदइयहु पवरच्छरपहाणिया ॥ छ ॥

पुणु अरिट्ठपुरि सुरपुरसिरिहरि रयणसिहरणियरंचियमंदिरि ।
मरुणच्चियमंदणंदणवणि हिंडिरंकोइलकुलकलणीसणि ।
राउ हिरण्णवम्मुं णिम्मलमइ तासु घरिणि वल्लह सिरिमइ सइ ।
ताहि गब्भि सहसारिंदाणी सिरिघणरवहु चिराणी राणी ।
पोमावइ हुई णियँपिउपुरि पयइ तुहुं वरिओ सि सयवरि ।
कुसुममाल उरि चित्त गुरुक्की ण कामें वाणावलि मुक्की ।
पइ मि कण्ह सुलग्गिय गब्भेसरि कय महएवि देविं परमेसरि ।
जहिं ससारहु आइ ण दीसइ केसिउं तहिं जम्मावलि सीसइ ।
णवे अण्णण्णहिं भावहिं वच्चइ जीउँ रंगगउ णडु जिह णच्चइ ।
णच्चाविज्जइ चिंतायरियएं विविहकसायरयरसभरियएं ।
इय आयण्णिवि कुवलयणयणहि जय जय जय भणेवि भव्वयणहि ।

घत्ता—देवइयइ हरिणा हलहरिण महएविहिं आहिणंदिउ ॥
सिरिणेमिभडारउ भरहगुरु पुप्फयंतजिणु वंदिउ ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे गोविंदमहादेवीभवावलि-
वण्णणं णाम णवंदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ९० ॥

११ S मेहणाउ. १२ A पोमावइ°, S गोवय°. १३ B विमलसरीए, S विमलसिरिए.

**19** १ A अच्छच्छेंविलेण २ A तस्स देवि णिय° ३ B हिंडिय°. ४ S °णीसरे ५ P °वासु ६ S सहसारिंदाणी. ७ AP णियपिय° ८ P देवि गब्भेसरि ९ ABP णिच. १० BPS जिउ रंगगउ ११ PS चिंताइरिए १२ P °रय° १३ PS °भरिए. १४ P पुप्फदंतु. १५ S महएवी°. १६ AS भवावण्णण १७ S णउदिमो

11 मेहराउ मेघनिनादः, राउ शब्दः, मेहाणिहि बुद्धिनिधि

**19** 1 अच्छच्छंविलेण काञ्जिकाहारेण, सुरीणिया श्रान्ता 2 णियदइयहु मेघनिनादचरदेवस्य, °पहाणिया मुख्या 3 *a* सुरपुरसिरिहरि इन्द्रनगरशोभापहारके. 7 *b* एयइ एतया पद्मावत्या. 9 *a* गब्भेसरि गर्भे धनवती.

# XCI

पज्जुण्णभवाइं पुच्छिउ सीरहरेण मुणि ॥
तं णिसुणिवि तासु वयणाविणिग्गउ दिव्वझुणि ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

इह दीवि भरहि धरमगहदेसि पुरपट्टणणयरायरविसेसि ।
दुम्भिरगोहणमाहिसपगामि पडुसालिछेत्ति तहिं सालिगामि ।
सोसिउ सुंदु णिवसइ सोमदेउ कयसिहिविहि अग्गिलवडुसमेउ ।
तहि पहिलारउ सिसु अग्गिभूइ लहुयारउ जायउ वाउभूइ ।
बिण्णि वि चउवेयसडंगधारि बिण्णि वि पडियजणचित्तहारि ।
ते अण्णहिं वासरि विहियजण्ण पुरु कहिं मि पाविवखणु पवण्ण ।
णयतमोरकेक्कारवंति तहिं णंदिघोसणवघणवणंति ।
कुसुमसरसिसिरकरकायराहु रिसि अवलोइउ रिसिसंघणाहु ।
बिण्णि वि जण वेयायारणिट्ठ ते दुट्ठ कट्ठ धण्णिट्ठ धिट्ठ ।
आवंते णिहालिय अंबरेण जइ वोल्लिये भड महुरें सरेण ।

घत्ता—किज्जइ उप्पेक्ख पावि ण लग्गइ धम्ममइ ॥
लोयणपरिहीणु किं जाणइ णडणट्टगइ ॥ १ ॥

## 2

गुरुवयणु सुणिवि खयकामकंद थिय मोणु लएप्पिणु मुणियरिंद ।
जे खलु जोइवि णियतणु चयंति उवसमि वि थंति जिणु सभरंति ।
जे जीविउ मरणु वि समु गणंति पर पहणंतु वि थउ पडिहणंति ।
जे मिगें जिह णिज्जणि वणि वसंति मुणिणाहहं ताहं मि पहरि होंति ।

1 १ P पडुण्ण° २ S °भावइ ३ P °विणिगाय ४ A दुब्भिर° ५ A सुउ P सुदे ६ PS वाइभूइ ७ AP °किंकार° B °किकार° ८ PS णदघोस° ९ S आवेंत १० A जयवरेण ११ A बोल्लिउ

2 १ A °कंदु २ A वरिंदु ३ S भ्रूग

1 2 भवण° सुरम्य 4 a दुम्भिरं दोहनशील° °पगामि प्रकामे 5 b सिहिं विहि अग्निहोत्रम् 9 b णदिघोस° वृषभशब्दयुक्तम् 10 a कुसुमसरेत्यादि कामचन्द्रस्य राहु 11 a वेयायारणिट्ठ वेदाचारतत्परौ 12 b बोल्लिय उक्ता 13 उप्पेक्ख निरादर

2 1 a खयकामकंद खनितकन्दर्पकन्दा 2 a जे खलु इत्यादि तेपामपि कारण विनापि शत्रवो भवन्ति

आया ते पभणिवि अभणियाइं खमदमंदिहिवंतहिं णिसुणियाइं।
णिग्गय गय पिसुण पलंबबाहु गामंतरि दिट्ठउ अवरु साहु।
सो भणिउ तेहिं रे मूढ णग्ग मलमलिण मोक्खवायण भग्ग।
पसु मारिवि खद्धु ण जणि मासु तुम्हारिसाहं कहिं तियसवासु।
ता सच्चयमुणिवरु भणइ एंव जइ हिंसायर णर होंति देव।
तो सूणागारहु पढमु सग्गु जापसइ को पुणु णरयमग्गु।
जंपिउं जणेण जइ भणइ चारु जायउ विप्पहं माणावहारु।
अण्णहिं दिणि ओड्डियभुयबलेहिं णिवसंतहु सतहु घणि खलेहिं।
आयाहिउ भीसणु असिपहारु कंचणजक्खें किउं दिव्वचारु।
ते विण्णि वि थंभिय खग्गहत्थ ण मेंट्ठियमय थिय किय णिरत्थ।
वरदेवपहावणिपीलियाइं अट्ठंगोवंगइं खीलियाइं।
अलियउ ण होइ जिणणाहसुत्तु पावेण पाउ खज्जइ णिरुत्तु।

घत्ता—तणुरुहतणुरोहु अवलोइवि उव्वेइयइं॥
मायापियराइ जक्खहु सरणु पराइयइं॥ २॥

### 3

कंपंति णाइं खगहय भुयंग जंपंति विप्प महिणिवडियंग।
सोवण्णजक्ख जय सामिसाल रक्खहि अम्हारा बे वि बाल।
ता भणइ देउ पसुजीवहारि जइ ण करेह कम्मु कुजम्मकारि।
हिंसाइ विवज्जिउ सच्चगम्मुं जइ पडिवज्जह जइणिदधम्मु।
तो करमि सुयंगइ मोकलाइ पेक्खहु अज्जु जि सुकियफलाइ।
गहियाइं तेहिं पालियदयाइं मायाभावें सावयवयाइं।
णिवडिय ते कुगइमहघयरि णीसारसारि तंवारवारि।

४ P °विहिवतहिं ५ A सुव्वय° ६ P ता ७ BAls पढमसग्गु ८ B णयरमग्गु ९ A दियखलेहिं, P वियखलेहिं. १० APS कउ ११ BS मट्ठियकिय थिय णर णिरत्थ. १२ B उव्वेइयउ. १३ B पराइयउ

3 १ S जप्पति. २ AP करहु, S करह. ३ AP जण्णु. ४ P °कम्मु ४ ABPS तो.

5 *a* अभणियाइं अवक्तव्यानि 8 *a* जणि यज्ञे. 9 *a* सच्चय° सात्यकिः, *b* हिंसायर हिंसाकराः. 13 *b* °चारु चेष्टितम्. 17 तणुरुहतणुरोहु पुत्रशरीररोधः.

3 1 *a* खग° गरुड 3 *a* पसुजीवहारि यज्ञकर्म. 5 *a* सुयगइ पुत्रशरीरम्, *b* सुकिय° पुण्यस्य. 7 *a* ते पितरौ, *b* णीसारसारि महानिःसारे, तंवारवारि प्रथमनरकद्वारे. 8 *a* °सयरुएहि शतव्याधिभि.

अणुहुवियभीमभवसयरूवहिं　पुणु पालिउ वेउ वियवरसुयहिं।
गय सोहम्महु कयसुररमाइ　भुत्ताइ पच पलिओयमाइं।
पुणु सिहरासियकीलतखयरि　इह दीवि भरहि साकेयणयरि।
णरणाहु अरिंजउ वइरितासु　वणि वणिउर्लुपुगमु अरुहदासु।
वप्पसिरि घरिणि सुउ पुण्णभद्दु　अण्णेक्कु वि आयउ माणिभद्दु।
घत्ता—सिद्धत्थवणतुं लद्धु राए जोइवि यरइ ॥
गुरु णविवि महिंदु आयण्णिवि धम्मक्खरइ ॥ ३ ॥

4

णियलच्छि विइंण्ण अरिंदमासु　पावइयउ जायउ अरुहदासु।
सिरसिहरघडावियणियसुयहिं　पुणु मुणि पुच्छिउ वणिवरसुयहिं।
चिरभवमायापियराइ जाइ　जायाइ भडारा केत्थु ताइ।
रिसि भणइ बद्धमिच्छत्तराउ　जिणधम्मविरोहउ तुज्झु ताउ।
रयणप्पहसप्पावत्तविवरि　हुउ णरइ णारयाहवसमरि।
अणुहुंजिवि तहिं बहुदुक्खसधु　मायगु पहूयउ कायजघु।
कुलगब्वें णडियउ पावयम्मु　सो सोमदेउ सपुण्णछम्मु।
तहु मंदिरि तुम्हहु विहिं मि माय　सा सारमेय हुई वराय।
अग्गिलयमाणि स सुणिवि तेहिं　तहिं जोइवि मउवयणामएहिं।
सबोहियाइ विण्णि वि जणाइ　उवसतइ जिणपयगयमणाइ।
मुउ कायजघु कयवयविहीसु　सजायउ णदीसरि णिहीसु।
परिपालियणियकुलहरकमेण　सजणिय णियेणारिंदमेण।
अग्गिलसुणी वि सिरिमइहि धीय　सुइ सुप्पयक्क णामें विणीय।
घत्ता—आसीणणिवासु उग्घोसियमगलरवहु ॥
णवजोव्वणि जंति थाल सयवरमडवहु ॥ ४ ॥

५ ABP वउ　६ A °सुहरमाइ　P सुरसाइ　७ A वयरि°　८ A वणिवरपुगसु　९ P °वणते
१० जाइ विरइ

4　१ B °विदिण्ण°　२ S तेहिं　३ A संपत्तछम्मु　४ AP सारमेइ　५ B जायवि　६ A णदीसर°　७ B °कुलहरणिय°　८ A आसीणवरासु　९ B °मडहो

9 °रमा° लक्ष्मी　11 *a* वइरितासु शत्रूणा त्रासक

4　1 *a* विइण्ण वितीर्णा　5 *a* सप्पावत्तविवरि सर्पावर्तबिले　6 *a* मायगु चाण्डाल　7 *b* छम्मु पापच्छ　8 *b* सारमेय शुनी　9 *b* मउवयणामएहिं मृदुवचनामृते　11 *b* णिहीसु यक्ष　13 *b* सुइ पवित्रा　14 आसीणणिवासु आसीना नृपा यस्य

## 5

पइणा पडिवज्जिवि णारिदेहु मायंगजम्मु बहुपावगेहु ।
सुणहत्तणु तं वज्जरिउ ताहि हलि अग्गिलि किं रइ तुह विवाहि ।
तं णिसुणिवि सा संजयमणाहि पावइय पासि पियदरिसणाहि ।
तउ करिवि मरिवि सोहम्मि जाय मणिचूल णाम सुरवइहि जाय ।
ते भायर सावयवय धरेवि ते[3] पुण्णमाणिभद्दंक बे वि ।
तत्थेव य वियलियमलविलेव जाया मणहर सावण्णदेव ।
वोलीणइ देहि समुद्दकालि हुयं कुरुजंगलदेसंतरालि ।
गयउरि णिउ णामें अरुहदासु कासव पियथम वल्लहिय तासु ।
महु कीडय णामें ताहि तणय ते जाया गुणगणजणियपणय ।
घत्ता—आयण्णिवि धम्मु भवससरणहु संकियउ ॥
विमलप्पहपासि अरुहदासु दिक्खंकियउ ॥ ५ ॥

## 6

महु कीडय वड्ढसणेहभाव गयउरि संजाया बे वि राय ।
ता अवरकंपपुरवइ पसण्णु कणयरहु णाम कणयारवण्णु ।
आयउ किर किंकरु महुहि पासु ता तेण वि इच्छिय घरिणि तासु ।
पीणत्थणि णामें कणयमाल पहुंमणि उग्गय मयणग्गिजाल ।
असहंतें पहुणा सरपिसक्कु उद्दालिय वहु वियलियविथक्कु ।
जइ दुजेडतवसियपयमूलि थक्कु तियसोए कउ तउं भेसियक्कु ।
कणयरहें सोसिउ णियंयकाउ विसहिउ दूसहु पंचग्गितांउ ।

5 १ P सयम°. २ AP सावयवउ चरेवि. ३ B जे ४ P सामण्ण° ५ A वोलीणदेहि दुसमुद्द°. ६ P चुय. ७ AB °जगलि. ८ A गयउरि णामें णिउ अरुहदासु ९ A तहि. १० AP °ससारहो.

6 १ PS भाय. २ AS जाया ते वे वि, P ते जाया बे वि ३ AB अमरकप्प°, P अवरकप्प°. ४ P णामु ५ A कण्णयार°, S कणियार°. ६ AP तेण पलोइय ७ महो मणि. P महुमणि. ८ B °वितक्कु ९ B दुजड्डु १० S तृय°. ११ S तवु १२ B णियइ°

5 1 *a* पइणा य पूर्वं पति पश्चाच्चाण्डालस्ततो यक्षस्तेन 2 *b* किं रइ तुह विवाहि विवाहे का रति तव. 3 *a* सजय° सयत वद्धम् 4 *b* जाय भार्या. 6 *a* तत्थेव सौधर्मस्वर्गे, *b* सावण्णदेव सामानिका 7 *a* वोलीणइ देहि च्युते शरीरे. 8 *a* णिउ नृप., *b* कासव काश्यपी 9 *a* महुकीडय मधुक्रीडकौ

6 2 *b* कणयार° पीतवर्णपुष्पम्. 3 *a* किंकरु मधुराज्ञः कनकरथ. सेवक, *b* तेण मधुराजा. 5 *a* सरपिसक्कु स्मरत्राण, *b* वियलियवियक्कु विगलितवितर्के 6 *a* दुजडतवसि° द्विजटतपस्वी, *b* भेसियक्कु भासितार्के तप.

थवेवि महारउ विमलवाहु  दुद्धरवयसंजमधारियाहु ।
परियाणिवि तच्चु तवेण तेहिं  हवसु पत्तु महुकीढवेहिं ।
चिरु वहमइ सग्गि महापसत्थु  भणु रजिवि भुंजिवि इंदियत्थु ।
हरिमहएविहि रुप्पिणिहि गब्भि  थक्कु व ससहरिबिंउ पविमलब्भि ।
महु सभूयउ पज्जुण्णु णामु  पसरियपयाउ रामाहिरामु ।
घत्ता—कणयरहु मरिवि जायउ भीसणवइरवसु ॥
णहि जंतु विमाणु खलिउ कुईउ जोइसतियसु ॥ ६ ॥

7

थक्कइ विमाणि सो भिण्णकेउ  आरूढउ गज्जइ धूमकेउ ।
चिरु जम्मंतरि सिसुहरिणणेत्तु  अवहरिउ जेण मेरउ कलत्तु ।
सो जायउ मज्झु जि पत्थु वेरि  मइ मारेमि खलु णिव्वूढखेरि ।
पल्लमि काणणि अथिरेयभाउ  हुहु अणुहुंजेवि जिह मरइ पाउ ।
गयणयललग्गतालीतमालि  इय मंतिवि खयरमणतरालि ।
परियणु मोहेप्पिणु सयलणयरि  सिसु घल्लिउ तक्खयसिलहि उवरि ।
पुरि धल्लिवि सोउ महायणाहं  हलहररुप्पिणिणारायणाहं ।
ता चिंतंलि सेलि वेयड्ढणामि  अमयावइदेसि वित्थिण्णगामि ।
वाहिणसेढिहि घणकूडणयरि  णहसीयरि विलसियचिंधमयरि ।
तहिं कालि कालसंवरु खगिंदु  गणियारिविहूसिउ ण गइंदु ।
घत्ता—सविमाणारूढु कंचणमालइ समउ तहिं ॥
संपत्तउ राउ अच्छइ महुमहडिंभु जहिं ॥ ७ ॥

8

अवलोइउ बालउ कर चिवंतु  छुडु छुडु उग्गउ ण रवि तवंतु ।
बोल्लिउ पहुणा लायण्णजुत्तु  लइ लइ सुंदरि सुह होउ पुत्तु ।

१३ P कीडएहिं १४ AP °चरियउ विमलअब्भि १५ ABPS भीसणु. १६ A कुयउ

7 १ A धोहिल्लकेउ २ AP आरूढउ ३ S मारेमि ४ S °भाव ५ S मरण पाव ६ S घल्लिय ७ B उभरि P उपरि ८ B वहिउ ९ B °रूपिणि° १ B विउल° ११ APS णहसायर° १२ B कालसमतु

7 1 *a* भिण्णकेउ भिन्नग्रह विद्धध्वजो वा 3 *b* °खेरि वैरम्. 6 *b* तक्खयसिलहि उवरि तक्षकशिलोपरि 7 *a* महायणाहं महाजनानाम्. 9 *a* घणकूड मेघकूटम्. 10 *b* गणियारि° हस्तिनी 12 महुमहडिंभु कृष्णस्य पुत्र

8 1 *a* कर चिवंतु स्वहस्तौ प्रेरयन्

वालउ लक्खणलक्खंकियंगु रूवें णिज्जिउ होसइ अणंगु ।
ता ताइ लद्धउ सुउ ललियबाहु णं णियदेहहु मयणग्गिडाहु ।
वरतणयलंभहरिसियमणाइ पुणु पत्थिउ णियपियथमु अणाइ ।
परमेसर जइ मइं करहि कज्जु तो तुह परोक्खि पयहु जि रज्जु ।
जिह होइ देव तिह देहि वाय रक्खिज्जउ महु सोहग्गछाय ।
त णिसुणिवि पहुणा विप्फुरंतु उव्वेल्लिवि कतहि कणयवत्तु ।
बद्धउ पुत्तहु जुवरायपट्टु पुलएं जणणिहि कंचुउ विसट्टु ।

घत्ता—णियणयरु गयाइ पुण्णपहावपहारियइ ॥
पइणलाहेण त्रिण्णि वि हरिसाऊरियइं ॥ ८ ॥

## 9

मंदिरि मिलियइ सज्जणसयाइं णाणामंगलतूरइं हयाइं ।
झाणीणहु दीणहु दिण्णु दाणु पूरियदिहि अइइच्छापमाणु ।
वंदियइ अणेयइं पुज्जियाइं कारागाराउ विसज्जियाइं ।
विरइउ तणयहु उच्छवपयत्तु तहु णामु पइट्ठिउ देवयत्तु ।
आणदु पणच्चिउ सज्जणेहिं उच्छाहु विमुक्कउ दुज्जणेहिं ।
ण किंत्तिवेल्लिवित्थरिउ कंदु परिवड्ढु वालु ण वालयंदु ।
सज्जाउ णिद्दिलविण्णाणकुसलु जिणणाहपायराईवभसलु ।
मउलियणियरकलियारएण पत्तहि हिंडतें णारएण ।
कण्णिणिहि महतणयविओउ कण्हहु जाइवि अवहरिउ सोउ ।
णिव्वंमउ इरयणकतिल्लपाय गोविंद णिसुणि रायाहिराय ।

घत्ता—मेइणि विहरतु पुव्वविदेहि पसण्णसरि ॥
हउ गउ णरणाह चारु पुंडरीकिणिणयरि ॥ ९ ॥

## 10

तहिं मेहु विद्धंसियमयगद्देण   अक्खिउ अरहेण सयपहेण ।
जिह णिउ देवें वइरायरेण   जिह थिउ रण्णि परमारएण ।
जिह पालिउ अवरें खेयरेण   सुउ पडिवज्जिवि पणयंकरेण ।
जिह जायउ सुवरु णवजुवाणु   सोलहसवच्छरपरिमाणु ।
तं णिसुणिवि रुप्पिणिहरिहि हरिसु   संजायउ हरिससुयहं वरिसु ।
पत्तहि वि कुमारें हयमलेण   रणि भग्गिराउ बंधिवि बलेण ।
अप्पिउ णियतायहु णीससल्लु   अवलोइवि णवणु गुणमहल्लु ।
कंचणमालहि कामग्गिजाल   उट्ठिय हियउल्लइ णिरु कराल ।
घत्ता—अहिलसिउ सपुत्तु मायइ विरहंविसंतुलइ ॥
कामहु पलयंतु को वि णत्थि मेइणियलइ ॥ १० ॥

## 11

पभणि रमसु विसालणेत्तु   जं उच्चाइउ धूलीविलित्तु ।
जं थणचूयइ लाइउ रुयंतु   जं कलरवु परियंदिउ सुयंतु ।
जं जोइउ णयणहिं वियसिएहिं   जं थोल्लाविउ पियजंपिएहिं ।
तं एवहिं पेसुण्णयरसेण   वीसरिय सव्वु वम्महवसेण ।
पुत्तु जि पइभावें लइउ ताइ   संतावियमणरुहसिहिसिहाइ ।
हक्कारिवि दरिसिउ पेम्मभाउ   तुहुं होहि देव खयराहिराउ ।
मइं इच्छहि लइ पण्णत्ति विज्ज   णिव्वूढमाण माणयमणोज्ज ।
तं णिसुणिवि भासिउ तेण सामु   करपल्लवि ढोइउं पाणिपोमु ।
गलिउत्तरिज्जपयडियथणाइ   सगाहिय विज्ज दिण्णी अणाइ ।

10 १ A मुह २ A अरहेण ३ AP थिउ वणि ४ P पणयधरेण ५ B सवत्सरपरियमाणु ६ ABPS रुप्पिणि° ७ A °सुयवरिसु Als सुयवरिसु against Mss ८ S सुपुत्तु ९ APS मयणविसंतुलए B records a p मयण इति वा पाठ

11 १ AP अगणे २ A थणजुयहे B थणजुवलइ PS थणचूयहे ३ APS रुयंतु ४ P कलरउ ५ B अथतु. ६ P जोयउ ७ B ज पियवएहिं ८ AP वीसरिउ S विसरिय ९ S हकारवि दरसिउ

10 1 *a* °मय° मद 2 *a* वइरायरेण वैराकरेण 3 *b* पणयकरेण स्नेहकारिणा 5 *b* असुय अश्रु 9 सपुत्तु निजपुत्र

11 2 *a* थणचूयइ स्तनचूचुकाग्रे *b* परियंदिउ आन्दोलित 5 *a* पइभाव पतिपरिणामेन *b* मणरुहसिहिसिहाइ कामाग्निशिखया 7 *b* लइ गृहाण 9 *a* गलिउत्तरिज्जपयडियथणाइ गलितोत्तरीयप्रकटितस्तनया

सयणंगणालग्गविच्छित्तचूडु गउ संदरु जिणहरि णिरु रूढु ।
अवलोइवि चारण विण्णि तेत्थु मुणिवर जयकाणिवि जगपयत्थु ।
आयण्णिवि बहुरसभावभरिउं णिग्गमजयत्तणि णिग्गमालहरिउं ।
तप्पायमूलि संसारसारु विरइउ विज्जागाहणपयारु ।

घत्ता—पुणु आयउ गेहु सुउ जोयंति विमलाणण ॥
उरि विउडी अ त्ति कणयमाल मयरद्धयण ॥ ११ ॥

## 12

णिरत्था सरेणं उरत्था परेण ।
हणंती कणंती ससंती धुणंती ।
कओले विचित्तं विमालाण पत्तं ।
विहुण्णं पुणंती अलं णीससंती ।
रसेण विसट्टं ण पेच्छेइ णेट्टं ।
णिसामेइ गेयं ण कव्वगभेयं ।
पढंतं ण कीरं पढावेइ साइं ।
घणं दूसिऊण फलं जाणिऊणं ।
घरं चित्तचोरं ण णच्चेइ मोरं ।
पहाए कुरंतं सलीलं चरंतं ।
ण मेल्लेइ हंसं ण वीणा ण वंसं ।
ण ण्हाणं ण खाणं ण पाणं ण दाणं ।
ण भूसाविहाणं ण वत्थप्पहाणं ।
ण कीलाविणोयं ण भुंजेइ भोयं ।
सरीरे घुलंती जलद्दा जलंती ।
धवंभोयमाला णिलिंगेव जाला ।
ण णीय सुदिट्टी मणे कामघट्टी ।

१० ABP °कूडु. ११ PS जिणहर. १२ S अवलोइयवि. १३ PS आइउ.

**12** १ णेट्टं. २ AP ण कव्वंगगेयं, णिसामेइ गेयं ३ B पुरं. ४ B वद्धं. ५ S माणेइ. ६ A णिलिंगावजाला, धवभोयमाला.

10 *a* °चूडु शिखरम्. 11 *b* जगपयत्थु जगत्पदार्थान् जीवादीन्. 13 तप्पायमूलि तज्जयन्तपादमूले. 14 विमलाणण कान्तेन.

**12** 1 *a* सरेण स्वरेण, *b* उरत्थ हृदयम्. 3 *a* कओले कपोले, *b* पत्त पत्रावलि संस्थानी. 6 *a* णिसामेइ शृणोति; *b* कव्वगभेय काव्याङ्गभेदम्. 8 *a* घण इत्यादि मेघं दृष्ट्वापि मयूरं न नाटयति. 10 *a* °कुरंतं कुरङ्गं प्रहायं.

णिरुत्तण्णमण्णा जराज्जुरसण्णा ।
विमोत्तूण सर्क सगोत्तस्स पक्कं ।
पकाउ पउत्ता सरोत्तत्तगत्ता ।
सुपेम्म थवंती पयस्सुं थमंती ।
पहालेइ एव सुयं कामएव ।
अहो सच्छभावा महं ईच्छ देवा ।
तओ तेण उत्त अहो होइ अजुत्त ।
विइण्णगछाया तुमं मज्झु माया ।
थैणगाउ थण्ण गलंत पसण्ण ।
मए तुज्झ पीय म जंपेहि बीय ।
असुद्धं अबुद्ध बुहाण विरुद्ध ।

घत्ता—ता ससिवयणइ जंपिउ अपहि णेहचुउ ॥
तुहु काणणि लद्धु णइणु पउ मइ देहहुउ ॥ १२ ॥

## 13

सक्खयसिल णामें तुज्झु माय महु कामासत्तहि देहि थाय ।
त वयणु सुणिवि मउलतणयणु अवहेरे करेप्पिणु गयउ मयणु ।
ता थिइ दुइ दुब्भावगेहु णियणइहिं वियारिवि णिययदेहु ।
आरुहु सुहें णिट्ठुरहयास अक्खइ णियइइयहु जायरोस ।
तुहु देव किंमकरुणाइ भुत्तु परजंपिउ होइ कि कहिं मि पुत्तु ।
कामग्गु पाणिपल्लेवि विलग्गु जोयहि णहदारिउ महु थणग्गु ।
त णिसुणिवि राए कुद्धएण जलणेण व आसारिद्धएणे ।
भीसणपिसुणह मारणमणाह आएसु दिण्णु णियणरगणाह ।
णिल्लज्ज अज्जु दायज्जं महहुं पच्छण्णउ पट्टु वहाइ वहहुं ।
तणयहु जयगहणुक्कंठियाइ ता पच सयाइ समुट्ठियाइ ।

७ P भरत्तर्च ८ AP सुपेम्म ९ BS पमती १ B इच्छि ११ A थणगाण थण्णं Als थणगाउ थण्ण against Mss १२ PS ससिवयणाए १३ S देहे हुओ

13 १ AP कामाउराहे पदेहि B कामाकराहि २ ABS अवहेरि ३ B दुख ४ B °पल्लव ५ AP ° रुद्धएण ६ PS दाइज्ज ७ AP महह ८ A पसुवहार ९ AP वहह

18 *a* णिरुत्तण्णमण्णा निश्चयेन अन्यमना: उद्धतचित्ता *b* जराजुरसण्णा विरहज्वरेण ज्वलसंज्ञा 20 *b* सरुत्तत्तगत्ता स्वरोत्तप्तगात्रा 20 *b* बीय द्वितीयम्, अन्यत् 28 *a* अबुद्ध अज्ञानम् 29 णेहचुउ स्नेहच्युतम्

13 2 *b* अवहेर अवज्ञा 3 *b* णियणइहि निजनखै 9 *a* महहु मयय *b* वहार वधेन, प्राकृतत्वात् लिङ्गभेद अत्र स्त्रीलिङ्ग दर्शितम्

घत्ता—प्रियंवयणु भणेवि सिरिरमणगउ साहसिउ ॥
णिउ रण्णहु तेहिं सो कुमारें कीलारसिउ ॥ १३ ॥

## 14

णं पलयकालजमदूयतुंडें तहिं हुयवहजालाजंलियकुंडु ।
णियजणणसुपेसणपेरियहिं दक्खालिवि बोल्लिउ वइरिएंहिं ।
भो देवयत्त दुक्करु विसंति पयडु दंसंणि कायर मरंति ।
त णिसुणिवि विहसिवि तेत्थु तेण महुमहणरायरुप्पिणिसुएण ।
अप्पउ घल्लिउँ सहस त्ति केम सीयलवहणाचिविभिल्लि जेम ।
पुज्जिउ देवीइ महाणुभाउ अण्णहिं जाइवि पुणु सोमकाउ ।
सोमेसमहीहरमज्झि णिहिउ कूरेहिं तेहिं चउदिसेहिं पिहिउ ।
वीरेण तेण समुद्द भिडंत थहरूँव धरिय गिरिवर पडंत ।
पुणु जक्खिणीइ जगसारएहिं पुज्जिउ वत्थालंकारएहिं ।
साहसियहु तिहुयणु होइ सज्झु दुग्गु वि अदुग्गु दुग्गेज्झुँ गेज्झु ।
घत्ता—सयलेहिं मिलेवि वइरिहिं करिकरदीहरंभुउ ॥
सूयरगिरिरंधि पुणु पइसारिउ कण्हसुउ ॥ १४ ॥

## 15

तहिं महिहरु धाइउ होवि कोलु घुरुघुरणरावकयघोररोलु ।
दाढाकरालु देहंणिविलित्तु णीलालिकसणु रत्तंतणेत्तु ।
अरिदारिदत्तणिद्दसणसहेहिं भुयदंडहिं चूरियरिउरहेहिं ।
मोडिउ रईसुब्भड खरु अमतु वइकंठहु पुत्तें कंठकंठु ।

१० BP णिय°. ११ B कुमार.

**14** १ PS °तोंडु २ PS °जलिउ. ३ P °कुंड, S °कोंडु. ४ APS वेरिएहिं. ४ P दरिसणे. ५ A घित्तउ. ६ B °चिविखल्लु, S °चिक्खेल्लु ७ APS सोम्मकाउ. ८ S °महीहरे. ९ P °दिसिहिं. १० A थहुरूव. ११ P दुग्गेज्झु. १२ APS °दीहभुउ.

**15** १ A धाविउ २ P होइ. ३ B °घोरु. ४ A देहिणि°, B देहिण°. ५ B रत्त°. ६ A °सएहिं. ७ B °दडिहिं. ८ ABPS रोसुब्भडु. ९ ABPS वइकुंठहो.

11 सिरिरमणगउ कृष्णपुत्र.

**14** 3 दुक्करु विसंति ये प्रविशन्ति तद्दुःकरम्. 8 *b* थहरूव छागरूपम्.

**15** 1 *a* होवि कोलु शूकरो भूत्वा, *b* °रोलु कोलाहल 2 *a* देहणि° कर्दम, दिह उपचये, *b* °कसणु कृष्णवर्णे 3 *a* °णिद्दसणसहेहिं निर्घर्षणसमर्थाभ्यां भुजाभ्याम्; *b* चूरियरिउरहेहिं चूर्णितरिपुरथाभ्याम्. 1 *a* रउ तीमम्, अमतु अमनोज्ञ, *b* वइकंठहु पुत्तें हरिपुत्रेण, कंठकंठु सूकरग्रीवा

सुयरिवि णिज्झियमंदिरासु त विलसिउ पेच्छिवि सुवरासु।
देवयइ विइण्णउ विजयघोसु जलयरु परबाहिणिहियसोसु।
अण्णेक्कु पिसुणपाढीणजालु ढोइयउ महाजालु वि विसालु।
सज्जणहु वि दुज्जणु कुडिलचित्तु पुणु कालणामगुहमुहि णिहित्तु।
रयणीयरेण सुहडु पसत्थु पणवेवि महाकालेण तेत्थु।
विसंसदणु भडकडमद्दणासु तहु दिण्णउ केसवणंदणासु।
पुणु धम्महेण दिट्ठउ खयालि पब्भट्ठचेट्ठु रुक्खंतरालि।
विज्जाहरु विज्जावलहरेण कीलिउ केण वि विज्जाहरेण।
तहु वसुणदइ अवलोइयाइ णियकरयलसयदल्लढोइयाइ।
णरदेहसोक्खसंजोयणाइ गुलियाइ णियघणमोयणाइं।
मेल्लाविउ भाविउं भाउ ताउ उप्पण्णाउ तासु सणेहभाउ।
हरितणयहु दरपहसियमुहेण दिण्णाउ तिण्णि विज्जाउ तेण।
उवयारहु पडिउवयारु रइउ भणु को ण सुयणसंगेण लइउ।
घत्ता—दुज्जणवयणेण परिवड्ढियअहिमाणमउ ॥
सहसाणणसप्पविवरि पइट्ठउ जयविजउ ॥ १५ ॥

16

तहिं सज्जाऊरणणिग्गएण णाएण सणाइणिसंगएण।
पव्वालंकिउ जयलच्छिवण्णु धणु दिण्णउ कामहु चित्तवण्णु।
बहुरूवजोणि णरवरविमद्द अण्णेक्क कामरूविणिय मुद्द।
जोएवि दुयालिइ लोयणेट्ठु थामें कपाविउ तरुकविट्ठु।
तहिं गयणगमणउ चुयाउ लइयाउ कुमारें पाउयाउ।
सुविलिट्ठइट्ठपावियसिवेण पुणु तूसिवि पचफणाहिवेण।

१ BP मदिरासु ११ S पेच्छिउ १२ S देवए १३ B विदिण्णउ १४ B °हियइ १५ B गुहमुह° १६ S विसदउणु १७ AP °कडवदणासु १८ दिण्णिउ १९ APS °सोक्खु २ B अगुलिए. २१ A लाविउ भाउभाउ २२ A सिणेह° २३ A दरिसियसियमुहेण P दरवियसियमुहेण

16 १ I मुद्दे २ P दुआलिए S दुयालिए ३ APS लोयणिट्ठु ४ APS इच्छियसिवेण

6 *a* विजयघोसु नाम घाटः *b* °बाहिणि° सेना 7 *a* पिसुणपाढीण° शत्रुमत्स्याः 8 *a* सज्जणहु वि दुज्जणु सज्जनस्यापि दुर्जना भवन्ति 9 *a* रयणीयरेण राक्षसेन 10 *a* विसंसदणु वृषस्यन्दननामा रथः °कड° समूह 11 *a* खयालि विजयार्धे खगाचले 1ა *a* भाविउ रुचितः भ्राता पितावत् 19 सहसाणण सहस्रमुखः सर्पः जयविजउ जगति विजयो यस्य

16 1 *b* णाएण सर्पेण सणाइणिसंगएण स्वस्त्रीकेन 2 *a* वण्णु सपत्रं परिपूर्णम्, 3 *a* बहुरूवजोणि बहुरूपोत्पत्तिकारणम् °विमद्द मर्दनकरी 4 *b* कविट्ठु कपित्थः 5 *b* पाउयाउ पादुके द्वे 6 *a* इट्ठपावियसिवेण इष्टस्य प्रापितसुखेन *b* पचफणाहिवेण पञ्चफणसर्पेण

ढोइय हरिपुत्तहु पंच वाण　　णंदयधणुजोग्गा उहयमाण ।
तप्पणु पुणु तावणु मोहणक्खु　　विलवणु मग्गणु हयवइरिपक्खु ।
पवमु सरु मारणु चित्तविउहु　　ओसहिमालइ सहुं दिण्णु मउडु ।
चलचमरजुयलु सेयायवत्तु　　णं सिरिणवभिसिणिहि सहसवत्तु ।
गुणरंजिएण जसलपडेण　　खीरवणणिवासें मक्कडेण ।
कद्दवमुहिवाविहि णायवासु　　दिण्णउ एयहु रिउदिण्णतासु ।
तहु सपय पेच्छिवि भायरेहिं　　तिलु तिलु झिज्जंतकलेवरेहिं ।
पच्छण्णजंणियकोवाणलेहिं　　पुणरवि पडिचोइउ हयखलेहिं ।
जइ पइसहि तुहुं पायालवावि　　तो तुह सिरि होइ अउव्व का वि ।
घत्ता—पिसुणिंगिउ एम जाणिवि सुंदरु ओसरइ ॥
वाविहि पण्णत्ति तहु रूवें सह पइसरइ ॥ १६ ॥

## 17

पच्छण्णु ण दिट्ठउ तेहिं बालु　　अप्पाणहु कोक्किउ पलयकालु ।
सिलवीढें छाइय वावि जाम　　रुप्पिणितणुरुहु मणि कुइउ ताम ।
ते तेण णायपासेण बद्ध　　सुहिअवयारें के के ण खद्ध ।
णिक्खित्त अहोमुह सलिलरंधि　　सिल उवरि णिहियें जायइ तमंधि ।
णियसयणविहुरविणिवारएण　　खगवइतणए लहुयारएण ।
जोइप्पहेण सा धरिय केम　　उप्परि णिवडंती मारि जेम ।
तहिं अवसरि परबलदुम्महेण　　णहि एंतु पलोइउ वम्महेण ।
आसण्णु पत्तु तें भणिउ कासु　　भो दिट्ठु जम्मणेहहु विरासु ।
तुज्झुप्परि आयउ तुज्झु ताउ　　भो मयरद्धय लइ ससरु चाउ ।
ता रूसिवि पडिभडमद्दणेण　　देवें दामोयरणंदणेण ।
हय गय हय गय चूरिय रहोह　　विच्छिण्णछत्त महिधित्त जोह ।

५ ABP जोग्गाउहपहाण　६ B मोहसक्खु　७ B °जुवलु　८ BPS मकडेण　९ A कद्दमसुहि°. १० ABPS °जलिय°　११ A णलेण　१२ A खलेण. १३ A पिसुणगिउ, K पिसुणिंगउ　१४ S जाणवि

17　१ B °तणरुहु, S तरुहु　२ P कुविउ　३ S °वासेण　४ P omits this foot. ५ A विहिय　६ P °तणुए.　७ B लहुवारएण　८ PS णहें　९ B हुतु　१० B समरु　११ A हय हय गय गय

7 णंदयधणु° नन्द्यावर्तधनु, उहयमाण फन्मानशरमानोपेता　9 a चित्तविउडु चित्रामेण (?) विकट प्रकटो विपुलो वा　10 b सहसवत्तु कमलम्　12 b कद्दवमुहि° कर्दममुखी वापी　13 b झिज्जंत° क्षीणम्. 15 b अउव्व अपूर्वा　16 a पिसुणिंगिउ पिशुननेङ्गित चेष्टितम्

17　3 b सुहिअवयारें सुहृदामपकारेण. 4 a सलिलरंधि वाप्याम्. 7 b एतु आगच्छन् 9 a तं तेन ज्योतिप्रभेण 10 b देवें प्रद्युम्नेन. 11 a हय इत्यादि अश्वा गजाश्च हता सन्त नष्टा.

घत्ता—पेच्छिवि तुम्हारं कामएवसरणियरगइ ॥
ण कुसुमिकुलुम्हि भगउ समरि रणगाहिवइ ॥ १७ ॥

## 18

पयणुहुयाविधपसाहणेण पासेवि जणणु सहुँ साहणेण ।
पायालयावि सपत्तु जाम बोल्लिउ लहुय तणुएण ताम ।
जोइण्णहेण सिररोहणेण तुहुं मोहिउ दइवें मोहणेण ।
जहिं जहिं अम्हहिं कयउँ णिहित्तु पप्फुल्लकमलदलविमलणेत्तु ।
तहिं तहिं णीसरइ महाणुभाउ देविहिं पुज्जिज्जइ दिव्वकाउ ।
किं कहिं मि पुत्तु अहिलसइ माय को पावइ कामहु तणिय छाय ।
को अण्णु सुसच्चसउच्चवत्तु गंभीरु वीरु गुणगणमहंतु ।
को जाणइ किं अवाइ वुत्तु मारायहु पारद्धउ सुपुत्तु ।
महिलाउ होंति मायाविणीउ ण मुणहिं पुरिसतरु दुव्विणीउ ।
किं ताय णियविणिछहु चरहि लहु गंपि कुमारहु विणउ करहि ।
पडिवण्णउ पालहि वयहिं सामु अणुणहि णियणंदणु देउ कामु ।
इय णिसुणिवि चारुपबोल्लियाइ पहुणयणइं अंसुजलोल्लियाइ ।
गउ तहिं जहिं थिउ सिरिरमणतणउ बोल्लाविउ तें किउं तासु पणउ ।
णीसल्लु पघोसिउ णियइ दुक्कु आलिंगिउ दोहिं मि एक्कमेक्कु ।
उच्चाइवि सिल केसवसुएण अप्पणउं थिउ कक्कसभुएण ।

घत्ता—कय रियलियपासें ते खेयरैंरायगरुह ॥
णिग्गय सलिलाउ दुज्जसमसिमलमलिणमुह ॥ १८ ॥

## 19

मयणहु सुमणोरहसारएण तहिं अवसरि अक्खिउ णारएण ।
भो णिसुणि णिसुणि रिउदुव्विजेय वाराबइपुरवरि पवरतेय ।

18 १ ABPS तणएण २ APS देवहिं ३ AP को महियलि अण्णु सुसच्चवत्तु ४ ABPS धीरु ५ AP को ( P किं ) जाणइ किं मायए ( P माए ) पउत्तु ( P पउत्तु ) ६ ABPS सुपुत्तु ७ APS कउ ८ B णिडु ढुक्कु ९ B एक्कुमेक्कु १ P °पासे ११ A खेयराहिवअगरुह P खयराहिवअगरुह १२ APS °मइलमुह

19 १ A °रहगारएण २ AP °दुव्विजेउ ३ B पुरि ४ AP °पवरतेउ S पउरतेय

18 8 *a* अवाइ माता 10 *a* णियविणिछहु मार्याभिप्रायेण 11 *b* अणुणहि समानय 16 वियलियपास नागपाशरहिता

19 1 *a* °वारएण पूरण

जरॅसिंधकंसकयप्राणहारि  तुह जणणु जणद्दणु चॅक्कधारि ।
तहु पणइणि रुप्पिणि तुज्झु माय  पत्तियहि महारी सच्च वाय ।
भो आउ जाहु किं वयणएहिं  णियगोत्तु णियहि णियणयणएहिं ।
पणमियसिरेण मउलियकरेण  ता भणिउ कालसंभवुं सरेण ।
तुहु ताउ महारउ गयविलेव  वड्ढारिउं हउं पइं रुक्खु जेव ।
पयलतखीरधारापणाल  वीसरमि ण जणणि वि कणयमाल ।
ज हुंभणिओ सि दुणियच्छिओ सि  तं खमहि जामि आउच्छिओ सि ।
ता तेण विसज्जिउ गुणविसालु  अणडुहसदणि आरूढु बालु ।
कलहयरें सहुं चल्लिउ तुरंतु  गयपुरु संपत्तउ सचरंतु ।

घत्ता—संगरकखेण कामहु केरउ णउ रहिउ ॥
सिहिभूइपहुइ भवसवधु सव्वु कहिउ ॥ १९ ॥

## 20

ता भणइ मयणु मइं माणियाइं  चिरजम्मइं किह पइं जाणियाइं ।
ता भासइ णारउ मयमहेण  अक्खिउ अरुहें विमलप्पहेण ।
ता बिण्णि वि जण उवसमपसण्ण  एव चवंत गयउरु पवण्ण ।
तहिं कुंदकुसुमसमदंतियाउ  जाणिवि भाणुहि दिज्जंतियाउ ।
कंकेल्लिपत्तकोमलभुयाउ  दुज्जोहणपहुजलणिहिसुयाउ ।
वेहवियउ दमियउ तावियाउ  मायारूवेण हसावियाउ ।
जणु सयलु वि विब्भमरसविसट्टु  गउ मयणु महुरमग्गें पयट्टु ।
कारावियमणिमयमंडवेहिं  महुराउरि पत्तहिं पंडवेहिं ।
पारद्धी भाणुहि देहुं पुत्ति  ण कामकइयवयारजुत्ति ।
तहिं धरिवि सरेण पुलिंदवेसु  अलिकज्जलसामलकविलकेसु ।

५ BP जरसिंधु°, जरसंध°. ६ A °खयपाणहाणि, BP °कयपाणहाणि. ७ APS चक्कपाणि. ८ P पणविय°. ९ AP कालसवरु. १० B वड्डाविउ ११ S पइ हउं १२ AP °धाराथणाल. १३ BK दुम्मणिओसि दुणि°.

**20** १ A किर जम्मइं. २ P °पवण्ण ३ A °पहुजाणिहि ४ AP विंमयरस°, BS विम्हयरस°.

6 *b* सरेण स्मरेण कामेन 9 *a* दुणियच्छिओ दुर्निरीक्षित, *b* आउच्छिओ आपृष्ट.. 10 *b* अणडुहसदणि वृषभस्यन्दननाम्नि रथे. 11 *a* कलहयरें नारदेन. 13 सिहिभूइपहूइ अग्निभूतिजन्मादि.

**20** 1 *a* माणियाइं भुक्तानि 4 *a* °दंतियाउ दुर्योधनपुत्र्य 5 *b* °जलणिहि° राज्ञी-नामेदम् 6 *a* वेहवियउ वञ्चिता 7 *b* महुरमग्गें मधुरामार्गेण 9 *a* देहुं दातुं प्रारब्धा', *b* °कइयवायारजुत्ति कैतवाचारयुक्ति कामनूर्तित्वप्रवृत्ति 10 *a* सरेण कामेन

णीसेसकलाविण्णाणधुत्त　　खेल्लिवि[5] खरियालिवि[6] पडुपुत्त ।
दारावइणयरि पराइएण　　कुसुमसरें कंतिविराइएण ।
घत्ता—विज्झइ[7] झाइवि णारउ गयणि ससंदणउ ॥
थाणरवेसेण आहिंडइ महुमहतणउ ॥ २० ॥

## 21

दक्खालियसुरकामिणिविलासु　　सिरिसच्चहामकीलाणिवासु ।
दिसविदिसघित्तपाणाहलेण　　उज्जाणु भग्गु मारुयचलेण ।
सोसेवि वावि हंसगामिणिएण　　सकमंडलु पूरिउ पाणिएण ।
थिरथोरकंधघोलंतकेस　　रहवरि जोत्तिय गद्दह समेस ।
जणु पहसाविउ मणहरपएसि　　कामेण णयरगोउरपवेसि ।
पुरणारिहिं हियउ हरंतु रमइ　　पुणु वेज्जवेसु घोसंतु भमइ ।
हउं छिण्णकण्णसंधाणु करमि　　वांहियउ तिव्ववेयाउ हरमि ।
भाणुहि णिमित्तु उवाणियउ जाउ　　विहसाविउ गुवकुयरीउ ताउ ।
पुणु भाणुमायदेवीणिकेउ　　गउ बंभणवेसें मयरकेउ ।
घरि वइसारिउ सहुं बंभणेहिं　　पियउरिहिं लड्डुयखावणेहिं ।
भुजइ भोयणु केम वि ण थाइ　　आयग्गी आम रसोइ खाइ ।
ता सच्चहाम पभणइ हुदुदु　　बंभणु होइवि रक्खसु पइटु ।
घत्ता—ता भासइ भट्टु देवें ण सक्कइ भोयणहु ॥
किं दइवें आय एह मज्झ णारायणहु ॥ २१ ॥

---

५ S खेलेवि ६ A खखियालिवि ७ A विच्छाइवि ८ P णयरु

**21** १ AP सच्चमाम° २ APS दिसिविदिसि° ३ APS वाविउ ४ B णयरे ५ P पएसे ६ AS वाहिउ P वाहीउ ७ ABP णिव° ८ AP सच्चहाम S सच्चमाम° ९ S बम्हण° १० APS पियउरहि ११ B लड्डुय° P लड्डुअ° S लड्डुव° १२ A केण १३ P सच्च भाम १४ P ण होइ for होइवि १५ AP दीण १६ S किल

---

11 *b* खरियालिवि कदर्थयित्वा खेदयित्वा वा 13 झाइवि

**21** 1 *b* णिवासु उद्यानम्. 2 *b* मारुयचलेण ... वेज्जवेसु वैद्यवेष 10 *b* पियउरिहिं घृतपूरैः. लड्डुय° लड्डुकैः ... वर्तते पूर्वदेशे दह्निवर्दीवत् 11 *b* आयग्गी रसोइ रसवती (?) 13 ...

22

पुणु गयउ झसद्धउ धद्धणेहु खुल्लयवेसें णियजणणिगेहु ।
हउं भुक्खिउ रुप्पिणि गुणमहंति दे देहि भोज्जु सम्मत्तवंति ।
ता सरसभक्खु उक्खित्तगासु णाणातिम्मणकयसुरहिवासु ।
जेमाविउ तो वि ण तित्ति जाइ हियउल्लइ देविहि गुणु जि थाइ ।
कइ कइ व ताइ पीणिउ विहासि विरएवि पुरउ लड्डुयहं रासि ।
विणु कालें कोइलरावमुहलु अवयारिउ महुरसमत्तमसलु ।
तक्खणि वसंतु अंकुरियकुरुहु कयपणयकलहु जणजणियविरहु ।
णारउ पुच्छिउ पीणत्थणीइ कोऊहलभरियइ रुप्पिणीइ ।
महु घरु को आयउ खयरु देउ ता तेण कहिउं सिसु मयरकेउ ।
अवयरिउ माइ दे देहि खेउ ता कामें णिसुणिवि वयणु एउ ।
दंसिउ सरूउ णियमाउयाहि पण्हुयपयपयलियथणजुयाहि ।

घत्ता—जणणीथण्णेण सुउ मिलंतु अहिसिंचु किह ॥
गंगातोएण पुप्फयंतु पहु भरहु जिह ॥२२॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे रुप्पिणिकामएवसंजोउ णाम एकणवदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ९१ ॥

22. १ APS °रोल°, B °रव° २ BP खयरदेउ ३ S सरूवु. ४ A ता एत्तहिं for मिलंतु in second hand ५ S पुप्फदंत°. ६ B रूपिणि° ७ AS एकाणवदिमो, B एकणवदिमो, एकाणउदिमो

22 1 *a* झसद्धउ काम, *b* खुल्लयवेसें ब्रह्मचारिवेषेण 3 *a* उक्खित्तगासु उच्चलितग्रास, *b* °तिम्मण° व्यञ्जनम्. 5 *a* विहासि शोभमान, *b* लड्डुयहं मोदकानाम् 6 *b* महु° मकरन्द. 7 *b* °पणयकलहु मिथुनस्य स्नेहयुद्धम् 10 *a* खेउं आलिङ्गनम् 11 *b* पण्हुयपय प्रस्नुत पयः. 13 भरहु जिह भरतचक्रीवत्.

# XCII

पसरंतणेहरोमंचिएण देवें रुप्पमसारें ॥
कमकमलइं जणणिहि णवियाइं सिरिपज्जुण्णकुमारें ॥ ध्रुवकं ॥

## 1

जहिं अच्छिउ त पुरु घरु देसु वि पुणु चित्तहु कहिउ णीसेसु वि ।
सुहकुहरुग्गयसुमहुरवायहि बालकील दक्खालिय मायहि ।
पुत्तसणेहु जणिउ णिरु णिब्भरु तहिं कालए परियाणिवि अवसरु ।
दुज्जेणु हरिसें कहिं मि ण माइउ धुरंधिहत्थु चडिलउ पराइउ ।
तेण समीहतें दूसइ कलि मग्गिय मयणजणणिअलयावलि ।
भाणुकुमारहु ण्हाणणिमित्तें त णिसुणिवि णिरु विम्हियचित्तें ।
पुच्छिय णियमायरि कंदप्पें किं पवुत्तुं एएण सदप्पें ।
णील णिद्ध मउर सुहकारा किं मग्गिय धम्मिल्ल तुहारा ।
त णिसुणिवि देवीइ पवुत्तउं पुव्वकम्मु परिणवइ णिरुत्तउं ।
दिव्वपुरिसलक्खणसपुण्णउ जइयहुं तुहुं महु सुउ उप्पण्णउ ।
तइयहुं सच्चभामणामंकइ भाणु जणिउ मुहजियससंकइ ।
बिहिं मि सहीउ गयाउ उविंदहु पासि पायपाडियरिउवंदहु ।
घत्ता—ता तहिं हरिणा सुत्तुट्ठिएण पियपायंति बइट्ठी ॥
अम्हारी सिंधुंमिगलोयणिय सहयरि सहसा दिट्ठी ॥ १ ॥

## 2

देवदेव रुप्पिंणिहि सुछायउ लक्खणवंजणवंचियकायउ ।
जाउ पवुत्तु पुत्तु सजायउ त णिसुणिवि हरिसिउ महिरायउ ।
पढमपुत्तु तुहुं चेय पघोसिउ पडियक्खहु मुहमगु पवेसिउ ।
घइरिएण घल्लियभवलेवें णवर णिओ सि कहिं मि तुहु देवें ।

1 १ AP देहरोमचिएण २ धुजण ३ S omits this foot ४ S विम्हिय° ५ B पवुत्तु पई एण सदप्पें ६ B णिद्ध ७ APS सुहगारा ८ A °पुरिसु ९ A °सपुण्णउ १० A सच्चहाम° ११ B बिहि १२ S पायपडिय° १३ S °मृग°

2 १ A रुप्पिणिसुच्छायउ २ P °विंजण° ३ A पदरिसिउ

1 1 रुइमचारें कामेन 6 *a* दुज्जणु सत्यमामाप्रमुख; *b* चडिलउ नापितः 9 *b* एएण पतेन 10 *a* मउर चका 14 *a* बिहिं द्वयो सखन्धिन्य 15 पायति पादान्ते 16 अम्हारी सखी

2 3 *b* पडिवक्खहु सत्यमामाप्रमुखस्य 4 *a* घइरिएण पूर्वजन्मरिपुणा °भवलेवें गर्वेण

विमलसरलसयदलदलणेत्तहु जेट्ठउ कमु जायउ सावत्तहु ।
कलहंतिहिं घट्टियणिसुणत्तणि चिरु बोल्लिउं दोहिं मि तरुणत्तणि ।
विहिं मि पुत्तु जा पढमुं जणेसइ सा अवरहि धम्मिल्लु लुणेसइ ।
मंगलधवलथोत्तहयसोत्तइ पुत्तविवाहकालि संपत्तइ ।
हरिसें अज्जु सेवत्ति विसट्टइ सुयकल्लाणण्हाणु घरि वट्टइ ।
एहु ताहि आएसें वग्गइ णाविउ मज्झ सिरोरुह मग्गइ ।
तं णिसुणिवि विज्जासामत्थें देवें उच्छुसरासणहत्थें ।
वम्महेण जणकोंतलहारिहि अवरु सहाउ विहिउ छुरधारिहि ।
पत्त अणंत वि णं जमदूय तज्जिय मिच्च जणद्दणरूय ।

घत्ता—पम्मरतें गयणालम्मपण रूसिवि पंतु दुरंतउ ॥
अद्दहिं पाए ताडियउ जरु णामेण महंतउ ॥ २ ॥

3

मेसें होइवि हउ सपियामहु हलिहि भिडिउ होएप्पिणुं महुमहु ।
सप्पिणिरूउ अणु किउ तक्खणि णिहिय विमाणि णीय गयणंगणि ।
दामोयरु मसेप्पु कुढि लग्गउ णियजालेण सो चि णिहुं भग्गउ ।
जयसिरिलीलालोयपसण्णहं को पडिमल्लु एत्थु कयपुण्णहं ।
दर हसंतु सुगणरूलियारउ तहिं अवसरि आहासइ णारउ ।
कामण्ड णरणयणपियारउ पंधे वियभिउ पुत्तु तुहारउ ।
जं कल्लोलहु उत्तगत्तणु तं महुमह सायरहु पहुत्तणु ।
ज तणयहु पयाउ गलहूसणु त माहव कुलहरहु विहूसणु ।
हरि हरिवंससरोरुहणेसरु त णिसुणिवि हरिसिउ परमेसरु ।

४ A जेढकम्मु पालिउ गावत्तहो, B-Als जेट्ठाकम्मु जाउ सावत्तहो, P जेट्ठकमु पालिउ सावत्तहो, Als. suggests to read जेट्ठपमु जायउ सावत्तहो ५ S वड्डिए ६ S पढम ७ B धम्मिल्लु, P धम्मोल्लु, S धम्मेल्ल. ८ BS °णित्त° ९ AP णियतणुरुहविवाहे आदत्तए. १० B सविसि. ११ S ण्हाविउ १२ P उच्छ° १३ P °सूरें, S रूव

3 १ S होयवि. २ S होएवि तहि. ३ B मुहुमुहु, P समुहु ४ AP विमाणमज्झे. ५ AP णियजालेण, S नूवजालेण ६ APS रणि. ६ B एव, S एउ. ७ A कल्लोलु होउ तुगत्तणु. BPS उत्तुग°. ८ A हणिउ

5 *b* णायवत्तहु नपत्नीपुत्रस्य .8 *a* °हयसोत्तइ हतकर्णे 9 *a* विसट्टइ विकसति, *b* °कल्लाण° विवाह 10 *a* एहु नापित 12 *a* वम्महेण कामेन, *b* छुरधारिहि नापितस्य. 13 *a* एत आगच्छन्त, *b* जणद्दणरूए विष्णुरूपेण. 15 जरु जरनाम्ना.

3 1 *a* मेसें होइवि मेषरूपेण, सपियामहु वसुदेव 3 *a* कुढि पृष्ठे, *b* णिहु नृपः. 9 *a* °णेसरु सूर्य.

सिसुदुव्विलसियाइं कयरायहु हरिसु जणंति अवस पियतायहु ।
एत्थंतरि भणगु पयडंगउ होइवि गुरुवयणि विणयवस गउ ।
पडिउ चरणजुयलइ महुमहणहु कसकेसिपायमद्दयदहणहु ।
तेण वि सो भुयंदंडहिं मंडिउ आसीवाउ देवि अवरुंडिउ ।
घत्ता—कइंपु कणयणिहु केसवहु अणालोणउ मणहरु ॥
णं अंजणमहिहरमेहलहिं दीसइ सञ्झाजलहरु ॥ ३ ॥

4

हरिणा मयणु चडाविउ मयगलि णं दियहेण भाणु उययाचलि ।
उवसमेण परमत्थविमाणइ णं अरहंतु देउ गुणठाणइ ।
वदिविदेउग्घोसियभद्दें पुरि पइसारिउ जयजयसद्दें ।
किउ अहिसेउ सरहु सुरमहियहु भाणुयवइकुमारिहिं सहियहु ।
सो च्चि कुलक्कमि जेट्ठु पयासिउ पडिवक्खहु उव्वेउ पयासिउ ।
सुय रुप्पिणीइ भणि णीलुप्पल सच्चहामदेवियहि सिरि कोंतल ।
भवियव्वउ पच्छण्णु पंयासिउ अण्णहिं वासरि केण वि भासिउं ।
गोविंदहु करिकरदीहरकरु होही को वि पुत्तु कण्णामरु ।
त आयण्णिवि भाणुहि मायरि गय तहिं जहिं अत्थाणइ थिउ हरि ।
पत्थिउ पिययमु ताइ णवेप्पिणु अण्ण म सेवहि मइं मेल्लेप्पिणु ।
ताय आय तणुरुहु उप्पज्जइ त मग्गिउ तहि देवें दिज्जइ ।
त णिसुणिवि रुप्पिणि सणंदणु भणिउ सयणमयणयणाणंदणु ।
पुत्त पुत्त पिसुणहिं पाविट्ठहिं मज्झु सेयचिंधहि दुट्ठहि धिट्ठहि ।
घत्ता—खेयरिइ महुसूयणवल्लहइ जइ वि णाहु ओलग्गिउ ॥
तो वि तिह करि पइं होइ सुउ पत्थिउ तुहु मइं मग्गिउ ॥ ४ ॥

९ P अवसु १० P गुरुयण° ११ S भुयदंडहिं

4 १ B उवयाचलि २ S अरहंतदेउ ३ B वद° ४ S omits this foot ५ AB पयसारिउ ६ S भाणु वि इट्ठ° P भाणुवइहु कुमारिहिं ७ P कुलक्कम ८ AP णीलुप्पल ९ APS सच्चभाम° १० BS वि दरिसिउं ११ B तणरुहु १२ P तहि दइवें S व दइए. १३ BP सणिच्चिंदे १४ BP खेयरिए १५ P महुसूयण° १६ S करे १७ BPS णउ होइ

10 *a* कयरायहु कृतरागस्य प्रीतेः *b* अवस अवश्यम् 11 *a* पयडंगउ प्रकटशरीर 13 *a* तेण हरिणा 14 कणयणिहु सुवर्णसदृशवर्ण 15 मेहलहि मेखलाया तटे

4 2 *a* परमत्थविमाणइ त्रयोदशे गुणस्थाने 3 *a* भद्दें मङ्गलेन 4 *a* सरहु स्मरस्य *b* भाणुवइहु पूर्वं भानोर्या कन्या उपदिष्टा तामि सहितस्य 7 *a* भवियव्वउ केनचिन्नैमित्तिकेन भवितव्यं कथितं स्वर्गाद्देवश्च्युत्वा कृष्णपुत्रो भविष्यति 9 *a* भाणुहि मायरि सत्यभामा 11 *b* दिज्जइ दीयते, दत्तमित्यर्थः 13 *a* पिसुणहिं दुर्जनाभ्यां सत्यभामाया 14 खेयरिइ सत्यभामया.

## 5

ताहि म होउ होउ वर पयहि जवावइहि पुण्णससितेयहि ।
वच्छल पियसहि णदउ रिज्झउ इयर विसमसतावें डज्झउ ।
तं णिसुणिवि विहसिवि कदप्पें णियविज्जासामत्थवियप्पें ।
पइरइकामहि वड्ढियछायहि रयसंलिदियहि चउत्थइ ण्हायहि ।
जवावइहि रूउ किउ केहउं सच्चहामदेविहि ज जेहउ ।
कामरूयमुद्दिय पहिरेप्पिणु गय हरिणा वि पवर मण्णेप्पिणु ।
रमिय गब्भु तक्खणि सजायउ कीडवसुरु सग्गग्गहु आयउ ।
णवमासहिं लायण्णरवण्णउ सभेंवु णाम पुत्तु उप्पण्णउ ।
जवावइहि पउण्ण मणोरह सुय वड्ढंति महंत महारह ।
जणणिजणियापिसुणत्तें दारुणु अवरहिं दिवसि जाय कोवारुणु ।
सभवेण अवमाणिवि घित्तउ भाणु भणियसरजाइहि जित्तउ ।
पुण्णविसेसु मुणिवि गरुयारउ मुक्कउ झ त्ति रोसपब्भारउ ।
सच्चहामदेविइ गुणकित्तणु पडिवण्णउ रुप्पिणिसयणत्तणु ।

घत्ता—इय णिसुणिवि मुणिगणहरकहिउं सीरपाणि पुणु भासइ ॥
अज्ज वि कइ वरिसइ महुमहणु देव रज्जु भुजेसइ ॥ ५ ॥

## 6

दसदिसिवहपविदिण्णहुयासें णासेसइ दीवायणरोसें ।
मज्जणिमित्तें दारावइ पुरि जरणामें वणि णिहणेवेउ हरि ।
एउं भविस्सु देउ उग्घोसइ बारहमइ सवच्छरि होसइ ।
पढमणरइ सिरिहरु णिवडेसइ एक्कु समुद्दोवमु जीवेसइ ।
पच्छइ पुणु तित्थयरु हवेसइ एत्थे खेत्ति कम्माइं डहेसइ ।

---

**5** १ P हसेवि २ B °कामहो ३ APS रयसल° ४ S रूवु ५ APS सच्चभाम° ६ S °रूव° ७ S परिहेप्पिणु ८ B Al° विघवर ( वि + अवर ) ९ A मेल्लेप्पिणु १० AP कीडयसुरु सो सग्गहो आइउ ११ P लावण्ण° १२ B सभवणामु, P जवावइहे पुत्तु उप्पण्णउ १३ AP ते वेण्णि वि पउण्णमणोरह. १४ BK °जायहिं १५ AP मुणेवि १६ APS सच्चभाम° १७ P अज्जु

**6** १ P णिहणेव्वउ. २ ABPS णिवसेसइ ३ AP एत्थु छेत्ति.

---

**5** 4 *a* पइरइकामहि भर्तृरतिवाञ्छकाया, *b* रयसलिदियहि रजस्वलादिने 6 *b* पवर मण्णेप्पिणु प्रवरा मत्वा 7 *b* कीडवसुर क्रीडवचरः 9 महारह रणेऽनिवर्तका 1 *a* जणणिजणिय° मातृसधुक्षितेन 11 *b* भणियसरजाइहि भणितबाणजात्या

**6** 2 *b* जरणामें सत्यभामामन्त्रिणा.

सुहु छम्मास जाम सोआयउँ हिंडेसहि सोयवंउ भायरु।
विमलि देवि उम्मोहेवेंउ धणि सिद्धत्थें सबोहेवउ।
दुग्गवरिय विक्ख पालेप्पिणु कुच्छिउ णरसरीरु मेल्लेप्पिणु।
माहिंदइ अमरत्तु लहेसहि पुणरवि पउ खेत्तु आवेसहि।
होसहि सिरिअरहतु भडारउ तुम्हहवम्महधम्मवियारउ।
इय णिसुणिवि दीवायणु मुणिवरु हुउ गउ अवरु पवरु देसतरु।
महुमइमरणायण्णणसंकिउ थिउ जाइवि णियदइवें ढंकिउ।
जरकुमारु विलसियपत्राणणि कोसवीपुरिणिअडइ काणणि।
भूसिउ गुंजाहरणविसेसें सहिउ सुंदरु णाहलवेसें।
घत्ता—मिच्छत्तें मेलिणीहुयएण दहणरयाउसु बद्धउ॥
महुमहणें पुणु संसारहरु जिणवरदसणुं लद्धउ ॥ ६ ॥

## 7

पसरियसमयभत्तिगुणरुंदें बेआयम्बु कयउ गोविंदें।
सत्तुय काराविय णियपुरवरि ओसहु तें दिण्णउ मुणिवरकरि।
तित्थयरत्तु णामु तेणज्जिउं ज अमरिंदणरिंदहिं पुज्जिउ।
इय णिहुणिवि माहउ आउच्छिवि णासणसीलु सव्वु जगु पेच्छिवि।
पज्जुण्णाइ पुत्त थउ लेप्पिणु थिय णिग्गथ कलुसु मेल्लेप्पिणु।
रुप्पिणि आइ करिवि महएविउ अट्ठ वि दिक्खियाउ सुयसेविउ।
वम्महु सभेउ रिसि अणुरुद्धउ तवजलणें डहिवि मयरद्धउ।
तिण्णि वि उज्जयंतगिरिवरसिरि महुरमहुरणिग्गयमहुयरगिरि।
केवलणाणु विमलु उप्पाइवि किरियाछिण्णु झाणु णिज्झाइवि।
घत्ता—गय मोक्खहु णेमि सुरिंदथुउ णिम्मलणाणविराइउ॥
विहरेप्पिणु बहुमेसतरइ पल्लवविसयहु आइउ ॥ ७ ॥

४ AS सोयाउरु P सोयायरु ५ B सोयतउ ६ APS विमलें दवें ७ A उम्मोएवउ P उम्मोहे ह्वउ ८ I दीयायणु ९ S जायवि १ B °कुमार ११ B मिलिणीहुयएण १२ B °दसण

7 १ B णियपुरि २ S °णिण्णा ३ S माइहु ४ AP सिम° ५ AB सब्बूरिसि ६ APS अणिरुद्धउ ७ ABPS डहेवि ८ S छिण्ण

6 *b* सोयवउ शोचमान 7 *a* उम्मोहेवउ मोहरहित करणीयः; *b* सिद्ध में सिद्धार्थनाम्ना देवेन 9 *b* आवेसहि भरतक्षेत्रमागमिष्यति 12 *a* आयण्णणसंकिउ आकर्णनेन भीत

7 1 *a* समय जिनमतम् 2 *a* सत्तुय सक्तव 4 *a* आउच्छिवि पृष्ट्वा *b* णासणसीलु अस्थिरम् 6 *b* सुयसेविउ श्रीसेविता 7 *a* वम्महु प्रद्युम्न अणुरुद्धउ प्रद्युम्नपुत्र 8 *b* महुर महुर मधुरादपि मधुरा महुयरगिरि भ्रमरशब्दे

## 8

चलपवेँ पुच्छिउ सुरसारउ　　पंडवकहइ वज्जरइ भडारउ।
कंपिल्लिहि णयरिहि णरपुंगमु　　दुमउं णाम महिवइ गुहुगमु।
दढरह घरिणि पुत्ति तहु दोवइ　　जा सोहग्गें कामु वि गोवइ।
सा दिज्जइ कहु मंतु पमंतिउ　　चहु णाम पोयणपुरि णत्तिउ।
देविल घरिणि पुत्तु जाणिज्जइ　　इंदवम्मु तहु सुंदरि दिज्जइ।
अवरेँ भणिउ भीमु भडकेसरि　　जो आहवि घल्लइ णहयलि करि।
दिज्जइ तासु धूय परमत्थेँ　　अवरु भणइ जइ परिणिय पत्थेँ।
तो पयहिं तूँयपट्टु णिबज्झइ　　अण्णु भणइ महु हियवइ सुज्झइ।
सुयहि सयवरविहि मंडिज्जइ　　केत्तिउ हियउल्लउ गाडिज्जइ।
जो रुचइ सो माणउ इच्छइ　　दुज्जण किं करंति किर पच्छइ।

घत्ता—तहिं अवसरि खलदुज्जोहणेण कवडें जूइ जिणेप्पिणु॥
णिद्धाडिय पडव पुरवरहु सइ थिउ पुहइ लएप्पिणु॥ ८॥

## 9

पुव्वपुण्णपब्भारपसंगें　　जउहरि घल्लिय णट्ठ सुरंगें।
गय तहिं जहिं आढत्तु सयंवरु　　विविहकुसुमरयरंजियमहुयरु।
मिलिय अणेय राय मउडुज्जल　　चमरधारिचालियचामरचल।
पहपसुल पथिय छुह आइय　　ते पंच वि कण्णाइ पलोइय।
दइवें लोयवालं ण ढोइय　　णं वम्महसरगुण सजोइय।
सिद्धत्थाइ राय अवगण्णवि　　कामु व दिव्वधणुद्धरु मण्णिवि।
पत्थु सलोणु विसेसें जोइउ　　तहि दइवें भत्तारु णिओइउ।
घित्त सदिट्ठि माल तहु उरयलि　　लच्छीकीलाभवणि पविउलि।
ता हरिसिय णीसेस णरेसर　　पहिय पणच्चिय उब्भिवि णियकर।
जयजयसद्दें णयरि पइट्ठहिं　　जिणअहिसेयपणामपहिट्ठहिं।

8　१ AP दुवउ णासु, S दुमउ. २ BS अवरिं　३ AB भीममडु. ४ AP तियपट्टु. ५ B खलु. ६ BP जूए

9　१ A जऊहरे, BPS जउहरे. २ P सुतुगें　३ BS °कुसुमरसरजिय°　४ BP °जलु. ५ B °चलु　६ P लोइयवाल　७ P दिव्वु　८ P °पगणि, S °प्रगण°　९ A °पणामअटिट्ठहिं.

8　2 *b* दुमउ द्रुपद.　3 *a* दोवइ द्रौपदी, *b* गोवइ कोपयति क्रोध कारयति　6 *b* करि गजान्　7 *b* पत्थेँ अर्जुनेन.

9　1 *a* जउहरि लाक्षामण्डपे आवासे धृताः, तस्मात् शृङ्गविवरेण नष्टाः. 3 *b* चमरधारि° चमरधारिणीभिः. 4 *a* पहपसुल मार्गधूलिग्राहिण. 6 *b* दिव्वधणुद्धरु अर्जुन. 7 *a* पत्थु अर्जुनः; सलोणु लावण्ययुक्तः.

कालु जंतु बहुरायविणोयहिं णेउ जाणइ भुंजेवि य भोयहिं ।
घत्ता—कालें जंतें थिरथोरकरु रणि पल्हत्थियगयघडु ॥
पत्थेण सुहद्दहि सजणिउ सिसु अहिमण्णु महाभडु ॥ ९ ॥

## 10

अवरु वि सुहमरुथियमत्तालिहि सुय पञ्चालें जाय पञ्चालिहि ।
पुणु वि भुयंगसेणपुरि पविसेंणु कियउ तेहिं कीमयाणिण्णासणु ।
मायाथियरूयाइं धरेप्पिणु पुणु विराडमंदिरि णिवसेप्पिणु ।
अरिणरवइ जिणेवि सर घत्तिवि कुढि लग्गेवि गोउलइं णियत्तिवि ।
पुणु कुरुखेत्ति पवड्ढियगोरव पइसुपहिं परज्जिय कौरव ।
अक्खलियपरिपालियहरियाणउ जाउ जुहिट्ठिल्लु देसहु राणउ ।
थिउ रायाणुवहिं गुणवंतउ भायरेहिं सहुं सिरि भुंजंतउ ।
बारहवरिसइं णवर पउण्णइं गलियइं पंकयणाहहु पुण्णइं ।
धणघेल्लियमइराइ पमत्तहिं मयपरवसहिं पज्जुम्मिरणेत्तहिं ।
सिसुकीलारएहिं संताविउ रायकुमारहिं रिसि रोसाविउ ।
सो दीवायणु हुइ हुइ भावउ मुउ भावेणसुरु तक्खणि जायउ ।
घत्ता—आरूसिवि पिसुणें मुक सिहि पावेप्पिणु सुरदुग्गइ ॥
धयलहरधवलघर्ममणहरिय खणि डेड्ढी बारावइ ॥ १० ॥

---

१ BAls णउ जाणिज्जइ भुंजियमोयहिं ११ A थिरघोरकव १२ APS अहिवण्णु

**10** १ S अवर २ BS पंचाल ३ B भुयगसेल° S भुयगसल° ४ P पइसणु ५ S कयउं ६ P °रूयाइ ७ S omits this foot ८ BAls °गारव PS °भउरव ९ PS कउरव १ AP णायाणुवहि B रायाणुवहि ११ P सउ १२ ABPS मणे १३ B पत्तहिं १४ B भावणि S भावणु १५ P सजायउ १६ P भइमणोहरिय १७ B दिद्धी

---

13 सुहद्दहि प्रथमपत्न्यां सुभद्रायाम् अहिअण्णु अभिमन्यु

**10** 1 *a* सुहमरु मुखवाते *b* पंचालद्रौपदीपुत्रा पञ्च पंचालिहि द्रौपद्याः 2 *a* भुयग सेण नगरस्य नामेदम् *b* कीअय कीचकस्य 3 *a* मायाविथरूयाइं युधिष्ठिरेण राजरूपम्, भीमेन रसवतीपाकरूपम् अर्जुनेन बृहन्नलरूपम् नकुलसहदेवाभ्यां विप्ररूपम् 4 *a* सर घत्तिवि बाणान् मुक्त्वा *b* णियत्तिवि पश्चाभिवर्त्य गृहीत्वा 8 *b* पंकयणाहहु पद्मनाभस्य 10, *b* रिसि द्वीपायन

## 11

सयणमरणोल्हमोप भरियउ   सहु बलएवें लहु णीसरियउ ।
होउ होउ दिव्वाउहणिक्खरइ   पोरिसु काइ करइ भग्गक्खइ ।
ण धय ण छत्त ण रह णउ गयवर   णउ किंकर चलंति णउ चामर ।
देहमेत्त सावयभीमावणु   वेण्णि वि भाइ पइट्ठ महावणु ।
चक्कि विडविनलि गुत्तु तिसायउ   सीरि सलिलु पविलोयहु धाइउ ।
तहिं अवसरि हयदेव्वें रूढउ   जरकुमारभिल्लें हरि विद्धउ ।
जइ वि जीउ दुग्गइ आसवइ   तो वि ण णियइ को वि जगि ल्हवइ ।
मुउ बउ पढमणेत्यविवरंतरु   सोक्खु ण कासु वि भुंयाणि णिरंतरु ।
जलु लएवि तक्खणि पडियाए   पसरियमोहतिमिरग्घयाएं ।

घत्ता—पयकालफणिदें कवलियउ महि णिवडिउ णिच्चेयणु ॥
वोल्लाविउ भायरु हलहरिण मेल्हउ मउलियलोयणु ॥ ११ ॥

## 12

उट्ठि उट्ठि आपाणु णिहालहि   लइ जलु महुमह मुहु पक्खालहि ।
दामोयर धूलीइ विलित्तउ   उट्ठि उट्ठि किं भूमिहि सुत्तउ ।
उट्ठि उट्ठि केसव मइं आणिउ   णिक तिसिओ सि पियहि तुहुं पाणिउ ।
उट्ठि उट्ठि सिरिहर साहारहि   मइ णिज्झाणि घणि किं अवहेरहि ।
उट्ठि उट्ठि हरि मइ बोल्लावहि   चिंताऊरिउ केत्तिउं सोवहि ।
पूयणमंथण सयडविमद्दण   विमणु म थक्कहि देव जणद्दण ।
इंदु वि युज्झइ तुह असिधरजालि   अज्जे वि तुहु जि राउ धरणीयलि ।
उज्झउ पुरि विहडउ तं परियणु   अंतेउरु णासउ वियलउ धणु ।
भाइ अरत्तिदिच्चिउप्पायणं   छुडु तुहु पहु होहि णारायणं ।

11 १ AP °मरणभयमोए. २ P वण यण छत्त ण रह णउ गयवर; S ण धय ण उत्त णउ गयथर. ३ B किंकिर. ४ AP चलति चामरधर ५ B °मित्तु, S °मेत्तु ६ B भाइ ७ B वणे ८ APS तिसाइउ. ९ P सीरि वि सलिलु पलोयहु धाइओ. १० B हउ ११ AP °भल्लें. १२ S जीवु. १३ P °णरए, १४ P सुयण. १५ APS पडिआए. १६ S माहवु.

12 १ S मुहु २ P °मथण°. ३ Als अज्जेवि, BS अज्जि वि. ४ APS °धरित्ति°, ५ A °वित्ति° P °विति° ६ P °उप्पायणु. ७ P णारायणु

11 1 *a* °रुह° उत्सनेन 2 *b* भग्गक्खइ भाग्य पुण्य तस्य क्षयं. 5 *a* विडवितलि वृक्षतले, *b* पविलोयहु अवलोकयितुम 7 *a* दुग्गाइ विषमस्थानानि, *b* णियइ मयितव्यम्. 9 *a* पडियाए प्रत्यागतेन. 11 मउलियलोयणु मुकुलितनेत्र.

12 5 *b* चिंताऊरिउ मगरदाहत्वात्. 6 *b* विमणु विमना. 8 *b* वियलउ विगलतु नश्यतु.

जहिं तुहुं तहिं सिरि अवसें णिवसइ    जहिं ससि तहिं कि जोण्ह ण विलसइ।
उट्ठि उट्ठि महिय जाइज्जइ    किं किर गिरिकंदरि णिवसिज्जइ।
किं ण मज्झु करयलि फलु ढोयहि    किं रुट्ठो सि बप्प णउ जोयहि।

घत्ता—उट्ठावेवि सुहरु सवधवेण हरिहि अग्गु परिमट्ठउं ॥
पणयियरइ होंतउ रुहिरजलु ताम गलंतउ दिट्ठउ ॥ १२ ॥

## 13

त अवलोइवि सीरिहि रुण्णउ    तुज्झु वि तणु किं सत्थें भिण्णउ।
गरुडणाहु किं डसियउ सप्पें    अहवा किं किर एण वियप्पें।
म छुहु जरकुमारु पत्थाइउ    तेण महारउ बंधवु घाइउ।
धाइउ ण मरइ कण्हु भडारउ    दुद्दमदाणविंदसंघारउ।
पेउ भणंतु पेउ सो ण्हाणइ    सोयाउरु णउ काइ मि जाणइ।
देवगइ वत्थइ परिहावइ    भूसणेहिं भूसइ भुजावइ।
मुयउ तो वि जीवंतु व मण्णइ    अणभासिउ ण किं पि आयण्णइ।
कुंकुमचंदणपंकें मद्दइ    खंधि चडाविवि महि आहिंडइ।
देवें सिद्धत्थें संबोहिउ    थिउ बलएउ समाहिपसाहिउ।
छम्मासहिं महियलि ओयारिउ    विट्ठु सहट्ठु तेण सक्कारिउ।
सुहिविओयणिव्वेए लइयउ    णेमिणाहु पणवेवि पावइयउ।
अच्छरकरचालियचलचामरु    सो संजायउ माहिंदामरु।

घत्ता—आयण्णिवि महुसूयणमरणु असधवलियजयमंडव ॥
गय पव्व वि सिरिणेमीसरहु सरणु पइट्ठा पंडव ॥ १३ ॥

## 14

दिट्ठउ जिणु णीसल्लु णिरंतरु    पणवेप्पिणु पुच्छिउ सभवंतरु।
अक्खइ णेमिणाहु इह भारहि    चपाणयरिहि महियलि सारहि।

८ APS जोयहि

13 १ AS सीरिं P सीरं २ B गुरुड° ३ B डसिउ ४ APS बधु वि घाइउ ५ APS घायउ ६ P एम ७ A भणतु कण्हु सो ८ B महुसयण° S महसूयण° ९ P पयट्ठा

14 १ B णिरंतरु २ APS महियल°

11 *a* म हिय हे नारायण 13 उट्ठा वि वि उत्थाप्य 14 व ण मण·

13 1 *b* स थें शस्त्रेण ५ *a* पेउ मृतक स्नापयति 9 *b* प सा हि उ शृङ्गारितः
10 *a* ओ या रि उ भूमौ स्व आदवतारित *b* स क्का रि उ दग्ध 13 °ज य जगत्

मेहयांहु कुरुवसपहाणउ　　हौंतउ इंदसमाणउ राणउ ।
सोमदेउ बंभणु सोमाणणु　　सोमिल्लावंभणिअणमाणणु ।
सोमयत्तु सोमिल्लउ भणिउ　　णंदणु सोमभूइ जणि जाणिउ ।
ताहं अणेयधण्णधणरिद्धिउ　　अग्गिभूइ माउलउ पसिद्धउ ।
अग्गिलगब्भवासंसंभूयउ　　धूयउ तिण्णि तासु पियभूयउ ।
धणसिरि मित्तसिरी वि मणोहर　　णायसिरी वि सुतुंगपओहर ।
दिण्णउ ताहं ताउ धवलच्छिउ　　कुलभवणारविंदणवलच्छिउ ।
जिणपयपंकयाइं पणवेप्पिणु　　सोमदेउ गउ दिक्ख लएप्पिणु ।
अण्णहिं दिणि धम्मरुइ भडारउ　　दूसहतवसंतत्तसरीरउ ।
णायकंतोट्टदलुज्जलणेत्तें　　सोमदत्तणामें दियपुत्तें ।
परमइ अणुकंपाइ णियच्छिउ　　घरपंगणु पावंतु पडिच्छिवि ।
धणसिरि भणिय तेण वंयगेहउ　　भोयणु देहि रिसिहि णिण्णेहहु ।

घत्ता—ता रूसिवि ताइ अलक्खणइ साहुहि विसु करि दिण्णउं ॥
तं भक्खिवि तेण समंजसेण संणासणु पडिवण्णउं ॥ १४ ॥

## 15

देउ भडारउ हुयउ अणुत्तरि　　दुक्खविवज्जिइ सोक्खणिरंतरि ।
तं तेहउ दुक्किउ अवलोइवि　　मइ अरहंतधम्मि संजोइवि ।
वरुणायरियहु पासि अमाया　　तिण्णि वि भायर मुणिवर जाया ।
गुणवइखंतिहि पयइं णवेप्पिणु　　कामु कोहु मोहु वि मेल्लेप्पिणु ।
तरुणिहिं सजमगुणचिंतियणाउं　　मित्तणायसिरिहिं मि वउं चिण्णउं ।
सल्लेहणविहिलिहियइ गत्तइं　　अच्चुयकप्पि सुरत्तणु पत्तइं ।
पंच वि ताइं पहाउ महंतइं　　थियइं दिव्वसोक्खइं भुंजंतइं ।
ताम जाम बावीससमुद्दइं　　धम्में कासु ण जायइं भद्दइं ।
रिसि मारिवि दुक्कियसंछण्णी　　पंचमियहि पुढइहि उप्पण्णी ।
पुणु वि सयंपहदीवि दुदरिसणु　　फणि हूई दिट्ठीविसु भीसणु ।

३ A मेहवाउ. ४ APS °धणरिद्धउ. ५ Als. °वासे, B °वासि ६ P °पयोहर ७ A ताउ ताहु. ८ P सोमभूइ°. ९ A वणिसिरि, P फणिसिरि १० S भयगेहहो ११ S दिण्णु

**15** AS ते तेहउ, BP ते तेहउ २ PS वरुणाइरियहो ३ P °गुणु. ४ P °णायधणसिरिहिं ५ ABP वउ ६ A सोक्ख दिव्वइ. ७ S omits this foot.. ८ APS पुढविहे ९ PS सयपहे दीवे.

**14** 4 *a* ब्रमणु पुरोधा. 6 *a* ताइ तेणा जनाणा मातुल. 7 *b* तासु अग्निभूते पुत्र्य. ९ *b* कुलभवणारविंद° कुलगृहमेव कमलम् 12 *a* °रदोट्ट° कमलम्

**15** 6 *a* °लिहिय इ कृशीकृतानि, कृपितानि

पुणु वि भमेइ तसथावरजोणिहि हिंडिवि दुक्खसमुब्भवखोणिहि ।
पुणु मायंगि जाय चंपापुरि गोउरतोरणमालाबंधुरि ।
साहु समाहिगुत्तु भण्णेप्पिणु धम्मु जिणिंदसिट्ठु आणेप्पिणु ।

घत्ता—तेत्थु जि पुरि पुणरवि सा मरिवि दुग्गंधेण विरूई ॥
मायंगि सुयथहु वणिवरहु सुय घणोंघयिहि हूई ॥ १५ ॥

16

तेत्थु जि धणदेवहु वणिउत्तहु घरिणि जसोयदत्त धणवंतहु ।
सुउ जिणदेउ अवरु जिणयत्तउ जिणवरपयपंकयजुयभत्तउ ।
पूइगंध किर विज्जइ दुट्ठें पउ वयणु भायणिणयि जेट्ठें ।
बालहि कुणिमसरीरु दुगुंछिवि सुव्वयमुणि गुरु हियइ समिच्छिवि ।
तउ लेप्पिणु थिउ सो परमट्ठहु पायहिं णिवडिवि पर पाणिट्ठहु ।
उवरोहें कुमारि परिणाविउ दुग्गंधेण सुट्ठु संताविउ ।
ण हसइ ण रमइ णउ बोल्लावइ दुहवत्तणु किं कासु वि भावइ ।
णिंदंती णियकुणिमकलेवरु णियइ णियसुहु भणु परियणु वरु ।
सुव्वयखंतिय स त्ति णियंतिइ पुच्छिय चरणकमलु पणवंतिइ ।
विण्णि वि देविउ गुणगणरइयउ पयउ किं कारणु पावइयउ ।
भणइ भडारी वरसुहयवइहु वल्लहाउ चिरसोहम्मिंदहु ।
बेण्णि वि जिणपुज्जारयमइयउ णवसीलरयणवंतउ गइयउ ।
तहिं सविग्गमणें सजाए भवरोप्परु बोल्लिउ अणुराए ।
जइ माणुसेंमउ पुणु पावेसहु तो बेण्णि वि तवचरणु चरेसहु ।
इय णिवंधु पवउ विहसंतिहिं दोहिं मि कउ करपंकइ दिंतिहिं ।
उज्जेणिहि सिरिसेणहु णरणाहहु सिरिकंतहि जयलच्छिसणाहहु ।

१ S णरय ११ P °सोणिहे १२ AP माणेप्पिणु १३ ABAls सुयसुहे १४ A धणदेविहे

16 १ AP असोमदत्त BS यसोयदत्त २ S धणवत्तहो ३ AP पंकयकयभत्तउ ४ B दुगछिवि ५ APS छयवि ६ Als परमेट्ठहो against Mss ७ AP णिवडिउ बंधु कणिट्ठहो Als णिवडिउ पर ८ A परियणु धणु ९ PAls खंतिय १० AP णियंतिए ११ B पुच्छिय दुग्गधा पणमंतिए in second hand १२ B विण्णि वि खुड्डियाउ गुणगणरइयउ १३ APS चिरु १४ S भउ १५ A णिबद्ध १६ I ओज्जेणे

15 सुयथहु सुगन्धस्य

16 3 *a* पूइगंध दुर्गन्धा 4 *a* कुणिम दुर्गन्ध कुथितम् 7 *a* परमट्ठहु परमार्थेन 8 *b* णियसुहु आत्मन शुभ पुण्यम् 9 *a* णियंतिइ निश्चयया स्नेहाविर्गतया तया सा आर्या पृष्टा 11 *b* चिरसोहम्मिंदहु पूर्वजन्मनि सौधर्मस्य 15 *b* करपंकइ हस्तेन वाचा च

जायउ पुत्तिउं कुवलयणयणउ  मुहंससंककरधवलियगयणउ ।
घत्ता—हरिसेण णाम तहिं पढम सुय हरिसपसाहियदेही ॥
सिरिसेण अवर वम्महसिरि व रूवें सुरवहु जेही ॥ १६ ॥

## 17

वरणरणारीविरइयतंडवि  सरिवि सजम्मु सयंवरमंडवि ।
वद्धसंथ जाणिवि ससितेयउ  हालि विण्णि वि पावइयउ पयउ ।
खतिवयणु आयण्णिवि तुट्ठी  सुकुमारि वि तवयम्मि णिविट्ठी ।
एक्कु दिवसु झायंतिउ जिणु मणि  जोईयाउ सव्वउ णंदणवणि ।
झ त्ति वसंतसेणणामालइ  वेसइ कुसुमसरावलिमालइ ।
चिंतिउ जिह एयहं सिवगामिउ  तिह मज्झु वि होज्जउ जिणसामिउ ।
जिह एयहुं णिव्वूढपरीसहु  तिह मज्झु वि होज्जउ तवु दूसहु ।
एव सलाहणिज्जु सलहंतिइ  गणियइ पावें सहुं कलहंतिइ ।

१७ S पुत्ति कुव°. १८ AP °णयणिउ १९ ABPS मुहससहरकर° २० A गयणिउ, P गयणओ.

**17** १ AS omit स in सजम्मु, B सुजम्मु २ P सुकुमारे. ३ From this line to 18. 2, P has the following version —

एक्कु दिवसु झायंतिउ जिणु मणे  सठियाउ सव्वउ णदणवणे ।
तेत्थु वसतसेणणामालिय  वेसय कुसुमसरावलिमालिय ।
बहुविदेहि परिमढी जती  लीलए वयणहो वयणु भणती ।
णियकरु करथलेसु लायती  णयणसरावलीए पहणती ।
णियवि णियाणु कयउ सुकुमारिए  बहुदोहग्गभारणिरुभारिए ।
जिह एयहे एए सुरुरायर  तिह मज्झु वि जम्मतरे णरवर ।
जिह एयहे सोहग्गमहाभरु  तिह मज्झु वि होजउ सुणिरतरु ।
एम णियाणु करेवि अण्णाणिणि  हुय अप्पाणहो जि सा वइरिणि ।
कालें कहिं भि मरेवि सणासें  दसणणाणचरित्तपयासे ।
अतसग्गे जाइय सियसेविय  च्चिरभवसोमभूइ सुरदेविय ।
घत्ता—तहिं होंतउ कालें ओयरेवि हुउ सोमयत्तु जुहिट्ठिलु ॥
सोमेलु भीमु भीमारिमड्डु भुयबलमलणु महाभड्डु ॥ १७ ॥

18

बारसविहतवखीणसरीरउ  सोमभूइ सो आसि भडारउ ।
सो किरीडि होएवि उप्पण्णउ  धणसिरि णउलु धम्मविरियण्णउ ।

४ A सठियाउ. ५ A तेत्थु for झत्ति ६ A °सारए.

19 सुरवहु सुरवधू अप्सरा

**17** 1 *a* °तडवि नर्तके, *b* सरिवि स्मृत्वा 2 *a* °सथ नियम, हलि हे पूतिगन्धे 3 *b* सुकुमारि पूतिगन्धा, णिविट्ठी प्रविष्टा 5 *b* वेसइ वेश्यया. 8 *a* सलाहणिज्जु श्लाघ्य तप,

पुण्णु णिबद्धउ किं वण्णिज्जइ  जिणु सुमरंतहं दुक्किउ छिज्जइ ।
मरिवि तेत्थु तिण्णि वि सणासें  दसणणाणचरित्तपयासें ।
अंगासणि आयउ सुयसेविउ  चिरमयसोमभूइ हुउ सेविउ ।

घत्ता—ताहं होंती कालें ओयरिवि हुयं हरिसेण जुहिट्ठिलु ॥
सिरिसेणें भीमु भीमारिमइ सुयवलमलणु महाबलु ॥ १७ ॥

## 18

णाळमरालीलगइगामिणि  अवर वसंतसेण जा कामिणि ।
सा किराडि हाराविं उप्पण्णी  फणासिरि णउलु धम्मवित्थिण्णी ।
मित्तसिरि वि सहएउ ण चुक्कइ  कम्मु णिबद्धउ अवसें दुक्कइ ।
दुवयहु सुय पेम्मभमहाणइ  जा दुग्गंध कण्णा सा दोमइ ।
भणइ जुहिट्ठिलु हयधम्मीसर  भणु भणु णियमवाइ णेमीसर ।
कहइ भडारउ मणिक्खयतवहलु  होंतउ पढमजम्मि हुउ णाहलु ।
रिसि विद्धतु सयरिणिइ वारिउ  पाणि सवाणु धरिउं ओसारिउ ।
णविय भडारा वियलियगावें  महुमासहं णिवित्ति कय भावें ।
कवि डंकिउं मुउ भिल्लु वरायउ  इब्भकेउ वणिवरकुलि जायउ ।
पुणु हुउं कालें जिणपयणावियासिउ  वयहलेण हुयउ कप्पामरु ।
पुणु सुरु थेरिवि देहमाभासुरु  हुउ चिंतागइ खयरपरेसरु ।
पुणु तउं चरिवि समाहि लहेप्पिणु  उप्पण्णउ माहिंदि मरेप्पिणु ।
पुणु अवराइउ णरवइ हुयउ  मुणि होइवि अच्चुइ संभूयउ ।
पुणु सजायउ दुव्वेणिहीसरु  सुपइट्ठु णामें पुहईसरु ।

घत्ता—हुउं हुंउं रिसि सोलहकारणइं णियहियउल्लइ भावियइं ॥
जिणजम्मकम्मु मइं संचियउ बहुदुरियइं उड्डावियइं ॥ १८ ॥

७ A सुमरंतहे S सुमरंतइ ८ A तिण्णि वि ९ AS अतसग्गि १० A सियसेविय ११ A सुरदेविय S सुरदेविउ १२ A होंतउ १३ A हुउ सोमयत्तु जुहिट्ठिलु १४ A सोमिल्लु भीमु ( It appears that P contains an altogether new version from बहुविदेहि *down to* वइरिणि, while A seems to agree with P in lines *which are common to all* versions

**18** १ A agrees with P in the text of the first two lines for which see under 17 २ S धम्मु. ३ A दोवइ ४ AP वरेवि ५ APS डंकिउ ६ S °पणमिय° ७ ABPK मरेवि ८ A देहभासुरु ९ S तउ १ B लएप्पिणु ११ B अच्चुउ १२ A येउ णिहीसरु BPS दिव्वणिहीसरु १३ P सुपइट्ठु १४ BKS omit हुउं

11 *a* अगासग्गि पोडशे स्वर्गे सुयसेविउ श्रीसेविने सोमभूतिचरस्य देवौ सजाते द्वे अग्निके

18 2 *a* किराडि अर्जुन *b* फणसिरि नागश्रीचरी 4 *b* दोमइ द्रौपदी 6 *b* णाहलु भिल्ल 7 *b* सवाणु बाणसहित 8 *a* णविय भडारा नमितो भट्टारक

## 19

पुणरवि मुउ रयेणावलियतइ　　अहमिदत्तणु पत्तु जयतइ ।
तहि होंतउ आयउ मलचत्तउ　　अरहंतत्तणु इह सपत्तउ ।
ता पचमगइसामि णवेप्पिणु　　पंचासवदाराइं वेहेप्पिणु ।
पंचिंदियइं दिहीईं णियंत्तिवि　　पच वि संणाणइं सचिंतिवि ।
पंचमहव्वयपरियरु रइयउ　　पचहिं पढवेहिं तउं लइयउ ।
कोंति सुहद्द दुवइँ सुयसत्तउं　　रायमईहि पासि णिक्खतउ ।
तिव्वतवेण पुण्णसंपुण्णउ　　अच्चुयकप्पि ताउ उप्पण्णाउ ।
तिण्णि वि पुणु मणुयत्तु लहेप्पिणु　　सिज्झिहिंति कम्माइ महेप्पिणु ।

घत्ता—पंच वि तवतावसुतत्तउ चिरु जिणेण सहु हिंडिवि ॥
गय ते सत्तुंजयगिरिवरहु पडव जणवउ छंडिवि ॥ १९ ॥

## 20

सिद्धवरिद्धसणिट्ठाणिट्ठिय　　तहिं आयावणजोयंपरिट्ठिय ।
भायंणेउ कुरुणाहहु केरउ　　पावयम्मु दुज्जणु विवरेरउ ।
तेण दिट्ठ ते तहिं अवमाणिय　　चउदिसु साहणेण सदाणिय ।
कडयमउडकुंडलइं सुरत्तइ　　कडिसुत्ताइ हुयासणतत्तइ ।
तणुपलरसवसलोहियहरणइं　　रिसि परिहाविय लोहाहरणइं ।
समभावेण विवज्जियदुक्खहु　　तव सुय भीमज्जुंण गय मोक्खहु ।
णियसरीरु जरतणु व गणेप्पिणु　　अरिविरइउ उवसग्गु सहेप्पिणु ।
णउलु महामुणि सहएउ वि मुउ　　पंचाणुत्तरि अहमीसरु हुउ ।

घत्ता—मिच्छत्तु जडत्तणु णिद्दलवि देंतु बोहि दिहिगारा ॥
पंडवमुणि जणंमणतिमिरहर महुं पसियंतु भडारा ॥ २० ॥

---

**19** १ P °वलिअतए २ S °दारावइ ३ AP पिहेप्पिणु, Als बहेप्पिणु. ४ B दिहिए. ५ AP णियतिवि. ६ A बउ. ७ PAls दुवय°. ८ A सुह°, P सुव°. ९ APAls सतउ. १० A णिक्खित्तउ, B णिक्खत्तउ ११ A पुव्वतवेण १२ P °सपण्णउ १३ BS सुतत्तणु.

**20** १ PAls. °सुणिट्ठा°. २ A आवणजोएण, S आयावणजोए. ३ P भाइणेउ. ४ B सुतत्तइ ५ B भीमज्जण ६ S सहएवु ७ S omits मण

---

**19** 1 *a* रयणावलियतइ हे रत्नमालाकान्ते 3 *b* वहेप्पिणु हत्वा 4 *a* दिहीइ सतोषेण 5 *a* °परियरु परिकर. 6 *a* सुयसत्तउ श्रुतासक्ताः. 7 *a* पुण्णसपुण्णउ पुण्यसपूर्णा. सत्यः.

**20** 1 *a* °सणिट्ठ° स्वनिष्ठया चारित्रेण, *b* आयावणजोयपरिट्ठिय आतापनयोगे स्थिताः 2 *a* कुरुणाहहु दुर्योधनस्य. 6 *b* तव सुय तव पुत्रा युधिष्ठिरादय.

## 21

छहसयाइं णवंणवइ य वरिसहं णवमासाइं अवरु चउदिवसइं ।
महि विहरेप्पिणु मयणवियारउ गउ उज्जंतहु णेमि भडारउ ।
पडियपडियमरणपयासें मासमेत्तु थिउ जोयब्भासें ।
तवतावोहामियमयरद्धउ पंचसएहिं रिसिहिं सहुं सिद्धउ ।
आसाढहु मासहु सियपक्खइ सत्तमिवासरि चित्तारिक्खइ ।
पुव्वरत्ति भत्तामरपुज्जिउ णेमि सुहाइ देउ मलवज्जिउ ।
पयडु धम्मतित्थि पयट्टतइ णिसुणहि सेणिय कालि गलंतइ ।
बंभदत्तु णामें चक्केसरु सजायउ जगजलरुहणेसरु ।
वण्णें तत्तकणयवण्णुज्जलु सत्तचावपरिमाणु महाबलु ।
सत्तसयाइं समाहं जिएप्पिणु छक्खंड वि मेइणि भुंजेप्पिणु ।
गउ मुउ कालहु को वि ण चुक्कइ सक्कु वि खयकालहु णउ सक्कइ ।
इय जाणिवि चारित्तपवित्तहु सतहु सत्तुमित्तसमचित्तहु ।
घत्ता—सुविहिहि अरुहहु तित्थकरहु धम्मचक्कणेमिहि वरइ ॥
समरइं पुप्फयंतहु पयइं विविहजम्मंतमसमहरइं ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णेमिणाहणिव्वाणगमणं
णाम दुणउदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥ ९२ ॥

णेमिजिणे णवमबलएवबलहद्द वासुएवकण्ह पडिवासुएवजरसंध
बारहमचक्कवट्टिबम्हयत्त एतच्चरित्थ समत्त ॥

21 १ AP सयाइं वरिसइं णवणउयइं S णवउयइं वरि° Als णवणउयइं वरिसइं २ APS उज्जेंतहो ३ P सहु ४ S पुव्वरत्त ५ A reads *b* as *a* and *a* as *b* ७ Al जीवेप्पिणु ८ A चुक्कइ ९ I सत्त° १ BP °मित्तु ११ P समरहु १२ A °जम्मभवसमहरइं; BSAls °जम्ममभसमहरइं P °जम्मसमहरइं १३ A adds बंभदत्तचक्कवट्टिचरित्तं १४ AS दुणवदिमो १५ A omits this पुष्पिका १६ B जरासंधु S जरसेंधु

21 4 *a* तावोहामियमयरद्धउ तापेन निरस्तकामः 6 *a* पुव्वरत्ति पूर्वरात्रे 11 *a* जिएप्पिणु जीवित्वा 14 सुविहिहि सुष्ठु चारित्रस्य यथाख्यातलक्षणस्य

# NOTES

## LXXXI

**1.** 2 भड्णु झुरारिजरसघइ—The narrative of Nemi, the twenty-second तीर्थंकर of the Jainas, contains an important episode, viz, the fight of कृष्ण and जरासंध. According to the भागवतपुराण the fight of कंस and कृष्ण is regarded as the most important feature of the life of कृष्ण, while जरासंध is killed by भीम. कृष्ण is mentioned as having run away from the battlefield and founded द्वारका in order to escape the attacks by जरासंध. In MP the word जरासंध appears in three different forms, जरसंध, जरसिंध and जरसेंध Of these the first two are promiscuously used in my text and the third almost ignored as there is no consistency in Mss

**2.** The poet states, as in MP I, that he does not possess necessary qualifications to undertake the composition of हरिवंश 1 *b* देसिलेसु, fragmentary or elementary knowledge of देशी words or lexicons 6 *a* सुवहु तिवहु (सुबन्त, तिङन्त) noun inflexion and verbal inflexion 11–12 The poet feels confident that his fame as poet will place her feet on the necks of the wicked and wander beyond the three worlds

**3.** सीहउरि णराहिउ अरुहदासु—It will be better if the reader remembers that the poet is giving here the narrative of the previous births of नेमि, not in their chronological order but in the order of strikingness These previous births chronologically are —मिल्ह, इभ्यकेतु, सौधर्मदेव, चिन्तागति, चतुर्थस्वर्गदेव, अपराजित, अच्युतेन्द्र, सुप्रतिष्ठ and जयन्तदेव The poet starts with the life of अपराजित here He then takes up the story of चिन्तागति and his two brothers Then he proceeds to हरिवंश proper to give the parentage of नेमि.

**4.** 11 केसरिपुरि, i e, सिंहपुर 13 तुइ जणणु means अर्हद्दास.

**5.** 7 यसणगाह, च+अशनाङ्गानाम्, अशनाङ्ग means articles of food 10 अपुण्णइ कालि, before his destined time of death, premature death.

**6.** 5 णहयलि मुणिंद—The चारणमुनिs are those who are able to travel through space as a result of their spiritual powers They are his brothers of the previous birth

**8.** 2 *a–b* णीमेस वि णियपयमूलि घित्त विज्जाहर—She, i e, प्रीतिमती, trampled under her foot or humbled down the pride of all विद्याधरs as they came to woe her, but were unable to complete the three प्रदक्षिणाs of मेरु.

**9** 1 *b* ठुह here stands for ठुह 10 णीवइ दुक्खसिहि, etc. The fire of sufferings of the poor etc is extinguished if they cling to the lotus-like feet of the revered Jinas

**10** 3 *a* सिरीविंयप्पि goes with माहिंदकप्पि and means heaven as T says 13 दूरिठाइं stationed at a distance this word is to be construed with पयणाइं

**12** 5 *b* अण्णु food

**14** 12 इयरु, the merchant सुमुह

**18** 14 पिय, i e, father

**19** 4 वहुवरु, the couple सिहकेउ or मार्कंड and विद्युन्माला 12 Note how the narrative runs over to the next Samdhi

## LXXXII

**1** 4 *b* सुउ ताह, the children of सुभद्रा and अन्धकवृष्णि are enumerated here. They had ten sons and two daughters 9 *b*–13*b* These lines enumerate the lives of the first nine sons of अन्धकवृष्णि वसुदेव is the youngest and his narrative is continued later

**2** 8 *a* मच्छउअरायसुय सच्चवइ—According to the Jain version सत्यवती, the wife of पराशर, is a princess of the मत्स्य country and not a fisherman's daughter Note the difference in the accounts of births of the पाण्डवs and कौरवs as given here and in the महाभारत

**3** 8 *a* पुण्डरिय, white or bright like a blooming lotus

**5** 1 *a* कुडलजुयलउ etc. Note how the first born son of कुन्ती was disposed off He had a pair of ear-rings a gold armour and a letter containing information about his parentage He became the adopted son of king आदित्य and queen राधा of चम्पा and seems to have succeeded his father to the throne of अङ्गदेश

**6** 5 *b* सुयजमलहु to अन्धकवृष्णि and नरपतिवृष्णि

**9** 8 *a* रुद्ददत्त, the name of a Brahmin priest of the family

**16** 1 *a* वसुदेवायरणु the previous births of वसुदेव 4 *a* णियमाउलउ his maternal uncle 8 *a* गुरुसिहरारूढउ ascending the lofty peak of the mountain from which he wanted to throw himself down 9 *b* सरणाम णिण्णाम मुणि—These are destined to be कृष्ण and बलराम in the subsequent birth 11 *a* कायछाय णरहु the shadow of a human being

**17** 11 *b* दुरिउ दिसाबलि दिजह—If you practise penance according to Jain principles, you can scatter your miseries in different directions दिसाबलि, offering to or scattering in दिसाs, i. e, quarters or cardinal points

## LXXXIII

**1** 5 *a* अगाह सलवणु रयणायरु, ocean, not saltish, yet beautiful Note the double meaning of सलवणु

**3** 1-2 Note how a lady, looking at वसुदेव, put under her arms a cat instead of her own child, and thus supplied to the people a comic situation

**4.** 6 *b* अजुत्तउ, his improper conduct

**6** 1 *b* बालें, by young वसुदेव.

**7.** 10 *b* पइ आपेक्खिवि मयणु वि दूहउ—Compared with you, even god of love looked ugly ( दूहउ, दुर्भगः ). 14 *b* मीणावलिमाणिउ, water respected or used by a mass of fish, i. e, fresh running water of a stream.

**8.** 13 पहियगुणवसगएँ etc.—Fresh and young leaves came out or appeared on old and withered trees as if on account of the prowess of the merit of the visitor ( पथिक ), viz., वसुदेव.

**11** 6 *b* णीसरहिसहें, by shouting " get out "

**12** 1 *b* दुहियावरु, the husband of your daughter 13 समरसएहिं असग्गी, यामरि who never knew defeat in hundred battles

**13** 8 वासुपुज्जजिणजम्मणरिद्धी—The town of चम्पा became famous as the birthplace of वासुपुज्य, the 12th तीर्थंकर

**16.** 11 सवणह सीसम्मि जणउच्छिट्ठउ घित्तउ—He threw on the heads of monks the leavings of food of people who were fed at the sacrifice The story of बलि and his conquest by the monk विण्हु by asking him to give him earth measured by three steps will remind the reader of the corresponding story as found in Hindu mythology

**21** 11 *b* देसिउ, a traveller or foreigner.

**22.** 3 *b* अविणासिय ( अविदारिताः ), without being killed.

## LXXXIV

**1** 8 *b* महिणीरय, resting or living in soil. 17 हउ णि करेसमि मोयणु, I myself shall feed this monk by giving him alms. Although the king said so, he did not give him alms and the monk had to go without food.

**2** 1 *b* हुयासु लग्गु, fire broke out in the city in the first month a maddened elephant teased the people in the second month, and a threatening letter from king जरासंध was received by king उग्रसेन in the third month 6 *a* पर वारइ सइ णाहारु देइ—He prevents others giving alms to the monk but he himself does not give food to the monk

**3** 8 *b* कल्लालयबालियाइ, by a young lady of a wine-shop keeper (कल्लाल) 12 *a* वसुएवसीसु—कंस became a pupil of वसुदेव who is frequently referred to as महुमहणपिउ उज्जाय, चावसरि etc 19 मेरी सुय सो माणइ he will win (the hand of) my daughter

**5** 1 *a* सउद्दए, by वसुदेव who was the son of सुभद्रा

**6** 5 *b* रणि णिवपुरुमसरि पहरेवि—When वसुदेव and सिंहरथ were fighting कंस stood between them and captured सिंहरथ

**12** 7 *a* पिउबंधणि णिव णावइउ मीरु—अतिमुक्तक, brother of कंस, renounced the world when their father उग्रसेन was imprisoned by कंस

**14** 1 *b* वर दिण्णउ—वसुदेव was pleased with the exploit of his pupil कंस when the latter caught सिंहरथ and gave him a boon which कंस kept in reserve अवसरु ताउ अजु, to-day is the time to get the boon fulfilled

**17** 11 *a* णिण्णामणामु जो आसि कालि, the god from महाशुक्र heaven, who, in his previous birth was a monk named निर्नाम

**18** 10 *a* महिउ one of the frequently used names of कृष्ण or विष्णु

## LXXXV

**1** 5 *a* कण्हु मासि सत्तमि सजायउ—कृष्ण was born in the seventh month after conception he had a premature birth, and hence कंस was not watchful to put him to death as soon as born

**2** Note the poetic beauty of this कडवक nay of the whole संधि which is one of the finest compositions of the Poet

**3** 3 *a* महु कवइ etc —नन्द says that his wife यशोदा begged a son of a deity but she gave her a girl He wanted to return the girl to the deity if the deity would give him a son the desire of his wife would be fulfilled

**4** 5 चप्पिवि णासिय दिविदिविरइ, having crushed the nose of the girl and thus deformed her, कंस put her into a cellar

**8** 10 *b* ता तहिं देवयाउ सपत्तउ—The deities which now came to कंस were the same as when in his previous brith as a monk, had appeared

before him. For reference see LXXXIV. 2. 9–14. It is these deities which assumed different forms such as पूतना and made attempts to kill कृष्ण at कंस's bidding.

**12** 15–16 ओहामियधवलु etc.—कृष्ण who had just vanquished the bull (i e., demon अरिष्ट), was glorified in the cowherds' colony in songs styled धवल Who will not praise the most glorified member of the house, the bright among the brightests ? धवल is a kind of folk-songs composed in a metre which is named धवल. The theme of these songs is usually the glorification of कृष्ण and they are sung by गोपीs. हेमचन्द्र in his छन्दोनुशासन V. 46, mentions some four types of धवल and names them as यशोधवल, कीर्तिधवल, गुणधवल etc Some of these are अर्धसम, with first and third line and 2nd & fourth agreeing, while there is one more type in which first and second are similar and third and fourth are again similar Among the महानुभाव poets these धवलs, or ढवळे as they are called, seem to be well-known, and those of महदंबा, are now edited and published by Y K. Deshpande under the title "आद्य मराठी कवयित्री" The type of her ढवळे agrees with the last named scheme, viz.,

1st and 3rd line . 6+4+4+4=18, + 2 or 3

3rd and 4th. : 4+4+4+4+4=20, + 2 or 3

**13.**10—**15.** 9 These lines describe a secret visit of वसुदेव and देवकी to कृष्ण.

**16.** A fine description of the rainfall.

**17.**11–12 णायाभिजइ etc Astrologer वरुण says to कंस that he who is not frightened by sleeping on the bed of a snake, blows a conch with his own breath and strings the bow, will show to कंस the city of the god of death, and that he will release उग्रसेन and kill जरासंध.

**20.** 8–9 हउ मि जामि etc कृष्ण says he would also go to मथुरा and do all the three things, whether he will marry कंस's daughter, he could not say, for a cowherd-boy ( हालिक ) may not care for the princess

**22.** 3 *a* अग्गि व अंबरेण ढंकेप्पिणु, having covered fire in clothes भानु and सुभानु, the sons of जरासंध, brothers-in law and allies of कंस, took कृष्ण with them to मथुरा.

**23.** 10 *b* अपसिद्धेण सुभाणुहि भिच्चें, by कृष्ण, who was taken to be some unknown servant of सुभानु.

## LXXXVI

1 23 *a* उविंदु i e कृष्ण The name of कृष्ण is expressed here by all synonyms of विष्णु Compare पुरिसोत्तम and महुसूयण below

3 4 *b* णउ बीहइ सप्पहु गरुडकेउ—कृष्ण, with his emblem of गरुड, is not frightened by सर्प The enmity between गरुड and सर्प is well known

5 10 उद्धमाणवचालियधर, the crowd of cowherd boys caused the earth to tremble on account of mutual clashing

7 19 *a* सो वि सो वि, both कृष्ण and चाणूर

10 3 *a* भंजिवि णियलइ, having broken or removed the fetters which कंस had put on उग्रसेन and पद्मावती

11 2 *b* इह जम्महु महु तुहु ताय ताउ—Addressing नन्द कृष्ण says to him that नन्द is his father in this birth because he fostered him

## LXXXVII

1 9 *a* कंचिविवज्जिय उत्तरमहि विव—Like Northern India where there is no town bearing the name of काञ्ची (Canjeevaram of South India), जीवजसा having lost her husband कंस, did not put on काञ्ची, girdle, which is used only by those ladies whose husband is alive

2 1–12 जीवजसा describes to her father जरासंध the various exploits of कृष्ण

4 14 छायालीसइ तिण्णि सयइं—अपराजित a son of जरासंध, made three hundred and fortysix attacks or attempts on कृष्ण, but was defeated

5 14 *b* देसगमणु, leaving the country or going to another country कालयवन being very powerful the advisers of कृष्ण proposed to him not to give a straight fight to कालयवन but to withdraw from मथुरा and go towards the western ocean

6 13 *a* हरिकुलदेवविसेसहिं रइयइं—Certain guardian deities of हरिवंश played a trick on कालयवन They set fire to a region where dead bodies were seen burning and the deities cried bewailing the loss of यादवs कालयवन then thought that कृष्ण and other यादवs were dead and returned to his father

7 1*b* आइवि सउ्ड भिडेवि मइ जसु जिणिवि ण लद्धउ—कालयवन regrets that यादवs died of fire and that he lost the opportunity of obtaining fame by vanquishing them in a face-to-face fight

**10.** 6 थियउ वेण्णु etc—This was the site on which द्वारावती was built by कुबेर as it was to be the birth-place of नेमि, the twenty-second तीर्थंकर.

**13.** 4 पउरदरियइ आणइ, at the command of पुरंदर, i e, इन्द्र

**17.** 2 णेमि सद्दिओ—The would-be तीर्थंकर was named नेमि, because he was the नेमि, the rim, that protects the great chariot of Law

## LXXXVIII

**1.** This कडवक summarizes events since कृष्ण left मथुरा down to his founding द्वारवती.

**2.** 10 *a* दुव्वाए जलजाणु ण भग्गउ, fortunately my ship did not wreck although it met a stormy wind (दुर्वात).

**3.** *a* णवरज्ज = णवर + अज्ज

**4.** 10 *b* दे आएसु—कृष्ण asks the permission of his elder brother बलराम before he starts

**5.** 16 *a–b* जो सुहडह etc—The poet says that the dust raised in the sky was the smoke of the fire of rivalry of warriors Note a fine set of fancies on the dust raised on the battle-field in the next कडवक as well

**9.** 11 *a* गोवाल-जरासंध addresses कृष्ण as गोपाल. See the spirited answer of कृष्ण below in lines 15 and 16, पइ मारिवि etc गोमंडलु पालमि, गोउ हउ, I protect the earth (गोमण्डल), and so I am a गोप.

**16.** 13–14 These lines give the list of seven gems which a वासुदेव possesses

**17.** 3 *b* तेत्तियइं सहासइं विलयइं—कृष्ण had sixteen thousand wives 8 This line mentions the four gems which a बलदेव possesses. 13 *a* कंसमहुवइरिउ—कृष्ण is called here the enemy of कंस and महु, i e, जरासंध.

**19** 15 होसि होसि etc—सत्यभामा says to नेमि "I know you are my husband's brother, but are you दामोदर?"

**22** 10 *a* णिव्वेयहु कारणु—If नेमि sees some cause which would create in him disgust for संसार, he would practise penance, and become a तीर्थंकर 12–13 रायमइ or राजीमती is said to be the daughter of उग्रसेन and जयवती. Elsewhere she is said to be the daughter of भोगराज or भोजराज Compare अहं च भोगरायस्स in the उत्तराध्ययन, 24. 43 कंस is mentioned as her brother, but this कंस and his father उग्रसेन seem to be different from कंस, the enemy कृष्ण, as T suggests

## LXXXIX

**1** 3-4 एक्कु तिचि णिविसु etc —I do not like to eat flesh because, one ( the eater ) gets only a momentary satisfaction by eating flesh while the other ( animal killed ) loses its life भवविहुरकारि eating flesh causes the loss of spiritual life in one, while the other actually loses its present life 9 *a* णिव्वेयहु कारणि दरिसियाइ these creatures were placed on the way of णेमि in order to cause in him disgust for life

**6** 1 ) णेमी सीरिणा is to be construed with पुच्छिउ in the second line of the next कडवक

**8** 7 *a* पत्थतरि etc —The portion beginning with this line and ending with this samdhi deals with the previous lives of देवकी, बलदेव and कृष्ण 7 *b* वरदत्तु the first गणधर of नेमि

**9** 1 ) मंगिया—The narrative of मंगिया the wife of वज्रमुट्ठि is interesting She was very badly treated by her mother-in law Her husband loved her dearly, but she ultimately proved to be faithless

**18** 9 *a* बो सख्नु वि सहु णिण्णामएण—These two monks were born later as बलदेव and कृष्ण

## XC

**1** 5 to **3** 9 This portion narrates the previous lives of सत्यभामा the most proud and impetuous wife of कृष्ण The narrative contains a small episode of मुण्डशालायण a Brahmin who abused the Jain doctrine and recommended to people the Brahmanic practices such as gifts of earth cows etc

**2** 10 *b* बोडु is definitely a Kannada word which the Poet has used Those who want to argue that the poet lived in South say at काञ्ची should note that this word does not occur in Tamil or in any other South Indian languages except Kannada It is natural that the poet who lived under a mixed influence of महाराष्ट्र and कर्णाटक should use occasionally a word or two from either language and words from a weaker language would be those that are most commonly known word I stick to my view that the poet came from Northern India probably from Berar as suggested by Pandit Nathuram Premi

**3** 10 to **7** 14 Past lives of रुक्मिणी

**4.** 4 *b* उवरकुट्ठइ, with leprosy. उवरकुट्ठ is one of the 18 types of कुट्ठ in which the body gets the colour of the ripe fruit of उडुम्बर, fig 18 सभारमें, with spiced waters

**7.**15 to **10.**12 Previous births of जाम्बवती

**10.**13 to **12.**10 Past lives of सुसीमा.

**12.**11 to **14.**2 Past lives of लक्ष्मणा.

**14.**3 to **15.**9. The same of गान्धारी.

**15.**10 to **16.**11 The same of गौरि.

**16.**11 to **19.** 9. The same of पद्मावती. 10 *b* अवियाणियतरुहलहु अवग्गहु, a vow not to eat a fruit the name of which is not known See how the lady died as she could not get fruits of known names in a famine

**19.** 10 *a* जहिं संसारहु आइ ण दीसइ etc —How can I narrate to you the series of births when the संसार is beginningless The soul dances like an actor on the stage, taking different roles

## XCI

**2.** 10 *a* तो सूणागारहु पढमु सग्गु—If persons who kill animals would go to heaven, then, the butcher should be the first man to go to heaven

**6.** 6 *b* तियसोए, on account of grief at the loss of his wife. 12 *a* महु अभूयउ पउण्णु णामु—मधु, in his previous births, was अग्निभूति, पुण्यभद्र or पूर्णभद्र, and became प्रद्युम्न, the son of रुक्मिणी He was taken away by कनकरथ whose wife had been abducted by मधु प्रद्युम्न was handed over to his queen काञ्चनमाला by कनकरथ. This काञ्चनमाला later fell in love with प्रद्युम्न, who rejected her love. The queen thereupon raised a false alarm that she was insulted by her so-called son.

**16.** 7 *a* हरिपुत्तहु, to प्रद्युम्न the son of कृष्ण. 8 *a–b* These are the names of the five arrows of god of love whose incarnation प्रद्युम्न was.

**21.** 9 *a* भाणुमायदेवीणिकेउ, to the house of सत्यभामा, the mother of prince भानु 12 *b* बम्भणु होइवि रक्खसु पइठु—The Brahmin who has visited our house is in reality, a demon, that is why he eats so much and is not still satiated.

## XCII

**1.** 12–13 जइयहु etc—Both रुक्मिणी and सत्यभामा gave birth to sons at one and the same time. The maids of both went to कृष्ण to announce the

birth but as कृष्ण was sleeping one maid sat on the side of his head and the other on the side of his feet. कृष्ण got up and saw the maid who was sitting at his feet that maid (of रुक्मिणी) then announced the birth of a son to रुक्मिणी and कृष्ण said that that son would be the heir-apparent.

**6** 1 नेमि informs बलदेव how द्वारावती would be burnt and how कृष्ण would meet his death

**8-10** The story of the पाण्डवs in outline and of the द्रौपदीस्वयंवर

**14-15** Previous births of the पाण्डवs

**18** 6 Previous births of नेमि beginning with that of a भिल्ल

**21** 7 *a* The story of ब्रह्मदत्त, the twelfth and last चक्रवर्तिन्.

---

ADDENDA ET CORRIGENDA

| Page | Kadavaka | Line | *Incorrect* | Correct |
|---|---|---|---|---|
| 8 | 9 | 1 | ठुह | ठुहु |
| 26 | 13 | 13 | घम्मवइ जुत्ताहिं | घम्मवइजुत्तेहिं |
| 34 | Foot Notes | last | भिणिउ | °माणिउं |
| 40 | 16 | 2 | करइ | फरइ |
| 40 | Foot Notes | 4 | मारणाचा उक्केन | मारणवाऽठक्केन |
| 42 | 19 | 4 | माइसहोयव | °भाइ सहोयव |
| 48 | 2 | 10 | मणवि | मणवि |
| 48 | Foot Notes | last | अस्ताव | अस्ताथ |
| 51 | 7 | 2 | कसजस° | कस जस° |
| 5ı | 12 | 10 | जरसघकसजस° | जरसेंध कस जस° |
| 63 | 5 | 2 | अलियहाहिं | अलियहाहि |
| 6ȷ | 6 | 13 | जसोद | जसोए |
| 76 | 19 | 1 | विसकधर | विसकंधर |
| 82 | 1 | 1 | °छिप्पउ | °छिण्णउं |
| 112 | 12 | 8 | कण्हे | कण्हें |
| 120 | 23 | 1 | °यइघव | °मइघव |
| 129 | 10 | 8 | महरिणीइ | महारिणीइ |
| 133 | 1ȷ | 17 | बधव | बधव |

---